श्री सतगुरु देवाय नमः

कथा प्रसंग

(भाग पहला)

श्री आनन्दपुर ट्रस्ट
श्री सन्त नगर

विषय सूची

क्रमांक	प्रसंग	पृष्ठ सं.
1.	भाई मँझ	1.
2.	सुमन-मूसन	14.
3.	रेख विच मेख(साकेत मण्डी का राजा)	23.
4.	सत्ता बलवन्ता	30.
5.	निरमोही राजा	37.
6.	अटूट श्रद्धा	47.
7.	मनमुख	50.
8.	भाई जोगा सिंह	54.
9.	मोह ममता	59.
10.	झूठा प्रेम	62.
11.	मोह-माया	68.
12.	नास्तिक सेठ	76.
13.	नरसी भगत	84.
14.	जेहा बीजे सो लुणे	101.
15.	सतसंग दी महिमा	107.
16.	राँका बाँका	110.
17.	सन्त बुल्लेशाह	113.
18.	राजा मोर ध्वज	117.
19.	गोपी प्रेम	122.
20.	भक्त प्रह्लाद	125.
21.	भूमिया चोर	131.
22.	सैन नाई	142.
23.	कंजूस सेठ	145.
24.	स्वार्थमय संसार	153.

विषय सूची

क्रमांक	प्रसंग	पृष्ठ सं.
25.	दूनी चन्द	156.
26.	कृष्ण सुदामा	162.
27.	बाबा शेख फरीद	168.
28.	मन चँगा ते कठौती में गंगा	174.
29.	भक्त नामदेव	180.
30.	भाई पतंग	190.
31.	सीस दियो जो गुरु मिलें	195.
32.	चन्द्रहास	199.
33.	नाम दी महिमा	214.
34.	मुसाफिरखाना	217.
35.	तृष्णा	220.
36.	इक ले दूजी डार	223.
37.	बुरे से भी भलाई करो	226.
38.	भाई कन्हैया	229.
39.	महर्षि बाल्मीकि	232.
40.	अपनी पहचान	237.
41.	ज्ञान दी रोशनी	240.
42.	कन्चन कामिनी कीर्ति	243.

भाई मँझ

अलफ-इष्टदेव नूँ कराँ प्रणाम दण्डवत,जेहड़ा भवसागरों पार लँघावंदा ए।
सच झूठ दी परख कराके ते, माया भक्ति दे भेद समझावंदा ए।।
अपनी रूहां ताईं सच्चा सुख देवन, युग युग अन्दर आप आवंदा ए।
संस्कारी रूहाँ नूँ आपणी शरण लाके,सच्ची भक्ति दा पथ दरसावंदा ए।।
ऐसे सतगुराँ दा दिल विच ध्यान धर के,भाई मँझ दी कविता बनाण लगा।
गलती लग जावे जे कोई दास ताईं,मुआफी मँग के कलम उठान लगा।।
ऐसा गुरुमुख गुराँ दा मँझ भाई, होया गुराँ तों दिलों निसार प्यारे।
आफरीन है ओस दे सिदक उत्ते, निभाया रह के विच संसार प्यारे।।
गुराँ पिछे लड़की औरत दे दित्ती, कीता ज़रा न ओस अहंकार प्यारे।
बेबका कर भेंट सब गुराँ अगे, कीता सच दा वनिज वपार प्यारे।।
प्रसंग ओस दा कविता विच करन लगा, ज़रा सुनना नाल ध्यान दे जी।
दास वांगणां दासन दास बन, प्रीत जोड़नी नाल भगवान दे जी।।

इक दिन मँझ भाई जा के कोल सतगुरु, दिली प्रेम दे ताईं जतान लगा।
दुनियाँ झूठी तों दिल उपराम मेरा,जिस कारन चरणी सतगुरु आन लगा।।
श्री चरणाँ दा बख्शो प्रेम मैंनूं, हथ जोड़ के वास्ते पान लगा।
नाम धन बख्शो कर के मेहर दाता , सतनाम बिन जन्म गँवान लगा।।
शुभ कर्म कीते ओदे आन जागे, जिस लई दिसदा झूठा जहान ओनूं।
दासन दास नूँ पक्यां करन खातिर, अगों सतगुरु एह फरमान ओनूँ।।

बे- बहुत औख बनना गुरुसेवक,ज्यूँदियां मरना ए तेरे लई कार मुश्किल।
कहनी कथनी बहुत आसान होंदी, निभाना गुरां नाल प्रेम प्यार मुश्किल।।
आलम बन नसीहतां, बाज़ सौखे, आमिल बन के लँघना पार मुश्किल।

आ गये पंजा दी कैद दे विच जेहड़े,होवे ओंहनां दा शुद्ध विचार मुश्किल।।
गुरुसेवकबनना मुश्किल तों अतिमुश्किल,सोचसमझ के कदम उठाल बीबा।
गुरुदास बनन लई गुरां दी जो तरफ लगदे,मन देंवदा बड़े उछाल बीबा।।

बेनती करे हथ जोड़ के मँझ अगों, सतगुरु होण जिसते मेहरबान प्यारे।
ओहदे अंग संग सतगुरु सदा रहंदे, सब्बे धोखयां कोलों बचान प्यारे।।
जोगा सिहं ताईं जीवें रोक लया, गैर तरफ नूं दित्ता न जान प्यारे।
गुरु समरथ जिन्हां दे नाल होंदे, सेवक ओह न कदी घबरान प्यारे।।
मन डोले ते रक्षा करन सतगुरु, सदा सेवकां दे राखनहारे गुरु।
करनहार स्वामी प्यारे अन्तर्यामी, दास जनां दे सदा सहारे गुरु।।

बातन मँझ दा डिट्ठा जद साफ सुथरा, प्रेम नाल फिर पास बिठावंदे ने।
निज नाम दा दस्या मूल मन्तर, सुरत शब्द दा भेद बतावंदे ने।।
ज़ाहिरा अखियां नाल न जोत दिस्से, दिव्य नेत्रां नाल विखावंदे ने।
अनहद शब्द होंदा जेहड़ा घट अन्दर, ओस आवाज़ दे ताईं सुनावंदे ने।।
अखाँ बाझ वेखीं कन्नां बाझ सुनीं, जीभा बाझ करना दमदम याद बीबा।
अमृतरस पीना सदा दास बन के,बहरूनी छोड़ के कुल स्वाद बीबा।।

पे- पाई रुख्सत जिस दम मँझ भाई, सतगुरु जांदयां फेर फरमान कीता।
जा के घर निज घर दा ख्याल रखना, जीवें जीयाँ दा तैनूं ज्ञान कीता।।
सार वस्त इयो बाकी झूठ माया, जिसने जगत ताईं परेशान कीता।
पूरी शिक्षा दे के मँझ ताईं, अपने घर नूं गुरां रवान कीता।।
घर जा के घर दी नूं कहन लगा, सतगुरु सतमारग मैंनूं ला दित्ता।
निज घर अन्दर निज रूप अन्दर, दासनदास ताईं गुरां विखा दित्ता।।

प्रेमी सतगुरां दा बन गया मँझ भाई, दुनियाँ विच निर्लेप हो के रहन लगा।
दित्ते छड ख्याल झूठे जगत वाले, शब्द गुरां दा दम दम कहन लगा।।
रज़ू ख्याल होया ऐसा गुरां पासे, जीवें पाणी निचान वल बहन लगा।
सतगुरु बाझ न रहया ख्याल कोई, गुरु दर्शन बाझ होन बेचैन लगा।।
स्वांसस्वाँस अन्दर जपदा नाम निसदिन,अठे पहर रह लगी समाध ओहदी।
सच्ची शान्ति वस गई दासअन्दर,भुल गई सतगुराँ बाझ सब याद ओहदी।

प्रीतम प्यारे दा भाई मँझ जिसदम, पूरा पा गया प्रेम ते प्यार नूँ जी।
सतगुरुसेवक दी करनअज़माईश खातिर,ओहदे लई सदया सेवादार नूं जी।।
रुक्का लिख दित्ता ओस सेवक ताईं, जाओ मँझ दे तुरत दुआर नूं जी।
इक्की रुपये सेवा कहना गुरां मंगी,नगद लेऔने न करना इकरार नूं जी।।
अमृतसर तालाब तैयार होंदा, सेवा मँझ दी विच ज़रूर होवे।
फायदा ओहदे विच होंवदा दास ताईं, सेवा सेवक दी जित्थे मंज़ूर होवे।।

ते-तक्या परवाना जेहड़ा गुरां घल्या, परवाना वेख मँझ जाये बलिहार भाई।
परवाना पढ़ परवाने दे वांग होया, वांग परवानेयाँ होवे निसार भाई।।
औगुनहार मैं औगुनां नाल भरया, ज़रा शुद्ध न मेरे विचार भाई।
किवें याद सतगुरां ताईं आ गया मैं, सच्ची दातां दे जेहड़े दातार भाई।।
सेवा करे गुरु सेवक दी नाल चित्त दे, बख्शी सेवा एह गुरु महाराज मैनूं।
हथ जोड़ पुछदा गुरुदास कोलों, किवें याद कीता सिर दे ताज मैंनूं।।

तेरे वल लिखया सतगुरु तां रुक्का, सेवा इक्की रुपये मँगवाई ओन्हां।
सेवा लै के औना ज़रूर ओस तों, पक्की नाल एह मैंनूं समझाई ओन्हां।।
अमृतसर तालाब लई एह सेवा, फहरिस्त विच नां तेरे लिखवाई ओन्हाँ।
सेवा देयो ते जावां मैं छेती वापस, लै के आवीं ज़ल्दी फरमाई ओन्हां।।

भाईमंझ ताईं सुण के फिकर लगा,इक्की रुपये सेवा कित्थों लेआवांगा मैं।
एह सेवा बनी न जे दास कोलों, सेवकां विच नां कीवें धरावांगा मैं।।

त्रिमत(स्त्री)मर्द नूं सेवा दा फिकर लगा,आपस विच पै करन विचार दोवें।
कित्थे रुपये कित्थे इक्की कौड़ियाँ नां,नज़र मार वेखणअन्दर बाहर दोवें।।
एस इम्तिहानों जेकर असीं फेल हो गये, झूठे होवांगे सच्चे दरबार दोवें।
पूरा होवे जो गुरु सवाल देंदे, काहनूं समझिये ऐवें दुश्वार दोवें।।
आपे करेगा ओह कामयाब सानूं, कोई लोड़ न सानूं घबड़ावने दी।
कार साज़ गुरु देव ही जाने आपे, बिगड़ी दासां दी जिनूँ बनावने दी।।

टे टाईम आया याद दोआं ताईं, किसे चौधरी रिश्ता साथों मँगया सी।
जितनी रकम दी लोड़ मैं दे दयांगा, एह गल कहंदयां ज़रा न संगया सी।।
ओहदा कहना लगा ओहदों बहुत बुरा, वांग सप करुंडिये डंगया सी।
गरीब होण कारण सुण के चुप हो गये,बड़ा मान हंकार विच खंगया सी।।
ओसे चौधरी नूं रिश्ता दे दैये, लड़की जायेगी लग ठिकानयां ते।
इक्की रुपये ओस तों सेवा मंग लैये, दास राज़ी होके सतगुरु भानयां ते।।

टलदा लेख नहोवे जो धुरों लिखिया,चौधरी उसदे लड़के वल साक कीता।
इक्की रुपये लैके सेवा चौधरी तों, मँझ सतगुरां दी पूरा वाक कीता।।
सतगुरां पिच्छे लड़की आपणी दा, ओसे चौधरी नूं सड के गाहक कीता।
करम धरम त्यागना पै जांदा, लेखा जनमां दा जिन्हां बेबाक कीता।।
इक्की रुपैये लैके सेवक चला गया, सतगुरां नूं बीती सुनाई उसने।
दास जीवें दित्ती रकम वेच लड़की, जीवें बहादुरी कर विखाई उसने।।

टक्कर स्वार्थ पिछे हर कोई झललैंदा, परमार्थलई ऐसी टक्कर जरेकोईकोई।

जन्म मरण पिछे लोकी मरी जांदे,सतगुरां पिछे आके मरे कोई कोई।।
अपने परिवार दी हर कोई करे सेवा, पैसा गैरां दी तली ते धरे कोई कोई।
राज डन्न चोरी चट्टी ज़र गुज़रन, धर्म अर्थ पुन्न दान नूं करे कोई कोई।।
तीरन्दाज़ बण के कई तीर मारन, कोई कोई तीर खांदा छाती तान अपनी।
दास गुरां दे लक्खां जहान अन्दर, गुरुमुख कोई जो देवे बलिदान अपनी।।

से- साबती दे विच जो होवे सेवक, सतगुरु रखदे ओहदा ध्यान भाई।
अहंकार मान दी ठोकर तों सेवक ताईं,युक्तियां नाल सतगुरु बचान भाई।।
मा पे नाल चलन जीवें बचयां दे, जदों टुरन दी जाच सिखान भाई।
डिग पवे न बच्चा बेसमझ किद्रे, नाल आसरे ओहनूँ टुरान भाई।।
सतगुरु सेवक दे इज्जे ही संग रह के, मान हंकार दे कोलों बचाई रखन।
मानसिक रोग गँवान दे लई सतगुरु,दासां ताईं इम्तिहान विच पाई रखन।।

साबित सिदक यकीन बनान खातिर, कसौटी परत परत लान प्यारेयाँ नूं।
घड़े ताईं कुम्हियार ज्यों मारे चोटां, अन्दर रखदे पूरे सहारेयां नूं।।
सोने ताईं ज्यों पान कुठियाली ज़रगर, उत्ते अग दे जोड़न अंगारेयां नूं।
अग तों कढ धरअहरन तें मारन चोटां,खोट कढन ज्यों समझसुनारेयां नूँ।।
ऐसे तरह करदे सतगुरु नाल सेवक, घड़ घड़ बनांदे सुच्चा लाल ओहनूँ।
कीट दास नूँ वाँग भृंग सतगुरु, प्रेम दे अपना मिलांदे नाल ओहनूँ।।

सबूत गुरांनूं होया विश्वासी सेवक,गुरुभक्ति विच डिठा चलदा चाल नूं जी।
इक्की रुपैये मंगवाईये होर सेवा, ख्याल उठया दीनदयाल नूं जी।।
दित्ता लिख रुक्का सेवक ताईं सतगुरु,दिलों वेखदे सिख दे ख्याल नूं जी।।
इक्की रुपैये लै के जल्द औना, हुकुम दित्ता सतगुरु अपने लाल नूं जी।।
हुकुम मिलदियां ही सेवक जा पहुंचा, भाई मँझ प्रेमी दे शहर नूँ जी।

दास वेख गुरुदास नूँ खुश होया, न्यूँ के चुमदा उस दे पैर नूं जी।।

जीम-जा के सेवक भाई मँझ ताईं, रुक्का देवँदा हुकुम अनुसार भाई।
मँझ देख गुरु सेवक नूँ नाल श्रद्धा,बारम्बार करदा नमस्कार भाई।।
हुकुम करो जीवें हुकुम गुरां दा है, ओस हुकुम तों जावां बलिहार भाई।
सदके जावां मैं ओन्हां राह उत्तों, आया चल जिस ते प्रीतम प्यार भाई।।
गुरु सेवक ने हुकुम अनुसार मँझ नूं, जाकर एह खबर सुनाई ओत्थे।
इक्की रुपये सेवा तेरे कोलों दासा, मैंनूं भेज के गुरां मँगाई ओत्थे।।

जदों पढ़या रुक्का ज़बानी हुकुम सुणया, सेवा लई सेवक फिर आया ए।
बारम्बार चुमदा उस रुक्के नूं जी, जिस विच लिख के गुरां फरमाया ए।।
इक्की रुपैये सेवा ज़िम्मे फेर लगी, बड़ा मँझ ने शुक्र मनाया ए।
करे करावेगा सतगुरु खुद आपे, तेरा इक ज़रिया बनाया ए।।
सेवा देन दा ढंग बना देसी, सतगुरु प्यारा मेरा करनहार आपे।
कोशिश करना दास दा फर्ज़ होंदा, मदद करनगे मेरे दातार आपे।।

जा के औरत दे ताईं कहन लगा, सेवा मंग भेजी दातार छेती।
इक्की रुपये सेवा लई होर मंगे, कित्थों देवांगे करिये विचार छेती।।
सेवा देन लई केहड़ी तज़वीज़ करिये, ज़रा तूं भी ध्यान चा मार छेती।
अर्धांङ्गनी अद्धे बोझ नूं चुक लैंदी, चुक सकें ते चुक ए भार छेती।।
वेला सोचन दा रहया नहीं गुरु प्यारी, जेकर मार सकें छाल मार दे तूँ।
सेवा दास दी गुरां नूँ जाय जल्दी, जेकर हो सके सेवा तार दे तूँ।।

चे-चलदीयाँ सन इशारेयां ते, औरतां पालदियां पति दी लज भाई।
इज्ज़त पति दी अपनी इज्ज़त जानन, परदा पति दा लैंदियां कज भाई।।

पति ताईं कोई बण तकलीफ जांदी, सेवा करदियाँ सन भज भज भाई।
आज्ञा पति तों कदी न बाहर जावन,जित्थे पति आखन जावन बझ भाई।।
मिट्ठा बोलना प्रेम प्यार अन्दर,सतवन्तियाँ सत कमांदियाँ सन।
दुःख दर्द नूँ करन कबूल दासा, टोरन मर्द जिधर उधर जांदियां सन।।

चरणां विच औरत हथ जोड़ कहंदी, त्वाडे इशारे नूँ गई हां जान प्यारे।
जीवें हुकुम होवे तिवें करांगी मैं, कादे वास्ते होये हैरान प्यारे।।
शरीर मेरा जेकर गुरु लेखे लगे, एथों उच्ची मेरी केहड़ी शान प्यारे।
मैंनूं वेच लौ सरे बाज़ार जाके, ज़रा उज़र नाहीं हाज़िर जान प्यारे।।
हड मांस ते गन्द दा एह थैला, होना इस ने इक दिन खाक सदके।
दास गहणें पाओ या वेचो किधरे, कर लौ सतगुरां दा वाक सदके।।

चंगी देह ओह जानिये भागां वाली, जेहड़ी लग जाय लेखे भगवान दे जी।
दित्तियाँ एस दे जो करां गुरु राज़ी, मेरे ज्यां कौन विच जहान दे जी।।
जित्थे आखोगे जावांगी उज़र नाहीं, मालिक तुसीं हो जिस्म ते जान दे जी।
बारम्बार नहीं जग दे विच औणां, जिसम धार के रूप इन्सान दे जी।।
जिवें किवें होवे मैनूं दे किधरे, बना के सेवा सेवक रवान करो।
इसे तरह सेवा एह करो पूरी , दासन दास न होर ध्यान करो।।

हे हक दे राह गहणे रख औरत, रुपये लै पक्ड़ाई चा बाँह भाई।
दिल धड़क्या ना ज़रा मँझ दा जी, औरत कीती नहीं अगों नां भाई।।
सेवा दे सेवक नूँ टोर दित्ता, ओह पै गया गुरां दे राह भाई।
जेहड़े सतगुरां दे दिलों हो जांदे, पावन परलोक विच सुखाँ दी छां भाई।।
पर सन्तां सतगुरां दी नूं चाहन जेहड़े, तन मन धन गुरां उत्ते ला जांदे।
ऐत्थे ओत्थे दोवां जहानां दे विच, उच्ची शान कर दास विखा जांदे।।

हैरान वेख लोकी सिदकी आशिकां नूँ, निसार होंदे जो वांग पतंग दे जी।
मक्खियां वांग लोभी गल्लां करन वाले, दूर रहंदे न कोलों दी लँघदे जी।।
गल्लां नाल ओ चढ़न आकाश उत्ते, किल्ली ठोंक के पग नूँ टँगदे जी।
अमल करन वाले दर्जे पा जांदे, नाम रंग विच मन जो रंग दे जी।।
बिना अमल दे गल्लां फज़ूल करके, मानुष तन दे ताईं गँवाए बन्दा।
रोटी रोटी कर कदी न भुख लहंदी, दासा जिचर न रोटी खाये बन्दा।।

हालत जीव दी उचर नहीं ठीक होंदी, रूहानी डाक्टर दी जिचर दवा नाहीं।
काम,क्रोध, लोभ, मोह, हंकार वाली, गुरां बाझ ए जांदी बवा नाहीं।।
लख पढ़े पुराण ग्रन्थ भावें, जावे मन दी चंचलता नाहीं।
अमल बाझ न आलिमां कुझ पाया, फिदा होन बिन मिले खुदा नाहीं।।
जिचर गुरां दी होवे न मेहरबानी, उचर मिले न सुखां दी छां प्यारे।
दास एस ताईं एथे बन्द कर के, अगों अगली गल चलान प्यारे।।

खे-खबर भेजी सतगुरु प्यारे, भाई मँझ आ कर दीदार जावे।
खबर सुनी जिसदम गुरां याद कीता,खुशियां विच भाईमँझ बलिहार जावे।।
चल प्या फिर भाई मँझ दर्शना नूँ, दिल विच वधदा प्रेम प्यार जावे।
विच खुशियां दे नचदा टपदा ओ, सतगुरां दे पहुँच दरबार जावे।।
दर्शन खोल के बैठे गुरदेव अगे, दूरों दर्शन कीते जदों मँझ भाई।
दास कर दर्शन सुख शान्त होया, दुःख दर्द न रहया कोई रंज भाई।।

ख्याल कीता गुरां भाई मँझ आया, वरतन ओदे लई नवें दस्तूर नूँ जी।
खुशियाँ नाल जाके भाई मँझ प्रेमी, टेकन लगा मत्था जद हूज़ूर नूँ जी।।
गुरां मँझ पासे पिट्ठ कर दित्ती, जीवें कर कोई आया कसूर नूं जी।
कुर्बानी कर के आया सी बहुत भारी, अहंकार पा न देवे फतूर नूँ जी।।

एस वास्ते गुरां ने मँझ वल्लों, मुख आपणा जाण के फेर लिया।
दास ऐसी लीला वेख दुःखी होया, हर पासों वहमां ने घेर लिया।।

खैर करे मेरे ते गुरु मेरा, नज़र आवंदा सख्त नाराज़ मैंनूं।
बुलाया आप आके कर जा भाई दर्शन,आयां दर्शन न देण महाराज मैनूं।।
न वेखन न बोलदे नाल मेरे, न कुझ दसदे मेरा इतराज़ मैंनूं।
लड़यां होया वांगन पै नज़र आवें, एहदे विच कोई दिसदा राज़ मैनूं।।
असल विच सतगुरु सोचन भला उसदा, दर्शन दित्तयां होसी हंकार एनूँ।
कुरबानी करके दास दरबार आया , मान हंकार न दे जाय हार एनूं।।

दाल- दिलों सोचे ते हथ जोड़े, केहड़ी कर बैठा ऐसी कार साईं।
जिस लई बुला के विच चरनां, देंदे फिर भी नहीं दीदार साईं।।
सदा जीव होंदे भुलनहार स्वामी, अनभुल हो तुसीं दातार साईं।
बख्श देओ जेहड़ी गल्ती कर आया, भुलनहारे ताईं बख्शन हार साईं।।
सतगुरु दर बाझों नहीं कोई थां मेरी, नाओटियां दी सतगुरु ओट होंदे।
सतगुरु बाझ न कोई भी कढ सके,दासाअन्दर जेहड़े मानसिक खोट होंदे।।

देख मँझ दे दिली प्रेम ताईं, कहंदे केहड़ी कोई सेवा कमाई तूने।
तैनूँ आख्या सी सेवक बनना मुश्किल, सेवक बनन दी दित्ती सफाई तूने।।
निरियां गल्लां ही कर विखान वाला, अमली कार्रवाही केहड़ी विखाई तूने।
इकरार करके पूरा न कोई कीता, साडे नाल वाह चंगी निभाई तूने।
विचों सतगुरु ओस ते बहुत राज़ी, उत्तों देवंदे होर वखालयां नूँ।
दासन दास ते किरपा दा हत्थ देके, मान हंकार दे तोड़दे तालयां नूँ।।

दीन दयाल कहंदे भाई मँझ ताईं, सेवा लंगर दी अगों कमानी है तूँ।

बरतन मांजने ते लंगर साफ करना, भरना लंगर अन्दर रोज़ पानी है तूँ।।
बड़े प्रेम दे नाल संगत आई होई नूं, दोवें वक्त रोटी छकानी है तूँ।
बचे वकत विच जंगलों लै आवीं बालण,सेवा बाझ न घड़ी गंवानी है तूँ।।
सुन के हुक्म सतगुरां दा मँझ भाई, खुशियां विच न फूला समावंदा ए।
दास नाल बोले किरपा नाल सतगुरु, लख वार सदक्कड़े जावंदा ए।।

डाल- डेरा लंगर विच ला केते, हुक्म अनुसार ओह सेवा कमान लगा।
जीवें जीवें सतगुरां फरमान कीता, ओसे तरह नित सेवा कमान लगा।।
सेवा लंगर दी तों मिले वक्त जेहड़ा, बालण लैन खातिर रोज़ जान लगा।
जूठी संगत दी बची जो होवे रोटी, बड़े प्रेम दे नाल ओह खान लगा।।
सेवा रूप होया भाई मँझ ऐसा, रंग भक्ति दा चढ़या कमाल ओहनूँ।
जीवें कीट नूँ भृंग बनाये दासा, तीवें मिलाया सतगुरु अपने नाल ओहनूँ।।

डोरी प्रेम दी गुरां नाल दिलों जुड़ गई, होर रहया न गैर ख्याल भाई।
इन्तज़ाम लंगर दा वेखन वास्ते जी, इक दिन पहुँच गये दीन दयाल भाई।।
सारी संगत कोलों जा के पुछदे ने, भाई मँझ दा किवें हुन हाल भाई।
सेवा लंगर दी क्याओह ठीक करदा,संगत नाल चलदा केहड़ी चाल भाई।।
नाले रोटी भाई मँझ कित्थों खांदा, सतगुरु पुछदे वांग वकील दे जी।
दासन दास अगों हथ जोड़ कहंदे, सेवा करे मँझ नाल दलील दे जी।।

देर लांदे न सेवा विच जुट जांदे, सतगुरां नूँ सारे सुनावंदे ने।
सेवा लंगर दी हित नाल दिने रातीं, बड़े प्रेम दे नाल कमावंदे ने।।
जेहड़ा वकत बचे बाकी लंगर विचों, जंगलों लकड़ां लैन टुर जावंदे ने।
बची संगत दी होवे जेहड़ी रोटी, बड़े प्रेम दे नाल ओही खावंदे ने।।
एसे तरह प्रेमी निसदिन करे सेवा, लंगर अन्दर भाई मँझ रह के ते।

आफरीन जाईये ऐसे दास उत्तों, गुरुमुख बन गया सेवा विच पै केते।।

ज़ाल-ज़िकर अन्दर कीती संगत, सतगुरु हँस के अग्गों फरमावंदे ने।
उपमा योग ओहदी कीवें होई सेवा, रोटी लंगर जेकर भाई जी खावंदे ने।।
सेवा करे ऐत्थे रोटी खावे बाहरूँ, सतगुरु प्रेमियां ताईं सुनावंदे ने।
फेर सेवा ओहदी महिमा लायक सारी, एह गल सेवकां ताईं जतावंदे ने।।
एह गुरु वचन सुणे भाई मँझ किदरों, रोटी खाण दा बाहरों प्रबन्ध कीता।
सेवा दास करे अगे वाँग पूरी, खाना लंगर तों खावणा बन्द कीता।।

ज़रा डोलिया ना मँझ एस गलों, सेवा करदा नाल ध्यान दे जी।
सेवा अगे नालों सगों बहुत करदा, शोहरत फैल गई विच जहान दे जी।।
सतगुरु सी ओस ते दिलों राज़ी, दिल दा टुकड़ा ओस नूँ जान दे जी।
एह पर ज़ाहिरा भाई मँझ नूँ पता लगे,सेवकां वांग नहीं मैंनूं पछान दे जी।।
ऐसा समझदेयां होयां भी लगा रहंदा, सेवा वलों न सेवक ज़रा हारदा ए।
दिने रातीं भाई मँझ दास बण के, गुरु गुरु ही सदा पुकारदा ए।।

ज़ाती कम असल विच सारियां लई, निसदिन गुरां दी सेवा कमाये बन्दा।
मानुष तन मिलिया इस लई जीव ताईं,आवागमन दा चक्र मुकाये बन्दा।।
जिस घर तों भुलया जीव फिरदा, सतगुरु सेवा नाल निज घर जाय बन्दा।
होर मतलब ना मानुषतन पावने दा,एहो मतलब रूह दुःखों छडाय बन्दा।।
बरअक्स इसदे हो के बन्दा गन्दा, लख चौरासी गेड़ विच है जांदा।
दास बन के न कीती गुरु सेवा, उल्टे दुःख सहेड़ के लै जांदा।।

रे- रोज़ लंगर दा कम्म करके, शामे लकड़ां लैन जंगलों जांवंदा ए।
इक दिन लकड़ां दा गट्ठा बन केते, सिर आपणे उत्ते उठावंदा ए।।

चुक के गट्ठा ते चल पया जदों ओत्थों, अगों मालिक की भाणा वरतावंदा ए।
अचनचेत हनेरी काली आन झुली, जिस लई राह न नज़रीं आंवदा ए।
ऐसा पाया भुलेखा हनेरी काली, राहों भुला कुराह उत्ते पा दित्ता।
लगा ऐसा धोखा दास मँझ ताईं, हनेरी खूह दे विच वगा दित्ता।।

रही ताक्त नहीं वडेरी उमर सदका,एहपर भक्तिदी शक्तिअन्दरआई हुई सी।
चोट लगियां ना महसूस होवन, सुरति गुरु चरणां विच लाई हुई सी।।
गोते प्या खावंदा भावें मँझ भाई,भिजनूं गट्ठ ओस फिर भी बचाई हुई सी।
दिल दी तारसच्ची भाईमँझ प्यारे,सतगुरु प्रेम दी तार विचमिलाई हुई सी।।
तार दिसी पहुँची झट सतगुरां नूँ, फट उठ बैठे मेहरबान प्यारे।
मँझ दास साडा खू विच डिग पया जे, चलो सारे लै चलो सामान प्यारे।।

रस्से ले आओ ते सारे चलो छेती, खबर गुरां ने फट सुनाई ओत्थे।
रही सबर न चल पै नंगी पैरीं, चरणदासी न गुरां ने पाई ओत्थे।।
नंगी पैरीं सतगुरु पहुँच गये छेती,नाल दी पहुँच गये सेवक सिपाही ओत्थे।
खू दे विच सतगुरां ध्यान करके, आवाज़ मँझ दे ताईं लगाई ओत्थे।।
कह्या फिकर न कर असीं आ गये हां, तैनूँ लोड़ नहीं हुण घबड़ावने दी।
दासन दास नूँ दुःखों छुड़ान बदले, महापुरुषों नूँ पैंदी लोड़ आवने दी।।

ज़े ज़बानों पुकार भाई मँझ करदा, फिकर करो न मेरे बचान वाला।
बालण भिज न जावे ऐनूँ बाहर कड्ढो,औखा होवे न लंगर बनान वाला।।
सुनके रस्सेनाल बालणनूँ बाहरक्ढया,जेहड़ा रस्सासी विच लमकान वाला।
उसे रस्से नाल मँझ फिर बाहर आया,डिट्ठा सतगुरु करन करान वाला।।
प्रेमी प्रेम पिच्छे सतगुरु अखां विच्चों, भर के जल धारा पै वगांवदे ने।
चिक्कड़ भरे कपड़े नाले लहू वगदा, दास मँझ ताईं छाती लावंदे ने।।

ज़बरदस्त प्रेमी सतगुरां पिच्छे, सरबंस आपणा सारा लगा गये।
लड़की औरत सरे बाज़ार दे के, नाल सतगुरां दे पूरी निभा गये।।
गुरां पिच्छे सुमन मोरध्वज जैसे, फरजन्द आपणे आप मरवा गये।
तारो सिंह मणि सिंह गुरां पिच्छे, सीस आरियाँ नाल चिरवा गये।।
नाम जिन्हां दे अज तक हैन रौशन, नाम उन्हां ने पहला मिटा दित्ता।
मिटन बाझ न मिटदे जनम लखाँ, दास जनां ने कर विखा दित्ता।।

जमीं आसमां जदों तक कायम रहसन, जिन्दा रहेगा उन्हां दा नाम भाई।
मानुषतन दा जेहड़े नहीं कद्र करदे,इन्सानी जन्मकर जासन बदनाम भाई।।
पंजभूतिक शरीर बिन भजन सेवा, पंजां चोरां दा बनदा ओह गुलाम भाई।
अन्त काल दुःखां विच पै जांदे, कर जावंदे जन्म हराम भाई।।
मानुष तन पाके सतगुरु सिमरना सी,बिगड़िया जन्मां दा सारा सँवारना सी।
दास गुरां दा जे तूं बनया ना, मानुष तन फिर काहनूँ धारना सी।।

सुमन-मुसन

अलफ-अस्तुत करां प्रथमसतगुरु दी,भुलयां जीवां दा जेहड़ा सुधार करदा।
काम-क्रोध-मोह-लोभ अहंकारकोलों, सोहणियाँ युक्तियाँ नाल छुटकार करदा।
दयावान न सतगुरु जेहा कोई, दुखियाँ ताईं प्या दुःखाँ तों पार करदा।
जुगो जुग आवे सन्त रूप धर के, निराकार तों रूप साकार करदा।।
ऐसे सतगुरु दी मदद लै के, मैं सुमन-मूसन दा हाल सुनान लगा।
जीवें गुरु भगती विच कायम दोवें, दास दासां दी कविता बनान लगा।।

बे- बड़े गुरु प्रेमी सन सुमन मूसन, सेवक गुरां दे वांग सिपाही दोवें।
लाहौर शहर दे ओ सन रहन वाले, सदां नवां दी करन कमाई दोवें।।
सतगुरां नाल दिलों प्रेम करदे, दम दम विच जाहिन लिव लाई दोवें।
प्यू पुत्र सन दोवें जगत रिश्ता, दिलोजान प्रेमी गुरभाई दोवें।।
एह पर अत गरीब सन ओ दोवें, सबर शुक्र नाल वक्त गुज़ारदे जी।
गुरु अर्जुनदेवजी आ गये लाहौर इकदिन,दास जनां दे दुःख निवार दे जी।।

पे- प्यू पुत्तर एह विचार करदे, संगत होवे थोड़ी उस दिन जाईये जी।
जाके गुराँ अग्गे असीं अर्ज़ करिये,प्रशाद साडे घर भी सतगुरु पाईये जी।।
दिनों दिन संगत सगों जाये वधदी, पै सोचदे की बनाइये जी।
स्याणे आखदे बुरे लगदे सोचिये, ते भले कम लई देर न लाईये जी।।
ए पर पल्ले नाहीं कुछ खर्च साडे, हलवाई कोल जा करिये विचार पहलों।
रोटी सतगुरां दी असां आखनी जेकर, दासां लई करें उधार पहलों।।

ते-तसल्ली नाल कोल हलवाई जाके, अर्ज़ करदे नाल प्यार भाई।
रोटी सतगुरां दी असां आखनी ए, जे कुछ दिनां लई करें उधार भाई।।
थोड़े दिनां विच उधार चुका देसां, तेरे नाल एह सच्चा इकरार भाई।

पत्त शाह बाझों जीवें गुरां बाझों, होंदा जीव दा नहीं सुधार भाई।।
सूद नाल गिन के देसां रकम सारी, कर साडे उत्ते एतबार प्यारे।
दासन दास न भुलनगे एह नेकी, पूरी आस कर दे इक बार प्यारे ।।

टे- टाईम ओस हलवाई कहया, मुश्किल कोई नहीं देना उधार भाई।
एह पर दित्ता उधार चुका देना, मेरे साईं बयू-जिब इकरार भाई।।
आखो जाके गुरां दे ताईं बेशक, मेरे दिलों न होसी इनकार भाई।
जिस वेले आ के मैथों मंगो खाना, कर देवाँगा झट तैयार भाई।।
मैं खड़ा हाज़िर करसां मदद पूरी, ज़रा जियाँ दा फरक न पांवांगा मैं।
दासनदास जो कीती ज़ुबान मैंने, मैं थों तीक होई तोड़ निभावाँगा मैं।।

से-साबित कदम जद हलवाई धरया, उसे वक्त गये गुरु दरबार नूं जी।
समेत संगत सतगुरु प्रशाद पाओ, जाके आखदे सच्ची सरकार नूँ जी।।
चरण पाके करो पवित्र चौका, कहंदे जा दोवें सत्तकर्तार नूं जी।
सतगुरु बाझ न जीव दी गति होंदी, जाके आखदे पर उपकार नूं जी।।
बाझ सतगुरु जीव न तरन जाने, भवसागरों जीव न पार होंदा।
सतगुरु बाझ न दास निज घर पहुँचे, सतगुरु बाझ न शुद्ध विचार होंदा।।

जीम- जदों सुनी अर्ज़ सतगुरां ने, मन्ज़ूरी रोटी दी झट फरमावंदे ने।
प्यू-पुत्र उसे वक्त खुशियाँ अन्दर, घर आपणे दौड़ के आवंदे ने।।
उधरों सतगुरु जीव इम्तिहान खातिर, इक नवीं चा खेड खिडावंदे ने।
जीव रूपी घड़े नूँ लान चोटां, सहारा दे अन्दरूँ गढ़दे जावंदे ने।।
सोना पोवे न जेचर कुठालड़ी विच, सख्त अग बाझों नहीं साफ होंदा।
हिसाब जनमां दा भगति कमान बाझों, लेखा दास दा नहीं मुआफ होंदा।।

चीम-चाल हलवाई नूँ लाई किसे, कहंदा है कोई तैनूं हैवान भाई।
सुम्मन-मूसन दोएं प्यू पुत्तर भुक्खे,उधार जिन्हां नूँ लग्गों खवान भाई।।
अज उधार देके कल नूँ लैंगा की, ईवें लगा क्यों रकम गंवान भाई।
मैं तां जाणदा इन्हां नूँ बहुत चिरदा, गली मूड़ी न कोल मकान भाई।।
फाटे कपड़े रहन हमेश नंगे, भुखियाँ रहके वकत लंघा देंदे।
दासन दास रोंदे तेरे वांग पिछों, उधार एह जिहाँ नूं खवा देंदे।

हे- हाल सुन कहंदा हलवाई अगों, बिल्कुल ठीक न देसां उधार भाई।
रकम नकद बाझों सौदा नहीं देणा, आई मैंनूं वी हुण विचार भाई।।
तेरह उधार नालों नौ चंगे, इवें पिछों प्या होसां ख्वार भाई।
इको ना दो सौ है सुख होंदा, बाज़ी जीती नूं देआँ क्यों हार भाई।।
कहना दुश्मन दा सुन हलवाई झटपट, कीते धर्म उत्तों बेईमान होया।
कीती ज़ुबान तों झटपट फिरन दासा, भुल्या जिन्हाँ नूँ भगवान होया।।

खे-खुशी खुशी सुमन-मूसन दोवें, सौदा लैन लई हलवाई कोल आवंदे ने।
लाला जी सौदा दयो तौल सानूँ, हलवाई ताँई जा अर्ज़ सुनावंदे ने।।
पैसे नगद देवो देना उधार नाहीं, लाले होरीं ए अग्गों फरमावंदे ने।
सुन के गल हलवाई दी ओस वेले, प्यू-पुत्र बहुत घबरांवदे ने।।
ज़ुबान करके लै पूरा उतरया ना, कम एह नहीं ठीक इन्सान दा जी।
तेरे वांग ज़ुबान करें दासा, कम चलेगा कीवें जहान दा जी।।

दाल-देना उधार नहीं हलवाई कहंदा,कल तों भुखयाँ कोलों की लवाँगा मैं।
त्वाडे कोलों वसूल नहीं कुछ होवणा,जेकर विच अदालत दे जावांगा मैं।।
छोटी-मोटी जयदाद न मूल दिस्से, सहारे जैंदे उधार देआँगा मैं।
आखिर भुख्याँ कोलों जवाब मिलना, भावें फेरे उत्ते फेरा पावांगा मैं।।

ऐस लई मैं नहीं उधार देंदा, कानूँ दुखी होंवा आखिरकार नूँ जी।
करना नकद लेके सौदा दवां दासा, करना भुल के नहीं उधार नूँ जी।।
डाल- डोलिया वेख हलवाई ताईं, प्यू-पुत्र होये शरमसार दोवें।
सतगुराँ वलों जेकर होये झूठे, जीवंदे मरांगे विच संसार दोवें।।
की करिये हुण कोई नहीं पेश जांदी, एह विच पै करन विचार दोवें।
कोई नज़र न आंवदा होर दाता, जिसदे कोलों जा लइये उधार दोवें।।
हथ जोड़ पुकारदे गुरां अग्गे, तूँ ही नाआसरां दी मददकार स्वामी।
बेईमानी धोखे दा भरमा दासा, वेख डिट्ठा एह सब संसार स्वामी।।

ज़ाल- ज़िक्र एहो मिले किधरों पैसा, राज़ी होवन जीवें दीन दयाल साडे।
आखिर सोचदियाँ दोवां नूँ सोच आई, धनवान गवांडी है नाल साडे।।
लाके सन रातीं एहदे घर वड़िये, शायद आवे अन्दरों हथ माल साडे।
कामयाबी शायद सतगुरु कर देवन, ओ ज़ाहन दिली ख्याल साडे।।
सच्चे दिलों करदे चलिये हिम्मत दोवें, मदद करेगा दीन दयाल साडा।
मिल जावे रकम एसे तरह दासा, पूरा हो जाये जेहड़ा सवाल साडा।।

रे- रात वेले चढ़ के कोठे उत्ते, दोहां जाके कोठे नूँ फाड़ दित्ता।
आप खड़ा रहिया सुमन कोठे उत्ते, मँघ विचों ओस पुत्र नूँ वाड़ दित्ता।।
जो कुछ माल उस पुत्र दे हत्थ आया,भर के थैली ते कोठे उत्ते चाढ़ दित्ता।
खुशी नाल मूसन होया आन मोटा, लंघया जाय न जित्थों सी पाड़ दित्ता।।
फँस गया हेठां न उतां होवे, प्या कंमदा वांगरां तोरियाँ दे।
भगतां ताईं चोरियाँ खुलन दासा, वाकिफ होवंदे नाहीं ओ चोरियाँ दे।।

ज़े- ज़ोर लावे जावे निकलिया नां, प्यू नूं कहंदा हुण सीस उतार छेती।
दिन चढ़न नूँ बिल्कुल तैयार होया, फड़ लेवे न कोई पहरेदार छेती।।

थैली खर्च के गुरां दी करें रोटी, सिर ते चुकियां भार उतार छेती।
मत्ते सतगुरु न प्रशाद खावण, जे किसे कर दित्ता भेद जाहिर छेती।।
वेला हत्थ न आयेगा एह पिता मेरा, जेकर लया न सिर उतार मेरा।
जिचर दासनदास न वढना तूँ, आखिर राज़ी नहीं होवना दातार मेरा।।

सीन-सुनी पुत्र दी गल जिसदम, कहंदा किस तरह मारां कटार बच्चा।
कीवें वढ लेवां मैं उस सिर नूँ, जिसनूँ चुम्मां तां करां प्यार बच्चा।।
जिसनूं वेख कलेजे नूँ ठण्ड पैंदी, हत्थीं कीवें दियाँ ओसनूँ मार बच्चा।
पुत्रां नाल होंदी है साँझ जगदी, पुत्राँ नाल ही वसे संसार बच्चा।।
पुत्राँ बाझ न जग निशान होंदा, पुत्रां बाझ न बाग परिवार होवे।
बेतरस होके कीवें दास वड्ढां, मेरे कोलों ए करना दुश्वार होवे।।

शीन-शेर पुत्र अगों गज कहंदा, हमेशा रहन दा इत्थे मकान नाहीं।
रास दमां दी इक दिन खतम होणी, सदा जिसम दी रहनी दुकान नाहीं।।
ओचर गुरांनाल कदी नहीं बनआवणी,जिचर विचों जिसनूँ जानीजान नाहीं।
जीवंदे मर गये दोवें गिने जावांगे, जेकर गुराँ नाल पूरी ज़ुबान नाहीं।।
वक्त सोचन दा रहया न पिता मेरे, प्रेमी गुराँ दे नहीं घबड़ा जाँदे।
सीस वारदे गुरां तों दास जेहड़े, उच्ची पदवी दे ताईं पा जाँदे।।

स्वाद-सही ए पुत्रा गल तेरी, मेरा हौंसला ना सहारदा ए।
अज तीक ए अग्गे न कदी होया, प्यू पुत्र दा सीस उतारदा ए।।
गैर आदमी पुत्र नूँ झिड़क देवे, उत्थे प्यू न झट गुज़ारदा ए।
बीमार हो जावे जो कदी पुत्र, फिकर भुल जाँदा घर बार दा ए।
ए मैं जानना आया इम्तहान सिर ते, फेल होयां न गुरु दीदार होसी।
बाझ दीदार सतगुरु दे कदी दासा, भवसागर न बेड़ा पार होसी।।

ज़्वाद- ज़ाये न कर मिले वकत ताईं, क्यों पुत्र विच ख्याल अटकाया तूँ।
परिवार प्यार संसार झूठा, जिन्हां नाल प्यार बधाया तूँ।।
सतगुरु बाझ न कोई भी मदद करदा,ख्याल जिसदा दिलों भुलाया तूँ।
जदों मर गया ते सह जावणा ए, समझ लै ओह वेला आया तूँ।।
सिर उतार मेरा कर के हिम्मत पूरी, गुरुमुख बन क्यों हौंसला हार बैठों।
करके सतगुरां नाल इकरार जेहड़ा, माया झूठी विच ओह विसार बैठों।।

तोय- तरफ सतगुरां दी ख्याल करके, सुम्मन पुत्र दा सीस उतारदा ई।
खट्ठी खट जांदे ओह जहान विचों, गुरां पिछे जो पुत्र नूँ मारदा ई।।
आपणा आप गँवा के शौह मिलदा, गल्लां नाल करतार न तारदा ई।
मोरध्वज राजा सतगुरां पिछे, उत्ते आरे दे पुत्र नूँ वारदा ई।।
सरबंस ला लेवंदे जो जन गुरां पिछे, ओह फिर अपना जनम संवार जांदे।
दासन दास जे गुरां दे दिलों प्रेमी, पतंग वांग जिन्द शमां तों वार जांदे।।

ज़ोय- ज़ाहिर न कतल होण दित्ता, सिर पुत्र दा घर ले आया ए।
ल्या के पुत्र प्यारे दे सिर ताईं, उत्ते, चादर दा परदा पाया ए।।
दिन चढ़या ते ओदरों सेठ डिट्ठा, मुर्दा होनी ने घर लमकाया ए।
वेंदयां सार ही सेठ ने गश खादा, देख मुर्दे नूँ बहुत घबराया ए।।
जेकर पुलिस नूँ किधरे खबर हो गई, कीवें अपनी जान बचावांगा मैं।
दासन दास बेदोष नहीं किसे कहना, मुर्दे एस कारण फड़िया जावांगा मैं।।

ऐन- अर्ज़ करे हथ जोड़ के ते, रब्बा भेजे कोई मुर्दा ले जान वाला।
मुँह मंगी मजूरी मैं देवां ओहनूँ, अज मिले कोई मैंनूँ बचान वाला।।
सुमन-मूसन गरीब हमसाय मेरे, जेकर उन्हां दे ताईं सुनान वाला।
होर किसे नहीं करना ए कम मेरा, मुर्दा अन्दरों बाहर वगान वाला ।।

गया दौड़ के उन्हां दे घर लाला, बाहरों जाके करे खड़कार नूँ जी।
सुमन सुणदियाँ सार खड़कार दासा, झट आ गया दौड़ के बाहर नूँ जी।।
गैन- गर्ज़ बणी अज आन डाढी अर्ज़ पर्दे नाल ओह सुनावंदा ए।
मुर्दा घर मेरे इक लमकदा ए, देख ओनूँ प्या दिल घबडवंदा ए।।
तेरे बाझ एह किसे नहीं कम करना, होर किसे कोलों डर आंवदा ए।
खुश होके देवांगा ओह तैनूँ, जो कुछ प्यारे दिल तेरा चाहवंदा ए।।
सुमन सुन उसदी अगों अर्ज़ करदा, देन लैन वाली कोई लोड़ नाहीं।
अगे आप दा लिया है बहुत दासा, साडा शाह जी लैन नाल जोड़ नाहीं।।

फे-फर्ज़ गवाँढी दी मदद करना, कहया सुमन अगों साहूकार नूँ जी।
ओसे वेले सुमन कंढ ते रख मुर्दा, झटपट ले आया उत्थों बाहर नूँ जी।।
जाके मुर्दे नूँ सिर दे नाल धरया, याद कीता फिर ओस दातार नूं जी।
रोटी करके इसदा संस्कार करसां, फुल लै जावाँगा हरिद्वार नूँ जी।।
रोटी गुराँ दी दा फिकर शुरु कीता, ओसे वकत हलवाई कोल जावंदा ए।
रकम कढ हलवाई दे आवां दासा, जाके ओस नूँ तुरत फड़ावंदा ए।।

काफ- कीमत सौदे दी दे के ते, हलवाई ताईं कहंदा सौदा तोल भाई।
एनां बरतनां दे विच पा दे तूँ, जेहड़े धरे हुए तेरे कोल भाई।।
कर ज़ुबान न पूरा उतरया तू, धर्म इमान तों गया साईं डोल भाई।
इस ज़ुबान नाल धियां दे साख होंदे, कीता होया चा बदलयों बोल भाई।।
जो कुछ होया कुद्दरत ने ठीक कीता,कोई तेरे नाल न रहयाअख्तियार हैसी।
पाई तकलीफ सी असां ज़रूर दासा, लिखया होया एह रंज दातार हैसी।।

काफ- कराके रोटी तैयार उस तूँ, फेर सतगुरां दे दरबार आया।
अर्ज़ करदा चलो प्रशाद पाओ, रोटी कहन लई सेवादार आया।।

भार लहाओ जेहड़ा असां चुक्या ए, प्रशाद सब लई कर तैयार आया।
समेत संगत चलो स्वामी घर मेरे, पूरा करन दे लई इकरार आया।।
चरण पाके करो पवित्र घर नूँ, पूरी करो चलके सतगुरु आस साडी।
तू ही साडा तां असीं हां दास तेरे, बुझाओ दिल दी लगी प्यास साडी।।

गाफ- गुरुमहाराज सुण के अर्ज़ उसदी, समेत संगत दे होय रवान भाई।
प्रेम नाल बिठा के संगत सारी, सुमन लग प्या हत्थ धुवान भाई।।
अन्तर्यामी सतगुरु फरमान लगे, मूसन आया नहीं सेवा कमान भाई।
दाना-पानी ते गुरां दा अगे होंदा, सेवक सेवा बिन दुःख उठान भाई।।
उसनूँ बुला ते संगत नूँ पक्खा झले, या पानी पिलावे आन के ते।
दासनदास बनके फिरभीआवंदा नहीं,कित्थे सौं रहयाओह चादरतान केते।।

लाम-लब्भां कित्थूं सुमन कहन लग्गा, पता नहीं किधर मुँह लुका गया ए।
त्यार करो लंगर छेती छेती सारा, सानूँ जावंदियाँ एती सुना गया ए।।
मैं इकल्हा सवेरे दा लगा होया, सारा कम मेरे ज़िम्मे ला गया ए।
कित्थों ढूँढा जाके गया दस के नहीं, पता नहीं ओह कित्थे समा गया ए।।
ए पर जावंदियाँ कह गया एह नाले, सतगुरु सदया बाझ न आवणा मैं।
सतगुरु बाझ न कोई लिया सक्के, दासा जेहड़ी थां ते अज जावणा मैं।।

मीम- मेरे आखे उस नहीं आवणा, आवाज़ मारो तुसीं जाणी जाण आपे।
तुहाडे सदयाँ बाझों न औ आवसी, जेहड़े पासे ने लाया ध्यान आपे।।
सुण के अर्ज़ सुमन दी मूसन ताईं, सतगुरु मार आवाज़ बुलाण आपे।
आवाज़ सतगुरां दी जिस दम गईओत्थे, बोलण लग पईओंदी जुबान आपे।
दौड़दा दौड़दा सतगुरां कोल आया, जदों सतगुरां ने दित्ते प्राण ओहनूँ।
कित्थे गया सैं सेवा नूँ छड दासा, बड़े प्रेम दे नाल फरमान ओहनूँ।।

नून- नम्रता नाल मूसन कहन लगा, निर्धनां दे हो धनवान तुसीं।
जीवें मौज़ आवे तीवें करो स्वामी, आपे रक्खो तो करो फरमान तुसीं।।
मैं की जाणदा हां कित्थे गिया सां मैं, कदी कड्ढ लेवो पाओ जान तुसीं।
करनहार हो आप जहान अन्दर, न गत्ते न अत्ते दी शान तुसीं।।
जीव समझ न सकदा रत्ती जिनी, जेहड़ी जीव लई लीला लचा देंदे।
अकल भुल जांदी ऐसी आन दासा, परचे जिस तरह दे सतगुरु पा देंदे।।

वा- वाकई जीव दे जगत अन्दर, नेओटियाँ दे तुसीं ओट सतगुरु।
ऐसी किरपा दी लीला रचा के ते,कड्ढो जीवां दे मानसिक खोट सतगुरु।।
बाज़ी लाके प्रेम-शतरंज वाली, जीव रुपी करो पार गोट सतगुरु।
सहारा दे कुम्हिआरे ज्यों घड़ा घड़े, बाहरों मारों तीवें तुसीं चोट सतगुरु।।
पूरे सोलह आने नुकस दूर करके, करों जीवां नूँ भव वलों पार स्वामी।
गुरु महिमा दा अन्त न दास पावे, तेरी महिमा तों जावां बलिहार स्वामी।।

हे- हर सेवक आपणे सतगुरां ते, तन मन धन नाल दिलों निसार होये।
उज़र कीता न हुक्म नूं रहे मनदे, भवसागरों तां जाके पार होये।।
लड़कियाँ औरतां वेचियां गुराँ आप पिछे, शहीद फिर नाल तलवार होये।
झूठी रोटी खादी बची संगतां दी, ताँ भी गुरु दे शुक्र गुज़ार होये।।
बारह बरस पाणी भरया गुराँ पिछे, उच्ची पदवी पाई करनी करके ते।
पर कोई पहुँचा हो कुर्बान दासा, जो कोई पहुँचया पहुँचया मर के ते।।

ये- याद प्रभु लेनी गुरु भगती, सतगुरु साडे कर दित्ती आसान प्यारे।
दो टाईम करनी पूजा आरती ते, घन्टा करना गुरु दा ध्यान प्यारे।।
वक्खो वक्ख ड्यूटी दित्ती हर इक नूँ, जीवां उत्ते हो के मेहरबान प्यारे।
खान हंडान लई सतगुरु देन कोलों, रहन वास्ते दित्ते मकान प्यारे।।
एते सुख होयां जो न करन भगती,फिर ते बहुत अफसोस उन्हां सारयाँ ते।
सतगुरु फरमावंदे वक्त न जाये दासा, बेड़ी ला लओ छेती किनारेयाँ ते।।

रेख विच मेख

ऐन-अर्ज़ करां अग्गे प्रेमियां दे, ऐसी कविता इक कीती तैयार भाई।
रेख विच मेख ज्यों मार देंदे, रिसाले विच दित्ती एस वार भाई।।
हरगोबिन्द सतगुरु छेवीं पादशाही,अपने वक्त विच जदों अवतार भाई।
सुकेत मण्डी दा राजा ओस समय, खास गुरां दा सी सेवादार भाई।।
अमृतसर गुरु दरबार लाके, देंदे दर्शन सन प्रेमी प्यारेयाँ नूँ।
सतसंग दी वरखा कर के ते, समझांवदे सन दासां सारेयां नूँ।।

ऐन- मौक्या ते दर्शन आन कीते, दण्डौत प्रणाम कीता राजे आन भाई।
खुले दिल दे नाल कीती ओस भेटा, जीवें राजयाँ दी होंदी शान भाई।।
भोग प्रशाद लै लिया जदों राजे,सतगुरु करदे खास फरमान भाई।
सिंहासन कोल लिया बिठाओ इस नूं,सतगुरु आखदे हो मेहरबान भाई।।
स्वाभाविक ओस वेले करम भोग वाली, सतगुरु ए बात चलावंदे ने।
लिखी रेख न मिटदी किसे उतों, दासा करम कीते अगे आँवदे ने।।

इलम रोज़ ताईं जदों एह होया,सब निश्चय टुटिया रहया न कायम भाई।
महापुरुषाँ दी संगत दा की फायदा, जेकर भोग न होण मुलायम भाई।।
की लाभ फिर सन्तां दी शरण दा है, मुफ्त विच गँवावना टायम भाई।
सुणके सतसंग ऐसा सतगुरां दा, बड़ा राजे नूँ हो गया वहम भाई।।
जेकर करम कीतेअवश्य भोगणे ने, शरण सतगुरां दी काहनूँ आवणा सी।
की फायदा लया सन्त सतगुराँ तों, दासा करमां दा जे फल पावणा सी।।

गैन- गम चिन्ता अते फिकर अन्दर, तारे गिणदियां रात लँघा दित्ती।
राजा रह न सकया एस गल्लों, सतगुरां नूँ अर्ज़ सुना दित्ती।।
सुन के सतगुरां न कोई जवाब दित्ता, गल रौले अन्दर गुराँ पा दित्ती।

वहम मारिया सी अग्गे ओस ताईं, पुड़ी वहम दी होर खवा दित्ती।।
सतगुरु अन्तर्यामी समझ भाओ उसदा, दिता मोड़ के न जवाब ओनूँ।
दासा सुत्तयाँ राजे नूँ रात वेले, आया अजब तरह दा ख्वाब ओनूँ।।

गरीब निवाज़ सतगुरु ने राजे ताईं, सुफने विच की खेल विखाया ए।
घर चण्डाल दे हो गया ओह पैदा, जिस तरह दा करम कमाया ए।।
जवान होया ते हो गई ओहदी शादी, फेर बच्चियां आ घेरा पाया ए।
ओह करे कमाई उन्हां बच्चियां लई, घर दा कम औरत सिर ते चाया ए।।
सुबह उठ के ते औरत मर्द जाके, अपने कम्मां दे विच लग जाण दोवें।
हित चित दे नाल घर दे कम्मां दे विच,दासनदास बण फर्ज़ निभाण दोवें।।

गल्तान होवें होये झूठे परिवार अन्दर, पैदा पुत्र ते पौत्रे आन होये।
घर पोत्रयां दे अग्गों होये पुत्र, व्याहे खुशियाँ नाल जदों जवान होये।।
कुटुम्ब वध गया उन्हां दा बहुत सारा,साँभे जान न ते परेशान होये।
सौ साल दा हो गया जदों राजा,दिन मरन वाले नेड़े आन होये।।
मौत ओसनूँ आखिर आन फड़या, सौ साल पिच्छों गया मर ओत्थे।
सुफना ओसदा हो गया खतम जिसदम,दास रहया परिवार न घर ओत्थे।।

फे- फिकर लगा सुफना वेख ऐसा, असल वांग वेखी सारी माया ए।
अजब तरह दा सुफना अज रात डिट्ठा,अग्गे डिट्ठा न किसे सुनाया ए।।
इक रात अन्दर सौ साल वाला, नक्शा क्यों एह गया विखाया ए।
अर्ज़ सतगुरां अग्गे फिर जा कीती, सुपना एस तरह दा रातीं आया ए।।
सुनके अर्ज़ राजे दी सतगुरां ने, दित्ता परत के न जवाब कोई।
आपे लग जासी एहनूँ समझ अगों, जिस जान विखाया ज्यों ख्वाब कोई।।

फरमाया सतगुरां ने तू वी चल राजा,शिकार खेडण लईअसां ने जावणाए।
सैर हो जासी बाहर टुर फिरके, इत्थे बैठ के की बनावणा ए।।
एदे विच छुपी सी मौज कोई, जिसदा हाल अग्गों फिर आवणा ए।
जांदयां जांदयां सतगुरां कह्या ओहनूँ, असां राजेया एह तैनूं चितावणा ए।।
जिसदे अग्गों शिकार कोई निकल पोवे, घोड़ा ओही आपणा पिछे ला देवे।
दूजा ओसदी कोई न मदद करे, दासा घोड़े नूं पिशां हटा लेवे।।

फौरन चढ़ बैठे दोवें घोड़याँ उत्ते, जंगलों ढूँढदे फिरन शिकार नूँ जी।
अग्गे जाके ते बिछड़ गये दोवें, कोई दक्खन कोई टुर गया पहाड़ नूं जी।।
घोड़ा दौड़ांदियां नज़र दे विच आई, इक जगह राजे असवार नूँ जी।
हिरन छाला मारदा नज़र आवे, जेहड़ा पहुँचदा डिट्ठा इक गार नूँ जी।।
राजे झट घोड़ा मगर ला दित्ता, दूरों रख के पक्का ध्यान ओहदा।
माया बनके छुप गया हिरन दासा, राजा भुल गया पता निशान ओहदा।

काफ- किस्मत ऐसा चक्कर आन दित्ता, राजा जंगलां विच ख्वार होंदा।
राह मिले न जंगलों निकल जावां, भुख त्रेह तों फिरे लाचार होंदा।।
भयानकजानवरां दीआवाजआवे जिसदम,सुणकेओस दम सख्तबेज़ार होंदा।
हर तरफ उजाड़ ही नज़र आवे,वेख वेख प्या ओहनूँ बुखार होंदा।।
एह रचना रचाई सब सतगुरां ने, भेद असल नूँ राजा कि जाणदा सी।
सतगुरु दास दे भोग भुगतान खातिर, राजा जंगलां दी खाक छानदा सी।।

कहर गज़ब दा टुट के प्या उसते, जान फस गई विच हनेरयाँ दे।
थक टुट के हालों बेहाल होया, कर्मां काबू कीता विच घेरयां दे।।
उल्टा हो शिकार अज जावणा मैं, थैले आया सां भरन बटेरियाँ दे।
हथ जोड़दा पार लगाओ स्वामी, मल्लाह बण के रुड़दियँ बेड़ियाँ दे।।

फिर फिर थक गया कोई न पता लगे, किद्रों आया ते किधर नूं जावणा।
कड्ढो दास नूं एस अंध कूप विच्चों, तेरे बाझ न किसे बचावणा ए।।
कायम होश होई किसे वकत ओहदी, किरपा गुरां दी नाल बाहर आया ए।
मैदानी इलाका जद ओस नूं नज़र आया,लख लखओस शुकर मनाया ए।।
अग्गे टिब्बे उत्ते चढ़ के की वेखे, पिण्ड झुग्गियाँ किसे बनाया ए।
अग्गे जाके गौर दे नाल डिट्ठा, सौ साल मैं इत्थे लँघाया ए।।
थोड़ी दूर गया अगों जिस वेले, अपने हत्थां दा बण्या मकान डिट्ठा।
दास सुफने अन्दर जीवें वेख्या सी, प्रत्यक्ष ओसे तरह उस आन डिट्ठा।।

काफ- कीता अचानक ध्यान औरत, डिट्ठा घोड़े दे असवार नूँ जी।
एह तां पति मेरा सगवां आ गया ए, भज जा मिलदी भरतार नूँ जी।।
कहंदी मोया पति वापस कीवें आया, करदी बड़ी पई सोच विचार नूं जी।
शायद मेरे उत्ते रब मेहर कीती, पाल सकां न एने परिवार नूं जी।।
मेरी मदद दे वास्ते भेजिया सू, मोये होये नूँ फेर जिवा के ते।
पैदायश अपनी दी आपे करे सेवा, दास बन खवाये कमा के ते।।

करे वेनती जोड़ के हत्थ औरत, घोड़यों उतर थल्ले मेरे प्राण प्यारे।
ईश्वर घल्या घर तू जा वापस, होयें किस लई आन हैरान प्यारे।।
चुपचाप होयें इत्थे आन के क्यों, घर जान विच की नुकसान प्यारे।
घर चल ते वेख परिवार अपना, तेरे बाझ है घर वीरान प्यारे।।
मोये पति नूं रब जिवा घल्या, साडे दुःख न वेख सहारया ए।
अग्गे वांग घर दे कम्म साँभ चल के,दास बण क्यों हिम्मत नूँ हारया ए।।

की वेखदा राजा हैरान होके, बाल बच्चा सारा प्या आवँदा ए।
मोया होया बाबा आया ज़िन्दा होके,छोटा बड्डा प्या खुशियां मनावंदा ए।।

लगामों फड़ घोड़ा कहंदे उतर थल्ले, रकाबों पैर प्या कोई छुड़ावंदा ए।
घर दी रानी राजे दियां करे मिन्नतां, जबाव देवे न राजा घबड़ावंदा ए।।
दिलों करे ख्याल ए हैन मेरे, एदे विच ज़रा जिन्नाह शक नाहीं।
ए चण्डाल ते मैं हुण राज पुत्र, दासा रहवां इत्थे मेरा हक नाहीं।।

गाफ गल अपने पलड़ा पा औरत, कहंदी चल घर देर न ला स्वामी।
तेरे बाझ उदास ने बाल बच्चे, इक वार फेरा घर पा स्वामी।।
अग्गे बाझ तेरे हाल की होया, गम जुदाई दा गया खा स्वामी।
वापस आया होया घर नहीं जांदा, बख्श साथों जो होई खता स्वामी।।
इन्हां चिर मोया असां समझ तैनूं,औखा सौखा सब समां गुजारया ए।
जदों वेख लिया जिन्दा साई घर दा, दासा वेख न जावे सहारया ए।।

गले दाल न राजा दी मूल उत्थे, विचे विच प्या करदा चारयां नूँ।
लगे दा ते घोड़ा भजा जावां, इन्हां खड़े खलोतयाँ सारयाँ नूँ।।
विचों समझे पैदायश वी है मेरी, हत्थी पालया चन्न ते तारयां नूँ।
चंगी मंदी बनाई ए आप झुग्गी, सिर ते ढो ढो के इन्हां गारयां नूँ।।
ए वी सच ते ओ वी सच जापे, पल्ला दूआँ तरफों हुण छुडान औखा।
ए चण्डाल ते मैं पुत्तर राजेआं दा, दासा एस गल दा भेद पान औखा।।

गली गवांड सुण शोर सब होये कट्ठे, होंदे वेख के ओनूं हैरान सब्बे।
मोया होया वापस किवें आ गया ए, पूरी करन पै ओदी पछान सब्बे।।
पछान करके आखदे ठीक ओही, घर घल्लन उत्ते ज़ोर पान सब्बे।
घर जा अपणे उतर घोड़े उत्तों, मनदा ज़रा न पै मनान सब्बे।।
वेख छोटे छोटे तेरे बाल बच्चे, करन प्यार पै आखदे चल बाबा।
तरले करन ते आवे न तरस तैनूं, अपने दासा सुणे न गल बाबा।।

लाम- लचार न करो फज़ूल मैंनूँ, गलती लग गई जे कमाल सब नूँ।
शकल मेरीओहदी होसी शायद इको,जिसलई नज़र प्या आवाँ चण्डाल नूँ।
दसो मर गये वी कदी होये ज़िन्दा, इन्हां आवंदा ए कदी ख्याल सब नूँ।
ठीक समझ बैठे मालिक एस घर दा, सोच विचार न रत्ती खाल सब नूँ।।
होंदा ठीक नाहीं बिना सोचे समझे, रस्ता रोक लैणा जांदे राहियां दा।
पैंडा खोटा करो मेरा जान के क्यों, दासा कम नहीं एह दानाहियां दा।।

लखवार समझा प्या भावें सानूँ, एस तरह ते देणा तैनूँ जान नाहीं।
करें झूठे बहाने प्या नाल साडे, छुटणा इस तरह तेरा आसान नाहीं।।
जिच्चर देवे न कोई तसल्ली तेरी, मोहतबर कोई आवे इन्सान नाहीं।
ओदों तीक ते तैनूँ नहीं जाण देना, हालां चल घर हो हैरान नाहीं।।
मुसीबत विच उस गुरां नूँ याद कीता,कड्ढो आण इस लीला रचाई विचों।
दासनदास ए माया बेअन्त तेरी, कड्ढो आण के माया दी फाई विचों।।

लैंदे खबर आके सतगुरु सेवकां दी, जदों सेवक कोई दुःखी आन होंदा।
अंग संग होके सतगुरु मदद करदे, जिस सेवक दा गुरां वल ध्यान होंदा।।
पता करदियां सतगुरां जा डिट्ठा, साडा प्रेमी प्या परेशान होंदा।
सतगुरु वेख के मुस्काए उत्थे, प्रेमी भगत दा प्या इम्तहान होंदा।।
सतगुरां वेख्या काबू हुण सख्त आया, लोकां ताईं ए वचन फरमावंदे ने।
किस वास्ते इस नूँ पकड़या जे, दासन दास ए अग्गों सुनावंदे ने।।

मीन मन्नो न मन्नो ए गल सच्ची, ए चण्डाल मर गया होया देर दा सी।
अज ओही चण्डाल होके फेर ज़िन्दा, घोड़े उत्ते चढ़ आया सवेर दा सी।।
सबणा आखया चल तू घर अपने, न करे प्या सिर नूँ फेरदा सी।

करो फैसला तुसीं दानाह जापो, बड़े चिरां दा तुसां नूं टेर दा सी।।
सतगुरां ने ऐ फरमाया सब नूँ, सुकेत मण्डी दा राजा ए रहण वाला।
गलती लग गई ओस नूं बहुत दासा एस ताईं, चण्डाल जो कहन वाला।।

महापुरुष फरमावंदे कबर पुट्टो, मोये होये नूं जित्थे दबाया जे।
जेकर कबर दे विच मौजूद होवे, फिर ए झूठा सब शोर मचाया जे।।
जेकर कबर विचों निकल आ गया ए, घर टोर देसां जिम्मे आया जे।
बाझ कबर नूँ पुटियां वेखया ही, चण्डाल एसदा नाम ठहराया जे।।
कबर पुट के वेखया जदों जाके, प्या मुर्दा जीवें आये धर भाई।
दासन दास तसल्ली कर पूरी राजे, ताईं आज़ाद दित्ता कर भाई।।

महाराज जी ओनूँ फरमान लगे, जेहड़ा सन्त शरण चित्त लावंदा ए।
सूलियाँ ओसदी सूल बन सके, जेहड़ा सतगुरां दी किरपा चाहवंदा ए।।
नहीं तां भोगने भोग ज़रूर पैंदे, जिस तरह दे करम कमावंदा ए।
छुट सकदा कदी न जीव ऐसा, मनमत विच जीव जो जावंदा ए।।
प्रेम सतगुरां नाल सी सच्चा तेरा, तेरे भोग विच सुफने मुका दित्ते।
सौ साल विच भोगने भोग तूने, दास जान विच रात मिटा दित्ते।।

❋❋❋❋❋❋❋❋

सत्ता बलवन्ता

अलफ-आदि पुरुष सतगुरु पूरेयां दे, चरणां विच मैं सीस निवाय के ते।
मँगां दात गरीबी ते दीनता दी, खाकसारी वी दामन बिछाय के ते।।
मन्दा हाल होदां हंकारियां दा, त्राहि त्राहि करदे पछताय के ते।
दास ऐस लई मंगे निष्काम सेवा, सतगुरां नूँ अर्ज़ सुनाय के ते।।

बे- बुद्धि जीव दी जदों जाय मारी, अहंकार दा भूत सवार होंदा।
अपणे कीते दा फल जदों पावंदा ए, ढाईं मारदा ते ज़ार ज़ार रोंदा।।
ऐसे तरह कहानी इक डूम दी ए, जीवें सत्ता-बलवन्ता ख्वार होंदा।
दास कविता दे रूप विच कहन लगा, दूर ओन्हां दा कीवें हंकार होंदा।।

पे- पढ़े होये सन विद्या राग वाली, अते गवैये सन वडे मशहूर दोवें।
कीर्तनकरदे सन रोज़ दरबार दे विच,श्री गुरु अर्जुनदेव जी दे हूज़ूर दोवें।।
संगतां आवंदियां ते कीरतन सराहदियां सन, जस फैल्या वेख दूर दूर दोवें।
दोनों भाई बैठ सोचन आपस दे विच, दासा दिल विच भरके गरूर दोवें।।

ते- तपन लगी दोवां दे हिरदे विच, अगन मैं मेरी ते हंकार वाली।
कहंदे करिये न कीर्तन जे रस भरिया,संगत कदी न आवेगी बहार वाली।।
जस असीं ही गुरां दा वधावंदे हां,साडे कीरतन दा ए प्रताप आली।
बाझोंकीर्तन दे मन्दिर न सोहणा लगै,बगैर दासां दे लगे हरमन्दिर खाली।।

टे- टुरन तों पहले सलाह करदे, अज केहड़ा बहाना बनाइये चा।
सत्ता कहंदा है कन्या जवान मेरी, ओहदे व्याह दी रचना रचाइये चा।।
दोवां सत्ते बलवन्ते रबाबियां ने, आखिया गुरां नूँ अर्ज़ सुनाइये चा।

नाले वेखिये किन्नी साडी कदर करदे, दासा सतगुरां नूँ आज़माईये चा।।
से- सबूत लैन कदर अपनी दा, दोवें गुरां दे चरणां विच जा पुज्जे।
अग्गेअर्ज़ करदे गुरुअर्जुनदेव जी दे,थाल भर के दोहां विच मिस्री कुज्जे।।
साडी कन्या दा व्याह है जी, अरदास कराओ जी धन दे गुज्झे।
ऐस मौके ते लोड़ सानूँ माया दी ए, दासा धन बगैर कुझ नहीं सुज्झे।।

जीम जदों सुणी अर्ज़ सतगुरां ने,पुछिया किनी कूँ माया त्वानूँ लोड़ है जी।
जिस विच तुहाडा कम्म सर जावे, ऐत्थे माया दी नहीं कोई थोड़ है जी।।
इधरदोहां दे मन विच लोभआया,पर लालच किसे दा चढ़या न तोड़है जी।
कहंदे कल दी चढ़तल देवो सारी, एहो दासां दी गल दी निचोड़ है जी।।

चे-चढ़तल कल दी दे देवांगे, सतगुरां ने अग्गों एह फरमा दित्ता।
बड़ी खुशी नाल कन्या दा व्याह करना, एह हुक्म वी नाल सुणा दित्ता।।
कम्म तुसाडा नहींएह साडाअपना ही ए,जदों त्वानूँ असांअपणा बना लीता।
दास गुरां ने फरक न समझेया ए, अपनी ज़ात दे नाल मिला लीता।।

हे-हैरान होये दोवें मन दे विच, उन्हां भरावां ने कुझ होर सोचया सी।
आम दिनां विच सैंकड़े भेंट चढ़दे, खास कीरतन दी अज परीच्छया सी।।
चढ़तल मिलेगी कई हज़ार सानूँ, एह उन्हां दे दिल विच इच्छया सी।
धीयां व्याहवांगे इक दियां त्रै दासा, किसे गल दी न थोड़ मूल आसी।।

खे-ख्याल जो उन्हां दे दिल दा सी, ओह होनी नूं न मँज़ूर होया।
गले दिन चढ़त होई बहुत थोड़ी, पर सौ इक रुपया ज़रूर होया।।
जदों सी रुपया दित्ता सतगुरां ने, दोवां विच क्रोध भरपूर होया।
रुपये सुट के कहंदे कम न बणया, केहड़ा दासां कोलों कसूर होया।।

दाल-दया दे सागर सतगुरां ने, बड़े प्यार दे नाल पुचकार के ते।
कहया प्यारयो माया नूँ मोड़ो नाहीं, कारज करो तुसीं सोच विचार के ते।।
कारजसोहणा होसी तुसीं शुरु करो,श्रीगुरुनानक जीनूँ हिरदे विचधार केते।
इसी माया विच बरकत पा देसन, दासनदासां दा कारज संवार केते।।

दाल-डोलया सत्ते बलवन्ते दा दिल,माया वेख के दिल विच ख्याल आया।
नहीं छडना चाहिदा भावें जिन्हां, थोड़ा बहुत जो हत्थ विच माल आया।।
चुक्क लीते रुपये अग्गे होके ते,लेकिन दिल विच रत्ती ज्यां मलाल आया।
ओत्थों दोवें टुर पये रुट्ठ के ते, उलझन पा दित्ती आके विच माया।।

ज़ाल- ज़रा न दिल विच खौफ आया, बे अदबी दिलों अख्त्यार कीती।
दूजे दिन न कीर्तन करन आये, बैठ संगत ने बड़ी इन्तज़ार कीती।।
भेज्या सद्दन लई भाईगुरुदास जी नूं,ओन्हांआवन लई साफ इनकार कीती।
घर गये बुलान लई आप सतगुरु, दासा उठ के नाहीं नमस्कार कीती।।

रे- रीती न नीति कोई वी दिल विच, न आदर ते न सत्कार कीता।
मत मारी गई दोवां भरावां दी सी, हिरदे विच डेरा हंकार कीता।।
भाई संगत तुहानूं उडीकदी ए, सतगुरां ने एह फरमान कीता।
चलो कीर्तन करो तुसीं मन्दिर दे विच, दासां उत्ते बड़ा उपकार कीता।।

ज़े- ज़ोर सी दिल विच अहंकार वाला, अग्गों बड़ा ही कोरा जवाब दित्ता।
क्हंदे हरमन्दिरसाहिब नहींजावांगे हुण,अन्न खावांगे किसेहोर सोढी दा दित्ता।
किसी सोढी क्दर वाले देअग्गे बैठ केते,कीर्तन करांगे पावांगेओन्हां दादित्ता।
चलेगा गुज़ारा हुण एस तरह, दासां दिल विच एहो हुण धार लित्ता।।

सीन- साज़ खोलांगे जेहड़े सोढी अग्गे, गुरु उस नूँ ही बना देवांगे।
साडेकीर्तन सदके दुनियाँ पूजे तूहानूँ,किसे होर दे जसनूँ हुणवधा देवांगे।।
साडी कोई कदर तुसां नाही पाई, द्वार चड़तल दे बन्द करा दिआँगे।
कदर दान सोढी नूँ गुरु मन के ते, दास नवीं गुरु गद्दी चला दिआंगे।।

शीन- श्री गुरु नानकदेव जी दा, साडे वड्डे भाई मरदाने ने ही।
कीरतन करके यश वधा दित्ता, नाले दित्ती गुरयाई मरदाने ने ही।।
श्रद्धा श्री गुरु नानकदेव उत्ते, लोकां दी वधाई मरदाने ने ही।
दासा रबाबियां दी कुल नूँ मिला के ते, गुरु गद्दी चलाई मरदाने ने ही।।

स्वाद- साहिब गुरु अर्जुनदेव जी फिर, नाल बड़ी गम्भीरता दे आखदे ने।
तुस्सीं निन्दिया करदे हो सतगुरां दी, नाले फिट गये ओ पै आखदे ने।।
इतना कहके हरमन्दिर वापस आये, हुक्म दे के सिक्खां नूं आखदे ने।
कीर्तन करो तुस्सीं साज़ बजा के ते, ताकत दे के दासां नूँ आखदे ने।।

ज़्वाद-ज़ाया न कीता वक्त पलभर वी,तुरत सिक्खांने हुक्मनूँ मन लीता।
बड़े प्रेम नाल राग अलाप के ते, साज़ बजा के ते कीर्तन शुरु कीता।।
ओसे दिन तों सतगुरु प्यारेयां ने, रागी सम्प्रदाय दा नां रोशन कीता।
दासा चल के गुरां दी मौज अन्दर,मानुष जन्म नूं सफल बना लीता।।

तोय-तरफ दोवां रबाबियां दे, कोई भुल को वी कदी जावंदा नहीं।
गुरां दे फटकारे होय समझ केते, कोई शकल वी वेखना चाहवंदा नहीं।।
जो कुझ घर विच प्या सी मुक गया, बाहरों खैर मँगयां कोई पांवदा नहीं।
देह फिट गई ते कोढ़ पै गया, हाल दासां दा दसया जावँदा नहीं।।

ज़ोय-ज़ाहिरा होया हाल ओन्हां दा जो, पछोतान पर बन की सकदा सी।
दुःख वेख के ओन्हां रबाबियां दा, दुःखी होवे जो कर की सकदा सी।।
इक बुड्ढा रबाबी गुरां पास आया, गल ओन्हां दी करन लई झकदा सी।
जदों बन गये गुरां दे निन्दक दोवें, मान दासां दा हुण कौन रखदा सी।।

ऐन-अर्ज़सुण किहाअग्गों सतगुरां ने,ज़िक्रसत्ते बलवन्ते दा न कोई करे।
गलओन्हां दी करेगा जो साडेअग्गे,स्याही नालअपना मुँह कालाओई करे।।
फिर काले गधे उत्ते बैठ के ते, मुँह पिच्छां नूं पुच्छ वल सोई करे।
ढोल बजा के सारे शहर दी ओह, दासन दास परदखना बरजोई करे।।

गैन-गैर बनकेओह निन्दा करदे,अपनी किस्मत नूं मारे ओन्हां जन्दरे ने।
पैसे कोल नहीं रोटी खाण दे लई, भुक्खे रात दिन लूसदे अन्दरे ने।।
शक्ल वेखके होंदा नहींकोई राज़ी,हरकोई कोसदा कहंदाओह तां चन्दरे ने।
खैर पान तों वी अपनी ज़ात वाले, दास रबाबी भराअ वी संगदे ने।।

फे-फरक ना रहया दुःख पाण वलों,गये लाहौर विच लधेउपकारी दे कोल।
ओहदे दर ते जा के आसीस दित्ती, दिल दा दुःख दित्ता लधे अग्गे खोल।।
कुझ देर तक भाई लधा सोचदे रहे, पर चुप ही रहे कुछ सके न बोल।
फेरआखिया अमृतसर चलो तुसीं, दास तैयारी कर पहुँचेगा गुरां दे कोल।।

काफ- कह के ओन्हां नूँ टोर दित्ता, फिर कर तैयारी लई अपनी वी।
काला मुँह कर गदहे पुट्ठे बैठ उत्ते, अमृतसर नूँ टुर पये आप जी वी।।
रस्ता पार कर लाहौरी दरवाज़े पहुँचे, लूण मण्डी गली मस्तराम दी वी।
पार कर नज़दीक दरबार साहिब दे,मंजी साहिब पहुँचे दासआपजी वी।।

काफकर्म वेखके लधे उपकारी दा एह,दीवान विच बैठे गुरुजी बाहर आये।
सतगुरां नूँ लधे प्रणाम कीता, हत्थ जोड़ के अर्ज़ गुज़ारदा ए।।
सच्चे पातशाह तुसीं निर्वैर हो जी, गुनाह बख्शन लई विच संसार आये।
तुसीं सत्तेबलवन्ते नूँ बख्श लेओ,अर्ज़ करनलई दास विच चरणार आये।।

गाफ- गुरु जी दे हुक्म मुताबिक ही मैं, मुँह काला कर गधे ते बैठ आया।
सारे शहर दी प्रदखना कर के ते, मुख विखा आया नाले वेख आया।।
सतगुराँ ने कहया हे भाई लधा, पर उपकार लई तूँ बदल भेख आया।
दास सच्चा पर उपकारी हैं तूं. मान अपमान दा नहीं तैनूँ सेक आया।।

लाम- ला के गल नाल सतगुरु कहंदे, तेरा आखिया मोड़या जांदा नहियों।
सत्ते बलवन्ते नूँ बख्शया तेरी खातिर, ऐवें साथों बख्शया जांदा नहियों।।
ऐ पर दारू है निन्दा दा अस्तुति करना, ऐवें कोढ़ शरीर दा जांदा नहियों।
जिस रसनानाल कीती है निन्दाओन्हाँ,दास उपमा करन दी होवेकार एहो।।

मीम- मेहर भरे वचन सुन लधा, सिद्धा डूमां दे घर वल चला गया।
दोवां डूमाँ नूँ लैके नाल अपने, दुःख भंज्जनी बेरी वल चला गया।।
थल्ले बेरी दे स्वच्छ सरोवर है सी, स्नान दोवां ने विच कर लिया।
सीख दित्ती फिर दासनदासां नूं एह, गुरु किरपा कीती दुःख टल गया।।

नून-नाल जिस रसना दे निन्दा कीती,उस रसना नाल गुरु गुणगाओ तुसीं।
रोग शरीर दा वी सारा दूर होसी, दिल नाल जे कर्म कमाओ तुसीं।।
बलदी अग जेहड़ी अहंकार वाली, नम्रता दे नाल ओहनूं बुझाओ तुसीं।
अज प्रण कर लवो दासनदास जेहड़ा,निभाकेअन्ततक हुणदिखाओ तुसीं।।

वा- विच दीवान दे खड़े होके, दोवां सत्ते बलवन्ते भरावां ने जी।
सामने श्री गुरु अर्जुन देव जी दे, राग रामकली विच दोवां भरावां ने जी।।
एह वार गुरु यश दी उच्चारण कीती, साज़ वजा के दोवां भरावां ने जी।
दास लधा ने हुक्म सुणाया जीवें, तीवें मन्या दोवां भरावां ने जी।।

हे- हिम्मत बन के महिमा गुरु घर दी, बड़े प्रेम नाल ज्यों ज्यों करी जांदे।
दूर होंदा जांदा सी कोढ़ सारा, वेख निरोग खुद नूँ ठरी जांदे।।
एहवार दी जदों ओन्हां भोग पाया, किरपा गुरां दी नाल झोली भरी जांदे।
दासनदासां दा कोढ़ जग दूर होया, अपने सतगुराँ तों बलि बलि जांदे ।।

ये- याद कर के करनी अपनी नूँ, पश्चाताप कर के दोवे खूब रोये।
अग्गों वास्ते दिलों नसीहत समझी, तोबा तोबा कर के दोवें खूब रोये।।
कीता दण्डवत प्रणाम सतगुरां अग्गे, चरणां उत्ते डिग के दोवें खूब रोये।
नज़र मेहर दी कीती जदों दास उत्ते, भाग जाग पये जेहड़े सुत्ते होये।।

पश्चाताप दे आँसूं जदों खूब वग्गे, मैल हिरदे दा सारा ही धुल गया।
राग द्वेष ते मैं मेरी वाला, भाव दिल विचों डुल गया।।
गुरां किरपा कीती अहंकार दूर होया, ज्ञान चक्षु दोवां दा खुल गया।
पंजे चोर जो हिरदे विच वसदे ने, दास उन्हां दे वस होके भुल गया।।

निर्मोही राजा

अलफ-ऐसा सतगुरु पर उपकारी मेरा, सन्त रूप धर आया संसार अन्दर।
दुःखीजीवां दे ताईं दुःखों पार करदा,निसदिन लगा रहे परउपकार अन्दर।।
झूठी कारों हटा के प्रेमियां नूँ लाई, रखदा सच दी कार अन्दर।
सतसंग दे विच फरमाये सब नूँ, सच्चा सुख जे सच्चे संसार अन्दर।
ऐसे सतगुरां नूं कर प्रणाम दण्डवत्, निर्मोही राजे दी कविता बनावंदा हाँ।
दासनदास नूं खुद न समझ कोई, हर थां सतगुरु दी मदद चाहवंदा हाँ।।

बे-बहुत मुद्दत गुज़री इक राजा होया, जग दे विच निरमोही प्यारे।
रानी, गोली, नूँह, राजकुमार चारे, मोह करे न इन्हाँ विच कोई प्यारे।।
मुढ तों लै के कराँ ब्यान सारी, हकीकत जिस तरह सब दी होई प्यारे।
ज़रा सुनना नाल ध्यान दे जी निर्मोही राजे दी कहानी छोई प्यारे।।
मोह ममता तों कीवें ओह दूर रहंदे, इक ऋषि ने जीवें आज़माया सी।
असर ऋषि दा पया न दासां उत्ते,जीवें ऋषि भरमावणा चाहया सी।।

पे- प्रेमी राजकुमार उसदा सैर करन लई, इक दिन किधरे रवान होया।
जांदयां कुटिया सन्तां दी इक पासे,अचानक उसी वल उसदा ध्यानहोया।।
सन्ताँ साधुआं दे चल के करिये दर्शन, भेस एस विच आप भगवान होया।
चरण वन्दना करदा पहुँच ओथे, वार बलिहार हो दिलों निर्मान होया।।
महात्मा जन पुछदे उस लड़के ताईं, कित्थों आया ते कित्थे जावणा तूं।
किस दा पुत्र ते किस लई आया ,ऐथे लै के केहड़ी भावना तूं ।।

ते- त्वाडे दर्शन करन आया स्वामी, भागां वाला कोई दर्शन पांवदा ए।
हर इक नूँ दर्शन नसीब नहीं , हर इक न सन्ताँ नूँ चाहवंदा ए।।
पिछले जन्म दी होंदी कमाई जिसदी, ओही सन्त शरण चित्त लावंदा ए।

निर्मोही राजे दा मैं हां पुत्र स्वामी, हथ जोड़ के प्रेमी सुनावंदा ए।।
ब्लकि सारा परिवार निर्मोही उसदा, खुशी गमां विच सभे खुशहाल रंहदे।
मातापिता नहींमेरे नौकर नौकरानी,निर्मोही दासा सारे इक से चालरहंदे।।

टे-टाईम ओसे ऋषि कहन लगा, एह नामुमकिन है जेहड़ी सुनावंणा एं।
पत्ता ऐस गल दा पूरा करन खातिर, बेटा घर तेरे मैंनूं जावंणा एँ।।
सच झूठ नूँ आवां नितार के ते, बड़ी ऐस गल दी दिल विच चाहवणा ए।
मेरे औंण तक इत्थे बैठ जा तूँ, निर्मोही सारियां नूँ आज़मावना ए।
पता पुछ लड़के तों घर उसदे, ऋषि ओणी जदों पहुँच जावंदे ने।
खड़काया बुहा ते निकली नौकरानी, उसनूँ दुःख भरी खबर सुनावंदे ने।।

से-साबत न रह्या वेख दिल गोली, डिट्ठा कुमार नूँ शेर जद मार गया।
शोर पाया मैं बड़ा बचान खातिर, फिर भी शेर दा हो शिकार गया।।
कोई पेश न शेर ने जाण दित्ती, ऐसा वरत कोई भाणा करतार गया।
कीता वार ते वार मैं शेर उत्ते, एह पर खाली मेरा हर वार गया।
मुर्दा ओसदा लै आओ चुका उत्थों, पिया होंदा ओत्थे खराब है ओह।
बड़ा दुःख होसी ओहदे मरण वाला,दासा देंदी कीअग्गों जवाब है ओह।।

जीम- जो आया ओस जावणा एं, गोली ऋषि दे ताईं सुनावंदी ए।
माया मोह विच करें गिरफ्तार मैंनूं, तेरी ऋषि जी समझ पई आवंदी ए।।
की हो गया जेकर मर हया ओह, रूह आई जेहड़ी वापस जावंदी ए।
क्या ऋषि जी तुसां ने बैठ रहणा, सब दे सिर ते मौत कुरलावंदी ए।।
ओहदे जीवण दी ना सी खुशी मैंनूं,ओहदे मरण दा कोई न दुःख स्वामी।
सरपर जावणाओस ज़रूर दासा जिसदा मौत कीता जिधर रुख स्वामी।।

चे-चाल दे विच न आई गोली, ऋषि समझया गैर कोई नार है जी।
जिस वास्ते दुःखी न होई सुन के, उसदा आरजी प्रेम प्यार है जी।।
ओस दी औरत नूँ चल के खबर दैये,जेहड़ा ओसदा असल ऋंगार है जी।
नार ओस दी नूँ जा के ऋषि कहंदा, तेरा पति दित्ता शेर मार है जी।।
पति बाझ की तेरी हुण ज़िन्दगानी, पति बाझ की इज्ज़त ते शान तेरी।
बाझों पति दे दुःखां ते दुःख दासा, कीवें पति बिन होसी गुज़रान तेरी।।

हे-हाल स्वामी होसी क्यों मन्दा, निभाणा ओस ने जिस निभावणा एं।
ऐसे तरह संसार दी कार चले, जिसने आवणा ए सर पर जावणा एं।।
चार दिनां दी ज़िन्दगी जगत अन्दर, एत्थे हमेश दा ना ठिकावना एं।
करदा याद सतगुरां नूँ गया स्वामी, कोई गलत न ले गया भावना एँ।।
ओस दे जाणदी खुशी मनावनी आँ, नाल गुरां दे पूरी निभा गया ए।
जिस लई जग निच आवणा धर्म होंदा, दासनदास हुण कम बना गया ए।।

खे-खुदा परस्त सी पति मेरा, जगत नाल न ओसदा प्यार है सी।
सदा प्रीत रखी ओस नाल सतगुरु, बाकी उस लई झूठा संसार है सी।।
न होये दी खुशी न गमी मर जाने दी, बड़ा ओसदा शुद्ध विचार है सी।
महापुरुषां दे कदम ते चलदा सी, मनमति वाली कोई न कार है सी।।
बड़ी खुशी होई ऐसी खबर सुनके,नाम सिमरदा गया भगवान दा ए।
मोह ममता जो छोड़ के जाये दासा, अपना कम एह असल इन्सान दा ।।

दाल-दित्ता जवाब जद ऐसा औरत, ऋषि सुण के ते हैरान होया।
जैसा सुनिया तैसा मैं वेखिया ए, ऐनूँ वाकई सच्चा ज्ञान होया।।
मेरी दवाई इत्थे असर नहीं कीता, ओहदी माता वल फेर रवान होया।
ऐसी खबर सुन के ओह ज़रूर रोसी, दूर अखाँ तों पुत्तर जवान होया।।

हाय-हाय करसी सुण के मां उसदी, दुःखाँ नाल जो बच्चयां नूँ पालदी ए।
बड़ा पुत्रां दा होंदा मुल दासा, कोई न नेमत होंदी पुत्तरां नाल दी ए।।
डाल-डेर न लाई ऋषि पहुँच गया, जाके आखदा ओसदी माँ नूँ जी।
शेर मार गया तेरे बच्चे ताईं, हटा गया तेरी ठंढणी छां नूँ जी।।
इको इक बच्चा सी तेरा रानिये नी, पै गया खामोशां दे राहाँ नूँ जी।
की करेंगी ओस दे बाझ रानी, ले ले रोदेंगी ओस दे नां नूँ जी।।
एडा ज़ुलम तेरे नाल शेर कीता, जिसदा कोई भी अन्त शुमार नाहीं।
दास तेरे वल्लों मुख मोड़ गया, ओसदे बाझ कोई सुख संसार नाहीं।।

ज़ाल-ज़रा न ऋषि जी ध्यान आया, चोला सतगुरां दा गल पा के ते।
केहड़ी जाके खबर मैं देन लगा, वकत भजन दा हत्थों गँवा के ते।।
मोह माया तों बचन लई साध बन्यों, चाहें मारना मोह विखा के ते।
मोह ममता दे विच कोई पैन लगे, धीरज देणा सी सगों समझा केते।।
ऐस झूठी माया तों बच जाओ, अन्त दुःखां दे विच एह पान वाली।
माया-छाया नाल करो न प्यार दासा,नरकां विच एह होंदी ले जान वाली।।

रे-रानी कहंदी सबने जावणा ए,क्या राजा ते क्या रंक स्वामी।
रावण जेहां ने बद्धा सी काल पावे,आखिर छोड़गये सोनेदी लंक स्वामी।।
साहूकार भारे गये छोड़ सारे, भरे माल खज़ाने दे बंक स्वामी।
महापुरुष वी चले गये वार अपनी,ऋषि मुनिआदिक राजा रंक स्वामी।।
की होया पुत्तर जेकर चला गया, ओसदे जाण दे भाग मनावंनी हाँ।
पुत्र गया मेरा सतगुरु याद अंदर, दासा होर की एस तों चाहवनी हाँ।।

ज़े-ज़मीन आसमान है कायम जद तक, नाम पुत्तर दा विच जहान राहसी।
इतिहास विचओहदा जासी नामलिखिया,सत्संगां विचमहिमादी शान राहसी।

नेक कमाई कर गया जहान अन्दर, भावें उमर विच बच्चा नादान राहसी।
तेरे नालों उच्चा दरज़ा पा गया ए, तेरे वांग न दुनियां ते ध्यान राहसी।।
मोह-ममता वाली अग बाल के तूं, विच पा के सानूँ जलान आया।
मर गया ते कोई परवाह नहीं, दासा जासी जो विच जहान आया।।

सीन-सुन रानी दा ज्ञान उलटा, बहुत ही ऋषि जी खुशी मनावंदे ने।
रानी ताईं न पुत्तर दा दुःख लगा, आफरीन दिलों करदे जावंदे ने।।
होवे इक इकला ते मरे ओह वी, सुन के ज़रा न दिल ते लै आवंदे ने।
उसदे बाद ऋषि राजे कोल गया, जाके उस नूँ भी आज़मावंदे ने।।
कहंदे जाके राजेआ ज़ुलम होया, पुत्र मार दित्ता ज़ालम शेर तेरा।
इक दो हमलियां नूँ दास रोकया सी, ऐसा पुत्र सी कोई दिलेर तेरा।।

शीन-शोर सुनया दोवां लड़दियां दा, गया दौड़ के ते उन्हां पास राजा।
शेर लहू पी के ओसदा नस गया, होया वेख मैं बड़ा उदास राजा।।
बड़ा दुःख बनया तेरे लई अग्गों, गया त्रोड़ खुशी वाली आस राजा।
चल के कर सस्कार तू बचड़े दा,कुटिया कोल पई है उसदी लाश राजा।।
ओसदे बाझ तेरा कीवें गुज़र होसी, मिट गया जद तेरा निशान सोहणा।
मार घतिया शेर कमीने दासा, इक्को इक सी पुत्तर जवान सोहणा।।

स्वाद सबर संतोष नूं कर अग्गू, एह पर होया तेरे नाल कहर राजा।
एहदे नाल तेरा ही जीवन है सी, बनी हुई सी सुखां दी लहर राजा।।
सुखी वसदयां ते पाई तेरे उत्ते, कोई ज़ुलम दी टुट के नहर राजा।
पिछले जनम दा कोई एस शेर पापी, लिया एस जनम तैथों वैर राजा।।
बड़ी मुश्किल गुज़रेगी ज़िन्दगानी, पुत्र बाझों विच संसार तेरी।
रोना पवेगा गमां विच उमर सारी, दासा जीती बाजी गई हार तेरी।।

ज्वाद-ज़रुरत न कोई भी रोवणे दी, ऋषि ताईं राजे फरमाया ए।
ओस जावणा है अवश्य स्वामी, जेहड़ा विच संसार दे आया ए।।
मेरा पुत्तर सी पूरा गुरु भक्ति अन्दर, जिसने जनम परमार्थ विच लाया ए।
मनावां खुशी क्यों न ओहदे जान दी मैं,जैं लाके गुरां संग प्रेम निभाया ए।।
रोना तेरे जियां नूँ चाहीदा ए, साधू बन के जो करी दानाई फिरदे।
धर्म आपने ते जेहड़े कायम दासा,सुणा के मौत दियां दिलों रुबाई फिरदे।।

तोए-तरफ परमार्थ दे पुत्तर मेरा, मानुष-जन्म दे ताईं लगा गया ए।
पिछला खटया रखिया कोल उसने, अग्गों वास्ते होर कमा गया ए।।
मिट्ठा बोलदा ते चलदा निव के सी, हर इक नाल प्रेम बना गया ए।
रोना ओस नूँ चाहिदा ऋषि प्यारे, मानुष जन्म जो ऐवें गँवा गया ए।।
चोला पाके गुरां दे प्रेम वाला, चढिया हिरदै तेरे ते प्रेम रंग नाहीं।
उलटा मोह विच फिरें फँसावंदा तूँ, दासा साधना दा एह कोई ढंग नाहीं।।

ज़ोए-ज़ाहरा दिस्से प्या सन्त पूरा, विच्चों मोह विच फिरें फँसावंदा तूँ।
मोह-माया विच फसन दा ढंग लावें, जिस दे घर ऋषि जी जावंदा तूँ।।
साडे घर न ओह गल बण सके, जेहड़ी दिल आपने विच चाहवंदा तूँ।
निर्मोही कदी न मोह दे वस होंदे, गल्लां फिरे जो ऐवें सुणावंदा तूँ।।
जेकर मर गया राजकुमार मेरा, एह कोई नवीं न खबर सरकार आई।
सबने चले जाणा जग विच्चों दासा,ज्यों ज्यों जिस दी जाण दी वार आई।।

ऐन-अमल जो हुकम ते करन वाले, कदी होवंदे न बेज़ार स्वामी।
जेहड़े सतगुरां दे होंदे सच्चे प्रेमी, सच्चा सुख पांदे आखिरकार स्वामी।।
जीवन मरन ताईं इको जियां समझे, भावें मर्द होवे भावें नार स्वामी।

ओहफिर जग अन्दर जीवन मुक्त होंदे,राज़ीओहना ते सदा कर्तार स्वामी।।
ऋषि जी एह सुण आश्चर्य होया, निर्मोही निकलया जिस नूँ फोलिया ए।
राजकुमार दे मरण दी सुण खबर दासा,दिलों कोईभी नओहदा डोलिया ए।

गैन -गम नाहीं ज़रा किसे कीता, सुन के मरण दी खबर कुमार वाली।
उलटा ऋषि ताईं सतसंग देके, दित्ती शिक्षा ज्ञान विचार वाली।।
कोई न रह्या जहान ते कायम सदा, झूठी खेड है सब संसार वाली।
सुखदायक केवल नाम सतगुरां दा, प्रीति सच्ची है इको दातार वाली।।
बाकी किसे थां ते सच्चा सुख नाहीं, कोई किसे दा न गमख्वार डिट्ठा।
जिस नूं फोल डिट्ठा सोई दुःखी दासा,पांदा जग अन्दर हाहाकार डिट्ठा।।

फे-फकत अज़मावना रह्या बाकी, निर्मोही लड़के राजकुमार नूँ जी।
खौफनाकऋषि कोलों घड़त घड़ के,जाके कुटिया ते कहंदा दुलार नूँ जी।।
जेहड़े वेले तेरे घर पहुँचया मैं, जाके सुनया हाल पुकार नूँ जी।
अग लगी डिट्ठी तेरे घर अन्दर, देख डर गया मैं धुएँधार नूं जी।।
बचाओ बचाओ दी पयी आवाज़ आवे, बड़ा शोर सुनया उत्थे जाके ते।
पेश किसे दी गई न अग्ग अगे, आखिर मोए दासा दुःख पा के ते।।

काफ-कहर होया तेरे नाल बेटा, वेहदियाँ मोया राजा जल गई मां तेरी।
पति पति पुकारदी नार मर गई,मिट्ठी प्रेम ते प्यार दी छाँह तेरी।।
नौकरानी भी जल के खाक हो गई, जेहड़ी हमदर्द बड़ी दिलो जां तेरी।
तबेले विच बद्धे घोड़े जल मोये, न कोई मँझ रह गई न कोई गां तेरी।।
मुद्दा गल काहदी कुछ न रह्या तेरा, ऐसा वरतिया रब दा भाणा ए।
जिस दा कुझ न रहवे जहान अन्दर, दासा रोंदियां ओस मर जावणा ए।।

काफ-किस तरह होवेगा गुज़र तेरा, घर बाझ बच्चा किधर जाएंगा तूं।
बाल-अवस्था विच हुण बच्चा तूँ, कीवें दुःखां विच उमर लंघाएंगा तूं।।
केहड़ा खबर तेरी लवेगा आन के ते, रो रो याद कर के मर जाएंगा तूं।
बाझों मा-प्यां कोई न असल रिश्ता, दिल दी किस नूँ खोल सुनाएंगा तूँ।।
जिस तरह तेरे नाल होई बेटा, एस तरह न दुश्मन दे नाल होवे।
बच्चा होके बचेगा कीवें दासा, मा-प्यां बाझ बच्चा कोई न हाल होवे।।

गाफ-गल ऋषि दी सुनी जिसदम, अगों बोलदा राजकुमार भाई।
जीवें-जीवें लिखिया तीवें होवणा ऐं, मरना-जीवना न किसेअख्त्यार भाई।।
दाने-पानी दी खेड है सब दुनियाँ, जिस दा बन्द चा करे दातार भाई।
जग तों जावणा उस नूँ पै जांदा, ऐसे तरह संसार दी कार भाई।।
की होया जे मर गये सब मेरे, दुःख ज़रा न उन्हां दे जान दा ए।
न कोई साथआया न कोई साथगया,दासा सिलसिला एह जां जहान दा ए।

लाम-लक्खां आये लक्खां गये एत्थों, वांग सराय दे ए संसार स्वामी।
कोई न रह्या हमेश दे लई इत्थे, न कोई नाल गया जांदी वार स्वामी।।
हुक्म आये उत्ते सबने जावणा एं,जिस दी आ गई जान दी वार स्वामी।
एस वासते कानूँ रोवणा एं,रोंदे ओह जे बे विचार स्वामी।
बड़ी उन्हां दी जान दी खुशी मैंनूं, जेहड़े कर गये नेक कमाई नूँ जी।
निसदिन सतगुरां दी सेवा करके ते, दासा पा गये दुःखों रिहाई नूं जी।।

मीम-मेरा कीए एदों बाद स्वामी, तेरे चरण कमलां विच रहवांगा मैं।
हरदम सेवा करसां सेवादार बण के, अपने जनम नूँ सफल बनावांगा मैं।।
आज्ञा विच रहके सदा साहिब मेरे, बाकी उमर नूँ ऐवैं लघावांगा मैं।
दुनियाँ विच न फसां कदी स्वामी, भुल भुलेखियां विच न पावांगा मैं।।

चार दिनां दी ज़िन्दगी व्यतीत करके, तेरे चरणां विच स्वामी गुज़ार जासां।
एहो घर सच्चा दासनदास दा ए, इत्थे ही सच वाली करके कार जासां।।

नून-नाम सच्चा इको सतगुरां दा, होर झूठ सब जगत दी कार स्वामी।
मैं तांअगे ही एहो कुछ चाहवंदा सां, रहवां सन्तां दे सदा चरणार स्वामी।।
जेथों तीक होया एहो कार करसां,जेहड़ा बख्शया वक्त दातार स्वामी।
सतगुरु नाममलकीयत हैअसलअपनी,होर दुःखां दे जलनअंगयार स्वामी।।
डिट्ठा सुख न किसे संसार अन्दर, जो कोई गया एत्थों गया रोवंदा ए।
विचारवान गुरुमुख जांदे सुखी दासा, दुख जुदाई दा कदे न होवंदा ए।।

वा-वेख्या ऋषि कुमार पूरा, ए तां सब दे नालों कमाल है जी।
बच्चा होके केडा निर्मोही है एह, इसदा उन्हां तों उच्चा ख्याल है जी।।
दर्द भरी खबर सुण डोलिया ना, मा-पै मोयां की होवणा हाल है जी।
उलटा मैनूँ एह ज्ञान विचार देंदा, भावें छोटी उमर दा बाल है जी।।
बड़ा खुश होया ऋषि सब उत्ते, जो कुछ सुनया इस तों सो कुछ पाया मैं।
वाकई हो तुस्सी निर्मोह सब्बे, दासां ताईं है पूरा अज़माया मैं।।

हे-हो खुश ऋषि फिर कहन लगा, बड़े प्यार नाल राजकुमार नूँ जी।
जा घर जा के मिल सारयां नूँ, करदे होसन सारे इन्तज़ार नूँ जी।।
आज़मायश विच निकले तुस्सीं सब पूरे,वेखडिट्ठा मैं सब परिवार नूं जी।
ऐसे तरह रहना निर्मोह बण के, फानी समझ के सब संसार नूँ जी।।
कँवल फुल दे वांग निर्लेप रह के, सफर ज़िन्दगी दा मुकावना एं।
ऐसे वकत नूं हत्थों न जाण देना, दासा वकत दी कदर नूँ पावणा एं।।

ये-याद सतगुराँ कीता होंदा, झूठी याद न रहे कोई गल भाई।
सच्चे सतगुरां नूं जेहड़ा चाहन वाला, दिलों कढ देंदा वल छल भाई।।
लोक परलोकअन्दर ओदा जस होंदा, नाम जगत विच रहंदा अटल भाई।
आखिर जोती संग जोत समा जांदा, सुरती लगी जिस दी गुरां वल भाई।।
काम-क्रोध-मोह-लोभ न व्याप सकन, कदे होवे न भुल अहंकार ओहनूँ।
निजधाम अन्दर जाये पहुँच दासा, सच्ची मिल जाय मौज बहार ओहनूँ।।

ये-यकदम मोह नूं छोड़न वाले, मानुष तन दी कदर ओह पावंदे ने।
सतगुरां दा ख्याल अखीर आवे, ओही बिगड़िया कम बनावंदे ने।।
सगल मोह दुःखां दा घर होंदा, जेहड़े फस जांदे पछोतावंदे ने।
मोह छोड़ जो चाहन प्रेम भक्ति, आवागवन दा चक्र मिटावंदे ने।।
मोह-प्यार दीयां सखत बीमारियाँ ने, कोई गुरमुख ई बच के जावंदा ए।
ऐस मोह बीमारी तों दासां ताईं, केवल सतगुरु ही बचावंदा ए ।।

अटूट श्रद्धा

काफ-काबिले तारीफ गुरुभगत इक सी,कथाकविता विच करनब्यान लगा।
जीवें पक्का विश्वासी गुरुदेव उत्ते,सारी खोल केओहदी सुनान लगा।।
इकदिनओह सेवक सतगुरु नाल रलके,बाहर सफ़र लई क्दिरे जान लगा।
जांदयां उजाड़ विच आगई रात भाई,सतगुरु सेवक दे ताईं फरमान लगा।।
तूँ सौं जा ते असीं जागदे हां, अद्धी रात तीकर पहरेदार बण के।
दासनदास कहंदा ए नहीं ठीक साइयाँ, सेवक सौं जाय सेवादार बण के।।

कायम दुनियां दा सिलसिला होया जद दा, ऐसा होया न कदी दातार प्यारे।
सेवक सतगुरां दी निसदिन करे सेवा, तां सेवक दा होंदा सुधार प्यारे।।
तुसीं करो आराम, करां मुट्ठी-चापी, नाले रहां बनके पहरेदार प्यारे।
आखिर सौं गये पहली रात सतगुरु, पिछली रात नूँ होये बेदार प्यारे।।
कहंदे सेवक ताईं हुण सौं जा तू, अगों करांगे असीं ख्याल रातीं।
दास सौं गया हुक्म नूँ मन के ते, अगों दसां जो गुज़रया हाल रातीं।।

कैर भरया गुरां औंदा सरप डिट्ठा, प्या आवंदा वांग तूफान दे जी।
जानी जान सतगुरु ओनूँ रोक लिया, ओनूँ पुछदे नाल ध्यान दे जी।।
किस वास्ते दाड़दा आवंदा तूं, भावें कारण सतगुरु पहले जाणदे जी।
सरप आजिज़ी दे नाल अर्ज़ करदा, इशारा करे वल सुत्ते इन्सान दे जी।।
ए है मेरा दुश्मन-मैं हुण एहदा दुश्मन, कई जन्म बीते ऐञे आन प्यारे।
एहदे वास्ते दौड़दा दास आया, गल दा लहू पी कढनी जान प्यारे।।

काफ-कई बार पीता इस खून मेरा, पीता कई वारी एदा खून मैंने।
सरप बण के आया मैंनूँ कटदा ए, ऐदे कटन लई पाई एह जून मैंने।।
भाजी नवीं पाणीअग्गूं नाल एसदे, कढके खून गल दा नहीं देना कून मैंने।

एसदे गले दा खून ज़रूर पीणा, पाण देनी नहीं एनूँ सकून मैंने।।
एस वास्ते स्वामी जी आन पहुँचा, ढूँढया मिल्या मुश्किल ऐथे आन के ते।
खून पीन दे लई ए दास आया, सौण देना नहीं चादर तान के ते।।

क्या खून दी लोड़ या मारने दी, सतगुरु सरप दे ताईं फरमान प्यारे।
खून एसदा कढ के दे देना, साडे लई ए कम असान प्यारे।।
दर्शन कर गुरुदेव दा सर्प बोले, खून चाहिदा-चाहिदा न जान प्यारे।
सर्प बनके मारया एस मैनूँ, पिछले जनम सां जदों इन्सान प्यारे।।
एहदे गले दा खून जे मिल जावे, कोई लोड़ न मार के जावणे दी।
लैन-देन भाजी अगों बन्द करनी, दासा लोड़ न भाजी वधावणे दी।।

करके वादा ए सर्प दे नाल सतगुरु, चाकू उसे वेले फड़ लैन प्यारे।
खून सेवक दे गले दा कड्ढन खातिर, सेवक दे हाँ उत्ते चढ़ बैहन प्यारे।।
अखाँ खोल सेवक फेर मीट लइयाँ, एह तां दयालु सतगुरु मेरे हैन प्यारे।
मेरे भले लई छाती ते चढ़े होसन, वेख होवां कानूँ बेचैन प्यारे।।
लोड़ मुताबिक गले दा खून कढके, देके सर्प नूँ कीता रवान सतगुरु।
ओसे वकत दित्ती पट्टी बन्ह गल ते, दास उत्ते होके मेहरबान सतगुरु।।

गाफ- गुज़री रात ते दिन चढ़या, सतगुरु सेवक दे ताईं फरमान लगे।
गले उत्ते पट्ठी बद्धी किस कारण, गल ते खून दे कित्थों निशान लगे।।
की वजह हुई सानूं दस ते सही, वेख असीं पै होन हैरान लगे।
छेती दस सानूं लगा फिकर इसदा, सोचयां कोई न साडा ज्ञान लगे।।
हथ जोड़ के सेवक जवाब दित्ता, जानी जान तुसीं करनहार तुसीं।
जो कुछ करो सब भले दी करो स्वामी, दासनदास दे हो मुख्त्यार तुसीं।।

गुरुमहाराज दे चरनां दे डिग कहंदा, मैं बलिहार स्वामी लखवार स्वामी।
भला हरदम सेवक दा सोचदे हो,सेवक भुलनहार,बख्शनहार स्वामी।
मैं की जाणदा सां जो कुछ होवणा सी, बे सहारे दे हो मददगार स्वामी।।
नहीं तां सर्प मैंनूं मार जावणा सी, भाजी चलनी सी बारम्बार स्वामी।
बचाई जान मेरी खाना पूरी करके, मुका दित्ता कुल हिसाब अगूँ।
यह सब सतगुरां दी किरपा दास उत्ते, नहीं ताँ होणा सी प्या खराब अगूँ।।

ज्ञान ध्यान न गुरां बिन कदी होंदा, बाझ गुरां दे होंदा सुधार नहीं।
गुरां बाझ न लगदी समझ कोई, गुरु बिन मिले किथों वस्त सार नहीं।।
मिले किसे ताईं न मोक्ष पदवी, जिचर गुरां दा आज्ञाकार नाहीं।
पढ़ पढ़ ग्रन्थ न किसे नूं पता लगा, होया किसे नूँ ज्ञान विचार नाहीं।।
सतगुरां दा सेवक सेवादार बन के, पा दुखाँ तों ओहो छुटकार जाँदा।
सतगुरु बाझ न बन्धन तों जीव छुटे, दासनदास ही दुखाँ तों बाहर जाँदा।।

मनमुख

वा-वकत गुरु अर्जुनदेव दे इक सेवक, रहंदा सतगुरां दे दरबार भाई।
खान-हँडांन दरबार दे विचों करदा, फिर भी करे न कोई कम-कार भाई।।
जे कोई गुरुमुख कहंदा भाई कर सेवा, अगों करदा झट इनकार भाई।
मैं तां सतगुरां दी सेवा करन आया, त्वाडा किसे दा नहीं सेवादार भाई।।
सतगुरु आप आखन भावें सखत सेवा, खुशीनाल ओ होसी कबूल मैंनूं।
दास त्वाहडे आखे सेवा नहीं करनी, ऐवें आखना त्वाडा फज़ूल मैंनूं।।

वधी चर्चा एह ओहदी दरबार अन्दर, गुरां तीक पहुँची खबर आन भाई।
दरबार लाके सतगुरु सारयां नूँ सतसंग विच एह करन फरमान भाई।।
सेवा सार वस्तु मन नूँ शुद्ध करदी, मान त्रोड़ बनाये निरमान भाई।
जेहड़े अंग नाल सेवा करे सेवक, ओह अंग पवित्र हो जान भाई।।
एह शरीर पंजभौतिक न कम किसे, जेकर गुरां दी सेवा कमाए नाहीं।
सेवा गुरां दी नाल कल्याण होंदी, दास जन्मां दे दुःख उठाए नाहीं।।

वकत ओसे होके खड़ा ओही सेवक, हथ जोड़ के अर्ज़ सुनान लगा।
मैंहां सेवक ते तुसीं हो स्वामी मेरे,जिसलई शरण तुहाडी विचआन लगा।।
आज्ञा पालण करसां सेवादार बनके, आज्ञा बाझ नहीं कदम उठान लगा।
हुक्महोवे तां नदी विच छाल मारां,अगविच सड़ांगा नहीं हुक्मपरतानलगा।।
जेकर गैर कहवे कोई कर सेवा, कहना ओसदा मैंनूं मन्ज़ूर नाहीं।
हुक्म गुरां दा मन्नेगा दास सिर ते, करसां भुल के ऐसा कसूर नाहीं।।

हे-हस फरमाया गुरुदेव उसनूं, जा फिर सड़ जा अग विच जा के ते।
फलाणे जंगल विच कट्ठियाँ कर लकड़ाँ,छाल मार विचअग लगाके ते।।
चाईं चाईं ते हुकम नूँ मन टुरया, मगरों वेखदा मुख भुवां के ते।

मत्ते हुकम सतगुरु चा देण पिच्छों, ल्याओ एस नूँ पिछां परता के ते।।
आखिर जंगल दे विच पहुँच के ते, करे लकड़ाँ दा उत्थे ढेर भाई।
दास लकड़ियाँ नूँ अग ला के ते, प्या वेखदा चार चुफेर भाई।।

हाय अग विच कीवें मैं छाल माराँ, चिखा दिवाले प्या फेरे मारदा ए।
नेड़े चिखा दे होया नहीं मूल जाँदा, औखा हुकम एह जापे सरकार दा ए।।
बड़ा मुश्किल एह रस्ता मैं पकड़ बैठा, प्या सोचदा ते विचारदा ए।
चोर चोरी कर के इक आया उत्थे, तमाशा वेखदा प्रेमी दी कार दा ए।।
इर्द गिर्द फिरदे बन्दे ओस ताईं, चोर पुछदा हो हैरान भाई।
की दुख बनया मारें चक्कर दासा, सारी खोल के कर ब्यान भाई।।

होया हुकम सी गुरां मेरे दा ताईं, सड़ जा अग विच छेती जा के ते।
जंगल विच करके ढेर लकड़ां दा, छाल मारनी अग लगा के ते।।
खुशी नाल ओथों ते चल प्या सां, हुकम गुरां दा झोली विच पा के ते।
छाल मारन ते मेरा नहीं दिल करदा, जी घबड़ा रह्या इत्थे आके ते।।
चोर आखया अगों उस सेवक ताईं, सारा चोरी दा माल सँभाल भाई।
बदले आज्ञा गुरां दी दे दासा, मैं मारना अग विच छाल भाई।

ये-या गुरा आ तेरी मेहरबानी, माल दित्ता ही छप्पड़ पाड़ के ते।
लिया रोक तूं छल के चोर ताईं, सेवक मरे नाहीं जिसम साड़ के ते।।
हुक्म गुरां दा चोर नूँ दे दित्ता, आज्ञा गुरां दी नूँ ओस हार के ते।
हुक्ममिलदियाँ सारओह चोर दासा,सड़ गया चिखाअन्दर छाल मारकेते।।
निराले ढंग दी रोशनी चिखा विचों,बण के चढ़ गई उत्तां आसमान नूँ जी।
दास विच विमान दे बैठ के ते, गया पहुँच ओह निज अस्थान नूँ जी।।

यकायक तलाश करदे आये मालिक,फड़ लयाआनके ओस जवान नूँ जी।
बैह के माल दी सी पड़ताल करदा, तैयार होंदा प्या लै के जाण नूँ जी।।
खूब मार कीती उन्हां औदियाँ ई, अगे लाया चुका सामान नूँ जी।
विच अदालत दे जाके पेश कीता, मनमति सेवक बेईमान नूँ जी।।
जज आखदा दे ब्यान सारा, चोर बन क्यों लुटया माल तूँ ने।
डर भुल के पुलिस अदालताँ दा, दासा चली ऐसी क्यों चाल तूने।।

यकीन करो सुनावांगा सच सारी, जीवें हथ आया एह माल मैनूं।
जोड़ लकड़ाँ चिखा बना सड़ जा, हुकम दित्ता सी दीन दयाल मैंनूं।।
चिखा बणा के अग लगाई जिसदम, सेक दूरों प्या करे लाचार मैंनूं।
इर्द गिर्द चक्कर लाणे शुरु कीते, मुश्किल मारनी हो गई छाल मैंनूं।।
चोर चोरी कर के कुदरती आन पहुँचा, शुभ कर्मां दे जागे संस्कार भाई।
मेत्थों पुछदा चक्कर क्यों मारें दासा,ऐसी करी जावें किस लई कार भाई।।

बेनती ओसनूँ सारी सुनाई जिसदम, मैं नूं आखदा हो दयाल भाई।
आज्ञा गुरां दी दे दे दिलों मैंनूं, बदले माल एह सारा सँभाल भाई।।
आज्ञा गुरां दी दे के ल्या माल उस तों,चोर मारी चिखा विच छाल भाई।
सारी खोल सुनाई ए सच मैंने, जो कुछ गुज़री ऐत्थे मेरे नाल भाई।।
न चोर न चोर दा भाई हां मैं, चोरी कीती न चोरी दा ढंग मैनूं।
चोर दास बन चिखा विच छाल मारी, बेकसूर हाँ करों न तंग मैनूं।।

चोर गुरु घर दा नाले एस घर दा, जज आखया बन्ह ले जाओ एहनूँ।
टोया कढ के ते एस पापी ताईं, कमर तीक चा पूरा दबाओ एहनूँ।।
दही पा उत्ते ज़ालिम कुत्तयां तों, तरसा तरसा के ते मरवाओ एहनूँ।
या पोटा-पोटा करके आप तुसीं, लोकां सामने मार मुकाओ एहनूँ।।

किसे तरह भी एसनूँ छोड़ना नाहीं, जज साहिब ने हुक्म सुना दित्ता।
ओसे तरह ओस दास दे नाल कीता, जीवें जज ने हुकम फरमा दित्ता।।

मना मेरेया मन तू गल मेरी, नाल मन नूँ वी तूं मना लेवीं।
सेवा सतगुरां दी कर तूं नाल दिल दे,ठगियाँ विच न तूं जन्म गँवा लेवीं।।
भागां नाल एह वक्त है हत्थ आया, लाभ भगती दा एस तों कमा लेवीं।
आखिरकार एत्थों टुर जावणां ए, तोशा नाल दा कुछ तू बना लेवीं।।
गुरुभक्ति जाएगी नाल तेरे, होर नाल तेरे कुछ जावणाँ ना।
दासनदास गुरां दी भगती कर, हीरे जन्म नूं मुफ्त गँवावणा ना।।

भाई जोगा सिंह

ज़ाल-ज़िकर करां भाई जोगासिंह दा, जीवें गुरां दी सेवा कमाई उसने।
हितचित नाल गुरु दरबार रह के, दात भगति वाली जीवें पाई उसने।।
सतगुरु बाझ न होर ध्यान कीता, ऐसी सुरत गुरु चरणाँ विच लाई उसने।
करके गुरु सेवा अट्ठे पहर प्रेमी, कीती हिरदे दी जीवें सफाई उसने।।
मदद सतगुरां दी लैके प्रसंग उसदा, विच कविता दे कर सुनान लगा।
दासनदास नूँ गलती न कोई लगे हत्थ जोड़ के कलम उठान लगा।।

ज़िम्मेवारी जद जीवाँ दे तारने दी, चलदा हुकम गुरु दसवें अवतार दा सी।
जोगासिंह पिशावरी सिख उत्थे, सतगुरु सेवा विच वकत गुज़ारदा सी।।
अमृत वचन सतगुरां दे करे सरवन,अखां विच जलवा सतगुरुप्यार दा सी।
हत्थां नाल करे सेवा सतगुरां दी, हिरदा दम दम गुरु पुकारदा सी।।
जितने सुख संसार दे विच मिलदे, सेवा बाझ नाहीं सुख पाये कोई।
उत्तम पदवी मिले न कदी दासा, सतगुरु सेवा न जेचर कमाये कोई।।

ज़ाती कम लई सेवा कर दियाँ नूँ जोगासिंह जी मुद्दत लँघावंदे ने।
माता-पिता उस देओहनूँ लैन खातिर,आनन्दपुर साहिब दे विच आवंदे ने।।
दोवें जोड़ के हथ हुज़ूर अग्गे, नाल आजिज़ी अर्ज़ सुनावंदे ने।
जोगासिंह दी शादी दा चाह सानूँ, दोवें आखदे नाले शरमांवंदे ने।।
सेवा वलों हटाइये नहीं दिल करदा, ए पर करदी मरयादा मज़बूर साईं।
जोगासिंह नूं हत्थी व्याह जाईये, दास जोगे नूँ टोरो ज़रूर साईं।।

रे-राज़ी होके सतगुरु टोर दित्ता, जोगा सिंह नूँ माप्यां नाल भाई।
सेवा करन दा सुक्ष्म अहंकार उस विच, जिसनूं जानदे दीन दयाल भाई।।
सेवक नाल गुरां इक टोर दित्ता, रुक्का दित्ता लिख रखीं सँभाल भाई।

दो लावां जद लैणियाँ रहन बाकी, एह रुक्का जोगे नूँ देणा विखाल भाई।।
रुक्का वेहंदियां जोगा सिंह चला आवे, सतगुरां ने छेती बुलाया ए।
डेर लावे नाहीं दास वेख रुक्का, सतगुरां ने लिख फरमाया ए।।

रुखसत लै जोगा सिंह माप्यां नाल, शादी वास्ते घर नूँ आया ए।
बड़े चाह ते संद्रां नाल उसदा, घर माप्यां काज रचाया ए।।
मामे मासियाँ फुफियां भैणा ताईं, खत खुशियां दे पा मंगवाया ए।
मुकर्रा तारीख उत्ते सारे आन पहुँचे, जिस जिस नूँ गया बुलाया ए।।
सेहरा बँधा जोगा सिंह चढ़या घोड़ी, भैणां फड़ी घोड़ी दी वाग उत्थे।
दास वंडदा खुशी दे विच आके, भैणां सारियां दे ताईं लाग उत्थे।।

रवाण होई बरात खुशियाँ नाल सारी, द्वारे कुड़मां दे पहुँची आन भाई।
करके मिलनी प्रशाद छकाया जदों, पाँधा पत्री वल करे ध्यान भाई।।
अमृत वेले दे फेरे पै निकलदे ने, लगन अनुसार एह लगे मीज़ान भाई।
प्रातःकाल वेले फेरे होण लगे, दो लावां जदों लइयाँ जवान भाई।।
जोगासिंह नूं रुक्का पकड़ाया सेवक, पढ़दयां सार आनन्दपुर आवणा तू।
सतगुरां दा होया फरमाण दासा, रुक्का वेहंदयां पलक न लावणा तू।।

ज़े-ज़बरदस्ती लावां छड टुरया, पढ़ के हुकम दशमेश सरकार दा जी।
साख सम्बन्धी सारे रहे रोक ओनूं, पिशां मुड़या न रुख सरदार दा जी।।
कीता परत न ओस ध्यान सुन के, हर कोई रहया भावें वाजां मारदा जी।
कानूं सदया छेती दातार मैंनूं, टुरदयाँ जोगासिंह एह विचारदा जी।।
दिल विचआखे नहीं मेरे ज्या कोई सेवक,लावां छड जेहड़ाआज्ञा पालदाए।
दास जोगे नूं होया हंकार कहंदा, आज्ञाकार न कोई मेरे नाल दा ए।।

ज़बरदस्त अहंकार दे विच भरया, चलदा जावंदा सी गुरु-धाम नूँ जी।
आखिर चलदयाँ हुशियारपुर पहुँचगया,दिन छुप्पण लगे यानी शाम नूँ जी।।
अहंकारत्रोड़न लई लीलारचाई सतगुरु,चकराई बुद्धि भुलया गुरुनाम नूँजी।
वेसवा वेख ओत्थे बेवस होया,जगाया ओस ने अन्दरूँ काम नूँ जी।।
अन्दर जावन दी बारम्बारकरे कोशिश,सतगुरुबण सिपाहीओहनूँ रोकया ए।
दासा अग्गे राजा अन्दर गया होया, तेरे जाण दा अजे न मौकया ए।।

ज़ोर जोगासिंह अन्दर लई बड़ा लाया, सिपाही रोक के रात गुज़ार दित्ती।
दिन चढ़या ते कहँदा सिपाही ओनूँ, सिक्खा काम तेरी मत मार दित्ती।।
कक्के धार पंजे पंज न बस कीते, बाज़ी प्रेम दी ला के हार दित्ती।
जा सिक्खा टुर जा एत्थों दूर हो जा, पहरेदार ने ओहनूँ फटकार दित्ती।।
होश आई कहंदा लखलानत जोगे, लावां छड जे तूँ ऐत्थे आवणा सी।
गुरुमत छड के होणा मनमत सी जे, दासा तां फिर व्याह करावणा सी।।

सीन-सोचे ते प्या पछताये जोगा, क्यों भुल गया अपनेआप नूँ मैं।
पंजे धार कक्के गुरु सिख बन के, करन लगा क्यों सां ऐसे पाप नूं मैं।।
झूठी माया दे काबू आ के ते, पान लगा सां दुःख सन्ताप नूँ मैं।
सच्चे सतगुरां दा सेवक होके ते, बन के कामी क्यों चढ़या ताप नूं मैं।
देनदार बनया मैं तां सतगुरां दा, जेहड़ी कर बैठा ऐडी भुल नूँ जी।
बदनामी होवेगी सच्चे दरबार अन्दर, दाग लगेंदा दास दी कुल नूँ जी।।

सवेरे चल के ते जोगासिंह ओत्थों, आनन्दपुर साहिब दे विच जावंदा ए।
कर्मां कीतियां तों डरदा डरदा जोगा, सतगुरां नूँ सीस निवावंदा ए।।
ओही सेवक एहदी बहादुरी दा,ज़िकर गुरां दे ताईं सुनावंदा ए।
धन्न कमाई त्वाडे जोगसिंह दी ए, लावां छड जो हुकुम बजावंदा ए।।

रस्ते वाली न जोगासिंह खोल दित्ती, परब्बल माया ने जीवें भरमाया सी।
जाननहार जाणे जीव की जाणे, दिलों दास ने भेद छुपाया सी।।
सतगुरु आखदे सेवक नूं हसके ते, जोगासिंह ते बड़ा इतबार भाई।
सारी रात खलोवणा प्या सानूँ, जोगे लई बण के पहरेदार भाई।।
बड़ा रोकया रुके न रात वेले, मुश्किल एसदी कही बिगाड़ भाई।
सुण के जोगासिंह चरणाँ दे विच डिगा, होया बहुत ओत्थे शरमसार भाई।।
मैं बलिहार जावां चरणां तेरियां तों, माया आपणी आपे तू पाण वाला।
परबल पर माया अपने दास उत्ते, आपे ओसनूं फेर बचान वाला।।

शीन-शोर अहंकार दा प्या जेहड़ा, जोगासिंह दा गुरां त्रोड़ना सी।
रचना आपे रचाई गुरुदेव ऐसी, जिस लई रुख जोगे इधर मोड़ना सी।।
तांही जोगा सिंह बस काम होके, ख्याल वेसवा संग ओस जोड़ना सी।
सतगुरु बण सिपाही ओहदे ताईं, कुकर्म करन वल्लों आपे होड़ना सी।।
अहंकार तोड़ के ते लाया सच मारग, गुरुभक्तां लई न ठीक हंकार होंदा।
मान अहंकार दी बो जिस दास अन्दर, बेड़ा ओसदा दुखों नहीं पार होंदा।।

शिष्य गुरां दे हुकुम नूँ मन के ते, लावां छड के जिस दम आ गया सी।
हंकार मान दा भूत असवार होया,दिमाग ओसदा सखत चकरा गया सी।।
हुशियारपुरआके होणाहुशियार सी उस,उलटा वेसवा वेखधोखा खा गयासी।
पहरेदार बण सतगुरां रोक लया, रातीं जाग के आप बचा गया सी।।
जोगासिंह जेकर हुकुम मन के ते, लावां छड जेकर ओत्थों आवंदा ना।
रुड़ जावंदा काम दी नदी अन्दर, सतगुरु आनके दास बचावंदा ना।।

शास्त्र ग्रन्थ सब एस लई ज़ोर देंदे, सतगुरु बाझों कदी कल्याण नाहीं।
सतमार्ग उत्ते चलना बाझ सतगुरु, होंदा जीव दे लई आसान नाहीं।।

लख साधना करे गुरुदेव बाझों,सतगुरु बाझ हो सकदा ज्ञान नाहीं।
काल-माया दे चक्करों न निकल सके,जिचर गुरां दा अन्दरों ध्यान नाहीं।।
चलदी चक्की विच्चों दाना बच निकले,जेहड़ा नाल किल्ली दे मिल जांदा।
काल माया तों दास ओ बच सके, गुरां नाल जिस दा मिल दिल जांदा।।

स्वाद-सिरफ सच्चा सतगुरु अपना ए, जेहड़ा साथी लोक परलोक दा ए।
सतमार्ग उत्ते ओही लाण वाला, गलत रस्तियों जीव नूँ रोकदा ए।।
सतगुरु बाझ सब खून निचोड़ लैंदे, स्वभाव जिस तरह होंदा जोंक दा ए।
ए पर कठिन रस्ता सतगुरु पाण वाला,बारीक वांगरां सुई दी नोक दा ए।।
हिम्मत कर के ते जेहड़ा चल पैंदा, ओहदे वास्ते मिलना आसान होवे।
हिम्मत कीतयाँ बाझ न कदी दासा, अपने आप दी ओन्हूँ पछान होवे।।

सुबह शाम जो झूठयां कम्मां अन्दर, बन्दा लगा रहंदा हर हाल भाई।
समान जोड़दा रहंदा फज़ूल ऐवें, जेहड़ा पा देंदा वस काल भाई।।
ओनहा करे ख्याल परमारथ पासे, क्यों न हो जावे जीव खुशहाल भाई।
मन मत छोड़ के ते गुरुमत धारे, हो जावंदे नेक ख्याल भाई।।
जे ते सतगुरु राज़ी हो जावंदे, पा जांदा ओह निज धाम नूं जी।
मानुष तन दा पावना सुफल दासा, बना लया जिस अपने काम नूँ जी।।

सही रास्ता केवल सतगुरु दस्सन, होर गलत रस्ते उत्ते पान वाले।
आप डुब्बे माया दे विच जेहड़े, दस्सो किसे नूँ किवें बचाण वाले।।
कम सतगुराँ दा दुःखों पार करना,आपआज़ाद तेआज़ाद करान वाले।
जेहड़े जागदे जगत दे विच आके, मोह दी नींदरों ओही जगान वाले।।
सतगुरु बाझ न कोई जगा सके, होंदी किसे नूँ एडी तौफीक नाहीं।
सुत्ते होय नूँ सुत्ता जगाये दासा, होया ऐसा कदी अज तीक नाहीं।।

मोह ममता

खे-खबर सुण भैड़ी ओ दुःखी होंदा, जिसने मन दी मन्नी मनौत होवे।
ममता बाझ न किसे नूं दुःख होंदा, भावें कोल जवान दी मौत होवे।।
खबर लग जावे ए तां अपणा सी, दुःख ओस नूँ ओस दा बहुत होवे।
जुदाई ओस दी न सहार सकदा, गमां ओहदियाँ दे विच फौत होवे।
ऐसे इतिहास दी कविता मैं करन लगा, ज़रा सुनना नाल ध्यान भाइयो।
भक्ति दीपक दे विच ए लेख आया, दासनदास जो लगा सुनान भाइयो।।

ख्वाहिश धनवान बणन दी कोई बन्दा,गया परदेस विचकरन व्यापार नूंजी।
घर छोड़ गया छोटा ज्यां बच्चा, नाले छोड़ गया घर दी नार नूँ जी।।
थोड़े अरसे विच आन धनवान बनया, चलाया रब ने खूब रुज़गार नूँ जी।
चिट्ठियाँऔरत नेऔन लई बहुत पाइयाँ,फुर्सत मिले नाहीं साहूकार नूँ जी।।
अजकल करदियाँ गुज़र गये बरस बारह,पर होवे नओहदा निकाल ओथों।
माया झूठी ऐसा गलबा पाया दासा,निकलना हो गयाओहदा मुहालओत्थों।।

खैर नाल इक दिन करके दिल डाढा, होया घर नूँ सेठ रवान भाई।
इक दो नौकरां नूँ लैके नाल ओत्थों, घर लइ लिया खरीद समान भाई।।
चलदेयां रस्ते विच इक शहर आया, रात पै गई जित्थे आन भाई।
धर्मशाला किसे लाया ओन्हां डेरा, कमरा किराये लिया आलीशान भाई।।
पुत्तर सेठ दा ओधर जवान होया, अपनी माता ताईं ओह कहन लगा।
चिट्ठियाँ लिख थके पिता नहीं आया, दिल दास दा लगन बेचैन लगा।।

दाल-दित्ता प्यार माता ओस ताईं, तैनूं कीता ईश्वर होशियार बेटा।
तेरा धर्म है पिता दा पता करना, ज़रूर चला जा इक वार बेटा।।
पता लिख दित्ता पति अपने दा, सिद्धा चला जाईं पते अनुसार बेटा।

छेती पता करके वापिस आ जाणा, इकल्याँ मेरा वी रहणा दुश्वार बेटा।।
ओसे वक्त रुक्का लैके ओह लड़का, पता करन दे लई रवान होया।
चलदियाँ शहर उसे दास पहुँच गया, जित्थे बाप दा ठहरना आन होया।।

दूर थोड़ी जई ओही धर्मशाला, ओत्थे पुत्र वी डेरा उतार दित्ता।
थोड़ी दूर सी कमरा बाप नालों, जेहड़ा कमरा ओनूँ चौकीदार दित्ता।।
रातीं बारह वजे पेट-दर्द शुरु, जिसने लड़के नूँ कर बेज़ार दित्ता।
हाय हाय करे उच्ची ओह लड़का, कहँदा ए हाय रब्बा दर्द मार दित्ता।।
कन्ने सेठ दी हाय दा शोर पेया, चौकीदार नूँ सेठ बुलांवदा ए।
मेरे आराम विच पै गया खलल आके, दासा कौन ए शोर मचावंदा ए।।

दुःख वंडया गया न सेठ कोलों, चौकीदार नूँ उलटा दबान लगा।
इस शोर नूँ जाके बन्द कर दे, मुसाफिरां ताईं क्यों करन हैरान लगा।।
भला चुप कित्थे जिसनूं दर्द डाढा, बेहाल होया उलटा शोर पान लगा।
हाय हाय करे प्या ओह लड़का, मेरे नाल की करन भगवान लगा।।
आखिर सेठ कह्या एहनूँ बाहर कड्ढो, एहदा शोर न मैंनूं पसन्द भाई।
बेदर्द होके ते बाहर कढ दित्ता, दास फाटक दित्ता कर बन्द भाई।।

डाल-डबल सर्दी बारिश ओलियाँ दी, ठंड नाल ओह सख्त बेज़ार होया।
बरदाश्त कर न सकया ओह लड़का, पेट दर्द तों अग्गे ही लाचार होया।।
झटपट शरीर नूँ छोड़ गया, ऐसा आनके हुकुम करतार होया।
लावारिस लाश बाज़ार सुबह वेले, हैरान वेख के कट्ठा बाज़ार होया।।
धर्मशाला दा फाटक वी खुल गया,सुण के औन मुसाफिर पै बाहर नूँ जी।
ऐसा सोहणा लड़का कीवें मोया दासा, पै सोचन ते करन विचार नूँ जी।।

डाढा वेख के सबणा नूँ दुःख लगा,कित्थोंआया ते कित्थेएस जावणासी।
कुछ पता न लगे एस गल दा, किस लई होया ऐत्थे एहदा आवणा सी।।
ओहदी जेबविचों कागज़ निकलआया,लड़के पिता नूँ जेहड़ा विखावणा सी।
ओसे सेठ दे हथ विच आया ओहो, जेहड़ा पढ़ उस खुश हो जावणा सी।
ओहो पढ़ के सेठ ने गश खादा, अपने बच्चे नूँ आप मैं मार दित्ता।
दासा सेठ भी ज़िन्दा न रह्या पढ़के, ऐसा मोह ने कहर गुज़ार दित्ता ।।

डिट्ठा सेठ ने ओही बच्चा जदों, पेट दर्द दे नाल बेहाल होया।
गैर समझ के बाहर कढा दित्ता, दुःख ओहदों न रत्ती रवाल होया।।
जदों समझया पुत्र एह आपणा सी, थरथर कंबया ते बुरे हाल होया।
आखिरकार ओह सेठ मनौत करके, ओसे वक्तत ही वस काल होया।।
जेहड़े सतगुरां दे प्रेमी हो जांदे, माया ओहनां नूँ मूल न व्यापदी ए।
मोह-ममता कोलों दासा छुट जांदे, सतगुरु मेहरबानी जिस ते आपदी ए।।

झूठा प्रेम

ज्वाद-ज़रुरतमन्द सी भक्ति दा इकलड़का,सेवासन्तां दी रोज़ कमावंदासी। ऐसा गुरां दा ओनूं प्रेम लगा, सुबह शाम दोवें वक्त जावंदा सी।। ऐसी लगन लगी ओहनूँ सतगुरां दी, दर्शन बाझ न कुछ चाहवंदा सी। सेवा गुरां दी करके दिने राती, खुशियाँ विच ओह झट लघावंदा सी।। संस्कारां वाला बड़ा सी ओह लड़का, करदे जिस लई गुरु प्यार उसनूँ। भवजलों पार करना उसे नूँ चाहन दासा,सत्संग देंदे रहंदे बारम्बार उसनूँ।।

ज़रूरी समझ के माप्याँ फरज़ अपना,उसदा कीता चा उन्हाँ व्याह भाई। व्याह होंदियां ही लड़के ओस दी, हो गई होर दी होर निगाह भाई।। सच्चा राह छड के सतगुरु मिलण वाला,पै गयाआण केओह कुराहभाई। समझदार ताईं माया घेर के ते, गुरां वलों कर दित्ता गुमराह भाई।। नारी प्यारी दे हो के वस लड़का, सतगुरां कोल जाणा छोड़ गया। दास बण गया अपनी नार दे ओह, सतगुरां वलों मुख मोड़ गया।।

ज़मीर ओहदी नूं कीता खराब औरत, ऐसा जादू उस लड़के नूं पा दित्ता। कर कर मिट्ठियाँ गलाँ प्रेम प्यार दियाँ, नारी गुरां दा नाम भुला दित्ता।। कीता कतरिया भक्ति दा फल सारा, ओस भगत दा नारी गँवा दित्ता। बिना नारी दे होर सब भुल गया, ऐसा नारी कोई सबक पढ़ा दित्ता।। जदों गया न गुरां दे कोल लड़का, सतगुरु प्रेमी दा ख्याल उठावंदे ने। की वजह हो गई उस दास ताईं, बड़ा ऐस लई दुःख मनावंदे ने।।

तोए-तालिब साडा सी ओह पक्का, रोज़ आवंदा सी सुबह शाम नूँ ओह। ओहदा पता जाके करना चाहिदा ए, सानूँ छड लगा किस काम नूं ओह।। या होया बीमार लाचार किधरे, करदा जिस लइ किथे आराम नूँ ओह।

याकोई माया डाढी पै गईओस उत्ते,जिसलई भुल गया साडे नाम नूँओह। चल पए गुरुजी ओस दा पता करने,अचानक लड़का अगूँ प्या आवंदा ए। सतगुरां नूँ वेख के ओह लड़का, दासा दूजे रस्ते पै जावंदा ए।।

ताकत छुप्पण दी लड़के ने लाई सारी, एपर वेख लया दीन दयाल ओनूँ। रस्ता उसे वाला गुरां झट फड़या, मिल पए चल के तेज़ी दे नाल ओनूँ।। मत्था टेकदा नाल शर्मिन्दगी दे, सतगुरु पुछदे हाल-हवाल ओनूँ। हुण आवंदा नहीं कदी कोल साडे, पै पुछदे नाल ख्याल ओनूँ।। हथ जोड़ कहंदा हो गई हुण शादी, हो गया ओहदे सँग प्रेम प्यार मेरा। जिदे वास्ते निकलना घरों मुश्किल, दासा कारण इहो सरकार मेरा।।

तरफ होर किसे नहीं जाण देंदी, कहँदी कौन मेरा तेरे बाझ प्यारे। बाँह फड़ी नूँ फड़ के जावँणा ना, तेरे हथ मेरी है लाज प्यारे।। तेरे नाल निभावांगी मुश्किलाँ नूँ, कदी कराँगी न एतराज़ प्यारे। एतबार वाली बड़ी मैं नूँ जापदी ए, होंदी वेखी नहीं कदी नाराज़ प्यारे।। ओदे प्यार पिच्छे इत्थे नहीं आया,मुआफी एस करके सतगुरु चाहवंदा हाँ। मेरे बाझ न ओनूँ आराम दासा, ओहदे बाझ मैं भी दुःख पावँदा हाँ।।

ज़ोए-ज़ल्म करें अपने आप उत्ते, जेहड़ा औरत नूं सच्ची बनाई फिरदा। सतगुरां फरमाया ए झूठ बिल्कुल, जेहड़ी नार दी देंदा सफाई फिरदा।। औखेवक्त एहदा तैनूँ पता लगसी,तसव्वर हिरदै विचजिसदा वसाई फिरदा। आखिर वेख लैंणा देना एस धोखा, पल्ले बन्ह के जिदी सचाई फिरदा।। असीं आखदे नहीं तूं छड औरत, एह पर दे न सारा ध्यान एनूँ। आत्मा रूपी तलवार रख साथ दासा, सिरफ समझना वांग म्यान एनूँ।।

ज़ाहिर हो जासी प्यारी जीवें तेरी, जेकर करें दस्या साडे काम नूं तूं। पेट दर्द होवे कहना नार ताईं, घर जाएंगा जिस दम शाम नूँ तूँ।। मंजी छड थल्ले जाके लेट जाणा, विधि नाल करके प्राणायाम नूँ तूँ। मोयां वांग जापेंगा ओस वेले, इर्द गिर्द वाले खासो आम नूँ तूं।। लत्तां थम्मी दे विच फँसा देवीं, फिर वेखणा कर ए कार प्यारे। सारा प्यार नार दा नज़र औसी, दासा प्यार करसी ज्यों कर नार प्यारे।।

ज़हूर हुज़ूर विच फेर अर्ज़ करदा, एह ताँ करांगा मैं ज़रूर स्वामी। जेकर आखो औरत नूँ छड दे तूँ, ऐसा करांगा न कसूर स्वामी।। प्यारी ओह बड़ी बड़ा चाहे मैंनूं, मैं भी पलक न होंवँदा दूर स्वामी। होर सब कुछ करांगा न रुकांगा न, जीवें आखि या आप हुज़ूर स्वामी।। हुक्म मन सतगुरां दा घर जाके, अपनी प्यारी ताईं जाके बोलदा ए। पेट मेरे विच अज कुझ दर्द दासा, झूठ बोलदा ते कुफर तोलदा ए।।

ऐन- अर्ज़ करे सुन के नार उसदी, कच्ची-पक्की अजकल बहार है जी। बाज़ारों चीज़ खादी कोई खट्टी मिट्ठी, दिल जेस लई बेकरार है जी।। आराम आ जासी घबड़ाओ नहीं, तसल्ली दे कहँदी ओस दी नार है जी। मंजी छोड़ के भुईं ते आन डिग्गा, जीवें होंदा कोई सख्त बीमार है जी।। प्राणायाम कर स्वांसां नूँ रोक लिया, जापे प्या परलोक सिधारया ए। लत्तां थम्मी इच फंसियां न बोले दासा,आवाज़औरत जिस दम मारया ए।।

ऐन- वक्त उसे पति समझ मोया, अपने दिल विच करे विचार प्यारी। मुर्दा समझ पति उत्ते चढ़ के ते, छिक्यों घ्यो नूँ लैंदी उतार प्यारी।। बना के पिन्नियां खा के वकत ओसे, इक वारी ते मारे डकार प्यारी। दिन दा दुध सी जेहड़ा उबाल रखिया, ओसदी खीर चा करे तैयार प्यारी।।

पति ताई आवांगी साड़ जदों, खा लवाँगी आन के खीर नूँ जी। पति प्यारा भी प्यारी नूँ जाए वेंदा, दासा करे पई जेहड़ी तदबीर नूं जी।। आम लोकां वाँगन सौं गई खा पी के, पति मोये कोल की बनावना ए। सुबह उठ के ते इनूँ रो लांगी, इस वेले की शोर मचावना ए।। जेहड़ा चला गया मैंनूं छड के ते, जे कर रोवांगी एस कोई आवना ए। रोणा शुरु कीता जे मैं एस वेले, सारी रात न रोया जावना ए।। दिन चढ़या ते रोणा शुरु कीता, उजड़ गई लोको मोया साईं मेरा। की करांगी पति दे बाझ दासा, गुज़र पति बिन होवणा नाहीं मेरा।।

गैन-गम जुदाई दा देके ते, रोंदी ताईं साइयां किथे छोड़ गयों। केहड़ा कीता कसूर कोई मैं एडा, जिस लई मुख मेरे वलों मोड़ गयों।। तेरे बाझ साइयां कित्थे जावांगी मैं, बहर गमां अन्दर साईं रोड़ गयों। वादे करके प्रेम प्यार वाले, विच पलक दे साथ त्रोड़ गयों।। तेरे बाझ प्यारे कौन मेरा, दुःख पा गयों दे जुदाइयां तूं। तेरे बाझ इक पल रहन हुण मुश्किल, दासा कर गयों वांग सुदाइयाँ तूँ।।

गर्ज़ की नारी सबर करो कहंदी, विच शमशान दे एहनूँ पहुँचाओ तुसीं। मोयाँ नाल मोया नहीं कोई अगे, हौंसला कर के कम मुकाओ तुसीं।। लकड़ी कफन दा करो प्रबन्ध कोई, छेती करो ते देर न लाओ तुसीं। मेरे पति प्यारे नूँ आखरी सब रल मिल इश्नान कराओ तुसीं।। लकड़ी कफन दा कर प्रबन्ध पूरा, मुर्दे ताईं जिस दम ओत्थों चान लगे। लत्तां फसियाँ थम्मी दे विच दोवें, दासा निकलन ना ज़ोर जद लान लगे।।

गज़ब हो गया वेखके कहन सब्बे,लत्तां निकलन नाहींखिचयां बाहर नूं जी। किस तरह इसदा इश्नान होसी केहड़ी करिये ऐथे हुण कार नूं जी।।

थम्मीं कट के थम्मीं चा होर पाओ, ऐसा दस्या किसे विचार नूँ जी। थम्मीं कित्थों ले आके देआं इत्थे, पुछया जिस दम ओसदी नार नूँ जी।। नारी आखदी लत्तां नूँ वड्ढ दयो, सर पर एसनूं जा जलावना ए। पैसे थम्मी लई मेरे न कोल दासा, ओह न रह्या जिस पैसा कमावना ए।।

फेर-फिकर कीता पति सुण ऐसा, नारी प्यारी दे चंगे प्यार जापे। जेकर ढिल्ले पैर न मैं कीते, बिगड़ी हुई पई नारी दी तार जापे।। देणे एस वढा ने पैर दोवें, ऐसी करे पई अगों विचार जापे। ढिल्ले पैर कीते भगत सुण के ते, थम्मीं विचों निकले होए बाहर जापे।। अस्नान करा के कफन पहना ओनूँ, चौं बन्दियां ने लया चुक भाई। चलदियांअध मार्ग जिसदम गये दासा,उसदीऔरत कहंदी जाओ रुकभाई।।

फरज़ी रोवंदी कर के बाहीं खड़ियाँ, तेरे बाझ मैं किधर नूं जावांगी वे। कौन करेगा अगों सँभाल मेरी, दुःख दर्द दी किनूँ सुनावांगी वे।। तेरे बाझ न आसरा होर कोई, रहंदी उमर नूँ कीवें लघावांगी वे। तेरे थां क्यों न प्यारेया मैं मर गई, पिछे ज्यों के की बनावांगी वे।। सतगुरु वी नाल सन ओस वेले, रचना भगत लई जिन्हाँ रचाई ओत्थे। आखरी दर्शन मैंनूं दयो करन दासा, रो रो पावंदी नाल दुहाई ओत्थे।।

फक्त मुँह नंगा कर विखा दयो, आखिरी वक्त दा कर दीदार लवां। छड चलया पति बेदर्द बण के, दर्द दुःखां वाले सारे मार लवां।। किवें कर चल्यों मेरे नाल साइयां, गलां पति नाल कर दो चार लवां। पति प्यारे दे प्यार दी की दस्सां, कर वार बलहार लखवार लवां।। मुँह नंगा कर मारे नाल ढाहीं, शाह बण छड चल्यों वज़ीर नूं तूँ। दासा भगत उठकेअगों झट कहंदा,पिनियाँ खा लइयां खा हुण खीर नूँ तूँ।।

फौरन सतगुरां दी सरणी डिग पया, कहँदा वार बलिहार लख वार साईं। जीवें फरमावंदे सौ तीवेंआन वरती,बिल्कुलझूठी निकली प्यारी नार साईं।। मोया समझ के इस मेरे ते पैर धर के,छिक्यों घ्यो नूँ लिया उतार साईं। मर गये नूं वेख के खुश होई, पिन्नियाँ-खीर रही करदी तैयार साईं।। पैर वढावनूँ वी मुड़ी न ए नारी, प्यारी बन के कहर कमाए इसने। ढिले पैर करके बचया दास इस तों, भर भर ज़हर दे डंग चलाए इसने।।

संस्कारी रूह खराब न होण देंदे,कढदे दुःखां विचों ला के ज़ोर सतगुरु। गोला मार दे प्रेम दा ओस ताईं, कढ दे अन्दरों भरम चोर सतगुरु।। मोह ममता तों सुरती हटा उसदी, अपने चरणां विच लावंदे डोर सतगुरु। जिथों तीक हो सके उस प्रेमी ताईं, पैन देण ना विच अन्ध घोर सतगुरु।। उसे राह ओहनूँ फिर ला देंदे, जेहड़ा भगती दी करदा कार आया। रहंदी भगती करावंदे दास कोलों,भगती करदियाँ जो छड विचकार आया।।

मोह माया

अलफ-आसरा तेरा है केवल स्वामी,होरआस डिट्ठी जगदी खामसतगुरु। झूठी खेड डिट्ठीसुफने वांग जगदी,इक्को तेरा ही सच्चा है नाम सतगुरु।। चरणां तेरियां विच मेरे परम प्यारे, बारम्बार दण्डौत परनाम सतगुरु। बन्धन त्रोड़ के झूठे जहान वाले, पहुँचान वाला तू ही निजधाम सतगुरु।। तेरी किरपा दे नाल इक मायाधारी दी मैं, सीहरफी शुरु हां करन लगा। फरक पवे नाहीं एहदे विच स्वामी, दासन दास तेरा तेरे चरण लगा।।

इक दिन नारद ऋषि होरीं चलदे फिरदे, पहुँच गये वैकुण्ठ धाम नूँ जी। जा के डिट्ठा भगवान जी कल्हे बैठे, हथ जोड़ के कीता प्रणाम नूं जी।। हैरान होके पुछया रब कोलों, जवाब एसदा देवो गुलाम नूँ जी। कीवें दिल लगे कल्हयां वैकुण्ठ अन्दर,रब्बा मेरेआ सुबह ते शाम नूँ जी।।
गुरुमुखां वास्ते एह वैकुण्ठ बनया, क्यों खाली पया सुखधाम तेरा। दासनदास न जे कोई आवे एत्थे, वैकुण्ठ एहो किस काम तेरा।।

अग्गों भगवान जी ओहनूँ फरमान लगे, मर्त्यलोक तों कोई न आए एत्थे। माया प्यारी करके हर कोई बैठा, छड के कोई न औणा चाहे एत्थे।। नारद सुणके अग्गों ए जवाब देंदा, मेरी ज़मीर एह देवे न राय एत्थे। वैकुण्ठ वास्ते तां लोक जप-तप करदे, रूह पाक होके पहुँच जाये एत्थे।। वैकुण्ठ लई सरबंस नूँ वार देंदे, सुरती गुरु-चरणां नाल जोड़दे ने। वैकुण्ठ वास्ते दासनदास बण के, माया झूठी दा साथ त्रोड़दे ने।।

बे-बहस करन दी लोड़ कोई नहीं, मर्त्य लोक जाके आज़मा लै तूँ। जो कोई आवणा चाहे बेशक आवे, मेरे वल्लों सब ऐत्थे बुला लै तूँ।। एह पर आवणा नहीं किसे मोह छडके, भावें जा के ज़ोर लगा लै तूँ।

दुःखां विच बैठे सबे सुख मण के, किसे हलणा नहीं भावें हला लै तूँ।। बड़े गुस्से दे नाल नारद उठ टुरिया, एह हो न सके कोई भावेगा ना। ओह केहड़ा बे समझ है दास कोई, सुख धाम ताईं जेहड़ा चाहवेगा ना।।

बाबा बुड्ढा इक मिल गया जांदया ही, राम राम जा नारद बुलाये ओनूँ। चल बाबा वैकुण्ठ विच लै चलां, नाल आजिज़ी बैठ समझाय ओनूँ।। बाबा सुन के बिगड़या गल ओहदी, अखां गहरियां कड्ढ विखाय ओनूं। वैकुण्ठ नालों सुख ने बहुत ऐत्थे, बड़े रौब दे नाल सुनाय ओनूँ।। धन,स्त्री, पुत्तर, ते पोत्रे, वेख, एडा कम बनया शानदार मेरा। वैकुण्ठ विच न सुख एह किसेताईं,दासा खिड़या जियों बाग परिवार मेरा।।

बहुत दुखी होया नारद सुन ओहदा, की दस्सांगा जा भगवान नूं जी। बुड्ढा होके छडे न मोह ममता, एहदा करे न दिल एत्थों जान नूँ जी।। ओस जावना कदों वैकुण्ठ अन्दर, जेकर पुछिया किसे जवान नूँ जी। आखिरचलदियां नारद जी जा मिलया,जवानी चढ़दियां इक इन्सान नूँजी।। कहंदा चल तैनूँ वैकुण्ठ लै चलां, हर तरह दा सुख सामान ओत्थे। बेवफा दुनियाँ नूँ छड दासा, चलके खुशियां दी कर गुज़रान ओत्थे।।

पे-परत ज़ुबान जवाब दित्ता, की लोड़ वैकुण्ठ नूँ जावणे दी। लंगड़ा-लूला कोई जाके लभ किधरों,जिसनूँ ताकत न रोज़ी कमावणे दी।। या ढूँढ नकारा कोई वांग अपने, शरम जिसनूँ खट के खावणे दी। मैं अजे कमाण दे लायक वाह-वाह, परवाह कोई नहीं खाण हँडावणे दी।। इज्ज़त बणी होई सारे शहर अन्दर, हर तरह दी मौज बहार ऐत्थे। ओही जान वैकुण्ठ दे विच दासा, तेरे वांग जो फिरन बेकार ऐत्थे।।

परेशान होया नारद सुण उसदी, रब नाल कर आया ज़ुबान नूँ जी। एत्थे मोह-माया कोई न छोड़दा ए, कोई न राज़ी वैकुण्ठ नूं जाण नूं जी।। इस्से फिकरां विच चलदयां इक लाला, डिट्ठा बैठा खोल दुकान नूं जी। हाय हाय करे मैं बड़ा दुःखी, कहंदा कड्ढ रब्बा मेरी जान नूं जी।। दर्द भरी आवाज़ नूं सुण नारद, बड़ी खुशी नाल ओस वल जांवदा ए। एह जासी वैकुण्ठ विच दास बन के, जेहड़ा दुखां दे विच कुरलांवदा ए।।

पुछदा लाला नूं जाके ऋषि नारद, बड़े प्रेम-प्यार दे नाल भाई। बड़ा दुःखी लाला तू जापणा ए, छडदे सब ए झूठा ख्याल भाई।। चल तैनूँ वैकुण्ठ विच लै चलां, जित्थे दुःख न रत्ती रवाल भाई। हर किसम दा मिलेगा सुख ओत्थे, काहनूँ जन्म लया एत्थे गाल भाई।। लाला आखदा एहो सलाह भाई, जेकर पुत्तर इक मेरा निशान हो जाए। वैकुण्ठ जाण नूँ दासा तैयार डाढा,जेकर पुत्र वाला पूराअरमान हो जाए।।

ते-तकया नारद जी लाले ताईं, ओहदे घर जाके दूजी वार प्यारे। इक मँगदा सैं मिल गये दो लड़के, मुराद पूरी चा कीती दातार प्यारे।। ओसे वकत लाले ताईं कह्या नारद, पूरा हो गया तेरा इकरार प्यारे। चल हुण वैकुण्ठ तैनूं लै चलां, छेती कर ते हो तैयार प्यारे।। लाला जोड़दा हथ ते अर्ज़ करदा, बच्चे अजे ने सख्त अयान मेरे। रोज़ी मेरे बिन केहड़ा कमाये दासा, ज़िम्मे लाया ए कम भगवान मेरे।।

तुसीं जाओ हुण फेर कदी जावांगा मैं, जदों बच्चे कुझ मेरे जवान हो गये। सुणके नारद जी ऐसा जवाब ओहदा, बहुत बड़े आके परेशान हो गये।। माया बन्दे नूँ दुःख पहुँचाई जांदी, फिर वी माया ते लोग कुर्बान हो गये।

कोई न ऐस नूँ छड्डन दा नाम लैंदा, भावें माया दे मारे वीरान हो गये।। आखिर दुःख पांदे ते पच्छोतांदे, अनमोल जनम नूँ जदों गँवा बैहंदे। दासनदास न फिर कुझ हथ आवे, चिड़ियाँ कोलों जद खेत चुगा बैहंदे।।

तीसरी वार जद नारद जी गये ओत्थे,लाला छड गया मानुष शरीर नूँ जी। अन्त मता ते गति जा होवे उत्थे, जित्थे सुरत दी धारा आखीर नूँ जी।। अन्तर्ध्यान लाके नारद जदों डिट्ठा, जनम घोड़े दे मिलिया हकीर नूं जी। किल्ले नाल बद्धा होया नज़र आया, खोटी आया बणा तकदीर नूं जी।। ज़िक्र एस नूँ इत्थे ज़रा बन्द करके, गल विच्च हो गल्ल चलांवदा हां। दासनदास जो एस नाल मेल खांदी, ओही इसदे अगों सुनावंदा हां।।

टे-टाइम किसे बुड्ढे आदमी नूँ, प्या पुत्तर ओहदा लत्तां मारदा सी। बुड्ढा गालियाँ कढदा जाये अगों, नाले रोंदा ते उच्ची पुकारदा सी।। इक महात्मा एस तरह वेख के ते, ओहदे रोण तों प्या विचारदा सी। बाबा पुत्तर तैंनूं क्यों मारदा ए, अग्गों बुड्ढा ए अर्ज़ गुज़ारदा सी।। पुत्र पोत्रे बड़े नालायक मेरे, सब कुछ खो के दित्ता जवाब इन्हां। उलटा मारदे ऋषि जी दास बणके, पिछली उमरे है कीता खराब इन्हां।।

टिकण देन न घर दे विच सारे, छोटे-वड्डे पै वेख दबान मैंनूं। गल मेरी न इन्हां नूं भांवदी ए, बेइज्ज़त करके परां हटान मैंनूँ।। कमाण जोगा न रहया महात्मा जी, बुढेपे ऐसा कीता दुःखी आन मैंनूँ। खावण छत्ती पदारथ आप सारे, टुक्कड़ रात दा चा फड़ान मैंनूं।। दस्सो की करां, किधर जावां स्वामी,जिऊँदा इन्हां दा होया मोहताज मैं तां। दासनदास बण्यां वी नहीं छोड़दे, इत्थे भोगया सी कदी राज मैं तां।।

टण्टे जगत वाले जदों करे पूरे, राज़ी तेरे ते सारा परिवार बाबा। जदों तीक रह्यों इन्हां नूँ सुख देंदा, ओदों तीक तेरे ताबेदार बाबा।। जदों रह्यों कमान दे लायक न तूं, धक्के मार कड्ढन बाहर बाबा। मतलब बाझ किसे दा न कोई, ऐसे तरह संसार दी कार सक्का बाबा।। मेरी मन्ने जेकर-कह्या महात्मा ने, मोह छडदे तूँ इन्हां सारयां दा। गुरुभक्ति विच लग के दासनदास बनजा,ऐसे वक्त ही सतगुरु प्यारयां दा।।

से-साबत ज़बानूँ न रह्य बाबा, उलटा महात्मा ताईं दबान लगा। कीती भले दी महात्मा नाल ओसदे,सुनके बुड्ढा दुःख मनान लगा।। बहुत बिगड़या महात्मा नाल बुड्ढा, कौन हुँदा तू पुत्तर छुडान लगा। मेरा पुत्तर भावें मैंनूं रोज़ मारे, चौधरी बण तूँ क्यों विच आन लगा।। पुत्र होण गुस्से जेकर मा प्यां नूँ, मा-पे छोड़ के नाहीं घर जांवदे ने। तेरे जिहे इकट्ठे न रहण देंदे, दासा आन जुदाइयाँ पावंदे ने ।।

सबूत पक्का दित्ता बाबे इस गल दा, मोह विच बन्दा जदों फँस जांदा। दुःख ताईं वी बन्दा ओसनूँ सुख मन्ने, ऐसा आन के हो बेवस जांदा।। बड़ा संस्कारी कोई जीव होंदा, तीव्र वैराग करके जेहड़ा नस जांदा। ऐसी छोड़ के जांवदा मोह-ममता, कोई पता निशान न दस जांदा।। सुण के उलटा जवाब उस बुढड़े दा,महात्मा चले गये ओत्थों बेज़ार होके। माया-छाया दा हर कोई दास बनके, माया विच फस्या समझदार होके।।

साबती माया न किसे दी रहण देंदी, जिस ते आन के गलबा पा जांदी। सत करम तों मोड़ जाय मुख बन्दा, करमां भैड़ेयां विच लगा जाँदी।। सुध बुध न माया ए रहण देंदी, समझदारां नूँ कर गुमराह जांदी। झूठी माया दे मारयाँ कई मर गये, मानुष जनम दे ताईं गँवा जांदी।।

सतगुरु बाझ न माया आराम देंदी, काबू आंवदी न किसे होर दे ए। उल्ट-पुल्ट कर देवे ध्यान दासा, जदों आ जांदी विच ज़ोर दे ए।।

जीम-जेहड़ी लाले दी गल छोड़ी, उस गल नूँ अगां चलावंदा हां। घोड़े रूप लाले दे कोल फिर मैं, नारद ऋषि दे ताईं पहुंचावंदा हां।। नारद ऋषि प्रार्थना करे उत्थे, सच्चे साहिबा एह वर चाहवंदा हाँ। पिछले जनम दी घोड़े नूँ सूझ हो जाए, थोड़ी देर दे लई मनावंदा हाँ।। घोड़ा दस सके पिछली बात गुज़री, इकवार दे दयो ज़ुबान एनूँ। पिछले जनम दा गुज़रिया दस्से दासा, ऐसा हो जाय पूरा ज्ञान एनूँ।।

जदों नारद दी पूरी मुराद हो गई, लाले ताईं पुछया नारद जा के ते। वैकुण्ठ जावना कर दो मन्ज़ूर ओहदों, जन्म घोड़े दा लैंदो न आ के ते।। अजे वेला हेई चल वैकुण्ठ चलिये, नारद लाले नूँ कह्या समझा के ते। घोड़े रूप विच लाले जवाब दित्ता, ममता बच्चयां दी गल पा के ते।। अजे मेरा वैकुण्ठ नूं जाण नाहीं, बच्चे लायक एह बोझ उठान दे न। अपणे आप ऐ किधरे न जाण जोगे, दासा पैदल चलना एह जानदे ना।।

जिस वक्त होवे इन्हां जाणा किदरे, लै जां टांगे दे विच बिठा के ते। समान ले आवणां होवे जे दूर किदरों, ले आवंदे मैंनूं ले जा के ते।। सैर करन दी इन्हां नूँ ख्वाहिश होवे, झट ले आवां मैं सैर करा के ते। मेरे बाझ न इन्हां दी गुज़र अजे,निकलां कीवें मैं इन्हां नूँ छड छडा केते।। एस लई वैकुण्ठ नूँ जान मुश्किल, करो मेहर बानी एस वार प्यारे। फेर आओगे जावांगा नाल स्वामी, दासनदास न करसां इनकार प्यारे।। चे-चौथी वारी फिर नारद ऋषि, घर लाले दे जा ध्यान कीता। घोड़े जून विचों लाले निकल के ते,प्रवेश कुत्ते दी जून विच आन कीता।।

जाके पुछया कुत्ते दे कोलों नारद, जन्मां विच क्यों रुह वीरान कीता। मोहममता विच प्या दुःख पावंणा ए,करके झूठे वादे क्यों तू हैरान कीता।। हुण की चल वैकुण्ठ तैनूँ लै चलां, छड दे इन्हां दे मोह प्यार छेती। दुःख पांदा रहेंगा जन्मां विच दासा, जे न वैकुण्ठ नूँ होयों तैयार छेती।।

चंगा ऋषि जी चलांगा नाल तेरे, कुछ दिनां दी अजे है देर साईं। नूआँ मेरियां अजे बेसमझ दोवें, रोटियां वाली न साँभण चंगेर साईं।। कुत्ते बिल्ली दा रखना ध्यान पैंदा, रोज़ दिहाड़ी विच शाम सवेर साईं। समझदार हो जाणगे जदों सारे, वाजिब छोड़ के जावणा फेर साईं।। औंदियाँ जांदियाँ नूं रहवां वेखदा मैं, अजे टुटदा नहीं मोह दा जाल मेरा। इन्हां वास्ते कुत्ते दी जून पाई, दासा इन्हां विच अजे है ख्याल मेरा।।

चले गये नारद सुण जवाब उसदा, बहुत दुःखी नाले परेशान होये। माया छोड़ वैकुण्ठ नहीं कोई जांदा, झूठी माया विच जीव गलतान होये।। आखिर नतीजा जानण जिसदा दुःखदाई,फिर वी माया दे उत्ते कुर्बान होये। झूठेयाँ पिच्छे होया आके मैं झूठा, आखिर कार ही सच्चे भगवान होये।। मैं समझदा सां माया छड झूठी, वैकुण्ठ जाण लई सबे तैयार होसन। आखे लग मेरे सुख धाम जासन, दासनदासां दे नेक विचार होसन।।

हे-हाल लाले दा पंजवी वारी, पुछण वास्ते नारद जी तैयार होये। जून कुत्ते दी छडके लाले होणी, जून केहड़ी विच नमूदार होये।। डिट्ठा जाके नारद जी योगबल नाल, पाके कीड़े दी जून ओह ख्वार होये। गन्दी नाली दे विच है थां ओहदी, वेख नारद जी सख्त बेज़ार होये।। लकड़ी नाल कढ के ओहनूं बाहर कढिया,कहंदे नारद जी हुण दस लाला। चल हुण वैकुण्ठ विच लै चलां, दासा जनम पाणे कर दे बस लाला।।

हकीकत दे विच पुच्छो मैं हाँ खुश एत्थे, औंदे जांदे वेखां परिवार नूं जी। जूनी कीड़े दी तां पसन्द कीती, वेखदा रहवां एत्थों घर बार नूँ जी।। परिवार कोलों क्यों जुदा करो मैनूं, सोचाँ सोच ए कराँ विचार नूँ जी। मेरे मगर पै गये कानूं आन तुसीं, होर छड के सारे संसार नूँ जी।। क्या मैं ई वैकुण्ठ नूँ जा सकदा, होर कोई नाहीं नज़र आंवदा ए। अपनाजाओ कम करो,नहीं वैकुण्ठ जांदा,दास नारद नूँ लालासुनावंदा ए।।

कह दे हकराह उत्तेकोई न चलण वाला,नारद ऋषि जद फिर संसार डिठा।
आज़ादकोई न दुःखां तों होणाचाहवे,हरकोई ममता दे विच गिरफ्तार डिठा।
काम-क्रोध-लोभ-मोह-हंकार वैरी, हर कोई इन्हां दा होया शिकार डिठा। सेहतयाब कोई न होवणा चाहवे, मानसिक रोगां दा जेहड़ा बीमार डिठा।। झूठा धनपरिवार ते शानशौकत,जो कोई मिलयाबस एहो कुझ चाहनवाला।
दासनदास न मिलया कोई ऐसा, जेहड़ा जन्म परमारथ विच लान वाला।।

नास्तिक सेठ

पहले सतगुरु प्यारे ताईं, बारम्बार प्रणाम मेरा।
जिसदी किरपा दे नाल ही होना,कम सरअंजाम मेरा।।
मदद लै के सतगुरां दी, कविता इक बनाई मैं।
कंजूस सेठ दी जीवें वार्ता, सारी खोल सुनाई मैं।।
जीवें हाल सेठ दा होया, शेअरां विच सुनांदा मैं।
माया दे पुजारी वाला, खाता खोल विखांदा मैं।।
दासनदास सुनांदा ओहदा, ज्योंकर होई नाल ओहदे।
आखिर नाल ओसदे माया, जीवें कीते होल ओहदे।।
किसे शहर विच सेठ इक सी, बहुत कंजूस ओह पक्का।
पैसा इक न देवे ओहनूँ, जो पुत्र मंगे सक्का।।
बहुत बड़े सन कम्म ओसदे, बहुत चलदियां फर्मां।
पर चंगा खान हँडान न उसदे, लिख्या सी विच कर्मां।।
न परमार्थ लावे पैसा, न कोई करे स्वार्थ।
मायाधारी बण के उसने, कीता जन्म अकार्थ।।
पुत्र ओसदे चारे चंगे, सतसंग विच जांदे।
बाप नूँ कहंदे झूठी माया, सतसंग दे समझांदे।।
ऐ हमेशा नहीं रहना लाला, इक दिन छड के जाणा।
चार दिनां दा मेला एत्थे, हमेशा दा नहीं ठिकाना।।
मानुष जन्म न इस लई मिलया, कट्ठी करिये माया।
सतगुरु राज़ी करन वास्ते, मानुष तन है पाया।।
दान पुन दे करन दा वेला, नाम जपन नूँ आये।
इत्थे हमेशा न रहणा लाला, एह जग वांग सराये।।
सुक्की रोटी रोज़ तूँ खांदा, टका खर्च न लवैं पकौड़े।
केहड़े कम्म एह कम जो तेरे, एडे लम्मे चौड़े।।

स्वांस जिस दम निकल जानगे, रहनी धरी धराई।
एडा सेठ होके लाला, खरच करे न पाई।।
पुत्रां नूँ फिर लाला कहंदा, अग्गा किसे न डिट्ठा।
एस जगत नूँ सच्चा जानो, एही सब तों मिट्ठा।।
अग्गे गया कोई परत न आया, हाल न ओस सुनाया।
इन्हां पंडितां मौलवियां ने, ऐवें ढंग बनाया।
अग्गे दियां कर कर के गल्लां, कोलों बणा सुनांदे।
दान करो ते मिलसी अग्गों, लुट लुट खाई जांदे।।
मुंडयां दे सतसंग ने उसते, कुछ असर न पाया।
उलटा सेठ ने मुँडयां ताईं, झूठा कर विखाया।।
समझ न आई लाले ताईं, बहुत समझा के थक्के।
पैसा इक्क न छड्डे लाला, हत्थ पाये उस पक्के।।
आखिर इकदिन लाले उत्ते, वर्तया रब दा भाणा।
चढ़या बुखार कहर दा ओहनूँ, छुटया पीना-खाना।
वेख के पुत्र लाले ताईं, कहंदे वक्त अखीरी।
अखां विचों हटदी जांदी, पिछां नज़र दी धीरी।।
हुण कम कोई ऐसा करिये, दान हत्थों कुछ लगे।
वक्त गँवा लिया सब लाले, मिलया सी जो अग्गे।।
चार-पंज सौ लै रुपया, ढेरी इक बनाई।
चंगी वेख कनक दी बोरी, उत्ते चुक्क बगाई।।
लाला उठ उतां कर हिम्मत, एह कणक दी ढेरी।
हत्थ ला बख्शा लै पिछला, कर पलक न देरी।।
जिस वक्त ओह लाले ताईं थले बिठाण फड़ चारे।
गुस्से दे विच होके लाला, हत्थ कणक विच मारे।।
वेख के कनक घबड़ाया लाला, ए की तुसां बणाया।

मैं तां कणक रखी सी प्यारी, हत्थ कदे न लाया।।
एहडा ज़ुलम कीता जे भारा, क्यों ए कणक ले आंदी।
कणक दे के फिर भी मरना, एह गल नहीं सुखांदी।।
हथ ज्यों ज्यों मारे लाला, लई जावंदा थल्ले।
हत्थ रुपयाँ नूँ जा लग्गा, छणक छणक के हल्ले।।
ओ भैड़यो ना मुरादो एडा ज़ुलम कमाया।
वक्तां नाल जो कट्ठी कीती, पै गँवाओ माया।।
जेकर मेरे पिछों तुस्सां, ऐस तरह जे करना।
फेर कदी मर जावांगा मैं, अज तां नहीं मैं मरना।।
न खादा ना चंगा हँडाया, तां माया मैं जोड़ी।
सोटां करन लगे ओ कानूं, चढ़ ज़ुलम दी घोड़ी।।
बेहोशी विच बोली जावे, कोई गल न फब्बे।
प्या इशारे करदा जित्थे माल खज़ाने दब्बे।।
पुत्तरां ने हालत वेख ओसदी, फेर मंजी ते पाया।
कुझ न कीता लाले जग विच, हुण छड्डी जांदा माया।।
जोड़ी होई माया जेहड़ी, अग्गे उस दे आवे।
जान न निकले सौखी उस दी, बकरे वांग अरड़ावे।।
आन घुंघरु बोलण लगा, ओह सेठ दा भाई।
चौवां पुत्रां फड़ के ओहदी, हेठां लोथ च लहाई।।
रसम मुताबिक सद पण्डित नूँ, दीवा वट्टी कराया।
हमेशां लई सेठ सौं गया, जाये न जित्थों जगाया।।
पुत्रां रल सलाह एह कीती, नेड़े हैगी गंगा।
चुक लै चलिये चारे भाई,मूल न करिये संगा।।
ओत्थे चल संस्कार च करिये, फुल गंगा विच पाईये।
दान कर निमित्त एस दे, भार सिरे तों लाहिये।।

न्हवा धुआ पुवा कर कफन, चौआँ पुत्रां चाके।
दिन छुप गया जित्थे पहुँच के, ओत्थे रखया जाके।।
कुझ फासले होके लाहमे, सौं गये ओह चारे।
इक कोढ़ी सी बैठा ओत्थे, नज़र अचानक मारे।।
एहनूं ते फिर लै जानगे, एहदे पुत्र आपे।
होर तरीका अपड़न वाला, मेरा कोई न जापे।।
औखा सौखा होके कोढ़ी, सेठ नूँ बाहर वगाए।
कफन दे विच वड़ के कोढ़ी, झट लम्मा पै जाए।।
मुँह हनेरे पुत्रां रल के, फिर कन्धे ते चाया।
झट पट चलदे चारे भाई, मिनटां विच पहुँचाया।।
जद लहा हेठां वेख्या, बैठा है विच कोढ़ी।
एनां पता न प्यू अपने दा, लाश राह विच छोड़ी।।
कोढ़ी हथ जोड़ के कहंदा, मैं दुःखी सां भारा।
हरदम कहंदा रहंदा सां मैं, गंगा मिले किनारा।।
कईयाँ नूँ मैं आख वेखिया, कोई न ऐथे पहुँचाये।
जिस नूं आखां सुन के ते, कोलों ही लँघ जाये।।
त्वाडी किरपा बहुत मेरे ते, लै आंदा मैंनूँ चाके।
प्यू तुहाडा प्या उथाईं, जित्थे सुत्ते जाके।।
पजँवां बन्दा नाल उन्हाँ दे,लै के टुरया घोड़ा।
ओस दिन गंगा पहुँच गया सी, दिन रह्या जद थोड़ा।।
सोच करेंदे चारे भाई, घोड़ा पिछां ले जाईये।
बो मुर्दे विच हो गई पैदा, मौंढयाँ ते ना चाईये।।
जाके चौआँ रला के ओनूँ, घोड़े उत्ते बद्धा।
कुझ ऐधर कुझ ओधर लग के, खूब बनाया लद्दा।।
कफन मिलया कोई न उत्थे, पा लिया विच बोरी।

दोई पासे सेठ विचारा, लमके वांगन तोरी।।
जद गंगा दे नेड़े पहुँचे, हाथी इक अग्गों आया।
नाल प्यार दे सुंड नूँ उसने, घोड़े वल भुँआया।।
घोड़ा डर के पिछां नूँ नस्या, लाले ताईं चाके।
सगवां घर ले आया ओहनूँ, गँगा कोलों नसा के।।
नमक हलाल निकलया घोड़ा, लाले ताईं बचाया।
न अग्ग विच सड़न उस दित्ता, न गंगा विच पाया।।
पुत्र चारे टुर टुर थक्के, पहुँचे मुश्किल भाई।
साडे कोलों साडा लाला, गंगा जाये न काई।।
परत परत पिछां नूँ आंदा, मोयाँ वी नहीं जांदा।
एस घर नूं नहीं ए छडदा, मुड़ मुड़ फेरे पांदा।।
बो कोल खड़ोन नहीं देंदी, बो विच गल गया सड़के।
धरो चिता ते इस नूँ सब्बे, लत्तों बाहियों फड़ के।।
जदों तीक ए सड़ न जावे, कोलों कोई न आवे।
मत्ते लाला नज़र बचा के, विच्चों निकल जावे।।
चिता बणा के लाले ताईं चारे विच तां धर दे।
लम्बू ला के बैठ गये सब्बे, हल्लण ज़रा न डरदे।।
फेर सोचदे चारे भाई, गंगा आप न जाईये।
फुल्ल चुक के पंडित अपने, ए गल जुम्मे लाइये।।
ओसे वेले पंडित ताईं, फुल्ल चुक्क लै आँदे।
गंगा जाके फुल्ल ए तारीं, साथों ए नहीं जांदे।।
अग्गे असां अज़मां वेखिया, बहुत ज़ोर ए लाया।
गंगा पहुँच चढ़ घोड़े ते, फेर वापिस घर आया।।
ऐस वास्ते यजमान अपने नूँ, पहुँचा आवीं तू गंगा।
मुढ तों तू है साडा पंडित, करीं मूल न संगा।।

सोहणा ज्याँ रूमाल इक लैके, फुल्लाँ नूँ विच पाया।
नकद रुपया कनक दी बोरी, ज़ुम्मे सब लगाया।।
ए कनक ते रकम जो दित्ती, इसदे लेखे लावीं।
जो कुझ क्रिया कर्म एस दा, सब कुछ करके आवीं।।
पंडित वेख माल सेठ दा, दिल विच ख्याल दुड़ाँदा।
माल रहवे घर मेरे जेकर, कम मेरा बण जाँदा।।
पंडित सोच के ओसे वेले, मढ़ियाँ दे विच जाँदा।
झाड़ी वेख अलहदा कोई जाके फुल्ल लटकांदा।।
कनक रुपये घर ले गया, गया न पंडित गंगा।
ओत्थे वी पंडिताँ सी लैणा, क्या मैं पंडित नहीं चंगा।।
कुझ चिर पिच्छों अचनचेती, ओस सेठ दा चूहड़ा।
लंघ प्या शमशानां कोलों, सुट्टन चलयां कूड़ा।।
पई अचानक नज़र ओसदी, रुमाल हुलारे खांदा।
रह न सकया वेख के ओनूँ, कोल ओसदे जांदा।।
खोल रुमाल झाड़ी नालूं, फोलया उस दे ताईं।
फुल्ल बद्धे होये किसे मुर्दे दे, होर चीज़ कोई नाईं।।
फुल्ल कड्ढ के बाहर वगाए, रुमाल घर लै आया।
सोहणा समझ रुमाल ओसने, पुत्र सिर बन्हाया।।
इक दिन भंगी लै पुत्र नूँ, घर सेठ दे वड़या।
रुमाल वेख सेठानी कहंदी, एह ल्या कित्थों तूँ अड़या।।
रूमाल एस विच फुल्ल सेठ दे, पा पंडित नूँ पकड़ाये।
खबरे उस कोई धोखा कीता, गंगा नहीं अपड़ाये।।
कहन लगा अग्गों ओह भंगी, एह गंढ मड़ियाँ विच टंगी।
मेरी नज़र पई जिस वेले, बहुत लगी ओह चंगी।।
जिस वक्त विचों खोल के डिट्ठा,फुल किसे विच पाये।

रुमाल ल्या कर खाली बीबी, बाहर फुल वगाये।।
एस तरह रुमाल एह बीबी, हत्थ मेरे सी आया।
रब दियाँ रब ही जाणे अग्गूं, ओत्थे किस लटकाया।।
पुत्रां नूं सेठानी कहँदी, पंडित ओस नकारे।
गंगा गया न पंडित दिसदा, फुल्ल ओस नहीं तारे।।
वेख रुमाल नूँ ओसे वेले, पंडित ताईं बुलाया।
क्या पंडता तूँ फुल्ल सेठ दे, जा के तार नहीं आया।
पंडित कह्या मैं उसे वेले, गंगा फुल्ल परवाहे।
लंगर दे विच कनक रुपये, बाकी जमा कराये।।
सेठानी कह्या रूमाल एह ओही, क्यों झूठ प्या मारें।
होके पंडित करें प्या ठगी, धर्म कर्म क्यों हारें।।
पंडित कह्या रूमाल ते ओही, मैंनूँ वी प्या जापे।
ओह समेत फुल्लां दे खबरे, उड के आ गया आपे।।
चार-पंज रल पुत्र तेरे, गंगा रहे पहुँचांदे।
फिर भी सेठ जी निकल उन्हां तों, घर वापिस आ जांदे।।
पुत्रां तेरयाँ कोलों मुरदा, सेठ दा रह्या न फड़या।
रुमाल फुल्लां नूँ लैके उडया, आन झाड़ी नाल अड़या।।
कोई वजन न फुल्लां दे विच, झटपट उड के आया।
विच शमशानां डरदियां तुहाथों, डेरा आ उस लाया।।
मेरा दसो कसूर एस विच, या ते मैं न जांदा।
कोशिश कर के फुल्लां नूं जे, गंगा विच न पांदा।।
फेर ते मैं देनदार सां, जे कसर कोई रखदा बाकी।
मैं अकल्हा कीवें साँभदा, त्वाथों हो गया आकी।।
इसे तरह कंजूस जगत विच, मरदे नाल ख्वारी।
आखिर नूँ दुख पांदे जाके, माया दे पुजारी।।

कर कंजूसी सेठ साहिब ने, कितना दुःख उठाया।
कौड़ी इक कम्म न लाई, रहया जोड़दा माया।।
दान पुन्न उस मूल न कीता, आखिर रुलया मुरदा।
न संस्कार विधी नाल होया, गंगा होया न वुरदा।।
जो माया दे कीड़े होंदे, फिर फिर जमदे मरदे।
सरप दी जूनी पै के, रहन चौफेरे घर दे।।
बन्दा भावें मर जावे, वासना कदे नहीं मरदी।
अन्त मता ते गती जाके, ओस शरीर विच करदी।।
कित्थे करम उस चंगे कर के, जन्म सेठ घर पाया।
अग्गों करमां दा बण चूहड़ा, सरप जून विच आया।।
ऐसा हाल हमेशां होंदा, जो माया नूँ चाहंदे।
आखिर नरकां दे अधिकारी, सरप जून विच जांदे।।
एस वास्ते कर कमाई, दसवन्ध गुरां दे लाओ।
निर्लेप रह के दुनियाँ दे विच, परम गति नूं पाओ।।
जिस माया नूँ हत्थीं अपनी, चंगे पासे लाइये।
जिस माया दे दित्ते होयां नाम पदारथ पाइये।।
ओह माया खा थोड़ी होवे, ओह रहंदी ए चंगी।
जो लगावे बुरे कम्मां विच, ओस माया विच तंगी।।
सतगुरु सेवा दे विच माया, जेहड़ा जीव लगावे।
बन्धन दे छुड़ा जगत दे, आवागमन छुड़ावे।।
बन्धन विच बँधादी माया, ओही छुड़ाँदी माया।
मन मत मारे गुरमत तारे, महापुरुषाँ फरमाया।।
जो माया मनमत नाल लाँदा, ओह फिर दुःख पहुँचांदी।
गुरुमत नाल लावे जो दासा, दासनदास बनाँदी।।

नरसी भक्त

दण्डौत करां लखवार चरणां विच सतगुरु मेरे साईंयाँ।
तेरी किरपा नाल आन के सच्चियां खुशियां पाईंयाँ।।
मोह-माया दी फाही त्रोड़ के चरणां विच लै आंदा।
ऐस तरह परमार्थ कर कर फायदा करें जिआं दा।।
मानुष जनम दा कदर न पाया उमर विषयाँ विच बीती।
लिया छुड़ा दुःखाँ तों सतगुरु ऐसी किरपा कीती।।
तेरी किरपा नाल दर तेरे जो जो करम कमाया।
उसदी कीमत दे न सक्कां जो मेरे हथ आया।।
मदद लै के सतगुरु तेरी कविता इक बनावां।
नरसी भगत दी भगती वाला सारा हाल सुनावां।।
दासनदास है भुल्लणहारा अनभुल गुरु गोबिन्दा।
नरसी भगत दी भगती अज मैं करन लगा फिर ज़िन्दा।।
किसे जमाने काठियावाड़ दे जूनागढ़ विच भाई।
नरसिंह सेठ ज़ात दा मेहता, ईश्वर शान बनाई।।
धन-माल बेअन्त ओसदा, कई हाथी कई घोड़े।
अपने दिल दी मर्ज़ी करदा, कोई न उसदी मोड़े।।
दूर दूर तीकण सब जाणन, बहुत उसदी मशहूरी।
दिनों दिन ख्वाहिशां वधदियां जावण, इक न होंदी पूरी।।
सप दे वांग प्यार माया संग, बैठा खज़ाने उत्ते।
कोई न मिलया जगावण वाला, भाग आन के सुत्ते।।
जितना सेठ ओ मालदार सी, उतना कंजूस ओ भारा।
इक कौडी कदी दान न करदा, ऐसा करमां मारा।।
माया रूप होया ओह आके हरदम चाहवे माया।
एही समझे मानुष तन मैं माया वास्ते पाया।।

जेकर कदी कोई दर उसदे, मंगे जा भिखारी।
मत्थे ते वट पा के बोले, कड्ढे लख लख गारी।।
मन पापी रथवाही उसदा, ऐसा सिरे चढ़ाया।
उलटा सबक देवे मन पापी, ठीक न कदी पढ़ाया।।
अलकिस्सा ओह माया धारी, फस्या लोभ विच भारा।
सतगुरु बाझों ऐसे जीव दा, कौन करे छुटकारा।।
कृष्ण भगवान वकत दे सतगुरु, वेख ओहदा वरतारा।
दया करन तों रह न सके, दुःख जाप्या भारा।।
जीवां दे दुःख वेख के सतगुरु, बहुत ही दुःख मनांदे।
सतमारग ते लावण वास्ते, कोल रूहां दे जांदे।।
कर ध्यान कृष्ण जी डिट्ठा, है कोई जीव हमारा।
फस गया विच फाही जापदा, बहुत ही एह विचारा।।
रिश्तादार पुराना जापे, है बड़ा संस्कारी।
माया दे विच फस गया आके, वध गई हिरस बीमारी।।
एस जीव दा इसी जनम विच, करना है निस्तारा।
रूहां नूं आज़ाद कराना, ए है फर्ज़ हमारा।।
जिस दे विच है फस्या बैठा, ओत्थों बाहर कढाइये।
मोटे बन्धन कट्टन वाली, कोई तरकीब बनाइये।।
महापुरुष हमेशां सोचन, रूहां दा ही फायदा।
जीवें रूह आज़ाद हो सक्के, ओही करदे कायदा।।
सतपुरुष जद होंदे राज़ी, धन दा प्यार छुड़ावन।
जिस ते ज्यादा खुश हो जांदे, मोह तों दूर हटावन।।
आज़ाद करन दी खातिर उसदे, आया कृष्ण प्यारा।
ऐसा करन तरीका लगा, होवे जो निस्तारा।।
रूप धार के उसी सेठदा, दाखिल घर विच होया।

सब तों पहले नौकरां ताईं, समझावन लई खलोया।।
अजकल है ज़माना ऐसा, ठग हैं सांग बनांदे।
असल-नकल दा पता न लगदा, ऐसा गुल खिलांदे।।
एस गल दा ख्याल है रखना, कोई मेरी शक्ल बन आवे।
अन्दर ओस नूं वड़न न देणा, भावें तरले पावे।।
किसे ताईं ए पता न लग्गा, नाहीं किसे सुञाता।
श्री कृष्ण दे ताईं आपणा, सेठ नौकरां जाता।।
हिसाब-किताब ओ लग प्या वेखन, जीवें रोज़ दा कायदा।
ओसे तरह ध्यान करे सब, होवे फर्म नूँ फायदा।।
असली नरसिंह बाहरों वापस, जिसदम घर नूँ आया।
अन्दर वड़न लगा ओ जद ही, नौकरां घेरा पाया।।
क्यों ऐवें तूँ अन्दर वड़दा, रूप सेठ दा धर के।
खबरदार न वड़ना अन्दर, सेठ खलो गया डर के।।
कहन लगा ए घर है मेरा, क्योंकर मैंनूं रोको।
शोर मचांदा ते घबड़ांदा, एह की बण गया लोको।।
नौकर कहन लगे फिर अग्गों, क्यों नकली भेस बनाया।
घर दा असली मालिक जेहड़ा, बहुत देर दा आया।।
तू कोई धोखा देणा चाहंदा, सानूँ एह प्या जापे।
रूप सेठ दा धार के घर विच, वड़दा जावें आपे।।
चला जा एत्थों खैर जे चाहवें, क्यों सेठ दा स्वांग बनाया।
पुलिस हवाले हो जासे तूं, जेकर शोर मचाया।।
सेठ कहंदा तुसी पागल हो गये, या मत्त गई है मारी।
मालिक मैं हां घर एहो मेरा, जाणे दुनियाँ सारी।।
नौकर गरजे चला जो एत्थों देण बाहर नूँ धक्के।
जिन्हाँ दा सी मालिक देखो, ओह न रह गये सक्के।।

तद नरमी नाल सेठ बोलदा, अन्दर जाण दो भाई।
हो के नौकर हुकम न मन्नो, कित्थे अकल गँवाई।।
परत परत अन्दर नूं जांदा, नौकर बाहर हटांदे।
सब ही करन बेइज्ज़ती उस दी, कोई शरम न खांदे।।
जे सख्ती नाल सेठ बोलदा, नौकर डण्डा चांदे।
नरमी सख्ती कम्म न देवे, सेठ होरीं घबड़ांदे।।
कदी कहे मैं ख्वाब देखदा, ऐसा हो न सक्के।
की मजाल किसे दी कोई मेरे वल ओ तक्के।।
कदी होश ठिकाने करके, कहंदा ख्वाब न जापे।
धुर दियाँ लिखियाँ वर्तन लगियाँ, लिखा आया जो आपे।।
की करां ते किधरे जावां, कोई पेश नहीं जांदी।
जित्थे ऐश-बहारां लैयाँ, अज ओ थां पई खांदी।।
सारे हीले कर बेचारा, सेठ बाहर नूं आया।
जा कचहरी देके, अर्ज़ी, दावा दायर कराया।।
हाकिम पढ़ के दावा उसदा, हुकम कर दित्ता जारी।
कृष्ण सेठ नूँ झट बुलवाया,समन भेज सरकारी।।
कृष्ण सेठ आ हाज़िर होया पढ़ के ओ परवाना।
हाकिम उस नूँ कहँदा क्यों कर मलया घर बेगाना।।
एडा हौसला कीवें कीता, आदिल ए फरमाया।
नकली भेस बना के क्यों तू, घर नरसिंह दे आया।।
कब्ज़ा एहदे घर ते कीता, रोंदा फिरे बेचारा।
देहो कोई सबूत अजेहा, सच झूठ दा होय नितारा।।
कृष्ण सेठ जी कहया हँस कर, ऐवें झूठ एह मारे।
लो शहादत करो तसल्ली, कहन पड़ोसी सारे।। असली
मालिक मैं हां घर दा,एह नकल धार केआया।

ए बहुरुपिया रूप करे नित, ठगन वास्ते आया।।
मेरा रुप धार के एह ताँ, मालिक बनना चाहवे।
ए गल कदी हो नहीं सकदी, उलटा दोष लगावे।।
दावा दायर कीता इस झूठा, तेरी आन हुज़ूरी।
धोखा देके करनी चाहे, मन दी मर्ज़ी पूरी।।
नाले चोर ते चतुर ए बणदा, किस तरह ए होवे।
झूठा झूठ मारदा झूठे, झूठा ऐवें रोवे।।
शकलो शुबाहत दोहां दी इक्को, अफसर ख्याल दौड़ावे।
अजब तरह दा केस जापदा, समझ न कोई आवे।।
कीवें नयाँव करां दोहाँ दा, सिर मेरा चकराया।
अदालत करदियां उमर है गुज़री, ऐसा केस न आया।।
किस दे हक विच कराँ फैसला, समझ न आवे काई।
शकल इन्हाँ दोहां ने बिल्कुल, इक्को जेही बनाई।।
अक्ल मेरी कुछ कम न करदी, असली नकली केहड़ा।
मेरे कोलों इन्हाँ दोहाँ दा होसी कीवें निबेड़ा।।
सोच सोच के हाकिम पहलां, असली सेठ बुलाँदा।
जो कुछ पुच्छाँ दस्सेंगा तूँ, ओहदे ताईं फरमांदा।।
नरसिंह सेठ कहया जी पुछो, जो कुछ पुछना चाहो।
मैं दस्सांगा सब कुछ सच्चा जो कुछ तुसीं फरमाओ।।
नरसिंह सेठ ते ताईं हाकिम, ए बुझारत पाई।
किस किस तों किस कदर है लैणी, रकम तूने है भाई।।
जेकर लिखे मुताबिक दस्या, मन लेवांगा सच्चा।
जेकर न दस सक्यों रकमां, फिर समझांगा कच्चा।।
कहन लगा वही खाता वेख के, दस्स सकांगा सारा।
इक इक दा कोई याद न मैंनूं, हिसाब किताब है भारा।।

श्री कृष्ण सेठ दे ताईं फिर हाकिम नज़र मिलाई।
असल व्याज तारीख सब दस्सी,फरक न रख्या काई।।
जो भला घट घट दियाँ जाने, किस तरह ओ भुलदा।
हिसाब छुप्या उस तों केहड़ा, ओह जद मालिक कुल दा।।
पूरा उतरया लिखे मुताबिक, जदों हिसाब मिलाया।
घर दा मालिक असली ऐहो, आदिल ने फरमाया।।
असली सेठ ते जुरम लगा के, दित्ता देस निकाला।
घर गैरां दा लैणा चाहंदा, रानी खां दा साला।।
नरसिंह सुनया होया सी, जो चाहवे ईश्वर करदा।
गदागरां नूँ तख्त सौंपदा, शाह दुखां विच मरदा।।
मालिक दी है मौज आपणी, बनावे चाहे उजाड़े।
बन्दे दी कोई पेश न जांदी, ओहदे खेल न्यारे।।
रो रो आपनियां गल्तियाँ मनदा, जो कुछ करदा आया।
कोई भला न कीता जग विच, ऐवें जनम गँवाया।।
कित्थे गये मेरे बाल लाडले, रोंदा कर कर ज़ारी।
जिन्हां वास्ते प्रभु भुला कर, नाहक उमर गुज़ारी।।
नाले टुरदा नाले झुरदा, नाले सोच करेंदा।
आखिर माया छडनी पै गई, जेहड़ी नहीं सां देंदा।।
संस्कारी तां बहुत बड़ा सी, पर माया गलबा पाया।
भुल्ल गया सी ओस करम नूं जेस लई जग आया।।
खुल गइयाँ हुण अखियां उस दियां, जागी रूह दी शक्ति।
मैं तां केवल जग विच आया, करन गुरां दी भक्ति।।
धोखा कर कर माया जोड़ी, जेहड़ी कम न आई।
मंगतियाँ नूँ धक्के दित्ते, दित्ती इक न पाई।।

हुकुम हाकिम दा मन के मैनूं, पै गया एत्थों जाना।
जंगल विच इक थांव वेख के, बनाया जा के ठिकाना।।
इस दे विच ही भला होयेगा कोई छुपिया भेद प्या जापे।
जिस ने वक्त बनाया ऐसा, ओ ही जाणे आपे।।
मनां तेरियां मनदा रहया, तैं कित्थे आन पहुँचाया।
ज़मीर आला दी दित्ती न मन्नण, तू ऐसा कहर कमाया।।
ईश्वर नाल सुरत उस जोड़ी, चित्त एकाग्र करके।
कीतियां करमाँ कोलों बचाना, हत्थ दया दा धर के।।
मुद्दत गुज़री चिन्तन करदेआँ, मन दी होई सफाई।
सच्ची लगन ओस नूं लगी, सुध बुध रही न काई।।
इक दिन शाम दे वेले जिस दम, बैठा याद इलाही।
कृष्ण महाराज महात्मा रूप विच, देंदे आन दिखाई।।
हँस के बोले नरसिंह ताईं, ओ दो जग दे वाली।
क्यों कर जंगल दे विच बैठयों कर के खस्ता हाली।।
नरसिंह मेहते मुँढ तों लै के, बीती सब सुनाई।
अपणा कीता आपे पाया, किसे दा दोष न काई।।
महात्मा रूप जाण के नरसिंह, प्या माफियां मंगे।
विषयाँ विच सब उमर गँवाई, कीते करम न चंगे।।
अग्गों वास्ते बेनती करदा, कराँ कुकर्म न काई।
हत्थ जोड़ के महात्मा अग्गे, उसने कसम उठाई।।
कीती अर्ज़ जे मिल जाय मैंनूं, वापस माल दुबारा।
गरीबाँ ते मुहताजाँ ताईं, वण्ड देवाँगा सारा।।
कृष्ण महाराज अग्गे ही उसनूं, सब कुछ देणा चाहंदे।
आशीर्वाद दे उसदे ताईं, उस नूं एह फरमांदे।।
जाओ घर बार सँभालो अपना, ज़रा खौफ न खाना।

अग्गे वाँग समझ के घर नूं, बेधड़क हो जाना।।
तैनूँ सच्चे राह लाण ते, एह सब खेल रचाया।
तेरे नाल होया है जो कुछ, हँस के प्रभु फरमाया।।
दे उपदेश नरसिंह ताईं, सेवक दिली बनाया।
सतगुरु बाझों झूठी समझो, ऐ सब जग दी माया।।
स्वांस स्वांस विच सिमरण करना, इस विच मन लगाना।
तेरा अन्त सहाई एहो, दुःखों जेस छुड़ाना।।
बना के सेवक नरसिंह ताईं, चले गये यदुराई।
नरसिंह दिल विच खुशियाँ करदा सत वस्त घर पाई।।
सुबह हुई ताँ नरसिंह मेहते, ओथों डेरा चाया।
चलदियां चलदियाँ नरसिंह मेहता, जूनागढ़ विच आया।।
चला गया ओ सिद्धा घर नूँ, रोक किसे न कीती।
सबणा ताईं सुनांदा जाके, नाल ओदे जो बीती।।
ओसे दिन ही नरसिंह मेहते, डोंडी शहर पिटवाई।
जो किसे नूँ चाहिदा होवे, आके लै जाओ भाई।।
सुन ढिंढोरा अपाहिज़ गरीब सब, दर उसदे पै आवन।
जिस नूँ लोड़ जिसे चीज़ दी, ओह सब लैंदे जावन।।
कइयाँ सुन यकीन न कीता, नरसिंह हो गया ऐसा।
मक्खीचूस लुटाई जावे, जो कदी न देवे पैसा।।
आखिर जाके डिट्ठा सबने, ज्यों सुनिया त्यों पाया।
लोड़ मुताबिक जाके हर इक, जो चाहे ले आया।।
थोड़े दिनां दे अन्दर नरसिंह, सब कुछ घरों लुटाया।
खावण जोगा वी न रखिया, दिल विच त्याग समाया।।
हवेलियाँ दुकान मकान उसने, वेच दित्ते सब भाई।
रहन वास्ते कुछ न रखिया, मकान निशान न काई।।

ममता वाली गल ओसने, दिल तों परां हटाई।
इक झोंपड़ी कख काने दी, शहरों बाहर बनाई।।
यकसू करके दिल अपने नूँ, सबदा ख्याल भुलाया।
फकत प्यारे सतगुरु वाला, चिन्तन ही चित लाया।।
नरसिंह मेहते नूँ फिर लोकीं, नरसी भगत बुलांदे।
सुबह शाम प्रेमी बन के, दरसन उसदा पाँदे।।
किरपा महापुरुषां दी होंदी, जिस जीव दे उत्ते।
महापुरुष खुद जा जगावन, रहन न देंदे सुत्ते।।
मोह-माया छुड़ा जीव दी, सत्त मार्ग ले लांदे।
बाकी रहंदी भगती ताईं, पूरी खुद करांदे।।
घर घर जा उपदेश देवंदे, ढूँढन रूहाँ ताईं।
मोह ममता विच फस्से होयाँ नूँ, कढदे फड़ फड़ बाहीं।।
ऐसा प्रेम नरसी नूँ लग्गा, सतगुरु कृष्ण दा भाई।
दम दम याद गुरांदी करदा, जिन्हां ने रमज़ बताई।।
ओस कुटिया दे विच हमेशां, करदा ओह बसेरा।
कृष्ण कृष्ण पुकारे हरदम, तू साहिब मैं चेरा।।
चिन्तन करदियाँ दिन पै बीते, खुशियाँ करे हज़ारां।
शान्तस्वरुप होया ओह ऐसा, छोड़ जगत दियां कारां।।
न देना न लेना रह गया, मुक गये सब स्यापे।
इक्को फिकर प्रभु मिलन दी, निसदिन अजपा जापे।।
बेआसां दियां आसां पूरन, होंदियां ओस ठिकाने।
नरसी दे बन प्रेमी सारे, होंदे फिरन दिवाने।।
शोहरत आन के ऐसी फैली, जिस दा अन्त न आवे।
ऋद्धियाँ सिद्धियाँ हाज़िर खड़ियाँ, सानूं हुक्म सुनावे।।
सच्चा उस आनन्द पा लिया, जद दी फड़ी फकीरी।

कख बराबर नज़र पई आवे, जग दी जो अमीरी।।
जो सदगुरां दे प्रेमी होंदे, होर कुछ न चाहंदे।
याद गुरां दी विच हमेशा, सारी उमर लँघांदे।।
अचानक इक दिन कुझ मुसाफिर जूनागढ़ विच आये।
तीरथ करन लई ओह चल्ले, राह विच किसे डराये।।
कह्या उसने उन्हां ताईं, जिस राह चल के जाना।
डाकू लुट लैंदे दे मारन, कर के ज़ोर ढिगाणा।।
इस कारण है रकम तुआडी, खतरे दे विच भाई।
किसे सेठ तों हुँडी ले लो, रखो कोल न पाई।।
ऐसी खबर मुसाफिर सुनके, बहुत दिलों घबड़ाये।
जान गँवाइये आपणी, माल मुफत विच जाये।।
बेहतर एह रुपया करिये, किसे सेठ हवाले।
उस तूँ हुण्डी ले के जाइये, होंवांगे तदी सुखाले।।
द्वारका वाले किसे सेठ दी, हुण्डी ऐत्थों लब्भे।
ओत्थों जा रुपया लइये, बेफिकर होवांगे सब्भे।।
इसी तरह कम बन जाये गर, होसी बहुत आसानी।
कोल रखियाँ रकम न साडी, निश्चय होय बिगानी।।
सारे शहर विच फिरे बेचारे, सेठ न ऐसा मिलदा।
बहुता फिकर लगा उन्हांनूं, डर न जावे दिल दा।।
आखिर किसे मज़ाक चा कीता, नरसी सेठ वल जाओ।
मन्नत समाजत कर के उसदी, अपना कम बनाओ।।
उस दे बाझ न कम बनेगा, एह निश्चय कर जानो।
उत्तों चाहे फकीर है दिसदा, असली सेठ पहचानो।।
पुछदेयाँ पुछदेयां ओह बेचारे, विच बगीचे आये। की
वेखन पै कीर्तन होंदे, खूब आनन्द बनाये।।

एक तरफ ओह बैठ गये सारे, पुछया किसे दे ताईं।
नरसी सेठ है केहड़ा भाई उस नूँ ज़रा दिखाईं।।
पास ही बैठा नरसी बोले, हाज़िर फरमाइये।
जो खिदमत हो मेरे लायक, दस्सो देर न लाईये।।
हो के खुश मुसाफिर बोले, तीरथ करन चल्ले।
हुँडी लिख दो, रकम ले लो, जेहड़ी साडे पल्ले।।
नरसी समझ गया उस वेले, किसे मज़ाक है कीता।
मायूस उन्हां नूँ होण न दित्ता, घुट्ट सबर दा पीता।।
साँवलशाह दे नाम उन्हां नूँ, हुण्डी लिख फड़ाई।
खुद मिलेगा आप तुआनूँ, द्वारका दे विच भाई।।
मुसाफिर कोलों लै रुपया, नरसी भगत प्यारे।
लोड़वंदा नूँ ओह वंड दित्ते, उसे वक्त ही सारे।।
चलदियाँ चलदियाँ ओ मुसाफिर, विच द्वारिका आये।
साँवल शाह नूँ पुछदे फिरन, पता न कोई बताये।।
ओस नाम दा गर कोई होवे, दस्से कोई ठिकाना।
फिर फिर थक्के मिला न साँवल, भुल गया पीना-खाना।।
गली गली मुहल्लयां विचों, ढूँढ थके ओह सारे।
साँवल शाह न मिलया कित्थे, पै घबड़वान बेचारे।।
पैसा इकन पास असाडे, करिये कीवें गुज़ारा।
नरसी भगत ने वाह कीती, चले न कोई चारा।।
आपे विच पै दुःख फोलदे, वाह वाह भक्त बनाये।
ऐसे भक्ताँ दुनियाँ दे विच डाढे शोर मचाये।।
बगुले वाँग भगत निकलया, झूठी लाये समाधि।
दाँव लग्गे ते मच्छी पकड़े, पँजा मार फौलादी।।

बगल छुरी ते मुँह विच अल्लाह, या राम दा नाम सुनांदे। दाँव
लगेयाँ ते जो कुछ मिलदा, झट हजम कर जांदे।।
रकम असाडी खू खाते विच, समझो पै गई भाई।
किसे नूँ की दोष देवना, हत्थीं आप गँवाई।।
की करिये ते किधरे जाईये, किस नूँ हाल सुनाइये।
विच परदेसां पैसे बाझों क्यों कर झट लँघाइये।।
वापस मुड़िये कि हुण की लैणा, द्वारिका रह के भाई।
चार दिनां दे भुक्खे फिरदे, कोल खर्च नहीं काई।।
हो उदास ओ सारे जिस दम, शहरों बाहर आये।
साँवल शाह बन सेठ खलोता, राम राम बुलाये।।
कहंदा कित्थों आये तुसीं हो, कित्थे जाणा भाई।
क्यों उदास तुसीं हो फिरदे, रोणी शकल बनाई।।
कहन लगे मुसाफिर अग्गों, साँवल शाह नहीं मिलदा।
बाझ उसी दे दुखी हां सारे, हाल सुनाया दिलदा।।
साँवल शाह अगों फिर कहंदा, मैं पिच्छे तुहाडे फिरदा।
पता न लगे ज़रा तुहाडा ढूँढ थका मैं चिरदा।।
देओ हुँडी ते लवो रुपया, भार उतारो भारा।
एस वास्ते रहया मैं फिरदा, मगर तुहाडे यारा।।
नाले शांवलशाह नरसी वल, लिख दित्ती इक चिट्ठी।
हुण्डी तेरी तार मैं दित्ती, जिस दम पढ़ के डिट्ठी।।
ऐसे तरह कोई लोड़ पवे ते, लिख देना परवाना।
रिश्ता है पुराना साडा, समझो न बेगाना।।
कदी कदाईं मिल जावणा, लिखया विच ज़रूरी।
जो कुछ चाहेंगा तू प्यारे, ख्वाहिश होगी पूरी।।

रुपया चिट्ठी लै मुसाफिर, खुशियाँ दे विच आये।
दान पुन्न उन्हां ऐसा कीता, जो मंगे सो पाये।।
तीरथ यात्रा करके जद ओ, होये पिशां नूँ राही।
जूनागढ़ विच पहुँच के सारे, गये बागीचे भाई।।
नरसी उन्हां नूँ दूरों डिट्ठा बहुत दिलों घबड़ाया।
रुपया वापिस मँगणा इन्हाँ कोल न कोई माया।।
हुण्डी ताँ ओह तरी नहीं होणी, बणसी अजब तमाशा।
ताने देनगे लोकीं सारे, जासन जदों निराशा।।
इन्हें चिर विच आके उन्हाँ ने, हथ बन अर्ज़ सुनाई।
साँवलशाह झट हुण्डी तारी, लाई देर न काई।।
चिट्ठी हथ फड़ा के दित्ता, सनेहा नरसी ताईं।
सेवा मैनूँ बख्शदे रहणा, ऐञ्जे कदी कदाईं।।
सुण नरसी डाढा खुश होया, कुर्बान जावे लख वारी।
बण प्यारा साँवल मेरा, झट हुण्डी जिस तारी।।
धन कृष्ण जी सतगुरु मेरे, मैं हाँ तुच्छ पुजारी।
सुण के नाम गरीबदास दा, हुण्डी जिसने तारी।।
भक्तां सुण के लीला, उसदा जय जयकार बुलाई।
महिमा करन लगी फिर उसदा, सुण सुण सब लोकाई।।
दासनदास जो सतगुराँ दा, बणदा दिलों प्यारा।
मदद करेंदा सतगुरु उसदा, देंदा आन सहारा।।
नरसी भगत दी सिरसागढ़ विच, लड़की इक व्याही।
उस लड़की दे सौरियाँ दी रब, उच्ची शान बनाई।।
लक्खां ते करोड़ां दे विच, कम उन्हां दे सारे।
नरसी भगत हुण भगत हो गया, केवल गुरु सहारे।।

उस लड़की दी धी दी शादी दा, साहा जदों सुधाया।
सारे रिश्तेदाराँ ताईं शादी विच बुलाया।।
नरसी भगत दा जाणा बणदा, शादी विच्च ज़रूरी।
पैसा रखया कोल न उसने, एस गल्लों मज़बूरी।।
भेद ओसदा कुड़माँ कोलों, छुपया नहीं सी सारा।
तकलीफ देओ न नरसी ताईं, एह कम ओस लई भारा।।
नरसी भगत हुण मस्त भजन विच, दुनियां छोड़ के लगा।
ओहनूँ खबर देवो न हरगिज़, ओह सँवारे अग्गा।।
बिरादरी इस विच ज़ोर चा दित्ता, क्योंकर ओह न आवे।
नानकी छक जो देणी बनदी, उस बिन कौन ले आवे।।
बिरादरी हर थां डाढी होंदी, मनणा पै गया भाई।
सेठ तों बैठ किनारे सबणां चिट्ठी इंज लिखाई।।
दोहतरी दी शादी उत्ते, सब कुछ लेकर आवीं।
बनी बनाई उमर सारी दी, हुण न किथे गँवावीं।।
शान शौकत नाल औणा बण के, कोई कसर न लगे।
दिल खोल के छक ले औणी, जीवें कीते कम अगे।।
उन्हां मज़ाक नाल लिखाया, वेखिये केहड़े पानी।
इन्हां पता न लोकां ताईं, उसदा कोई नहीं सानी।।
जिसने उस दी हुँडी तारी, उसदा ओह सहारा।
कसर न लगन देनी ओहनूँ, उसदा कृष्ण प्यारा।।
लोकीं जाणन नरसी भगत सँग, कुल जगत दा वाली।
पैज भगतां दी रखदा आया,जुग जुग ओहदी चाली।।
ज़ाहिरा नज़र प्या आवे सब नूँ है गरीब निमाणा।
विचों कोई समझ न सकया, राजेयाँ दा ओह राणा।।

लिख के रुक्का दासनदास, बिरादरी जदों फड़ाया।
नरसी तैयारी कर के आवे, पंडित नूं समझाया।।
लैके चिट्टी पंडित उन्हां दा जूनागढ़ नूँ जांदा।
कई दिनां विच सफर करके, इक दिन जा मुकादा।।
नरसी भगत नूँ मिलके पंडित, चिट्ठी हत्थ फड़ाई।
जीवें गरीबाँ वाली हालत, तीवें सेव कमाई।।
टुरन लगयाँ नरसी भगत ने, पंडित नूँ सुनाया।
मैं ज़रूर आवांगा उत्थे, दिन शादी जद आया।।
जो कुछ सरया मेरे कोल्हों लै आवांगा भाई।
लिख्या लैणा लड़की हत्थों जो उस धुरों लिखाई।।
टुरन लगयां पंडित ताईं, बर्तन इक फड़ाया।
एह कुछ ताकत देन दी मेरी, जोड़ के हत्थ सुनाया।।
वाधियाँ घाटियां करदा पंडित, होया जदों रवाना।
शहरों निकलदे ताँ सुट बर्तन, समझ के दिलों पुराना।।
बरतन टुट गया ते विचों, लाल निकल पै भाई।
सुच्चे लाल ओ चमकां मारन, दूरों देन दिखाई।।
कर इकट्ठे नाल खुशी दे झोली दे विच पांदा।
नाले टुरदा ते खुश होंदा, नाले गिनदा जांदा।।
इक लाल दी कीमत कोई, पा न सकदा भाई।
लालां वाली गल ओसने, जाके ना सुनाई।।
सरसागढ़ विच पहुँच के पंडित , सब दुनियां नूँ सुनाया।
हर इक चीज़ वह ले आवेगा, जिस दम नरसी आया।।
मुकर्रर तारीख तों दो दिन पहलां, नरसी भगत जी आये।
खाली हथ न कुछ ले आंदा, पाटे कपड़े पाये।

नरसी भगत दी लड़की सुण के, क्रोध बड़े विच आई।
जेकर खाली आवणां सी ताँ आवणा नहीं सी काई।।
एदों ते ओ नाँ आंवदा, जे आया कुछ होंदा।
जिसतों मतलब होवे न पूरा,ओ नहीं जग नूँ भौंदा।।
करे दलीलाँ दिल विच लड़की, किसे तरह सर जावे।
मुकावन वाली उसदे ताईं, यही सलाह बनावे।।
पानी गर्म करके चंगा, नरसी ताईं बुलाया।
आओ नहाओ उतारो कपड़े गरम पानी मँगवाया।।
जिस वेले ओह बह गया थल्ले, पानी सिर विच पाँदी।
ठण्डा ठार वेख के पानी, लड़की घटदी जांदी।।
जिस नूं ईश्वर रखना चाहवे, उसनूँ कौन बचावे।
जिसदा राखा ईश्वर नाहीं, उसनूँ कौन बचावे।।
विच्चे विच्च गरक पई होवे, मैं की कसब बनाया।
करके पानी सख्त गरम मैं पिता दे सिर पाया।।
उसदे ताईं बचावन वाला, नाल ओहदे सी आया।
डिंगा वाल किवें कर सकदी, साईं जिनूँ बचाया।।
ऐ पता न अंग संग जेहड़ा, उसदा कोई नहीं सानी।
इन्हां ज़ुलम करना सी कानूँ, इवें दिल विच ठानी।।
जेकर पिता नूँ पुज्या कुझ नहीं, है ते उच्चा नाता।
जिस ने एडे घर विहाया, उसदा कदर न जाता।।
समझ गया ओ लड़की ताईं, जीवें मैं नूं हुण जाणे।
मैं नूँ रखन हारे रखिया, ए लांदी फिरी ठिकाने।
दूजे दिन शादी दा वेला, खुशियाँ लोक करेंदे।
जो कुछ हक लड़की दा बणदा, वारो वारी देंदे।।

उधरों कृष्ण महाराज आ गये जूनागढ़ तों भाई।
नरसी भगत जी कित्थे बैठे, भात ओस मँगवाई।।
किस्से पुछिया कृष्ण दे कोलों, केहड़े शहरों आये।
ए सामान न गिनिया जांदा, जेहड़ा तुसीं ले आये।।
कृष्णदेव फरमावन लगे, ए नरसी सेठ दा सारा।
दोत्री दी शादी विच देणा, अज उसने बारा।।
मैं गुमाश्ता नरसी सेठ दा, सब सामान ले आया।
शादी वाले दिन लै आवीं, सेठ ओनां फरमाया।।
देख नज़ारा नरसी भगत जी, खुशियाँ दे विच आया।
मेरे कारण मेरे सतगुरु कितना दुःख उठाया।।
लै सामान आया ओ एडा, जिसदा अन्त न आवे।
लड़की दा अज बाप वी भावें, पलयों कुछ न पावे।।
नरसी भगत दी लड़की वेख के, बहुत पई शुक्र मनांदी।
जेहड़ी कीती नाल बाप दे, हथ जोड़ बख्शांदी।।
खुद कृष्ण आ भगत नरसी दी, लाज रख लई भाई।
नरसी भगत बड़ा खुश होया, जेदा अन्त न काई।।
जो गुरां दे दिलों व जानों, बण जावंदे प्यारे।
दुःखां दे विच मदद करेंदे बण के आप सहारे।।
नरसी भगत कर शादी सोहणी, चला गया घर भाई।
दम दम चिन्तन प्रभु दा करदा, आदत जिवें बनाई।।
दासनदास जो गुरां दे प्रेमी कित्थों हार न खांदे।
इत्थे उत्थे दोएं जहाँ विच, सच्चे सुख नूं पांदे।।

जेहा बीजे सो लुणे

ऐन-आरिफां दा फरमान ए, बुरे नाल वी करनी भलाई चाहिये। बुरा सोचयां किसे दा भला नाहीं,खड्डा कढ न डिगना खाई चाहिये।। भला कीतियां अपना भला होंदा,रखणी एस लई दिलों सफाई चाहिये। बिगाड़ करे जो ओदा बिगाड़ होंदा, प्रेम प्यार नाल दिलों रसाई चाहिये।। एस तरह दा किस्सा इक खोल दस्सां, गरीब उत्ते ज्यों ज़ुल्म कमाया सी। उलटा ज़ुलम प्या ज़ालिम ओस उत्ते, दासा हत्थां दे जीवें अज़माया सी।।

आलीबख्त वाला सी इक बन्दा,जेहड़ा बहुत बड़ा मालदार भाई। सारे पिण्ड दा मुखियाओह बणया,ओहदे हुक्म तों चले नकोई बाहर भाई।। इक ओहदा पड़ौसी गरीब विचारा,थोड़ी ज़मीन दा छोटा ज़मींदार भाई। मुश्किलां नाल ओह विच संसार आपणा, रह्या वकत दे ताईं गुज़ार भाई।। गरीब जेहड़ा ओह शुद्ध विचार वाला, हरदम रखदा याद भगवान नूँ जी। मुखिया दुःख गरीबां नूँ दे दासा, चंगा लगे न किसे इन्सान नूँ जी।।

आदत वेख बुरी फिर भी साईं सच्चे,कीती मुखिया ते किरपा कमाल भाई। इक लड़का दित्ता मुखिये ताईं ईश्वर,जेहड़ा बहुत सोहणा बे मिसाल भाई।। ओन्हां दिनां विच ओस गरीब नूँ वी, रब दे दित्ता इक बाल भाई। कुछ बरसां दे जदों होये दोवें, प्यार पै गया खुशियां दे नाल भाई।। मालदार दा पुत्र मनमोहन प्यारा, बिहारी आखदे पुत्र गरीब नूँ जी। जो जमदा जग विच आन दासा,धुरों लिखया ले आवे नसीब नूँ जी।।

गैन-गम लग्गा एह मुखिये ताईं, लड़के ताईं पढ़ावना चाहवंदा ए। पिण्ड विच स्कूल न जिस कारण, मुखिया सोचदा ते घबडावंदा ए।। इक मील दे फासले शहर अन्दर, स्कूल विच लड़का लै जावंदा ए।

दाखिल दित्ता करा लड़के आपने नूँ,सुबह जावे लड़का शामी आवंदा ए।। मनमोहन दा लग्गे न दिल कल्हयां, बिहारी यार बाझों रहे उदास भाई। मेरे नाल कर दे पढ़ना शुरु दासा, जाके कहंदा बिहारी दे पास भाई।।

गल्ती बड़ी जे पढ़े न कोई लड़का, बिहारी ताईं वी ख्याल ए आया ए। पढ़न जावना चाहिये स्कूल मैंनूं, जाके पिता दे ताईं सुनाया ए।। पिता सुण के अग्गों जवाब देंदा, मेरे कोल न कोई सरमाया ए। पिता मास्टर कोल लड़के नूँ लै गया, हथ जोड़ जा वास्ता पाया ए।। जेकर फीस मुआफ कर दयो एस दी, कोलों खर्च किताबां वी लाएं भाई। मैं गरीब हां खर्चा नहीं दे सकदा, नज़र मेहर दी दास ते पायें भाई।।

गर्ज़ ओसदी डिट्ठी जदों मास्टर ओहणाँ, मन्ज़ूर कर स्कूले बिठावंदे ने। फीस सारी मुआफ कर दित्ती उसदी, होर खर्चा सब ज़िम्मे लगावंदे ने।। पढ़ना शुरु कीता दोवां बालकां ने, प्यार नाल दोवें रल मिल जावंदे ने। बिहारीलाल लड़का पढ़न विचअच्छा,मास्टर होरींओहनूँ दिलों चाहवंदे ने।। जितना बिहारी हुशियार सी पढ़नअन्दर,मनमोहन सी ओन्हां कमज़ोर भाई। पुत्र सेठां दे चंचल स्वभाव होंदे,दासा पढ़दे न ते पांदे शोर भाई ।।

फे-फर्क न पाये बिहारी पढ़न अन्दर,नज़र मास्टर दी विच मन्ज़ूर होया। दिलों जान होके पढ़े ओह लड़का, पढाई विच ओह ऐसा मशहूर होया।। किसे किसम दी बुरी न कोई आदत,बड़ा ओस विच अकल शऊर होया। इनाम मास्टरां दे कोलों रहे पांदा,हर सिफत विच लड़का भरपूर होया।। मनमोहन लड़का निल हर तरफों, इम्तिहानों फेल ओह कदी न पास होवे। मार खाये हरदम न दास बनदा, ध्यान पढ़न दा ओनूँ न खास होवे।।

फेल मोहन ते बिहारी पास होंदा, मुखिया एस तों दुःख मनावंदा ए। पुत्र गरीब दा हो के ओह लड़का, दर्ज़ा दिनों दिन बड़ा प्या पावंदा ए।। मेरे पुत्र एस खराब कीता, पढ़दा आप ते एनूं हटावंदा ए। कदी पास न होवंदा मनमोहन,जिस लई मुखिया प्या वेख घबडावंदा ए।। सारी कारिस्तानी बिहारी लाल दी ए, अपनी सेवा विच एनूँ लगाई रखे। दास जान के सेवा कराए इस तों, जारी अपनी सदा पढाई रखे।।

फिकर मोहन रखे बिहारी यार वाला, सदा करदा ओहदी सँभाल भाई। कपड़ा लत्ता परदे नाल रहे देंदा,पूरा रखदा ओहदा ख्याल भाई।। किताबाँ कापियां लैके रहे देंदा,यार यारी दे विच कमाल भाई। दोस्ती दोवां दी दिनों दिन जाये वधदी, फर्क पवे रत्ती रवाल भाई।। ऐह पर पिता ओहदा न वेख सकदा, बिहारी वल्लों त्योरी चढ़ाई रखे। बुरा समझदा मुखिया दास ताईं, कदूरत दिलों उस नाल वधाई रखे।।

काफ-किस्मत बिहारी दी वेख आला, मुखिया होंदा प्या मन्दे हाल भाई। मनमोहन लड़का नालायक मेरा, एहो ओसनूँ दुःख कमाल भाई।। ऐसा पुत्र मैंनूं कोई साईं दित्ता, जेहड़ा चलदा ठीक नहीं चाल भाई। हटावां बिहारी नूँ मत्ते नाराज़ होके, मारे खू दे विच चा छाल भाई।। बुरा मन्नेगा मोहन बिहारी वल्लों,जेकर ज़बरदस्ती ओहनूँ रोकया मैं। इन्तिज़ाम बिहारीनूँ मारन दा खुफ्याकरसां,दासा वेखदा ऐसा कोई मौका मैं।

कीमत प्यार दी दोहां दी जाये वधदी, जिसदा कोई भी अन्त शुमार नाहीं। इक दूजे बिन पावंदे दुःख दोवें, बाझों मिलयाँ आवे चैन करार नाहीं।। रात मुश्किल गुज़ारदे घराँ अन्दर, सबर दोहां नूँ बाझ दीदार नाहीं। खुशियाँ विच चलदे जदों पढ़न जांदे, ऐदों होर कोई मौज-बहार नाहीं।।

ऐतवार आये जिसदिन खुशियाँ विच दोवें, खेड़ां खेड के दिन लँघावंदे ने। इक दूजे तों जुदा जद होन दासा, दोवें बहुत ही दुःख मनावंदे ने।। कायम दिलों न बिहारीनूँ वेख मुखिया,बिहारीलाल क्यों एडाहुशियार है जी। होके लड़का गरीब दा पढ़े अच्छा, करदे मास्टर भी एहनूं प्यार है जी।। मेरी शान दे विच एस फर्क पाया, मेरे लई बन्या डाढा भार है जी। किसे तरह एह लड़का मर जावे, मेरी अखां विच रड़कदा खार है जी।। मेरे लड़के नूँ एस नालायक कीता,वट्टा ला दित्ता मेरी शान नूँ जी। मार एस नूँ अक्खाँ तों दूर करदे, दास जोड़ हथ कहंदा भगवान नूँ जी।।

क्याफ-कर्तार रखे जिसनूँ कौन मारे,मारे कर्ता न दारू बचान दा रे। कड्ढे खाता किसे लई मरे आपे, पक्का फैसला एह भगवान दा रे।। नेकी करना चाहिये विच जहान आके, फर्ज़ एहो ही असल इन्सान दा रे। आकेभुल जावे फर्ज़ नूँ जीव जेहड़ा,ओहफिर दुखाँअन्दर खाक छानदा रे।। बिहारी लई मुखिया बुरा सोचदा सी, एस ताईं ज़रूर मरवावना ए। जिस दे उत्ते साईं दी नज़र दासा, उसनूँ किसे न दुःख पहुँचावना ए।।

कहंदा जा जल्लाद दे ताईं मुखिया,इक कम्म एह मेरा संवार दे तूँ। जो कुछ मंगेगा देयाँगा यार तैनूँ, बिहारी लाल गरीब नूँ मार दे तूँ। दुनियाँ विच न फिरदा नज़र आवे, मारन वाली कोई कर कार वे तूँ।। एह दुःखाँ वाला कण्डा कड्ढ छेती, सिर वड्ढ दे नाल तलवार दे तूं। जल्लाद आखदा मुखिये दे ताईं अग्गों, बिहारी मोहन दी मैंनूं पछाण नाहीं। कीवें पता लगसी बिहारी एह लड़का, दासा दसयाँ बिन होणा ज्ञान नाहीं।।

क्हन लगा मुखिया ए न कोई मुश्किल,मोहन विचअच्छे लिबास होसी। नीले रंग दी गल कमीज़ वाला, शानदार रुमाल ओहदे पास होसी।।

धारीदार पाजामा मखमली बस्ता, पैरीं बूट निशानी एह खास होसी। नाल मटकदे चलदा होवेगा ओह, खुश खुश चेहरा न उदास होसी।। ऐसे लिबास वाले नूँ छोड़ देना, गरीबी लिबास वाले नूँ मारना तूं। सिर विखा के लेवीं इनाम दासा, पक्की बन्ह जा दिल विच धारना नूँ।।

गाफ-गुज़ार दोपहर जल्लाद शामे, राह विच बैठ करदा इन्तिज़ार भाई। निशानी याद कर के बैठा ओह ज़ालिम,पकड़ हत्थ दे विच तलवार भाई।। कदों आवे बिहारी दा सिर वड्ढां, शस्त्र लाई बण के खूँख्वार भाई। सिर वड्ढ के लवां इनाम जाके, दिल विच धार के ऐसा विचार भाई।। जल्लाद कर ध्यान बैठा राह उत्ते, बिहारी औंदे नूँ मार मुकावना ए। जिस नूँ रब्ब रखे ओहनूँ कौन मारे, दासा आरिफां दा फरमावना ए।।

गल्लां करदियाँ आपस विच मोहन कहंदा,अपने दोस्त बिहारी लाल नूँ जी। तेरे कपड़े सारे ने फट्टे होये, वेख सकां नाहीं तेरे हाल नूं जी।। मेरे कपड़े पहन लै तूँ सारे, दूर करदे दिली ख्याल नूँ जी। कपड़े तेरे फट्टे मैं भी पा वेखाँ, चल वेखां गरीबां दी चाल नूं जी।। मैं घर जाके होर पा लावांगा,घर कपड़याँ दा कोई शुमार नाहीं। यार यार नूँ वेखे दुःखी दासा, ओह फिर यार काहदा ओह यार नाहीं।।

गुरुमुख बिहारी कहँदा एह गल ठीक नाहीं,तेरा मारेगा पिता गरीब नूँ जी। जो कुछ लिखिया धुर दरगाह विच्चों, ओह ही भोगना यार नसीब नूँ जी।। इन्हां कपड़यां विच मैं राज़ी, छोड़ दे तूँ एस तरकीब नूं जी। ओह वरतना विच संसार चँगा, अच्छा लगे जो मेरे हबीब नूं जी। ऐस तरह मैनूँ घर जाण दे तूँ, लोड़ कोई न कपड़े वटावणे दी। गुस्से होवेगा वेख के पिता तेरा, दासा लोड़ न वैर वधावणे दी।।

मोहन आखदा मेरा न दिल राज़ी, जेकर करें न अर्ज़ मन्ज़ूर मेरी। दिल दी ख्वाहिश होंदी पूरी तां मेरी, पोशाक पायें जे गल ज़रूर मेरी।। तेरी मैं पोशाक अज पा वेखाँ, नज़र जावंदी अज पई दूर मेरी। ऐहदे विच भला तेरा नज़र आवे,बुद्धि फेरदा पया हुज़ूर मेरी।। बार बार कह्या जदों मनमोहन, आपे विच लई बदल पोशाक बेली। मौत बिहारी नूं ना लैणा चाहे दासा, मनमोहन दी बणी जा गहाक बेली।।

खुशियां नाल चलदे आवन यार दोवें,जल्लाद उठया पकड़ तलवार भाई। रखी निशानी ते हमला कर दित्ता,लिया मोहन दा सीस उतार भाई।। बिहारी लाल नूँ ओसने छेड़या नां, दिलों समझ के मोहन दुलार भाई। सिर मोहन दा वड्ढ के लै टुरया, गया मुखिये दे तुरत दुआर भाई।। बिहारी गरीब दा सिर समझ केते, मुखी अग्गे जद ओस टिकाया ए। मुखिया वेख के ते गश खा मोया, दासा एह की कहर कमाया ए।।

होंदी देर है होंदा हनेर नाहीं, जो कोई करे सोई ओ फल पावंदा ए। जो कुछ बीजदा सो कुझ वड्ढ लैंदा,बीजे बिख न अमृत कोई खावंदा ए।। खड्डा कढदा किसे दे लई जेहड़ा, ओहो विच खूह डिग के मर जावंदा ए। बे न्याईं न करदा कदी ईश्वर, कर्म कीता ओहदे अग्गे आंवदा ए।। एस वास्ते हर इन्सान ताईं, शुभ करमां लई सदा ध्यान चाहिये। जित्थों तीक हो सके ते दास बण के, याद रखना सदा भगवान चाहिये।।

सतसंग दी महिमा

लाम-लाला कोई सामान चुका के ते, अपने शहर नूँ सी ओह जान वाला। पर मिले न ओहनूँ मज़दूर कोई, सामान चुक के शहर पहुँचान वाला।। इक भगत अचानक प्या लँघ ओथों,जेहड़ा भजन अन्दर लिव लान वाला। ओहदा वेख सामान भगत ठहर गया, परमार्थ जो सदा कमान वाला।। कहंदा भगत मैं चुक सामान तेरा, जित्थे आखो में लाला पहुँचा देवां। मज़दूर बाझ जो बड़ी तकलीफ दासा, हुकम होवे तां दुःख मिटा देवां।।

लगा कहन लाला तेरी मेहरबानी, भुल सकांगा न अहसान तेरा। देसां पूरी मज़दूरी जो मुहों मँगे, नाले करदा रहसां आदर नाल तेरा।। भगत आख्या लोड़ न पैसयां दी, जिस विच लग्गा ध्यान तेरा। सतसंग सुण या दे सुणा मैंनूं, ता मैं चुक्कांगा एह सामान तेरा।। सतसंग की होंदा मैं तां जानदा नाहीं, ओ उमर भगत जी ऐंवे लंघा दित्ती। तुसीं करो मैं सुनांगा दिलों दासा, लाले भगत नूं अर्ज़ सुना दित्ती।।

लया चुक सामान कीती शर्त उत्ते, नाल सतसंग भगत सुनान लगा। सुनदा जांवदा नाल ख्याल लाला, जो कुछ भगत जी करन ब्यान लगा।। सत्संग करदियां सुनदियाँ दोवां दा जी, मन्ज़िल मकसूद जद आण लगा। सामान दे दित्ता भगत लाले ताईं, विछुड़न लग्यां ए भगत समझान लगा।। लाला अठां दिनां नूं तूं मर जाणा, यानी मर जाणा अज दे वार है तूँ। जमदूत जदों तैंनूं लै जाण दासा, हाज़िर होणा जद धर्म द्वार है तूं।।

मीम-मारनगे तैनूं कहनगे ओहो, विषयाँ विच सब उमर गँवा आयों। पुण्य दान न कीता न भजन कीता, मन दी मौज विच वकत गँवा आयों।।

सिरफ इक घड़ी सुनया है सतसंग तूँ, शुभ कर्म एह एना लिखा आयों। पहला जाना वैकुण्ठ इसघड़ी बदले,या नरकीं जाणा जो पाप कमा आयों।। धर्मराज ताई अगों कह देणा, पहले वैकुण्ठ अन्दर मैं जावणा एं। भेज देनगे जदों वैकुण्ठ दासा, ओत्थों तैनूं न किसे बुलावणा एं।।

मौका आ गया हफ्ते दे बाद ऊहो, लाले होरीं पै नाल बुखार दे जी। जमदूत आ गये लाले नूँ लैन खातिर, जान कड्ढन लग्याँ पै मारदे जी।। मार मार के लाले नूँ लई जांदे,धर्मराज दे कोल जा खलारदे जी। अमाल-नामा जद लाले दा कढ डिठा, करम बुरे सब वेख विचारदे जी। फकत इक घड़ी सुनयां सतसंग तूं, सारी उमर विच नाल ध्यान भाई। बाकी उमर तू कीती बर्बाद दासा, मर्त्यलोक अन्दर तूँ आन भाई।।

मर्ज़ी तेरी जेहड़ी सानूँ दस लाला, इक घड़ी दा फल पहले पावणा एं। या कुकर्म कीते जेहड़े जगत उत्ते, ओहणा लई नरकीं पहलां जावणा एं।। लाला आखदा पहले वैकुण्ठ भेज्यो, शुभ कर्म दा फल जेहड़ा आवणा ए। धर्मराज जमदूतां नूं हुकम दित्ता, तिवें करो जिवें इसदी चाहवणा ए।। इज्ज़त नाल ओह सेवक लाले ताईं, दूतां विच वैकुण्ठ पहुंचा दित्ता। फल वैकुण्ठ दा भोग के छेती औणा, धर्म दासां ने ओहनूं सुना दित्ता।।

नून-निहाल होया वेख वैकुण्ठ लाला,हरतरह दा ओत्थे आराम डिट्ठा। सतसंग दी वर्षा पई होवे हर थां, हरकोई जपदा गुरां दा नाम डिट्ठा।। शुभ कर्म पै होंदे हर थां ते, ऐर-गैर कोई न झूठा काम डिट्ठा। ओही भगत जेहड़ा सतसंग देण वाला, बैठा इक पासे जपदा नाम डिठा।। देख ओसनूँ लाला प्रणाम करदा, कहंदा आया ते हुणे वापस जावना एं। बाहर खड़े होये जमदूत दासा, रूप वेख न सक्कां डरावणा एं।।

ना डर तूं बैठ जा चुप करके, ताकत एथे न किसे दे आवणे दी। भजन अभ्यास चुप करके करी जा तूँ, कोई लोड़ न हुण घबड़ावणे दी।। बाहर वेख न रख ध्यान अन्दर, दिलों करी जा हर गुण गावणे दी। सतसंग सुणन दा एह सब असर होया,बाहरों ताकत न तैनूँ बुलावणे दी।। घड़ी सुण सतसंग नरक तरक हो गये, सुख शान्ति बैठ के भोग लाला। सतसंग सुनया इक घड़ी दासा, जिस लई मिट गये जन्मां दे रोग लाला।।

नेड़े सतसंग दे जेहड़े नहीं जांदे, कदी दुःखाँ तों होण न पार भाई। सतसंग विच जाके पता लगे, कीवें जित होंदी कीवें हार भाई।। सतसंग नूँ सुन जो अमल करदा, हो जावंदा दुःखां तों बाहर भाई। सतसंग कुसंग नूँ दूर करदा, प्राप्त हो जांदी वस्त सार भाई।। सतसंग बाझ न जीव नूँ पता लगे, किस लई मानुष तन पाया मैं। सतसंग विच दास नूं पता लगे, लख चौरासी फिर फिर आया मैं।।

राँका बाँका

सीन-सतगुरां दे प्रेमी प्रेम पूर्वक, किसे पिण्ड रहंदे नर ते नार दोवें। बड़े त्याग वैराग दे विच होके, गुज़रान ज़िन्दगी विच संसार दोवें।। कक्खां कानियां दी झुगी विच रह के, करदे गुरां दा शुक्र गुज़ार दोवें। एह पर अत गरीब सन ओ प्रेमी, सिर्फ करन इक्को रोज़गार दोवें।। जंगल विचों ल्या के लकड़ियां नूँ, बाज़ार वेच के करन निर्वाह नूँ जी। सतगुरां दी सेवा करन बाझों, दास रखदे होर न चाह नूँ जी।।

सी नाम उन्हां दा रांका-बांका, रांका पति ते बाँका नार भाई। नामदेव ओहनां नूँ वेख निर्धन, पड़ौसी समझ के होंदा बेज़ार भाई।। नामदेव भगवान कोल जा इक दिन, ओन्हां वास्ते करे पुकार भाई। मदद इन्हां दी करो ज़रूर स्वामी,कर कर मेहनत गये ने दोवें हार भाई।। सदा तेरी भक्ति एह ने करन वाले, भावें हैन ए सख्त गरीब स्वामी। दासां उत्ते करो कोई मेहरबानी, जागन इन्हां दे कीवें नसीब स्वामी।।

सुनके ओस दी अग्गों भगवान कहंदे,बड़े त्यागी कुछ न दोवें चाहन वाले। रांका-बांका विच नाम दे मस्त रहंदे, नाम धन अन्दर लिव लान वाले।। रस्ते उन्हां दे भावें मोहरां धर वेखो, वेख मोहरां ताईं लंघ जाण वाले। नामदेव कहँदा एह मैं मनदा नहीं, मिले धन ते हत्थ न लान वाले।। भगवान भक्तां दी करन परीक्षा लई, थैली मोहरां दी राह विच धर दित्ती। इम्तिहान दासां दा नामदेव लैन खातिर,सुरती सारीओहनां वल कर दित्ती।।

शीन-शीघ्र जा रह्या सी राँका मोहरां, नाल ठोकर जिसदम लाई उसने। मोहरां वेख के रांका ने उस वेले, बाँका औंदी वल नज़र दौड़ाई उसने।। मोहरां वेख न दिल ललचायेओहदा,मोहरां उत्ते झटपट मिट्टी पाई उसने।

क्या थक गये हो-स्वामी जी बैठ रहे हो,अगों बाँका नूँ खोल सुनाई उसने।। राँका कहन लगा मोहरां वेख पइयाँ, प्यारी धोखे दे विच न आ जाये। ऐस वास्ते दास ने पाई मिट्टी, मोहरां वेख न किदरे ललचा जाये।।

शान्त देवी परम त्याग वाली, कहंदी स्वामी जी एँज क्यों चाहीदा ए। मोहरां मिट्टी विच स्वामी जीफर्कक्हड़ा,मिट्टी उत्तेक्या मिट्टीनूँ पाइदा ए।। मोहरां मिट्टी विच संमझया फर्क तुसां,मैंनूं फर्क न जापदा राई दा ए। मिट्टी उत्ते मिट्टी नूँ पाई जाणा, एह कम न कोई दानाई दा ए।। राँका-बाँका दी सुण के कहन लगा,धन तूं हैं धन वैराग तेरा। दास दे त्याग ते पा मिट्टी, दब दिता तू परम त्याग मेरा।।

शाबाश है तेरे त्याग उत्तों,तेरे त्याग कीता शरमसार मैंनूं। तेरे त्याग ने मैनूं हरा दित्ता, तेरे त्याग कर दित्ता बेकार मैंनूं।। मोहरां मिट्टी विच अन्तर न जाणयां तूं,फेल कर दित्ता होके नार मैनूं। उलटा मैंनूं तूँ ऐसा ज्ञान दित्ता, जिस विच हो गई आन के हार मैंनूं।। सतगुरां दी तेरे ते मेहरबानी, मोहरां-मिट्टी जिस इक कर जानया ए। वैराग त्याग अन्दर निकली तूं पूरी, दासनदास ने अज पछानया ए।।

स्वाद-सिफत डिठी नामदेव जिसदम,पति पत्नी विच पूरे वैराग दे ने। दुनियाँ मोह माया विच घूक सुत्ती, प्रेमी सतगुरां दे वेखो जागदे ने।। इक दूजे तों वध के एह त्यागी, पूरे भांडे एह भरे त्याग दे ने। नामदेव वेख वार बलिहार जांदा, वैरागी त्यागी एह बड़े सौभाग दे ने।। ऐसे जीव सदा जीवन मुक्त होंदे, पदवी पा जांदे उच्ची आन के ते। दासनदास ओह जगत विच आए कानूं, जेहड़े सौं रहंदे ऐवें जाण के ते।।

सबर सन्तोख अन्दर प्रेमी रहन जेहड़े, अमृत रस ताईं पी लैंदे ने ओह। दुनियां रुपी गले सड़े गुड़ उत्ते, मक्खियाँ वांग न भुल के बैहँदे ने ओह।। मौन धार के गुरां नाल चित्त जोड़न, प्रेमी प्रेम मस्ती विच रहंदे ने ओह। बणके गुरां दे गुरांनाल करन गल्लां,गैरां ताईं न कोई गल कहंदे ने ओह।। जिस वास्ते आवंदे जगत अन्दर, ओस कम नूं आन मुका जांदे। सतगुरु सुख सागर दे दास बन के, सच्चे नाम अन्दर गोता ला जांदे।।

सिदक ओन्हां दा वेख नामदेव पूरा, आज़माये होयां नूँ फेर आज़मावंदे ने। दो गट्ठे बालण दे बन्ह के ते, रस्ते उन्हां दे विच टिकावंदे ने।। रांका बांका भजन दी मस्ती अन्दर,चलदे होयां जिस दम ओत्थे आवंदे ने। बेगानी चीज़ नूँ छेड़ना पाप होंदा, एह समझ होवें लँघ जावंदे ने।। पराये गट्ठे नूँ समझ न हत्थ लाया, कीता ज़रा न ओन्हां वल ध्यान भाई। अपने राह ते चले गये दास दोवें, ऐसे सच्चे प्रेमी ज्ञानवान भाई।।

उस दिन लकड़ी ओन्हां नूँ मिलीनाहीं,फिर फिर जंगल दे विच ख्वार होये। आखिर शामीं आ गये खाली हथ वापिस, रोटी बाझ दोएं निराहार होये।। चंगा दिन चढ़या अज कोई ऐसा, लकड़ी मिली न सखत बेज़ार होये। ताँ भी दिलों प्रेमी सच्चे साहिब दे ओ, घर आन के शुक्र गुज़ार होये।। माया वेखन दा सानूँ एह असर होया, रह के भुखियां वकत गुज़ारिया ए। हाल ओन्हां दा होवेगा की दासा, जिन्हां माया पिछे जन्म हारिया ए।।

सन्त बुल्लेशाह

ज़्वाद-ज़िला लाहौर पंजाब अन्दर, छोटा जिहा इक कसबा कसूर भाई। बुल्लेशाह सैयद इक होया ओत्थे, जेहड़ा भगती विच बड़ा मशहूर भाई।। ओसदा हाल मैं खोल सुनावंदा हां, जीवें मुर्शिद नूँ होया मन्ज़ूर भाई। करनी ओस दी करन ब्यान लगा, करदयां भगति जीवें पया फतूर भाई।। कुसंगत पीर दे वल्लों हटाया जीवें, बुल्लेशाह जीवें निश्चय तोड़या सी। दास पहुँच के गुरु दरबार अन्दर, रुख बदलया पीर नाल जोड़या सी।।

ज़ाया उमर कुझ बुल्ले दी बाझ मुर्शिद,जदों गुज़र चुकी ओहदी आन भाई। संस्कारी रूह सीओहदी बहुत आला,जिस लई ओस नूँ आया ध्यान भाई।। दुधां बाझ न रिझदी खीर जीवें, मुर्शिद बाझ न मिले रहमान भाई। लिखिया विच हदीसां दे आया ए, हुकम अल्लाह दा विच कुरान भाई।। पीर-पैगम्बर-औलिया-काज़ी मुल्लां, हाफिज़-आलिम ते होर शेख बेली। बाझ मुर्शिदां अपने अल्लाह ताईं, दास कोई न सकया वेख बेली।।

जामिन मुरीद दा जिचर न होवे मुर्शिद,हिसाब जन्मां दा होंदा बेबाक नाहीं। करम धरम करे मन दी मौज अन्दर, रूह ओसदी होवंदी पाक नाहीं।। बाझ उस्तादइलम न कोईजान सके,उस्ताद मल्लाह बिन होंदा तैराक नाहीं। ऐसेतरह रूहानियत वी न जान सके,जिचरमुर्शिद बनदा कोई गहाकनाहीं।। ऐस वास्ते मुर्शिद दी लोड़ मैनूँ, ढूँढना चाहिदा राहबर कोई जाके ते। दास ताईं अनमोल एह समां मिलया,कुछ न बणसी फिरवक्त लँघा के ते।।

तोये-तरफ मुर्शिद दी चल पया, मिल के ले लां ओहदी हिदायत नूँ जी। जांदियाँ खेत विच गंडे लांदेयां नूँ डिट्ठा बुल्ले ने साईं इनायत नूँ जी।। खुदावन्द करीम दाओसनूं समझ प्यारा,करदा जाके दिली शिकायत नूं जी।

जिसदे नाल मेरी आकबत सँवर जावे, मैं चाहवंदा ऐसी खरायत नूँ जी।। साईं इनायत फरमावंदे बुल्ले आ सुन, मुश्किल कोई न रब दा पावणा ए। पनीरी वांग खयालां नूँ पुट दासा, ऐदरों पुट के ओधर लावणा ए ।।

तालिब बन गया इनायत अराईं दा ओह, रम्ज़ पा लई रब दे पान वाली। परम आनन्द औणा ओन्हूँ शुरु होया, होश रही न झूठे जहान वाली।। सदा मस्त रहंदा आबे-हयात पी के, झूठी ख्वाहिश गई पीन ते खान वाली।
मुर्शिद ऐसी बूटी लाईओहदेअन्दर,सच्ची खुशी दुनियां ताईं विखान वाली।। बड़ा शुक्र गुज़ार मुर्शिद आपणे दा, जिसने आत्मिक जोत जगा दित्ती। अगूँ हाल दस्सां बे मुर्शिदां दा, जिन्हां दास नूँ गलत सलाह दित्ती।।

तरह तरह दी होन शिकायत लगी, बुल्ले बहुत ही ज़ुलम कमाया ए। होके सैयद ते इनायत अराईं ताईं, क्यों उसने पीर बनाया ए।। भैणा फुफियाँ ते भरजाईयां ने, बुल्लेशाह नूँ बैठ समझाया ए। होके सैयद इराईं नूँ गुरु कीता, तैनूं ज़रा क्यास न आया ए।। बुल्ला सोचदा जो कुछ लोग आखदे,बिल्कुल सच्ची एनहां दी बात है जी। सैयद इराईं दी ज़ात विच फर्क ऐनां, दासनदास जीवें दिन ते रात है जी।।

ज़ोये-ज़ुल्म कर के अपने नाल बुल्ले, इनायत गुरु वलों मुख फेर लिया। उस दे नाल कर के लोकां गैर बातां, बुल्ले ताईं ओन्हां कर ज़ेर लिया।। बुल्ले सोलह आने ठीक समझ के ते, मन ओसदे ओसनूं घेर लिया। ऐसा आन कुसंग दा असर होया, सच्चे रस्तों ओहनूं उखेड़ लिया।। बेमुख होया ओह जदों पीर वल्लों, रह्या प्रेम-खुमार न रस भाई। नज़ारा कुदरती जो वेखे दास अन्दर, ओह सब दिसनो हो गया बस भाई।।

ज़ाहिर होया फिर बुल्ले नूं पिया घाटा,कानूँ छोड़या गुरु हुज़ूर नूँ मैं। मुर्शिद खिच लया मेरे कोलों सारा, जेहड़ा लैंदा सां सच्चे सरुर नूँ मैं।। कानूं लोकां दे आखे लग केते, कर बैठा एडे कसूर नूँ मैं। तड़पे ओस महबूब नूँ फेर नूँ फेर बुल्ला,क्यों छड आया कोहतूर नूँ मैं।। हाय जागदियाँ मैं लुट घत्ता, जेहड़ा सुतियां लोकां लुटाया ए। छडा के रस्ता सच्चा एस दास कोलों झुठियाँ झूठे रस्ते च पाया ए।।

ज़ालिमा ज़ुल्म कीता मैडे नाल भारा,बुल्ला रो रो ढाईं मारदा ए। कीवें पीर दे ताईं मनां जाके, बख्शो पीर जी दिलों पुकारदा ए।। नचन वालयाँ दे कोल गया आखिर,ओहनां अग्गे जा अर्ज़ गुजारदा ए। सेवा करांगा मुफ्त विच मैं एत्थे, ज्यों ज्यों हुक्म होया सरकार दा ए।। सिरफ नच्चन दी जाच सिखा देवो, होर कुझ न लैण दी लोड़ मैंनूं। समझ नच्चन दी दास नूँ आ जावे, एहो समझ लो लख करोड़ मैनूं।।

बड़े प्यार अन्दर ओन्हां नाचयां दी, बुल्लेशाह सेवा कमान लगा। हुक्के विच पानी ठँडा रोज़ पाके, अग धर के हुक्का छकान लगा।। पाणी खूहों ले आके नाचयां नूँ हर रोज़ करान अश्नान लगा। होर करे सफाई अन्दर बाहर सारी, हुकम होवे जो सारा बजान लगा।। कित्थे सैय्यद कित्थे एह नीच कौमां, पीर वास्ते करे सब धंधयाँ नूँ। किसे तरह मैं पीर मना लवां, दासा कर राज़ी नीच बन्दयां नूँ।।

आखिर सिखगया नच्चण गौण बुल्ला,सिखदियाँ लँघ गया पूरा साल भाई। अनायत साईं दरबार विच देण चौकी,नाचे जावंदे साल दे साल भाई।। बुल्लेशाह नूँ सेवा वास्ते ओ, लै गये विच दरबार दे नाल भाई। अनायत साईं दे दरबार विच नाचे, पै नच के करन कमाल भाई।।

बुल्लेशाह कहंदा मैं वी नचना ए, अनायत साईं दे सोहणे दरबार अन्दर। इज़ाज़त दयो मैंनूं मैं भी नच लवां, दास बन के प्रेम प्यार अन्दर।।

तू भी खुशी नाल नच लै कह्या ओहनां, कोई लोड़ नहीं तैनूं घबड़ावने दी। घुण्ड कढ ओस नचना शुरु कीता, दिलों ख्वाहिश सी पीर मनावने दी।। तेरे इश्क नचाया कर थिया थिया, पीर सुनी आवाज़ ऐसी आवने दी। अनायत साईं ने झट पहचान लीता,बुल्लेशाह दी आवाज़ विच गावने दी।। कहँदे बुल्ला हैं तूँ कहँदा भुल्ला हाँ मैं, जेकर भुल्ला एं बख्शया पीर तैनूं। खुदी अहंकार त्रोड़ के प्या औणां, गुरु चरणां विच दासा अखीर तैनूँ।।

जदों तीक बन्दे विच खुदी रहंदी, ओदों तीक रहे खुद जुदा आपे। जद जुदा दा नुक्ता बदल जांदा, ओह फिर हो जाय खुद खुदा आपे।। मैं आवे ते आवे न घर माही, माही आवे ते होवे खुदा आपे। मैं माही दे नाल जद मिल आके, तू ही तू दी करे सदा आपे।। ज़ात कदी न परखिये मुर्शिदां दी, पुछ लीजिए सच्चा ज्ञान भाई। तलवार रुपी ज्ञान दा मुल पाइये, बाहरों छोड़ के जाति म्यान भाई।।

मोर ध्वज

लाम- लखां जहान विच भक्त तेरे,अर्ज़ुन कृष्ण दे ताईं सुनावंदा ए। मेरे जेहा न कोई परम भगत होसी, मेरे वाँग न तैनूँ कोई चाहवंदा ए।। अगों कृष्ण जी ओहनूँ फरमान लगे, अहंकार मान तैनूँ खाई जावंदा ए। तेरे नालों वध के कई भगत मेरे, तेरी नज़र विच कोई न आवंदा ए।। चल नाल तू मेरे विखा देवां, जिवें साडे तों प्रेमी कुर्बान होंदे। तेरे वांग न वहमां विच दास मेरे, गुरुमुख गुरां दे बेनिशान होंदे।।

लै के नाल अर्ज़ुन नूँ श्री कृष्ण, रूप साधु दा दोवें बनावंदे ने। इक लै लया शेर नाल ओन्हां, मोर ध्वज घर अलख जगावंदे ने।। आवाज़ सुण राजा मोरध्वज छेती, घरों निकल के ते बाहर आवंदे ने। साधु रूप विच वेख के दुहाँ ताईं, बड़े प्रेम नाल सीस नवावंदे ने।। आओ चरण पाओ स्वामी घर मेरे, बहुत करे राजा आदर मान नूँ जी। भोजन पा के करो पवित्र चौका, दास कहंदा हथ जोड़ भगवान नूं जी।।

लगे कहन कृष्ण जी सुण राजा, पहले शेर नूँ खाना खिलावणा एं। जिचर तीक न खाएगा शेर खाना, उचर तीक न भोजन असां पावणा एं।। मास बाझ न खावंदा शेर खाना, प्रेम भरया कोई मास मंगावना ए। प्रेमी प्यारे दा होया न मांस जेकर, मुतलिक शेर ने मुँह न लावना ए।। बाद विच खावांगे असीं दोवें खाना, पहलां शेर दे लई बन्दोबस्त होवे। शेर लई करो पैदा दास छेती, जेहड़ी ऐदे मुआफिक प्यारी वस्त होवे।।

मीम-मंगो जो कुछ ओही हाज़िर करां, शेर लई जो मास दरकार होवे। भैस बकरियां दा करां माँस हाज़िर, पूरा शेर दा जो इञ आधार होवे।। खूनी बन्दयाँ दा माँस दे सकाँ, जेकर शेर दे लई स्वीकार होवे।

हर तरह दा माँस मैं दे दिआँगा, हुकुम स्वामी जी मैंनूँ इक वार होवे।। जीवें राज़ी होवे तेरा शेर स्वामी, पैदा करांगा उसी खुराक नूँ मैं। देर हुकुम दी है दासन दास ताईं, पूरा करांगा सन्तां दे वाक नूँ मैं।।

मेरा शेर ऐसा माँस नहीं खांदा, जिस दे विच न तेरा प्यार राजा। लख्ते ज़िगर तेरे दे माँस बाझों, होर माँस उस लई बेकार राजा।। मानी पुत्र तेरे दा मांस मँगदा, माँस दयो ओहदा जे अख्त्यार राजा। रानी पुत्तर दे नाल सलाह कर तूँ, मत्ते उन्हां दा होवे इनकार राजा।। ओसे वक्त जा के राजा पुछदा ए,कीवें एस विच तेरी सलाह है जी। तेरे पुत्तर दा शेर लई माँस मंगदा, तारनहार जो दासा मल्लाह है जी।।

मां पुत्तर दी हो के नाल खुशियाँ, कहंदी एह गल मैंनूं मन्ज़ूर है जी। पुत्र मेरा जा साधुआं अर्थ लगे, इक दिन मरना एस ज़रूर है जी।। हुकम सन्तां दा सेवक लई सुखदाई, बेड़ा दुःखां तों करदा अबूर है जी। पुत्र कोलों जा के दोवें पुछ लैये, जेहड़ा अखियाँ दा साडा नूर है जी।। साधु शेर दे लई तेरा माँस मँगदे, एस विच बच्चेया की ख्याल तेरा। माँस खुशी नाल देयाँगा कह्या बालक, दासा खुश जे दीन दयाल मेरा।।

नून-नूरे नज़र फेर अरज़ करदा, एदों उच्चा केहड़ा होसी भाग मेरा। मेरा माँस जे सन्तां दा शेर खावे, क्यों न दिल होसी बाग बाग मेरा।। पंज भौतिक शरीर दे दित्तयां जी, मिट जासी चौरासी दा दाग मेरा। बण के हँस एह चुगेगा सुच्चे मोती, मन मतंग जो होया है काग मेरा।। छेती करो फेर शेर न रहे भुक्खा, हुकुम अनुसार दे देयो बलिदान मेरी। भाग दास दे एदों की होण उच्चे, लेखे सन्ताँ दे लग्गे जे जान मेरी।।

नहीं सारा शरीर मेरे शेर खाना, श्री कृष्ण जी अग्गों फरमान भाई। सज्जा पासा बच्चे दा, शेर खासी,खब्बा पासा न होसी परवान भाई।। राजा रानी दोनों मिल के ते, सिर पुत्र दे आरा चलान भाई। निकले आँसू न किसे दी अख विच्चों, पुत्र मारना नहीं आसान भाई।। जे किसे दी अख तों आया पानी, मेरा शेर ओहो माँस न खायेगा फेर। कुर्बान कीता होया दास शेर बदले, ओह माँस ज़ाया ही जाएगा फेर।।

नाम सतगुरां दा लैके राजा रानी, आरा पुत्र दे सिर चलावंदे ने। दिल आपणा कर लिया दोहां पक्का, नाम साईं दा दिलों ध्यावंदे ने।। चीरना शुरु कीता पुत्र अयाने नूँ, पत्थर सबर दा छाती टिकावंदे ने। खब्बी अक्ख विचों लड़के आंसूँ गेरे,वेख कृष्ण जी अग्गों फरमावंदे ने।। आरा चलवाना झटपट बन्द करो, राजे-रानी ताईं झट टोक दित्ता। आंसूँ आए क्यों दास दी अख विच्चों, इस वास्ते आरे नूं रोक दित्ता।।

वा-वर्जिया क्यों आरे चलदियाँ नूँ, लड़का बोलदा हो होशियार भाई। ओह मैंनूं सारी गल खोल दस्सो, एस वेले जो आई विचार भाई।। आँसू निकले क्यों खब्बी अक्ख विचों,कीता किशन जी एह तकरार भाई। एस लई एह माँस नहीं शेर खाना, पूरा होया नहीं कौल इकरार भाई।। खब्बी अक्ख विचों आंसू क्यों निकले, पूरी एस दी वजह समझा सानूँ। दास पूरा नहीं रहया ज़बान उत्ते, जिस लई करना प्या अटका सानूँ।।

वक्त आखरी मेरे एह दिल आया, सज्जा पासा मेरा शेर खावना ए। जिस वास्ते सज्जी तरफ वाला, माँस गुरु लेखे लग जावना ए।। खब्बी तरफ वाला जाना माँस ज़ाये,जेहड़ा अग विच तुस्सां जलावना ए। लेखे लग्गा न खब्बा माँस मेरा, कम गुरां दे ओस न आवना ए।।

ऐस वास्ते रोई सी अक्ख खब्बी, गुरु लेखे न लगया माँस मेरा। ए भी लग जांदा पासा गुरु लेखे, दासा चित्त न होंदा उदास मेरा।।

वेले उसे फेर आरा चला दित्ता, राजे रानी ने खुशियां नाल भाई। लख लख पै शुक्र मनान दोवें, राज़ी हो गये दीनदयाल भाई।। पूरे उतर गये कीते धर्म उत्ते, असर कीता न मोह दे जाल भाई। चीर फाड़ दिता पिच्छे साधुआं दे, ता मोरध्वज सी इक्को ही बाल भाई।। आखिर सज्जा पासा आपणे बचड़े दा, माँस कट के शेर नूँ पा दित्ता। खब्बे पासे दा माँस जो दास दा सी, पा के अग दे विच जला दित्ता।।

हे-हाय न कीती सी मूल बच्चे, राजे रानी दा दिल घबड़ाया न। नाल खुशी दे बालक शहीद कीता, मोह ममता ने असर कोई पाया ना।। हुकम सन्तां दे विच कमाल तिन्ने, किसी किसम दा ख्याल उठाया ना। मुश्किल रस्तियों होये कामयाब तिन्ने,कदम अग्गां धरया पिशां चाया ना। इशारा अर्जुन नूँ कर कृष्ण देव कहंदे, वेखे भगत जो मेरे कुर्बान होंदे। उन्हां गुरां नाल कीवें निभानी दासा, अहंकार मान जो भरे इन्सान होंदे।।

होके खुश कहंदा हथ जोड़ अर्जुन, मैं बलिहार जावां तेरे प्यारयाँ ते। मैनूं बख्श देयो बख्शनहार स्वामी, सदा रहांगा तेरे सहारयाँ ते।। श्रद्धावान भगत तेरे ठीक डिट्ठे, जेहड़े होये पूरे कीते कारयां ते। मैं ते समझदां सां मेरे जैसा कोई नहीं, प्यारा भगत कोई तेरे द्वारयाँ ते।। वेख समझया मैं ते कुछ भी नहीं, इन्हां सामने कोडड़ी न मुल मेरा। मान हंकार विच होके दासनदासा, दीवा अकल दा होया सी गुल मेरा।। श्री कृष्ण जी फेर फरमावन लगे, हुण खाना अस्सां सब ने खावणा ए। पंजे थाल परोस के धरो एत्थे, पंजवें बन्दे ने वी इत्थे आवना ए।।

चार थाल लगण अग्गों कह्या राजे, पँजवाँ थाल किस लई लगावणा ए। कृष्ण कह्या मैं अर्जुन ते राजा-राणी, पँजवाँ होर तेरा इक परावणाँ ए।। कृष्ण जी फेर राजा नूँ कहण लगे, जो कुछ कह्या करना ध्यान राजा। पंजे थाल तू ला ज़रूर दासा, बाहरों आवणा किसे मेहमान राजा।।

ये-यकायक लग पये थाल पंजे, मौजूदा बैठ गये बन्दे चार प्यारे। पंजवां बन्दा इत्थे केहड़ा आवणा एँ, राजा पुछदा ए बारम्बार प्यारे।। पँजवाँ पुत्र तेरा इत्थे आवणां ऐं, आवाज़ मार कर राजकुमार प्यारे। राजा कहन लगा हत्थीं मार पुत्र, लाया लेखे तेरे इक वार प्यारे।। अधा शेर खादा अधा साड़ दित्ता, महाराज कीवें वापिस आवेगा ओ। जित्थे गया होया दास छड सानूँ, आवाज़ मारेयाँ न सुन पायेगा ओ।।

याद पुत्र नूँ कर के दिलों प्रेमी, इक बार ते मार आवाज़ राजा। राज़ी हो के आवेगा आवाज़ सुन के, हो के गया नहीं तैथों नाराज़ राजा।। मोया होया नहीं विच संसार जिन्दा, उमर उस दी बड़ी दराज़ राजा। दिलों कढ दित्ता है मार उसनूँ, बैठा चढ़ के नाम जहाज़ राजा।। कृष्णदेव ने जदों मज़बूर कीता, ताम्रध्वज कर राजा बुलावंदा ए। शक्ति गुरां दी नाल ताम्रध्वज दासा, झटपट उत्थे पहुँच जावंदा ए।।

याद प्रभु नूँ जेहड़े दिलों करदे, ओह दुक्खां नूँ सुख मनावंदे ने। गुरां पिछे शहीद हो जाना प्रेमी, ज़रा ज़ियाँ न कद्दी घबड़ावंदे ने।। सीना तान के खांदे गोलियाँ नूँ, पिशां हटन ना अग्गों नूँ जावंदे ने। गुरां पिछे कई होय शहीद प्रेमी, महिमा उन्हां दी इतिहास सुनावंदे ने।। नाम उन्हां दा जग विच सदा रोशन, जिन्हां गुरां वल्लों मुख मोड़या ना। कर के धर्म नूँ गये निभा दासा, दर पै पर धरम नूँ छोड़या ना।।

गोपी प्रेम

अलफ-इष्टदेव पर उपकारी ताईं, प्रथम कोटन कोट प्रणाम मेरा। जिस दी किरपा दे नाल सतमार्ग वाला, होवना ए कम्म सरअंजाम मेरा।। बाझों सतगुरां दे किसे दसना नाहीं, असल विच जेहड़ा निजधाम मेरा। घर विच घर नूँ जीव है तदों पांदा, जदों मिल जांदा सुन्दर श्याम मेरा।। असल राज़ नूँ वकत दा गुरु दस्से, होर किसे दे न अख्त्यार होंदा। बाकी दुःखां विच पावंदे दासा ताईं, केवल सतगुरु ही तारनहार होंदा।।

ऐसे सतगुरां दी मदद लै के ते, इक कविता करां तैयार प्यारे। वस प्रेम दे ज्यों महापुरुष होंदे, लगा खोल के करन विस्तार प्यारे।। जीवें करे प्रेम कोई नाल सतगुरु, तीवें जोड़दे प्रेमी संग तार प्यारे। विच्चों होर ते उत्तों होर जेहड़े, दूर ओन्हां तों रहँदे दातार प्यारे।। सतगुरु अंगसंग ओस दे रहन हरदम,सतगुरु मिलन दी जिन्हांनूं चाह होंदी। सतगुरु जाणदे ओसनूँ तीवें दासा, जीवें दिल नूँ दिल नाल राह होंदी।।

इक दिन सखियां इकट्ठियाँ हो सब्भे, श्री कृष्ण दे कोल आइयां ने। कहँदियाँ वध-घट प्रेम क्यों नाल साडे, एह की तेरीयां बेपरवाइयाँ ने।। किसे नाल तुसीं लीला बड़ी करदे, कई समझियाँ तुसां पराइयाँ ने। करो क्यों दगा ऐसा नाल साडे, ठीक स्वामी जी न ए कार्रवाइयाँ ने।। इक्को जियाँ जाणो सखियां सारियाँ नूं,समझो किसे नूँ दिलों न दूर स्वामी।
दासनदास आखे कह्या सारियाँ ने, करो अर्ज़ साडी मन्ज़ूर स्वामी।।

बे-बेनती सखियां दी सुनी जिसदम, अगूँ कृष्ण जी एह फरमावंदे ने। जितना चाहे सेवक सतगुरां ताईं, उतना सतगुरु भी ओहनूं चाहवंदे ने।। इक कदम सेवक गुराँ वल आवे, दस कदम सतगुरु अग्गों आवंदे ने।

इक कदम पिशां हटन वाले कोलों, दस कदम सतगुरु पिशां जावंदे ने।। श्री कृष्ण जी सब नूँ कहन लगे, मौका बने उत्ते आज़मावांगा मैं। जीवें वेखांगा दिली प्रेम दासा, तीवें ओसनूँ दिलों ही चाहवांगा मैं ।।

बहुत दिनां पिछों इक दिन रल सखियाँ, श्री कृष्ण कोल भीड़ लगा दित्ती। बार बार बलिहार लख वार जावन,लीला किशन जी अजब दिखा दित्ती।। सेब कटदियां उँगली कट अपनी, विच्चों लहू दी धार वगा दित्ती। दौड़ों सखियो नी कोई करो दारू, माया ऐसी कोई ओहना ते पा दित्ती।। जिधर जिसदा मुँहओधर सब दौड़पईयाँ,किसे कोलों कुछ बन्या बनाया ना। द्रौपदी कीमती साड़ी वेख झट फाड़ी, दासा पाड़न नूँ दिल घबड़ाया ना ।।

बाद ओ ओसदे साड़ के अग दे विच,राख गरम ले ज़खम ते पावंदी ए। पट्टी बन दित्ती प्रेम नाल उसने, लहू बन्द होया सदके जावंदी ए।। कृष्णदेव फरमावंदे द्रौपदी नूँ, तेरी समझ पई की बनावंदी ए। मामूली ज़खम बदले साड़ी झट पाड़ी, जेहड़ी लक्खां रुपयाँ तूँ आवंदी ए।। हथ जोड़ द्रौपदी अर्ज़ करदी, मैं ते जान तीकण इत्थे वार देंदी। इक साड़ी क्या कतरे खून उत्ते, दासा साड़ियां वार हज़ार देंदी।।

पे-प्यारे कृष्ण वेख खुश होये, सब सखियाँ दे ताईं फरमावंदे ने। डिट्ठा द्रौपदी दा दिली प्रेम सच्चा, महिमा ओस दी कर सुनावंदे ने।। जैसा जाने कोई तैसा जानदे हाँ, दिल दित्तियाँ ही दिलों चाहवंदे ने। सेवक हित नाल गुरां नूँ चाहे जिसदम,सतगुरु सेवक दे भी हो जावंदे ने।। किसे कोलों दस्सो कुझ बण सकया, खाली दौड़-दौड़ वकत गँवा दित्ता। जिस दा दिली प्रेम सी नाल साडे, दासा ओस कुझ कर विखा दित्ता।।

पर उपकारी फिर सखियाँ नूँ कहन लगे, बदला एस दा कदी चुकावना एं। दारूँ बन गँवाया जिस दर्द साडा, दर्द एहदा वी कदी वँडावना एं।।

मदद करांगा एदी ज़रूर मैं भी, समाँ ऐसा इक दिन एस ते आवना एं। द्रौपदी कृष्ण दे प्रेम विच मगन रहंदी, झूठे जग दी रही न चाहवना एं।। ऐसे तरह द्रौपदी प्रेम अन्दर, कुझ समां जद ऐंज गुज़ारिया सी। बेखबर द्रौपदी ताईं दासा, पाँडवां जुए विच जिस दम हारिया सी।।

पकड़-जकड़ दुःशासन द्रौपदी नूँ, ले आ के सभा दे विच खलाड़ दित्ती। नग्न करन खातिर करे धिक्का ज़ोरी,प्यारेकृष्ण नूं दिली ओस तार दित्ती।। तेरे बाझ मेरा कोई नहीं साइयाँ, सब सजनां ने रख तलवार दित्ती। बैठ रहे पंजे पाण्डु चुप करके, बेइज़्ज़ती होंदियाँ वेख दड़ मार दित्ती।। पुकारे कृष्णा वे आजा तेरे बाझों, रखनी मूल नाहीं किसे लाज मेरी। दासन दास द्रौपदी अर्ज़ करदी, छेती सुण लै तू आवाज़ मेरी ।।

आ वेख दुःशासन प्या ज़ुल्म करता, बेइज्ज़त करे उतारदा साड़ी नूं जी। मरण भुलाया आन के ज़ालिम पापी, करे प्या केहड़ी गल्ल माड़ी नूं जी।। निर्बल हां न बल कोई विच मेरे, बचावें आन के दुःखां विच साड़ी नूं जी। तेरे बाझ नाहीं कोई होर मेरा, दूर करे आ दुःशासन अनाड़ी नूँ जी।। शक्ति किशन दी अगे पहुँच गई सी, झट ओहदी आके मददगार होई। इक साड़ी बदले तन द्रौपदी दे, साड़ी दासन दासा बेशुमार होई।।

पापी ज्यों ज्यों खिचदा जाये साड़ी, त्यों त्यों आवँदी-जांदी न रुकदी ए। ज़ोर बहुत लावे न खतम होंदी, उलटी वधदी जावे न मुकदी ए।। ओत्थे ज़ालिमां दा ज़ोर नहीं चलदा,ताकत गुरां दी जिसविच लुकदी ए। वेख वेख दुःशासन हैरान होया, जान ओहदी वजूदूं पई सुकदी ए।। दिली पुकार प्रेमी जिस वक्त करदे, सतगुरु ओत्थे झट आ जांदे। गैबी मदद पहुँचा के दासा ताईं, पापी ज़ालिमां कोलों बचा जांदे।।

भक्त प्रह्लाद

ते-तकिया प्रह्लाद आवी कोल बैठी, घमियारी कृष्ण दा नाम उचारदी ए। हथ जोड़ पई करे प्रार्थना ओ, हित चित नाल एह पुकारदी ए।। अग विचों बचावीं बलूँगियां नूं, बारम्बार एह अर्ज़ गुरज़ारदी ए। तेरे बाझ न साइयाँ कोई राखनहारा,तू ही मदद करनीमुझ दुखियार दी ए।। प्रह्लाद सुण कहँदा एह तां ठीकनाही,जेहड़ा याद करदी कृष्ण मुरारी नूँ तूं। हरनाकुस छोड़के करें पई याद सतगुरु,दासा करी जावें गल्ती भारी नूँ तूँ।।

तैनूँ ज़रा न खौफ हरनाकश दा ए, राम राम पई करें बाज़ार दे विच। बेखबर बेसमझ न तेरे जैसी, डिट्ठी कोई न एस संसार दे विच।। घुमियारी आखदी आवी विच जोड़ भाँडे,गल रही न ध्यान विचार दे विच। बलूँगे रहगये बिल्ली दे विच मट दे,जोड़न वाली लगी रही कार दे विच।। अग लाके पिच्छों याद आया, करां पुकार दाता एह बचाईं बच्चे। पुकार सुन छेती मेरे साहिबा तू, दासा मरन न मौत अजाई बच्चे।।

तेरा विश्वास है बच्चे बच जासन, एडी जुल्म दी अग अंगियार अन्दर। नामुमकिन बचना एसविच बच्चियां दा,ख्याल गलत ए तेरे विचारअन्दर।। घुमियारी आखदी बचसन ज़रूर बच्चे, ताकत बड़ी मेरे तारनहार अन्दर। लाज रखेगा मेरी ज़रूर स्वामी, शक्ति बड़ी ए मेरे दातार अन्दर।। आवी पक्कियां लगेगा पता तैनूं ,रक्षा करसी अवश्य रक्खनहार मेरा। तत्ती हवा न देवेगा लगन दासा, एस तरह दा है मददगार मेरा।।

टे-टले जेकर मौत बच्चियाँ तों सच्चा मन्नांगा तेरे भगवान नूँ मैं। बलदी अग विचों जेहड़ा रख लैंदा, क्यों न सुमिरांगा ऐसे बलवान नूँ मैं।। भक्ति हरनाकश दी करनी छड देसां, ऐधर लावांगा सारे जहान नूँ मैं।

तेरे सतगुरां दे विच जे ऐसी ताकत, सच समझांगा गुरां दी शान नूँ मैं।। घुमियारीआखदी मेरा विश्वास पक्का,क्यों न बिल्ली दे बच्चे बचायेगा ओ। जेहड़ा दिल्लों पुकारदा गुरां ताईं, दासनदास दी क्यों न सुन पायेगा ओ।।

टाईम सिर आवा पक होई ठंडी, आवा ताईं जदों जाके खोलदे ने। इक मट आवी विचों रह्या कच्चा, बलूंगे ओस दे विच पए बोलदे ने।। विच नचदे टपदे नज़र आये, मुँह मट दा जिस दम खोलदे ने। प्रह्लाद वेख के कौतुक आश्चर्ज़ होया,हैरान होये लोकी सभे कोल दे ने।। करामात वेख ऐसी सतगुरां दी, यकीन हो गया पक्का प्रह्लाद नूँ जी। भक्ति हिरनाकस दी करनी उस छडदित्ती,दास करेसतगुरां दी याद नूँ जी।।

टेके मत्था प्रह्लाद घुमियारी ताईं, वाकई गुरु तेरे उच्ची शान वाले। मैंनूँ उन्हां दे ज़रूरी करा दर्शन, अग विचों जो बच्चे बचान वाले।। प्रीतम आपणे दे लै गई पास ओनूँ, जेहड़े जीव तों ब्रह्म बनान वाले। करदर्शन प्रह्लाद बड़ा खुश होया,मिलगये मैंनूंअज मालिक जगान वाले।। लिया उपदेश उसे वक्त सतगुरां तों, सेवक बन गया सच्चे दातार दा जी। आज्ञा सतगुरां दी विच दास होके, हरदम गुरां दा नाम पुकारदा जी।।

से-साबती विच प्रह्लाद हो के, निसदिन गुरां दी सेवा कमान लगा। जीवें हुकुम सतगुरां दा होवे ओहनूँ, बड़े प्रेम नाल हुकुम बजान लगा।। ओधर हरनाकश नूँ किसे ने पता दित्ता, प्रह्लाद छोड़ तैनूँ गुरु ध्यान लगा। हरनाकश सुणके गल प्रह्लाद वाली,प्रेम प्यार नालओहनूँ समझान लगा।। प्रह्लाद आखदा सच मैं वेखया ए, हुण झूठ वल ख्याल न करांगा मैं। दासनदास बण के सतगुरु पूरयां दा, कदम गैर पासे हुण न धरांगा मैं।।

साबत तैनूँ कीवें ए होया बीबा, मेरा नाम झूठा सच्चा भगवान दा ए। मेरी पूजा करदे आलम फाज़ल सारे,नाले जेहड़ा कोई वेदां नूँ जानदा ए।। समझदार बन करें नादानियाँ क्यों, फड़या कम न कोई इन्सान दा ए। आखे लग बेटा कर मेरी पूजा, मिलया वकत न हत्थों गँवान दा ए।। जेकर मेरी पूजा अगे वांग करे, खुश रखांगा हर हाल तैनूँ। जेकर छड मैंनूँ गुरु नाम जपया, दासा मारांगा दुःखां दे नाल तैनूँ।।

शब्द मोहर गुरयाई दी कोल केहड़ी, बनाया किस तैनूँ तारनहार है जी। किस महापुरुष दी सेवा तूँ कीती, तन मन धन जां कीता निसार है जी।। सच्ची शान्ति तेरे तों किस पाई, दुःखां विच्चों कीता किस नूँ पार है जी। तेरे डर कोलों लगा पिच्छे तेरे, जेहड़ा झूठ दा ए संसार है जी।। आप डुब्या जावें डोबें सेवकां नूँ, एह कोई पिता जी नहीं दानाई तेरी। सच्च अगे न झूठ दी पेश जासी, दासा जाएगी झूठी बनाई तेरी।।

जीम जा के वेख दरबार सच्चा, बैठे शहनशाह मेरे दातार जित्थे। दर्शन कर के मन नूँ शान्ति आवे, दुःख जन्मां दे होन फरार जित्थे।। जन्म जन्म दियाँ दुखी रूहां दा, वेख चल के होंदा सुधार जित्थे। अपनेआप दी पूजा तू कराउन लगों,नहीं देख्या ओह दर सत्कर्तार जित्थे।। ऐसा करना ठीक नहीं पिता मेरे, प्रपंच झूठ दा निरा बनाई फिरदा। प्रजा बेचारी ते झूठा रोब पा के, बना के दास पिच्छे लगाई फिरदा।।

जेकर जान दी बेटा है लोड़ तैनूँ, गल मन जा मेरी प्रह्लाद प्यारे। ओहनूँ छोड़ दे जिस दे मगर लगों, निसदिन कर मेरा नाम याद प्यारे।। कर यकीन मेरी इस गल उत्ते, दुःखों करांगा तैनूँ आज़ाद प्यारे। मेरे हुकम विच रह के कर भगती, शरीकां वांग न कर फसाद प्यारे।।

एधर लग, लगा दे ओस ताईं, जेहड़ा गैर पासे कोई जान लगे। मेरे नाम दी महिमा नित करीं दासा, हर कोई वेख तैनूँ मैंनूं चाहन लगे।।

जाये जान ते कुछ परवाह नाहीं, सतगुरु नाम दे ताईं नहीं छोड़ना मैं। तेरे जैसे अभिमानियाँ दे लग पिच्छे, मानुष जन्म दे ताईं नहीं रोड़ना मै।। सच्चे वेख के ते नाल झुठियां दे, कदापि काल नाहीं चित जोड़ना मैं। जे तूँ लख आखें मुड़ जा गुरां वल्लों, गुरां वल्लों नाहीं मुख मोड़ना मै।। देवें लख अज़ाब खाह मेरे ताईं, खुशियाँ नाल सब सिर सहारांगा मैं। गुरां पिच्छे मैं मरन कबूल करसां, दासा सिदकों कदे न हारांगा मैं।।

चे-चालाकियाँ तैनूं खराब करसन, हरनाकश प्रह्लाद दे ताईं फरमावंदा ए। मेरे कहणे उत्ते क्यों तूँ चलदा नहीं, तेरा दिल कुझ होर ही चाहवंदा ए।। उसे वक्त हरनाकश घर गया सिधा, भैण होलिका ताईं सुनावंदा ए। परदे नाल प्रह्लाद नूँ मार दे तूँ, मेरे हुकुम तों बाहर प्या जावंदा ए।। अग विच लैके बेठ जा तूँ, एस तरह एह जायेगा मर भैणां। तैनूँ अग ने बिल्कुल साड़ना नहीं, दासा धुरों मिलया तैनूँ वर भैणां।।

चुक लित्ता प्रह्लाद नूँ प्यार करके, करन लगी वेखो केहड़ी कार लोको। बलदी अग दे विच लै वड़ी ओहनूँ,दिलों प्रह्लाद दे ताईं रही मार लोको।। होलिका वांग होलां दे भुज मोई, रख्या प्रह्लाद दे ताईं रखनहार लोको। विंगा वाल प्रह्लाद दा न होया, क्यों जो नाल सतगुरु मददगार लोको।। हिरनाकश वेख के बड़ा हैरान होया, बड़ा ज़ुल्म होया मेरे नाल भाई। जिसनूँ मारना सीओह न मोया दासा,लेगया होलिका नूँ फड़के कालभाई।।

चली पेश न हरनाकश दी जिस वेले, फौरन सिपाही बुलाये जावंदे ने।

ऐनूँ चाढ़ पहाड़ वगाओ थल्ले, कीवें गुरु हुण एहदे बचावंदे ने।। ओसे वकत बेदर्द सिपाही फड़ के, चाढ़ पहाड़ ते थल्ले वगावंदे ने। बचावन वाले प्रह्लाद दे संग जेहड़े, उत्ते हत्थां दे झट उठावंदे ने।। जदों हिरनाकस दी गली न दाल ओत्थे, मारन लई होर सोच-विचारदा ए। करदा ज़ुलम उत्ते ज़ुलम जाय पापी, दास नाल न घट गुज़ारदा ए।।

हे-हद न छड्डी ओस ज़ुलम वाली, ज़ुलम उत्ते ज़ुलम करी जावंदा ए। खूनी हाथी अग्गे एहनूँ करो छेती, पलां विच ओ मार मुकावंदा ए।। हाथी अग्गे प्रह्लाद नूँ जदों कीता, सूँड प्यार दी अग्गों हलावंदा ए। नमस्कार प्रह्लाद नूं करे उलटा, प्रह्लाद वल जद कदम उठावंदा ए।। फिर भी समझ नआई हरनाकश ताईं,सच्चा भगत एह सच्ची कमाई एहदी। ज़ुलम करन वलों हुण ते बाज़ आवां, दासा कर देयां सगों रिहाई एहदी।।

हालत हरनाकश दी होणी सी बहुत बुरी,जिसलई रही न सोच विचार भाई। बर्बादी ओहदी दे दिन पै औन नेड़े, जिस लई होश दित्ती रब मार भाई।। ज़हरीले सर्प अग्गे कहँदा करो छेती, जेहड़ा अग दे मारे फुंकार भाई। प्रह्लाद भगत नूँ उसदे अगे कीता, सर्प वेखदियां जाये बलिहार भाई।। फन खिलार के ते नमस्कार करदा, शक्तिमान प्रह्लाद बलवान नूँ जी। फिर भी पशु पंछी होंदे समझ वाले, दासा हैफ बेसमझ इन्सान नूँ जी।।

हुकम दित्ता प्रह्लाद नूँ मारना ए, थम अग दे नाल तपावँदा ए। प्रहलाद भगत दे ताईं ओह ज़ालिम, तप्पे थम्म दे नाल लाणा चाहवंदा ए।। लैगये पकड़ प्रह्लाद नूँ कोल थम दे,प्रहलाद थम वल नज़र जद पावंदाए। कीड़ी रूप विच परमात्मा नज़रआया,वेख प्रह्लाद हुशियार हो जावंदा ए।।

इशारा मिलया धुरों न डरीं बेटा, ठण्ड भरी आ थम तपाये होये ते। झट प्रह्लाद ने थम नूँ जफ्फा मार लिया, सुख मिलया दुःख पाये होये ते।।

नरसिंह रूप धरके होये प्रगट प्रभु,फड़ हरनाकश नूँ गोडियां ते लिटाया ए। न ज़मीन ते न आसमान ते तूँ, वेख लै जित्थे लम्मा पाया ए।। वेख लै न दिन ते रात इस दम, सूरज अन्दर बाहर ओहनूँ दिखाया ए।। इन्हां नाखुनां नाल तैनूँ मारना एं, हथियार कोई न वेख उठाया ए। पेट पाड़ हरनाकश नूं खतम कीता, प्रह्लाद भगत दी शान बनाई सतगुरु।
जेहड़े सतगुरां दे दिलों दास होंदे, दुःखां विचों कर देन रिहाई सतगुरु।।

आखिर हाल मन्दा ऐसे बन्दियां दा, जेहड़े झूठ दी गुड्डी उडाई फिरदे। मनमत नाल पूजा करान सब तों, पाके धोखयां विच फसाई फिरदे।। आप जीवें काले, करदे जान काले, मनमत दी घोल के शयाही फिरदे। मानसिक रोगां दे आप बीमार जेहड़े, फेर वी दूजां दे करदे दवाई फिरदे।। आखिर झूठ उन्हां दा ज़ाहिर होंदा, जदों सच दा समां है आ जांदा। सच अगे न चलदी पेश दासा, सच झूठ ताईं झट खा जांदा ।।

भूमिया चोर

ज़्वाद-ज़ाया करदा अपनी ज़िन्दगी नूँ, बुरे कर्म कर इक जिमीदार भाई। नाम ओस दा भूमिया जट कहंदे, जन्म साखी विच पढ़िया इकवार भाई।। डाके मारदा ते करदा चोरियाँ नूँ, ओहदी रोज़ दी एहो सी कार भाई। धर्मशाला ते इक बनवाई मस्जिद, ज़ाहिरा दिस्से बड़ा परोपकार भाई।। हिन्दू जेहड़ा मुसाफिर कोई आवे उत्थे, धर्मशाला दे विच ठहरांवदा सी। मुसलमान मुसाफिर दा विच मस्जिद, दासा औंदियां डेरा लगावंदा सी।।

ज़रूरी हर मुसाफिर नूँ दे रोटी, मंजी बिस्तर देंदा रातीं सारियाँ नूँ। ऐने सुख देके हर मुसाफिर ताई, फिर लुटदा ओन्हां विचारेयाँ नूँ।। लुट पुट के ते बाहर कढ देंदा, नाले पा देंदा आफितां भारियाँ नूँ। मरना ओसनूं बिल्कुल याद न सी, ऐसा भुल्या सतगुरु प्यारेयाँ नूँ।। बाल्मीकि वांगूँ पर संस्कारी सी ओह,ओहदे लई गुरुनानक जी आए भाई। एस रूह नूँ असां आज़ाद करना, दासा रूह बर्बाद न जाए भाई।।

ज़रूरत पूरी कीती सतगुरां दी उस, रातीं लंगर वी ओस छकाया जी। मंजी बिस्तरा फौरन ओस पेश कीता, आसन गुरां ने जिस ते लाया जी।। आदत रोज़ दी ज्यों कर बणी होई सी, ओस वास्ते गुरां कोल आया जी। जो कुझ कोल तुहाडे दयों कड्ढ मैंनूं,डाकुआँ वालाओस रूप बनायाजी।। गुरु नानक जी अगों फरमान लगे, जिन्हां वास्ते ज़ुल्म कमावना एँ। क्या मदद करनगे ओह तेरी, दासा वक्त आखीर जद आवना एं।।

तोये-तरफ ओहदी जदों गरुां डिठा, नदरी नदर कर दित्ता निहाल ओहनूँ। जिस वास्ते गुरां दे कोल आया, बिल्कुल भुल गया ओह ख्याल ओहनूँ।। बुरे कर्मां दी मल सब दूर होई, वचन कीता जद दीन दयाल ओहनूँ।

चरणकमलां दे विचओह डिगपया,पिछली भगती जद दित्ता उछालओहनूँ।। गुरु नानक जी ओहनूँ फरमान लगे, छड दे डाके ते करनियां चोरियाँ नूँ। ऐस लई न जग विच आयों दासा, गरीबां उत्ते करें नित ज़ोरियाँ नूँ।।

तबीयत चोरी वलों अजे नहीं हटना, होर जो आखो मैं छोड़ देवां। होरमुश्किल तोंमुश्किल कोई दस्सो मैंनूं,ओसतरफ वल चित्तमैं जोड़देवां।। होर जेहड़े विकार ने आदमी नूँ, सौखा ओहनां वलों मुख मोड़ देवां। जेकर आखो चोरी करनी छड दे तूँ,मुश्किल बड़ा जे छड एह कोढ़ देवां।। सुण ओहदी कहँदे ऐनूँ तारना ए, चोरी वलों न हालां हटावंदे हां। तिन करम करने एह धार ले तूँ, पहलों दास नूँ एथे लगावंदे हां।।

तरफ सच दा कह्या ध्यान रखीं, झूठ कदी वी भुल के बोलना ना। जिसदा नमकखानाओहदा भला करना,ओहदे माल उत्ते कदी डोलना ना।। तेरे पिछे जो किसे ते ज़ुलम होवे, बचाना ओसनूँ दुःखां विच रोलना नां।। एह कर्म करने तिने धार ले तूं, वध घट इन्हां विच तोलना नां।। राज़ी रहांगे असीं सदा तेरे उत्ते, दिलों इन्हां वल प्रेमी ख्याल रखीं। फिर दुःख तेरे सारे कट जासन, दासा आज्ञा नूं हरदम नाल रखीं।।

ज़ोए-ज़हुर हुज़ूर अगे अर्ज़ करदा, तिन्ने गलां एह मैंनूं मन्ज़ूर साईं। चोरी छुट नहीं सकदी हालां मैंथों, एह ते करनी जे मैं ज़रूर साईं।। जिन्हां चिर मेरी अगों ज़िन्दगानी, बाकी करांगा न कसूर साईं। बुरे कर्मां तूं मैंनूं बचाया जो, इन्हाँ तों कर किरपा कीता दूर साईं।। बड़ी मेहरबानी कीती मेरे उत्ते, रूड़दे जांदे नूँ लिया बचा सतगुरु। सच्चे मारग उत्ते लाके दास ताईं, कीता दुःखां दे विचों रिहा सतगुरु।।

ज़ाहिरा खाण जोगा जो कोल है सी ओह जद भुमिया दे कोलों मुक गया। चोरी करन दे लई मजबूर होके, घर राजा दे जाके लुक गया।। सन्द मारन वेले जदों जा रह्या सी, पहरेदार बुलाया ते रुक गया। कहंदा कौन हैं तूं कह्या चोर हां मैं, सच बोलयां पहरेदार झुक गया।। एह कोईआपणा आदमी जापदा ए,जेहड़ा कहंदा मैं चोर न कोई होर हां मैं। विश्वास चोर ते चोर दा न कीता, दासा चोर कहंदा कदी चोर हां मैं।।

ज़ालिम चोर बण के घर राजे नूँ, झट पट लगाई जा सन भाई। अन्दर वड़ केलोड़ मुताबिक उसने, लिया माल कपड़े विच बन्ह भाई।। माल लै जानलई जदों तैयार होया,प्लेट विच प्या दिस्से कोई भोजन भाई। थोड़ा चुक के मुँह दे विच पाया, अगों चढ़ पया होर ही चन भाई।। सवाद नमक ओस नूं जदों आया, कहंदा गुरां मैनूं ऐत्थों मोड़या ए। जिसदा नमकखाइये उसदा भला करिये,दास माल सब बन्हया छोड़या ए।।

ऐन -अर्ज़ करे सतगुरां अगे, एह कसूर बख्शो भुलनहार नूँ जी। नमक खाके बुरा सां करन लगा, भुलन लगा सां हुकुम दातार नूँ जी।। माल बन्ह के ते छड चलिया मैं, खाली जा रह्या हां वापिस बाहर नूँ जी। ऐसा मन धोखा सी देण लगा, भुल गया सां करना विचार नूँ जी।। सुबह हुई जद देखया आन राजे, छड चोर क्यों गया बन्ह माल नूँ जी। दासा एह पता करना चाहिदा ए, चोर चल क्यों गया ऐसी चाल नूं जी।।

आदत चोर दी अगे न डिट्ठी ऐसी, जेहड़ी चोर ने कर विखाई ए जी। चोर डाकू सब गये बुलाये उत्थे, शुरु हो गई मार कुटाई ए जी।। बेकसूर विचारे पै मार खांदे, पाई उन्हांने हाल दुहाई ए जी।।
भूमिये जट नूँ भी जाके एह खबर, कन्नी ओसदे किसे ने पाई ए जी।

भूमिया सोचदा कहना महाराज दा मैंनूं, तेरे बदले न किसे नूँ मार पवे। एस गल दा रखना ख्याल दासा, भावें जित होवे भावें हार होवे।।

इलम भूमिये नूँ जिस दम होया सारा, सब कोई मेरे पिछे मार खावंदा ए। पया गुरां दा हुकुम अदूल होंदा, अपने आप उत्ते लानत पावंदा ए।। ओसे वेले गया भूमिया कोल राजे, हथ जोड़ के अर्ज़ सुनावंदा ए। एह न चोर जे-जिन्हां नूँ मारदे हो, मैं हां चोर सब बोझ उठावंदा ए।। इस गल विच बेकसूर सब्बे, मैं हां चोर कीता कसूर मैं ने। असल विच मैंनूं कह्या सच दासा, हाज़िर हो के विच हुज़ूर मैं ने।।

गैन- गल्ती कीती तूँ फेर क्यों ऐसी, चोरी कर के माल नूँ छोड़िया क्यों। जे कर चोरी करके माल छोड़ना सी, सन मार के दीवार नूँ तोड़या क्यों।। कीवें आया विचार फिर एह तैनूं, माल लै जाण वल्लों रुख मोड़या क्यों। सारीखोल हकीकत सुना सानूँ,महल विच वड़िया कीवें माल जोड़याक्यों।। हत्थ जोड़ फिर भूमिया अर्ज़ करदा, सारी सुनो मैं खोल सुनावंदा हाँ। भावें मार छोड़ो ऐस दास ताईं, असल भेद न मूल छुपावंदा हाँ।।

गर्ज़ माया दे पिछे- मेरा हर वेले, चोरी डाकयां वल रहे ध्यान राजा। धर्मशाल ते इक बणवाई मस्जिद, लंगर जारी निसदिन नाल शान राजा।। हिन्दु आवे जेहड़ा धर्मशाला जावे, मस्जिद विच आवे मुसलमान राजा। मंजी बिस्तरा भी ओसे वक्त देवां, जेहड़ा पहुँच जावे ओत्थे आन राजा।। पिछली राती ओहनूँ जाके लुट लवां, शहरों ओसनूँ देवां निकाल राजा।। दासा घट न करां मैं नाल किसे, जिन्हां नाल गुज़रे जानन हाल राजा।।

गलती करदियाँ नूँ कुझ मुद्दत गुज़री, आ गये गुरुनानक धर्मशाल दे विच। खवाके रोटी ते बिस्तरा करदित्ता,आराम करन देआये जद ख्याल देविच।। आदत बमूजिब कह्या सतगुरां नूँ मैं, दिलों आके लुटेरे उबाल दे विच। जोकुझ कोलत्वाडे फौरन धरो ऐत्थे,चंगे फँसे हो बाबा जी जाल दे विच।। गुरुनानक जी अग्गों फरमान लगे, जिन्हां लई करदा धाड़ मार भाई। क्या मदद तेरी आखिर करनगे ओह, दासा करके वेख विचार भाई।।

फे-फेल मेरे बुरयों होए चंगे, जदों गुरां दे होये दीदार मैंनूं। शान्त मन होया मिटी कल्पना सब, बख्शे गुरां जब शुभ विचार मैंनूं।। भुल गया सब कसब जो करन लगा, आपणा बख्शया गुरां ने प्यार मैंनूं। सेवक सतगुरां दा झटपट बण गया मैं, दित्ता गुरां जद नाम आधार मैंनूं।। चोरी डाके मारने छोड़ दे तूँ, कह्या गुरां मैंनूं समझा के ते। चोरी छुट न सकदी अजे मैंथूं, दास कह्या चरणां विच आके ते।।

फरमाया गुरां फिर तिन एह करम छड दे, ऐथों आपणां आप बचावणा ऐं। सच बोलना पहला ऐ करम तेरा, झूठ वल ना दिल लगावणा ऐं।। दूजा जिसदा जा के नमक खाना, ओस दे नाल न ज़ुलम कमावणां एं। तीजा तेरे बदले जो कोई मार खावे, फौरन ओस नूं जा छडावणां एं।। तिन्ने गल्लां एह कर मन्ज़ूर लइयां, पूरा उन्हां ते अमल कमावांगा मैं। घरों डिट्ठा जदों खर्च मुकगया,दिल विच सोचां दासा हुण की करांगा मैं।।

फौरन चल पया चोरी करन खातिर, तेरे महल दे कोल जद आया जी। पहरेदार ने आखया कौन हैं तू, आवाज़ मार के जदों बुलाया जी।। दिल विच आख्या बोलणा झूठ नाहीं, सतगुरां ने मैंनूं फरमाया जी। ओसे वक्त मैं ओस नूँ जवाब दे विच, सच्चो सच मैं आख सुनाया जी।।

पहरेदार नूं आख्या ठीक करके, जिस विच आख्या मैं हां चोर भाई। पहरेदार आपणा मैंनूं समझ के ते, गल कीती न दास नाल होर भाई।।

हीरे लाल जवाहर जद मिले मैंनूं, खुश वेख के बेशुमार राजा।। सामान बन्ह हुण जदों तैयार होया,अन्धेरे विचहोया कुछ ज़हार राजा। फिकर पहरेदारां दा ना रह्या मैंनूं, अन्दर लँघ गया सन मार राजा। रकाबी विच उंगल पाई लाई मुँह नूँ, चूर्ण जापया कोई नमकदार राजा।। जिसदा नमक खाइये बुरा नहीं करना,दिल विच आ गया मेरे ध्यान राजा। जिस वास्ते छड के मुड़ आया, दासा चोरी दा सारा सामान राजा।।

काफ-कौल सतगुरां दा कर पूरा, माल छोड़ के खाली घर आया मैं। अग्गों कर राजा जीवें मर्ज़ी तेरी, जो कुझ वरतिया सच सुनाया मैं।। उस दिन तों छडया कुकर्म करना, जद दा गुरां दा दर्शन पाया मैं। उसदे नाम दी लगन हुण लगी मैनूँ, होर सब कुझ दिलों भुलाया मैं।। राजा कहन लगा बड़ा खुश होके, ऐसे गुरां दे दर्शन करा भाई। मैंभी मानुष जन्मसफल करलवां,सतगुरां दे मिलन दी कोईबनत बना भाई।

कदरवान जे गुरां दा तू पक्का, इक गुरुघर-शहर-बनवा-राजा। दिने-रात होवे जित्थे गुरु महिमा,सतसंग दा चले परवाह राजा।। सतगुरु दर्शन देनगे खुद तैनूँ, पूरी मिलन दी होई जद चाह राजा। लोक परलोक तेरे सुधर जासन, जद गुरां दी होसी निगाह राजा।। एह गल सुण राजे ने वक्त ओसे, मिस्त्री मज़दूरां नूँ झट लगाया ए। लखाँ रुपये राजे खर्च कर दासा, आलीशान गुरु घर बनवाया ए।।

किस्मत सुत्ती राजे दी आन जागी, रोज़ सुणे जाके सतसंग राजा।

भजन करन विच ऐसा ख्याल लगा, रंग्या गया विच नाम दे रंग राजा।। इक दिन गुरु द्वारे खड़ा हो के ते, करदा पेश एह दिली उमंग राजा। मेरे घर नाहीं अजे तीक लड़का, इक होवे पुत्र मंगे मंग राजा।। गुरु-संगत विच्चों एह आवाज़ आई,जा होसी तेरे घर बाल राजा। तेरे भाग जागे सुत्ते आन दासा, खुश तेरे ते दीनदयाल राजा।।

क्याफ-कुछ दिनां पिछों राजे दे घर, बच्चा होन वाली हिरस आन लगी। खुशियां विच समावे न मूल राजा, दुनियाँ सुन बधाइयां पुजान लगी।। बाग सुक्का होया हरा होन लगा, कुदरत राजे नूँ खुशियाँ विखान लगी। हर कोई खबर सुण के खुश होया, बूटा राजे घर कुदरत लगान लगी।। दिन पूरे होये जदों आन के ते, लड़की राजे दे घर परवेश कीता। सुण के लोग हैरान होये बड़े दासा, दुख राजे अग्गे सबने पेश कीता।।

कहे राजा ए लड़की नहीं है लड़का, दित्ता सतगुरां ने सोहणा लाल मैंनूं। जेहड़ा कहेगा मेरे घर होई लड़की, ओहदी लगेगी चंगी न चाल मैंनूं।। मेरे सतगुरां ने किरपा मेहर करके, दित्ता रहिंदी उमर पिछों बाल मैंनूं। मेरे तखत दा होवना एस मालिक,खुशी विखावनी एस ने कई साल मैंनूं।। लड़कों वाला ओहनूँ लिबास पावे, बँधावे सिर ते सोहणी दस्तार भाई। पढ़ स्कूलों होया कामयाब दासा, राजा शादी लई होया तैयार भाई।।

किसे पंडित ताईं किसे राजे दे घर, राजे टोर दित्ता नाल माण भाई। तेरीलड़की दा रिश्ता फलाणा राजा मंगे,ओहदा लड़का है होयाजवान भाई। जिस वक्त जा पंडित पैगाम दित्ता, राजा सुन होया मेहरबान भाई। मैं नाचीज़ दी लड़की जे राजा चाहे,मेरी एस तों उच्ची केहड़ी शान भाई।। रिश्ता राजे नूँ देण ते मैं राज़ी, पंडित ताईं राजे फरमाया ए।

खुश होके ते झट राजे दासा, सगन पंडित दी झोली विच पाया ए।।

गाफ- गया पंडित लैके सगन जदों, छुहारा लड़की दे मुँह लगवा दित्ता। वेख शगुन राजा खुशियाँ बहुत करदा, व्याह सुधा-राजे खत पा दित्ता।। फलाँणे दिन असां आके ढुकना ए, लागी भेज पैगाम पहुँचा दित्ता। शहर विच बिरादरी सारी ताईं, राजे खुशियां दे नाल सुणा दित्ता।। खत लिख दित्ते रिशतेदारां ताईं,शादी लड़के दी ते सबने आवणाए। फलाणे दिन नूँ जञ्ज रवान होके, दासा दिन फलाणे पहुँच जावणा ए।।

गल सुण ऐसी जो राजा करन लगा,लोकीं आखदे ठीक न एह बात है जी। लड़की नाल लड़की न व्याही किस्से, केडा करन लगा राजा घात है जी।। राजा आखदा मेरा एह है लड़का, सोहणी पुत्र दी जाणी बरात है जी। अकलाँ सारियाँ आपणे कोल रखो, धुरों मिली ए लड़के दी दात है जी।। लोकीं सुन के ते अगों चुप हो गये, दे सके न राजे ते ज़ोर कोई। खुद मालिक-मर्ज़ी जीवें करे दासा, फायदा की जे पावांगे शोर कोई।।

गल विच हार-दस्तार बन्हा सोहनी, मुकुट लड़की दे सिर बँधाया जी। हथ विच तलवार फड़ा करके, लाड़ा घोड़ी दे उत्ते चढ़ाया जी।। रानी कर सिर वारनां लाडे उत्तों, लागी आप ने नूँ पकड़ाया जी। दान पुन कीता राजे नाल खुशियां, गरीब गुरबा जेहड़ा दर ते आया जी।। किसे किसम दी छडी न कसर राजे, शगुन लड़केयाँ वाला कराया ए। जञ्ज चल पई जदों नाल खुशियाँ, दासा गुरां की खेल रचाया ए।।

लाम लड़की घोड़ी उत्ते चढ़ी. जांदी, मौज उठी प्यारे दातार नूँ जी। अचानक घोड़ी लड़की वाली डर गई,लैके दौड़ गईअपने असवार नूँ जी।।

दूर जंगल विच ओस नूँ लै वड़ी, पहुँचाया ओस जा गुरु दरबार नूँ जी। घोड़ी जा के ते अगे रुक गई, बणी वेख के उच्ची दीवार नूँ जी।। लड़की घोड़ी तों उतर के झट थल्ले, वड़ गई अन्दर ओस मकान दे जी। गुरु नानक जी बैठेओनूँ नज़र आये,दासा मालिक जो दोहां जहान दे जी।।

लंघ आ भगता गुरु भला करी, महापुरुष नाल प्रेम बुलावंदे ने। लड़की तों बणगया फौरन ओ लड़का,चैहन-चक्कर सारे बदल जावंदे ने।। लभदियाँ लाड़े ताईं पहुँचया आन राजा,सतगुरां दाओह भी दर्शन पावंदे ने। आशीर्वाद दित्ती गुरुनानक ओहनूँ, खुशियाँ विच न जाये समावंदे ने।। मिनट बाद ना गुरु ना गुरुद्वारा, कोई न रह गया मूल निशान ओथे। बाकी जंज सारी जेहड़ी बिछुड़ गईसी,ओह भी पहुँच गई दासाआन ओथे।।

लाया जंज चल के ओस शहर डेरा. जेहड़े शहर लई होई रवान भाई। खबर ओस राजे नूँ भी जा दित्ती, किसे आदमी विच्चों शैतान भाई।। राजालड़कीअपनी तेरी लड़की दे संग,लड़का समझकेआयाई व्याहन भाई। ऐसी खबर सुन खुफिया औरत भेजी, बरात विच पहुँची झट आन भाई।। कहंदी रीत साडी मुढ तों चली औंदी,लड़का घर पहला ले जावणां ए। घर लै जाके तो वापस भेज देना,दासा होर न कोई दिलविच चाहवणा ए।।

मीम- मुण्डे नूँ लै गई नाल औरत,घर लै जा के ऐसे कपड़े पाँवदी ए। जिस दे नाल सारा बदन नज़र आवे, गुसलखाने विच ओहनूँ नहावंदी ए।। चैहन-चक्कर आये नज़र मर्दां वाले, वेख के बहुत ही खुशियाँ मनावंदी ए। वापस लड़के ताईं ओस भेज दित्ता,राजे रानी नूँ जा सुनावंदी ए।। तुहाडा जँवाईं जवान ते बहुत सोहणा,एस डिठा कोई विच संसार नाहीं। ऐवें किसे आके झूठ मार दित्ता, दासा दुनियाँ दा कोई इतबार नाहीं।।

मारे शरम दे जाञ्जी सब कहन लगे,जेहड़ी लै गई ए मुण्डा नाल भाई। असलराज़ नूँ दित्ता है खोल किसे,जिसलई चल्लीओहनां ऐसी चाल भाई।। लड़की निकल पैणी जदों वेखनगे ओह,बुरी होवेगी जंज दे नाल भाई।। लड़की नाल न लड़की दी होई शादी, ऐसा होया नाहीं किसे काल भाई। बेइज्ज़ती होवेगी एस विच बहुत साडी, धक्के मार के कढनगे बाहर सानूं। ऐस जीवन नालों मर जाइये दासा, जेहड़ी होणी ऐत्थे अज हार सानूँ।।

मददगार जिस दा सिर ते गुरु पूरा, किसे तरह ओह होन्दे नाकाम नाहीं। बदनामी ओस दी करे प्या जग सारा,सतगुरु देवंदे होण बदनाम नाहीं।। डोरी जिन्हां दी गुरां दे नाल जुड़ गई, जाणों रहंदे कदी निजधाम नाहीं। लखांविचों विश्वासी पूराकोई निकले,गुरुमुख बण सकदे कदीआम नाहीं।। गुरु वालेयाँ दी जग विच जय होंदी,झूठी ताकत न दुख पहुँचावंदी ए। गुरु किरपा होंदी जिस जीव उत्ते, दासा सूलियों सूल बनावंदी ए।।

नून-नाल प्रेम दे शाम वेले, सब्बे लैण गये अगों बरात नूँ जी। लड़का वेख खुशी दा चँद चढ़या,ओसे वेले सब स्त्री जमात नूँ जी।। नाल प्रेम दे कुड़माँ दी होई मिलणी,शोभा गुरां दित्ती ओस रात नूँ जी। दिलविच पया दोहां तरफ शक जेहड़ा,सतगुरु दूर कीता ऐसी बात नूँ जी।। बड़ी सेवा कीती राजे जाञ्जियाँ दी,जिस दा कोई भी अन्त शुमार नाहीं। दोहाँ पासियाँ ते खुशियां बहुत दासा,बिगड़ी किसे दी अन्दरों तार नाहीं।।

नाम गुरां दा लै के अमृत वेले, बड़े प्यार नाल कीता फेरयाँ नूँ। फेरे कर के जञ्ज रवान होई, आपो आपणे लाए होये डेरयां नूँ।। खुशियाँ विच समाये न कोई ओत्थे,चढ़ियाँ लालियाँ सब देआँ चेहरियां नूँ। सतगुरां दी किरपा दे नाल राजे, पार कीता सब दुःखां दे घेरयाँ नूं।।

बड़ा कुझ दित्तां राजे लड़की ताईं, डोली खुशी दे नाल कीती रवान भाई। दूजे दिन बरात ते डोली दासा, खुशियां नाल पहुँची घर आन भाई।।

नाता जिन्हां दा गुरां दे नाल सच्चा, ओह कदी वी खावंदे हार नाहीं। अंग-संग होके सतगुरु मदद करदे, होण देवंदे कदी बेज़ार नाहीं।। विश्वास पूरा रख्याँ राजे गुरां उत्ते,कमज़ोर कीती ओस दिल दी तार नाहीं। लड़की तों करदित्ता लड़का सतगुरां ने,लाया ऐस विचइक पलकार नाहीं।। निश्चय राजे दे ते सतगुरु कर किरपा,बख्शी ओस ताईं उच्ची शान भाई। हर पास्यों इज्ज़त ते लाज रखदा, दासा सतगुरु जिस ते मेहरबान भाई।।

सैन नाई

जीम-जदों स्वामी रामानन्द जी सन, सेवक ओन्हां दा होया नाई सैन भाई। सेवा राजे दी वास्ते सैन होरीं, दिन सारा ओत्थे हाज़िर रहन भाई।। मालिश कर कराये अस्नान ओन्हूँ, मालिश बिन रहे राजा बेचैन भाई। गल दे कपड़े रोज़ उतार लैंदा, साफ देवे राजा लैंदा सैन भाई।। हर इक सेवा करे नाल दिल दे, सेवा करन विच बड़ा हुशियार सी ओह। रातीं गुरां दा दस्या नाम जपदा, दास बन करदा रोज़ एहकार सी ओह।।

जाये दम खाली न याद बाझों, दम दम गुरु नाम ध्यावंदा सी। साध-सन्त कोई आ जाय घर उसदे, हित चित नाल सेवा कमावंदा सी।। आवाज़ उसदी बड़ी कमाल मिट्ठी, जेहड़े वेले कोई भजन सुनावंदा सी। भजन सुनदेयां ही ओहदा हर कोई, प्रेम मगन अन्दर हो जावँदा सी।। इसी तरह सी रोज़ दा कसब उसदा, सेवा राजे दी नित कमाये भाई। मालिश करे ते फिर करे मुट्ठी-चापी, दास बन राजे कोल जाये भाई।।

जीवें रोज़े जांदा सेवा करन खातिर,तीवें इक दिन सेवा लई जा रहया सी। राहविच जांदेआँ मिलगई साधमण्डली,देख उन्हांनूँ खुशी विचआ रहया सी। भागां नाल मिलदी सेवा साधवां दी, दिल ओहदे विच एह आ रहया सी। वक्त सेवा दा हत्थों न जान देवां, दर्शन करके न फूला समा रहया सी।। हित चित दे नाल करे साध सेवा, सच्चे प्रेमी परम प्यारियां दी। हथ जोड़ कहे मेरे ते रहना राज़ी, दास पैरां दी खाक हां सारियां दी।।

चे-चर्चा महिमा कर सतगुरां दी, प्रेम मस्ती अन्दर सैना आन होया। राजे कोल जाना ओह भुल गया, प्रेम विच न ओधर ध्यान होया।। जदों साधवां दे कोलों होया फारिग, राजा याद आया-परेशान होया।

देसी सेवा दे वल्लों जवाब मैंनूं, ए तां बड़ा भारी नुकसान होया।। रात फिकरां विच गुज़ार दित्ती, चलिया राजे वल उठ सवेर नूँ जी। गुस्से होवेगा राजा इस गल्लों, दासा आया क्यों कर तू देर नूँ जी।।

चलदा जावंदा सिद्धा दरबार नूं ओह, डरदा डरदा ओत्थे पहुँच जावंदा ए। शर्मसार होके पिशां खड़ा होया, राजा वेख के कोल बुलावँदा ए।। खुशी विच होके राजा सोने दा हार, लाह के गलों सैने गल पाँवदा ए। कल मालिश तेरी जो आनन्द दित्ता, ऐसे आनन्द नूं कहना न आवँदा ए।। सैन कहे महाराज मैं नहीं कल आया, क्यों मैंनूं पे तुसीं शरमावँदे हो। गैर हाज़िर नाले सेवा नहीं कीती, माला दास दे गल कानूँ पावँदे ओ।।

चक्कर विच आया सैन देख लीला, जेहड़ी गल चा पाई ज़ंज़ीर भाई। दिलों राजा मैंनूँ बुरा समझदा ए, जेहड़ी हो गई मैथों तकसीर भाई।। वेले सिर नाहीं पहुँच सकया मैं, सुज्झी राजे नूँ एह तदबीर भाई। ज़ंज़ीर पा गल प्या हकीर करदा, नज़र आवे एह मैंनूँ अखीर भाई।। राजे आखया बड़ा तूँ खुश कीता, सेवा करके हद मुका दित्ती। बदले जिसदे मैं दासा खुश होके, माला गल तेरे मैं पा दित्ती।।

हे-हकीकत विच राजा मैं नहीं आया, साध-सेवा लिया वक्त तमाम राजा। अद्धी रात नूँ साध-संग खत्म होया, लगा करन जिस वेले आराम राजा।। उस वेले मैं नूं सब कुछ याद आया, मुट्ठी चापी दा करां जो काम राजा। या ते मालिक मेरा खुश हो, मेरा रूप धार आया तेरे धाम राजा।। रब दे प्यारयां दी सेवा रहया करदा, जिस लई औणा इत्थे मैंनूँ भुल गया। मेरी जगह आके सेवा कर गया ए, दासा राज़ ओहदा सारा खुल गया ।।

हुलिया बिल्कुल तेरे वांग ओहदा, मैं तां समझिया सैन ही आया ए। बड़े प्रेम दे नाल कीती ओस मालिश,मुट्ठी चापी कर अजब दबाया ए।। बड़ा आया आनन्द सी उस वेले, जेहड़ा जांदा न मैथों सुनाया ए। खुशी ओस बदले हार सोने दा, तां गलों लहा तेरे गल पाया ए।। जेकर पता होंदा मालिक खुद आया, प्रेम प्यार दे नाल दर्शन पा लैंदा। हथ जोड़ के ते दासन दास बन के, चंगा-मन्दा सब कीता बख्शा लैंदा।।

हद कर देंदे जेहड़े प्रेम अन्दर, मालिक उन्हां दे भी हो जावंदे ने। सैना नाई दा रूप खुद धार के ते, सेवादार बन सेवा कमावंदे ने।। पिछे प्रेम दे नरसी दी तारी हुँडी, साँवलशाह आपे बण आंवदे ने। द्रौपदी प्रेम दी नाल जदों पुकार कीती,मालिकओहदे लई चीर बढ़ावंदे ने।। प्रेम बाझ नहीं प्रियतम वस होंदा, प्रेमी अपने आप नूँ वार दा ए। करदा मदद आके झट प्रेमियाँ दी, प्रेम विच जद दास पुकारदा ए।।

कंजूस सेठ

खे-खवाहिश मन्द माया दा सदा रहँदा, होके सेठ बड़ा साहुकार भाई। इक पैसा आवँदा जित्थों नज़र आवे, जान तीकन देंदा ओत्थों वार भाई।। कोई मँगता जेकर आन मँगे, बाहर कढ देंदा धक्के मार भाई। पैसा पैसा ही हर दम कूकदा सी, होर कोई न कम ते कार भाई।। पूजा देवतयाँ दी करे एस खातिर, धन मेरे कोल सदा बहाल राहवे। ईश्वर लेखे न भुल के लावे पैसा, दासा धन मेरा हरदम नाल राहवे।।

खुशी नाल करे पूजा देवतयां दी, पूजा लई नारियल इक दिन चाहवँदा ए। नारियल लैन वास्ते सेठ किदरे, दुकान नारियल दी ते जदों जावँदा ए।। कितने पैसे इक नारियल दे लैंगा तूँ, दुकानदार दे ताईं सुनावंदा ए। चार पैसे उस नारियल दा मुल कीता, दो पैसे ओह कढ विखावंदा ए।। दुकानदार कहँदा ए न खाये वारा, अपणा फड़ लै जान दा राह भाई। समुन्द्र किनारे ते मिलेगा इस भा ते, दासा सिधा समुन्द्र ते जा भाई।।

खातिर पैसा बचान दी सेठ ओह फिर, तरफ समुन्द्र दी झट रवान होया। दो मील दा फासला कर पैदल, दुकान नारियल दी ते हाज़िर आन होया।। जाके पुछदा भा उस नारियल दा, दुकानदार दा अगों फरमान होया। दो पैसे इक नारियल दे लवांगा मैं, सुनिया सेठ जद बड़ा हैरान होया।। दो मील सफर पैसे लई कीता, फिर भी दो पैसे इक दा मुल भाई। इक पैसा वाजिब मुल नारियल दा, दासा जापदा - गया ए भुल भाई।।

दाल-दित्ता जवाब दुकान वाले, पेड़ नारियल दे बेशुमार भाई। चढ़ के द्रखत उत्तों जेकर तोड़ लवें, इक पैसे दा हां लैणदार भाई।। पैसा बचान खातिर चढ़ गया द्रख्त उत्ते, बड़ा बण के दिलों हुशियार भाई।

नारियल वेख जो आया पसन्द ओन्हूं,थले वगाण वाली करदा कार भाई।। चढ़ गया आसानी दे नाल सी ओह, उतरना हो गया फिर मुहाल ओन्हूँ। बड़ा दुःखी होया न ओ उतर सके , दासा बण गया दुःख कमाल ओन्हूँ।।

दिल विच सोचदा पैर जे तिलक गया, डिग पया ते रहणा कुझ नाहीं मेरा। हड्डी पसली कोई टुट जावणी ए, नुकसान होवेगा कोई अजाई मेरा।। कोशिश करके ते थक चूर होया, ज़ोर रह्या नाहीं विच बाहीं मेरा। उतरन वास्ते कोई इत्थे मन्नत मनां, मेहर करे जे मेरे ते साईं मेरा।। कहँदा राज़ी-बाज़ी जेकर उतर जावां, सौ ब्राह्मणाँ नूँ रोटी खिलावांगा मैं। कढाह पूडियाँ भाजियाँ खीर दासा बड़े प्रेम दे नाल बनावांगा मैं।।

दाना आखदे बने तकलीफ जिसदम, चेते आवंदा नाम भगवान दा ए। तकलीफ टल जावे जदों उस उत्तों, ओह फिर रब नूँ मूल न जानदा ए।। बार बार जद ईश्वर नूं याद कीता, असर होया कुझ ओहदी ज़ुबान दा ए। असानी नाल ओह उतरना होया शुरु, गया बदल दिल उस इन्सान दा ए।। बेवकूफी क्यों करां एडी भारी, सौ ब्राह्मणां नूँ रोटी खवाण वाली। सौखा आखणा कर विखाण औखा, होंदी मुश्किल दासा भुगतान वाली।।

देखे कमज़ोर ख्याल भगवान उसदे, ज़बर्दस्त हनेरी वगा दित्ती। द्रखत हले जिस दम बड़ा डर लगे, मौत ओनूँ विखाली आ दित्ती।। मन नूँ आखदा ओए मन पापिया, ओए कानूँ भैड़या गलत सलाह दित्ती। दिली सलाह मेरी पक्की रहम देंदों, दिल दी नियत क्यों ऐवें हिला दित्ती।।
हनेरी नाल जेकरां द्रखत टुट गया, बे आई मौते मर जावांगा मैं। मनोत मन्नी ताईं कीता कायम दासा, खाना सौ ब्राह्मणां नूँ खवावांगा मैं।।

डाल-ढिल न लगी हेठां झट आया, मन पापी कि ओस नूँ समझावंदा ए। सौ ब्राह्मणां नूँआखना आसान होंदा,बड़ामुश्किल कोई खाना खिलावंदा ए।। सौ नहीं पंजाह ज़रूर खासन,मनमत नाल पया बनावंदा ए।। पंजाह नहीं ते पंजीह ते खा जासन, रियायतां मन आपे करदा जावँदा ए। द्रखतों उतर गया थले सेठ जिस दम, आज़ादी दे दित्ती मन झल्ले नूँ जी। कीते वायदे सब भुल गये सेठ ताईं, झाड़ सुटिया दासा उस पल्ले नूँ जी।।

डाढी मुसीबत दे विच मनौत मन्नी, ज़ुबानी कीते सन कौल इकरार भाई। कथनी सुन के मेरे ते मेहर करके, जान बख्शी चा मेरे दातार भाई।। पक्का वायदा मैं दिलों न कोई कीता, उत्तों वाली सब कीती पुकार भाई। जीवें-कीवें बचाई मैं जान अपनी, मेरा फर्ज़ सी एह आखिर कार भाई।। इक ब्रह्मण नूं खिलासां ज़रूर खाणा,इस विच नहीं करना इनकार चाहिये। खाना पूरी करानी ज़रूर चाहीदी ए,दासा गुस्से नहीं करना दातार चाहिये।।

डरदा सेठ कँजूस हुण एस गल्लों, पंडित मिले न पेट भरूँ खान वाला। उस पंडित नूँ आखिये चल रोटी, घट खांदा जो होवे सुनान वाला।। जिस पंडित नूँ पुछदा घर जाके, मिलदा हर इक चीज़ मुकान वाला। सुण के सेठ फिर अगों न मूल बोले,रस्ता फड़ लैंदा वापिस जाण वाला।। इक मसखरा पंडित सुण कहन लगा, रहँदा मैं हमेश बीमार प्यारे। जिस वास्ते खाना न पचदा ऐ , लगा दास नूँ कोई आज़ार प्यारे।।

ज़ाल-ज़िक्र सुनया जिसपंडित कोलों,मैं बीमार जिसलई न कुझ खावणा ए। एहो पंडित ही मेरे पसन्द आया, पूरी होई मेरे दिल दी भावना ए।। तू ही आ जाईं पंडिता घर साडे, असां तैनूं ही खाना खिलावणा ए। तेरा घर अपना कोई न रोके तैनूं, आ जाना जद तेरी होवे चाहना ए।।

कह्या पंडित ने अगों मन्ज़ूर मैंनूं, जदों वक्त मिलया आ जावांगा मैं। जो कुझ किस्मत होई तेरे घर विचों, दास बन के ते खा आवांगा मैं।।

ज़ाती कम लई सेठ सी बाहर जाणा,सेठानी ताईंकहंदा कर चतुराई नूँ जी। फलाना पंडित जदों खाना खान आवे, करनी कोई न बेपरवाही नूँ जी।। सेवा करनी ओहदी तूँ दिलों होके, दूर करके ते गुमराही नूं जी। साडे घरों जावे पंडित खुश होके, कोई करना न कोताही नूँ जी।। आशीर्वाद देके जावे पंडित सानूँ, ऐसा ओस नाल कर्म कमावना ए। समझदा सेठ-पंडित बीमार ने की, दासा घर आके साडे खावना ए।।

ज़रा जिन्हां न सेठ नूँ फिकर कोई, मामूली खाना खाके टुर जाएगा ओह। मुताबिक खान दे दच्छना मँग लैसी,जेहड़े वेले आके खाना खाएगा ओह।। सेठ नूँ पता नाहीं करनीओस कुर्की,विचारी नाल की गुल खिलायेगा ओह। दिल खुले दे नाल देंदी सेठानी जासी, जो कुझ सेठानी तों चाहेगा ओह।। सेठ जाण पिच्छों पंडित ख्याल करदा, वक्त मिल गया सेठ घर जावणे दा। सेठानी करेगी सेवा ज़रूर मेरी, दासा वेला मिलया दा-लावने दा ।।

रे-राम राम कह सेठानी ताईं, घर सेठ दे पंडित जदों आया ए। आशीर्वाद सेठानी दे ताईं देंदा, सेठानी प्रेम नाल सीस निवाया ए।। आओ पंडित जी मैं बलिहार जावां, भागां नाल त्वाडा दर्शन पाया ए। करो हुकुम जो कुझ त्वानूं चाहिदा ए, सेठ जी जांदेयाँ मैंनूं फरमाया ए।। जो कुझ मँगे देणा-कोई न उज़र करना, देंदा जावे पंडित दुआईं सानूं। करनी सेवा पूरी दास बन के ते, ऐसा पंडित मिलना फिर नाहीं सानूँ।।

रियायत ज़रा नाहीं कीती पंडित आके,जो कुझ दिल आया जावे मंगदा ए।

दो सेर घ्यो पंज सेर दयो आटा, पंज सेर खंड मंगी- न ओ संगदा ए।। पिस्ता-सौगी ते गरी-बादाम-होवन, ताँ बने हलवा निराले ढंग दा ए। मिठियाई बर्फी ते होर लड्डू पेड़ा, सब कुछ बन्या होवे सोहणे रंग दा ए।। ए सब चीज़ां सेठानी ने वक्त ओसे, नौकर भेज के सब मँगवाईयां ने। तरीके नाल पंडित बन्ह के सब चीज़ां, घर दास दे हथ भिजवाईयाँ ने।।

रबड़ी होर मलाई ते दही-भल्ले, जलेबी पकौड़े, भी नाल बनवाये भाई। दिल खुले सेठानी ने कीती सेवा, किसे तरह पंडित राज़ी जाये भाई।। होर आखदी मंगो जो करां हाज़िर, जेहड़ी चीज़ उत्ते दिल चाहे भाई। खवा पंडित नूं रोटी सेठानी कहँदी,बाल बच्चे नहीं रोटी खान आए भाई।। बाल बच्चे मँगवा के घरों पंडित, पेट भर के खाना खिलाया ए। जो कुछ खान तों बच गया ओस वेले,दास ओह वी झोली विच पाया ए।।

ज़े-ज़बानी सेठानी फिर अर्ज़ करदी, मंगो दच्छना ते न शरमाया जे। घर अपना पंडित जी ए त्वाडा,राज़ी-राज़ी साडे उत्ते जाया जे।। दस पौंड दच्छना सिरफ चाहिदी ए, पंडित सेठानी दे ताईं सुनाया जे। ओसे वक्त सेठानी ने कड्ढ दित्ते, देन लगयाँ न ओस चिर लाया जे।। जेकर सेठ होरीं अज घर होंदे, खबरे की ऐत्थों लै जावंदा मैं। सेठ दी गैर मौजूदगी तों दासा, ज्यादा मंगना नाहीं चाहवंदा मैं।।

ज़्यादा खुश होई सेठानी दे दच्छना, कहँदी देंदा जाईं दुआईं सानूँ। खुशियाँ विच परिवार दी उमर गुज़रे, खुशियाँ विच रखे सदा साईं सानूँ।। किसे किसम दा कदी न दुःख आवे, बुरे वक्त तों सदा बचाईं सानूँ। घाटा पवे न बनज वपार अन्दर, दुध देंदियाँ रहण मज्झी गाईं सानूँ ।।
आशीर्वाद देके पंडित सब ताईं, घर आपणे नूँ सिद्धा जावंदा ए।

पंडितानी आपणी दे ताईं पंडित दासा,जाके इस तरह नाल समझावंदा ए।।
ज़बरदस्त कोई सेठ सेठानी दा ई, सेठानी सेठ नूँ आयां सुनावणा ए। जीवें सेवा कीती दिलों ओस साडी,सब कुछऔंदियाँ हीओस बतावना ए।। सुनदे सार ही डिगेगा गश खाके, डंडा ओत्थों ही ओस ने चावना ए। बिल्कुल सोचना समझना नहीं उसने, सिद्धा घर साडे ओस आवना ए।। औंदियाँ ओस दे शोर मचा देवीं, सेठा बड़ा तूं ज़ुल्म कमाया ए। हो गया बेहोश है पंडित मेरा, दासा खबरे की तुसां खवाया ए।।

सीन सुन के ते ओह टुर जासी,वाधियाँ घाटियाँ जद ओस नाल करेंगी तूँ। एस तरह खलासी हो जासी साडी, जेकर एह कहणों न डरेंगी तूँ।। नहीं तां मारेगा करसी बेइज्ज़त सानूँ, लया होया ओस नूँ सब भरेंगी तूं। एस तरह छुट जायेगी जान साडी, नहीं ते बिन आई मौत मरेंगी तूं।। पक्की गल पका के रख चेते, सेठ ऐत्थे ज़रूरी आवणा ए। दस्सी गल जेकर तूँ वरत लई, दासा एस ने सानूं बचावणा ए।।

सेठ कर ओगराही जदों घर आया, सेठानी सेठ नूं सब सुनावंदी ए। बड़ी सेवा कीती तेरे पंडित दी मैं,खुशियाँ नाल सबकुझ दसदी जावंदी ए।। बड़ा खर्च कीता तेरे पंडित ऊपर,दसन विच न फर्क ज़रा पावंदी ए। सुण के सेठ क्रोध दे विच आया, पिछों मैंनूं तूँ रही लुटावंदी ए।। कितनी दक्षिणा लै गया दस मैंनूं, बेड़ा गरक कीता पिछों आन मेरा। ज़ल्दी दस की दच्छना दे बैठी, कितना कर गया दास नुकसान मेरा।।

सुन सेठानी कहँदी ओस दस पौंड मँगे, उज़र कीता न झट पकड़ाये प्यारे।
तुसांआख्या सी सेवा खूब करनी,जिसते पंडित साडा खुश हो जाये प्यारे।।
अपने आप न मैं ओदी कीती सेवा, चली जीवें सी तुसाडी राय प्यारे।

भावें छडो ते भावें मारो मैंनू, जो कुझ दे बैठी हथ न आये प्यारे।। सुण के सेठ घबड़ाया बहुत उत्थे, लै गया पंडित दच्छना पौंड दस मैथूँ। डण्डे नाल वापस जाके लवाँगा मैं, कित्थे जासी पंडित दासा नस मैथूँ।।

शीन-शोर पाया सेठ पंडित दे घर, कहँदा बाह्म्णी नूँ किधर घल्या ए। डण्डा वेख चाया, ओस बाह्मणी दा, दिल खौफ तों ज़रा न हल्या ए।। जद दा तेरे घरों आया खा रोटी, मंजा पंडित ने ओदों दा मल्या ए। बड़े इलाज कीते कोई न आराम आवे, मेरा साईं हत्थां विचों चल्या ए।। बाह्मण पया होया घर विच लाके ते, कोई झूठ वाली बीमारी नूँ सी। जांदेया सेठनूँ चम्भड़ गईबाह्मनीओह,दासा रोंदी करकर उच्ची ज़ारी नूँसी।।

शाला सेठ राहवे तेरा कक्ख नाहीं, भोजन विच पा ज़हर खवाया जे। ओस वेले दा पंडित नहीं होश करदा, रोटी खाके जदों दा आया जे।। मैं तां थाने जाके खबर देण लगी, मेरे पति नूं मार मुकाया जे। कौन पालेगा मेरे बच्चयाँ नूँ, उमर सारी दा रोणा पाया जे।। सुण के सेठ दे ताईं आ फिकर लगा, वरतन लग्गा की मेरे ते भाना एं। सचमुच पंडित मर गया ते, दासन दास मैं तां पकड़या जावना एं ।।

शक सेठ नूँ जिसदम होया पूरा, पंडित मरण दे नेड़े प्या जावंदा ए। मुफ्त विच मैं ने मारया जावणा ए, बड़ा दिल दे विच घबड़वंदा ए।। सौ रुपया परदे नाल कड्ढ के ते, हथ पंडितानी दे झट फड़ावंदा ए। चुप कर जा शोर न पा भैणा, हथ जोड़ के वास्ते पावंदा ए।। जो कुछ होवणा सी सो कुझ हो गया ए,चुप कर के घर नूँ जी बीबी। मारया जांवांगा मुफ्त विच मैं दासा, ऐंवें पई न शोर मचा बीबी।।
स्वाद-सबर ओसनूं कीवें आवे सेठा, घर जिस दा होन वैरान लगे।

की करांगी सौ रुपये नूँ मैं, परदे नाल जो मैनूं फड़ान लगे।। क्या पंडित मेरा इस नाल बच जासी, उलटा मैंनूं हो करन हैरान लगे। कर बैठी दवाईयां कई ओहदियां मैं,देख हालतओहदी निकलन जान लगे।। पंडित मर गया ते लगना फाँसी है तू, मैनूं सारी उमर दा रोवणा ए। पालन पोसन सेठा इन्हां बच्चयाँ दे, दासा मेरे कोलों न होवणा ए ।।

सहीं समझ लया सेठ एह जदों, पंडित मर गया जाणा तबाही नूँ जी। दो हज़ार रुपया झट कढ दित्ता, जेहड़ी कर के आया ओगराही नूँ जी।। लै के रकम कंहदी टुर जा घर सेठा, हुण ना पावांगी हाल दुहाई नूँ जी। जोकुझ होवणा ए सिर ते झल लवांगी,धुरों लिख्या ज्योंहुक्म खुदाई नूं जी।। सेठ खुश होया बच गई जान मेरी, रकम लै पंडितानी घर जावंदी ए। अपने पंडित तों जाय बलिहार दासा, रकम जाके ओहनूँ फड़ावंदी ए।।

साहिब सच्चे साडे ते मेहर कीती, सेठ कोलों जिस सानूँ बचाया ए। साडे नाल ते होणी सी बहुत बुरी, जीवें सेठ नाल करम कमाया ए।। उठो छडो हुण मंजी ते बिस्तरे नूँ, साडा सोहणा कम रब बनाया ए। तेरियां तज़वीज़ां उत्तों जावां मैं सदके, सेठ ताईं जीवें दाव लगाया ए।। आया लैण ते देके गया पल्लों, जान फस्सी होई साथों छडाई प्यारे। कम साडे आई वाह वाह दोहां वाली,दासा सेठ नाल कीती चतुराई प्यारे।।

मायाधारी कंजूसां दा हाल मन्दा, कर कर पाप जेहड़े माया जोड़दे ने। मानुष तन मिलया जेहड़ा नाल भागां, माया झूठी पिछे लग के रोड़दे ने।। आवागमन चक्कर विच पाये माया,माया कट्ठी कर कर जेहड़े जोड़दे ने।

सरप जून विच ओह फिर पैन जाके, मालिक बने जो लख करोड़ दे ने।। बन्धन छुड़ाये ते बन्धन विच पाये माया,एह दोयें चलावंदी राह माया। दुखां विचों वी माया छुड़ान वाली,दासा दुःखाँ विच देंदी फसा माया।।

स्वार्थमय संसार

ज़्वाद-ज़ईफ उमर दा इक बन्दा, बहुत बड़ा भारी मालदार भाई। पुत्र पोत्रे ओस दी करन सेवा, साडा लाला बड़ा साहुकार भाई।। जेहड़ा सेवा करेगा दिलों होके, सब कुझ ओहनूं देसी आखिरकार भाई। एस वास्ते बुढड़े दा हर एक, बन्या आन के ते सेवादार भाई।। इसे तरह जदों कुछ मुद्दत गुज़री, लाला पुत्रां ताईं बुलावंदा ए। मेरे मरन दा वक्त करीब दासा, पुत्रां ताईं ए लाला सुनावंदा ए।।

ज़रूरी मेरे पिच्छों तुसां लड़ पैणा, एह माया न घट्ट गुज़ारदी ए। एस माया पिच्छे प्यारे मित्रां नूँ, अजकल दुनियाँ डिट्ठी पई मारदी ए।। माया नागिनी एस नूँ कहन आरिफ, जेहड़ा चाहवे ओहनूँ डंग मारदी ए। ए माया धर्म न रहण देंदी, प्रीत छोड़ देंदी सच्चे प्यार दी ए।। एस वास्ते ज्यूँदियां धन अपना, अपनी हत्थीं वण्ड देयां मैं सारेयां नूँ। सबने आख्या लाला जी बहुत अच्छा, दित्ता धन वंड के दासा प्यारेया नूँ।।

ज़रूरत लाले दी करे न कोई पूरी, कोई न पुच्छे लाले नूँ फिर आन भाई। ओह भुल के कदी न पान फेरा, हर वक्त जो लाले कोल जान भाई।। वेख हाल भैड़ा लाला कहे दिल विच, एह की लगा हुण रब बनान भाई। जेहड़े इकपल बिन मेरे रहन नाहीं,ओह हुण करन न मेरे वल ध्यान भाई।। समझदार किसे ताईं कहे लाला, दसो मेरे विच जेहड़ा कसूर होया। जद दा वँड दित्ता धन माल सारा, हर एक दास मेरा मैथों दूर होया ।।

तोये-तरफ लाले वल ओस डिट्ठा, गल सुण के होया हैरान भाई। आपणी हथीं तूँ कीता नुकसान अपना, धन माल सब दित्ता सामान भाई।। अगे वांग जे सेवा करावनीआँ, तेरे रहण दा जेहड़ा मकान भाई।

ताला ओस मकान नूँ लाई रखीं, खुला राहवे न रखीं ध्यान भाई।। भाँडे किसे विच पाके ठीकरीयाँ नूँ, वेख पुत्रां ताईं हिला छडीं। आवाज़ठीकरीयाँ दी रुपयां वांगहोसी,खड़कार दासां दे कन्नांविच पा छडीं।।

तलब सुन के होवेगी सारेयां नूं, अजे लाले दे कोल है माल भाई। सेवा करनगे अगे वांग तेरा, जेकर चलेंगा तूँ ऐसी चाल भाई।। सुन के गल दाना दी ओस वेले, इक भाँडे दी करके भाल भाई। ठीकरियाँ नाल भांडा अद्धा करके ते, अन्दर रखया खूब सँभाल भाई।। वेख पुत्रां ताईं हिला छड्डे, रुपया वांग सुनावे आवाज़ नूँ जी। पुत्र सुण आवाज़ हैरान होंदे, दास समझदे न ऐस राज़ नूँ जी।

तमअ विच आये सुण आवाज़ पुत्र, लाले कोल धन बेशुमार भाई। सेवा करन लग पये अगे वांग सारे, बड़ा करन लाले नाल प्यार भाई।। इक आवंदा ते इक जावंदा पुत्र, लाला वेख वेख जाये बलिहार भाई। नज़र ऐनां नूँ आवे पया धन मेरा, ताईं बने आके सेवादार भाई।। खिदू खोलियां लीरां जद निकल पइयाँ, दुःखीं ओस वेले सब्बे होनगे जी। माया समझ बैठे मेरे कोल जेहड़ी, दास ठीकरियां वेख अन्त रोनगे जी।।

ज़ोये-ज़ाहिर लाले न होण दित्ता, असल भेद नूं लाला छुपाई रखे। भरया भांडा ठीकरियां नाल जेहड़ा, हरदम ओस वल ध्यान लगाई रखे।। किसे वक्त दरवाज़ा न रखे खुला, अन्दरूं संगल ज़रूर चढ़ाई रखे। निश्चा पुत्रां नूँ हो गया पक्का, माल अन्दर कोई लाला दबाई रखे।। सेवा करन लग गये पुत्र बहुत उसदी, आखिर माल साडे हथ आवणा ए। चार दिन लाले दा रहण हत्थे, दासा अन्त ऐस ने टुर जावणा ए ।।

ज़हूर हुज़ूर अगे लाला अर्ज़ करदा, कम बण गया मेरी भलाई दा ए। कोई हलवा बना के लई औंदा, बाबा फुलका न तेरे तों खाइंदा ए।। कोई चूरी कुट के धरे अग्गे, कोई कौल भर ले आवे मलाई दा ए। मुदवा गल कादी हरकोई हुक्म मन दा,जीवें बाबे दी तरफों फरमाईंदा ए।। बड़ा खुश बाबा बदले ठीकरियाँ दे, हर एक प्या सेवा कमावंदा ए। तरीका दस्या दानाह या कम्म आया, दास ओस दे गीत प्या गावंदा ए ।।

ज़ालिम मौत इक दिन ओस लाले ताईं, वक्त आये उत्ते लै गई फड़ भाई। कर के लाला इश्नान ते पा कफन, चहों मोढयां ते गया चढ़ भाई।। करके आये जद संस्कार बुड्ढे दा, घर गये ओह दे सब्बे वड़ भाई। थां रुपयाँ दे ठिकरियाँ नज़र आइयाँ, वेख सारे गये बल सड़ भाई।। इक दूजे दा वेखन पै मुँह सब्भे, लाला साडे नाल द्रोह कमा गया ए। विचों होर ते उत्तों होर बन के, सेवा दासां तों चंगी करा गया ए ।।

बाझ सतगुरां दे कोई न बाझ मतलब, बिन मतलब सारे मुख मोड़दे ने। मतलब बाझ नाहीं सेवा मा-प्याँ दी, पुत्र मा-प्याँ दे ताईं छोड़ दे ने।। पुत्र खट के न खवान जेकर, मापे ओन्हां दा प्यार तरोड़ दे ने। भैण भाई जँवाई न बाझ मतलब, ऐवें दिल न किसे नाल जोड़ दे ने।। केवल सतगुरु ही मददगार होंदे, बिना मतलबों पार लँघावंदे ने। जेहड़ा चाहवे सतगुरां नूँ दास बण के, सतगुरु वी ओस नूँ चाहवंदे ने।।

दुनी चन्द

ऐन-आदत बुरी माया धारियां दी, मान हंकार नूं करन पसन्द भाई। इक सेठ दा खोल सुनांवा सारी, करके छन्दां विच इसनूँ बन्द भाई।। पट्टी शहर विच इक सेठ रहँदा, नाम उसदा सी दुनी चन्द भाई। चढ़या माया दा ओहनूँ हंकार रहँदा, ऐसा मूरख बेसुध मतिमंद भाई। इक दिन माया दे मान हंकार अन्दर, अपनियां लड़कियाँ ताईं बुलावंदा ए। दसो लड़कियो नीं किसदा खाओ दित्ता,दासआक्ख़ दे नाल एह सुनावँदा।।

अर्ज़ छियाँ धियां अग्गों एह कीती, तेरा खटया पिता जी खांदियां हां। तेरी खट्टी विचों ज़ेवर पाइये असीं, कपड़ा चंगे तों चंगा हँडादियां हां।। जितना मर्ज़ी होवे उतना खर्च करिये, जदों व्याह शादी उत्ते जांदियां हां। जेहड़ी चीज़ दी घर विच लोड़ पैंदी, पैसे खर्च बाज़ारों मँगादियां हां।। जेकर आप कमांदे न धन एन्हां, खुशियां नाल न वक्त गुज़ारना सी। गरीबां वांग होंदा फिर हाल मन्दा,दासा मुश्किल नाल वक्त नूँ सारना सी।।

ऐन वकत ओसे लड़की सतवीं नूँ, कहंदा तू वी खोल ज़ुबान बीबी। चुप कर के की पई सोचदी ऐं, जीवें समझदी कर ब्यान बीबी।। गुरु पीर वाली सी ओह लड़की, कीता गुरां वल ओस ध्यान बीबी। पिता मेरा अज केहड़े ध्यान लगा, ओस दी सुण के होई हैरान बीबी।। दुबारा पुछदा किसदा खायें दित्ता, मेरे ताईं एह ठीक सुना बीबी। सच सच कह दे दासन दास ताईं, ज़ाया वकत न पई गँवा बीबी ।।

गैन-गर्ज़ नाहीं झूठ बोलने दी, सतगुरु सारयां नूं देवनहार लाला। साडी किस्मत वी भेजया वल तेरे, देवनदार दी इस तरह कार लाला।। जिवें जिवें भागां विच देई जांदा, एस दे विच नहीं तेरा अख्तयार लाला।

पत्थर विच वी कीड़े नूँ दे रोज़ी, किसे ताईं न ओ भुल्लणहार लाला।। तेरी राहीं भेजे रोज़ी रोज़ सानूँ, एह पर देवनहार भगवान सब नूँ। वसीला इक बनाया भगवान तेरा, दासा भेजदा रोज़ी रसाल सब नूँ।।

गुस्से विच आया लाला सुन उसदी, क्रोध सख्त विच गरम आन होया। आखे पई भगवान दा खांवां दित्ता,सुन ओसदी सख्त हैरान होया।। भगवान दाता एहदा हुण वेखणा ए, कुझ होर दा होर ध्यान होया। ऐसे लड़के दे नाल इस दी करां शादी, कोढ़ नाल जो पदा जहान होया।। फेर देखाँगा कीवें भगवान देंदा, लिया पापी कर ऐसा ख्याल भाई। अचानक बाहर बैठाकोढ़ी नज़रआया,दास शादी कीतीओस दे नाल भाई।।

गमां विच आये रिश्तेदार सब्भे, कहँदे एह की ज़ुलम कमान लगा। घरों घर वाली ज़ारोज़ार रोंदी,बेदोसी धी नूं वखत क्यों पान लगा।। मासूम धी ते ज़ुलम कमा के ते, एडा किस लई पान तुफान लगा। वेख वेख ओहदी करतूत भैड़ी, हर कोई उंगलां मुँह विच पान लगा।। छे लड़कियाँ वी रो रो कहन एहो, लाला एडा कहर कमा नाहीं। एहदे नाल न कर द्रोह दासा, खास कीती कोई एस खता नाहीं ।।

फे-फकत भगवान एहदा वेखना ए, कहँदी रोज़ी देंदा परमात्मा ए। मेरी कमाई दी सिफत न एस कीती,जिसलई मेरा इस ते दुखी आत्मा ए।। एहनी दर गुज़र ओह न कर सके, अपने थाँ जो बड़ा धर्मात्मा ए। चंगी लग्गे न जिस लई एह लड़की,इसदे नाल रिश्ता अज तों खातमा ए।। खारी विच बैठा कहँदा पति तेरा, खुशी नाल चुक खारी रवान होई। दोष एस विच किसे दा नहीं दासा, धुरों लिखया जीवें तीवें आन होई ।।

फकीरां वांग बणा लया ओस बीबी,कीमती कपड़े सब गलों उतार के ते। मन्दा हाल बणा लया ओस बीबी, सिर दे सारे वाल खिलार के ते।। कोढ़ी वांग बना लिया रुप उसने, कोई ऐसे विचार विचार के ते। सिर ते खारी भारी चलदी दुःखां मारी,सिदक यकीन ताईं हिरदे धारके ते।। अकल्ही जेहड़ी न कदी बाहर निकली, धुर दा हुक्म मन के पई जावंदी ए। छाले पै गये पैरां ते टुरे मुश्किल, दासा फेर वी शुक्र मनावंदी ए।।

फज़ल करेगा मेरे ते गुरु मेरा, कीते धर्म नूँ तोड़ निभावांगी मैं। पति भगवान दी करांगी दिलों सेवा, किसे वक्त न ओहनूँ भुलावांगी मैं।। धुरों लिख्या होया मैं वर पाया, एहदी खुशी विच खुशी मनावांगी मैं। मजूरी कर के ते या मँग पिन के, खवा के पति नूँ ते पिछों खावांगी मैं।। विश्वास पक्का रख के अपने सतगुरां ते, बणे वकत दे ताईं गुज़ारना ए। जेहड़ा आख दित्ता सब नूं गुरु देंदा, एस गल्लों नाहीं दासा हारना ए।।

काफ-किस्मत दी शाकिर हो रजनी, निसदिन ध्यान सतगुरां दे करे भाई। पिण्ड पिण्ड ते शहरां तों फिरे मँगदी, विच परदेस दे ज़रा न डरे भाई।। खुशियां नाल पई पति दी करे सेवा, दुःख सुख शरीर ते ज़रे भाई। वकत सिर पहुँचे मँग पिन्न के, ज्यादा पति तों होवे न परे भाई।। इसे तरह जदों कुझ मुद्दत गुज़री, रोटी इक दिन मंगन रजनी जाँवदी ए। पिच्छे ओसदे, ओस दे पति ताईं, दासा कुदरत की खेड विखावंदी ए।।

करीब पिंगले दे इक छपड़ी सी, डिट्ठा ओस विच कां प्या नहावंदा ए। नहा के छपड़ियों जिस दम बाहर होया, ओह कां तो हँस हो जावंदा ए।। वेख आया ख्याल एह पिंगले नूँ , जेकर गुरु सच्चा मेरा चाहवंदा ए।

कोढ़ पिंगल मेरा शायद नहातेंयां विच,दूर हो जावे दिल विचआवंदा ए।। रिड़-खिड़ के मुश्किल दे नाल कोढ़ी,छपड़ी विच जाके करे अस्नान भाई। कोढ़ पिंगल ओहदा सारा दूर होके, दास बन गया अरोग जवान भाई ।।

कायम सेहत विच होया अस्नान करके, खारी मार पुट्ठी बैठा आन उत्ते। मंग-पिन्न के जदों आई रजनी, ध्यान प्या जद ओस जवान उत्ते।। वेख ओस ताईं गई डर रजनी, एह की आया तूफान उत्ते। कहँदी पति मेरा कित्थे मारया ई, जेहड़ा साथी सी मेरा जहान उत्ते।। वेख मेरे ताईं बेधर्म होयों. कदी होसी न जो तूँ चाहवना एं। पति बाझ मेरा हुण जीवण मुश्किल, खा के ज़हर दासा मर जावना ए।।

काफ- कर प्यारी तू यकीन मेरा, ओही कोढ़ी हां पति भगवान तेरा। क्या रजनी मैंनूं पछाणदी नहीं, कर ख्याल दे नाल ध्यान मेरा।। रजनी आखदी ओसनूं कोढ़ खादा, अरोग वेख तैनूँ दिल हैरान मेरा। रिड़-खिड़ के ते ओह सी चल सकदा, तेरे वांग न पति जवान मेरा।। पति आखदा यकीन ते सिदक तेरा, कुष्ठी शरीर मेरा चंगा कर गया ए। सतगुरां ने कीती ए दया भारी, दासा दुख साडे सब्बे हर गया ए।।

कहंदी रजनी बिल्कुल झूठ बोलें, तू कोई डाकू आया विच जोर हैं वे। मेरे पतिदेव नूँ मार के ते, बण बैठों कोई होर दा होर हैं वे।। मेरा पति कित्थे मार सुट के ते, उल्टा पाई जांदा ऐंवें शोर हें वे। तेरे धोखे दे विच न आवणां मैं, प्या समझदा मैंनूं कमज़ोर हैं वे।। मेरे धर्म नूं लुटना चाहवंदा तूँ, ओथे रो रो ढाईं मारदी ए। सतगुरु प्यारेयां आन के पहुँच छेती, दासा रो रो पई पुकारदी ए।।

कित्थे होश प्यारी तेरी गुम हो गई, रोग गया जिवें बीती सुनान लगा। वेख छपड़ी एथों पई नज़र आवे, इक कां विच करन स्नान लगा।। स्नान कर जद छपड़ों बाहर आया, हँस बण्या बेख होण हैरान लगा। मैं वी रिड़-खिड़ के ओथे पहुँच गया, मेहर साडे ते करन भगवान लगा। जदों कीता स्नान कोढ़ दूर होया, बण गया अरोग जवान रजनी। बिल्कुल सच ए कसम परमात्मा दी,सच जाण दासा ते सच जाण रजनी।।

गाफ-गुरुमहाराज नूँ याद करदी, छेती पहुँच जा सतगुरु प्यारया वे। ऐसी चक्करां दे विच पई आके, सच झूठ न जावे नितारया वे।। मैं गरीब निमाणी दे ताईं प्यारे, एनी देर चा क्यों विसारया वे। ऐसा दुःख बन्या मेरी जान उत्ते, जेहड़ा जांदा नहीं मैंथों सहारया वे।। किरपा कर के ते खबर लै आके, नहीं तां मर जासां कुझ खा के ते। मुश्किल बणी विच जेकर न आयों, दासा करना की फेर तूँ आ के ते।।

गई पुकार ओहदी झट पट ओत्थे, गुरु वकत दे जित्थे रामदास प्यारे। ओसे वकत चल पै सतगुरु ओत्थों, झट आन पहुँचे रजनी पास प्यारे।। दण्डौत प्रणाम कीता सतगुरां ताईं, हथ जोड़ फिर करे अरदास प्यारे। सारी बीती सुनाई ओस सतगुरु नूँ, इस वास्ते सख्त उदास प्यारे।। हुण एसदा करो इन्साफ तुसीं, एह की मेरे ते भाणा वरतया जे। मैं तां दुःखां दी अग्गे ही मारी होई सां, दुःख दास ते नवां चा पाया जे।।

गँवा वकत न पई फज़ूल ऐवें, एह पति तेरा दिलों-जान बीबी। एस बेरी दे कोल जो छपड़ी ए, दुख भञ्जनी इस नूँ बुलान बीबी।। एह दे विच करे स्नान जेहड़ा, दुख दूर कर देवे भगवान बीबी।

नहा के छपड़ी विच अरोग होया, जिस लई कर न सकी पछान बीबी।। तेरा पति ए कर विश्वास साडा, एह हुण तैनूँ कमा खवायेगा नी। जित्थों तीक होया तेरे वांग दासा, जस खट जहान तों जायेगा नी।।

तकलीफ दित्ती बड़ी मैंने एस वेले, कहंदी जोड़ हत्थ-मेरे हुज़ूर प्यारे। बख्श दो मैंनूं बख्शन हार तुसीं, भुल्लन हारी दे ताईं ज़रूर प्यारे।। एस वास्ते तुसां नूँ याद कीता, पा बवां न कित्थे फतूर प्यारे। धर्म गया न आवंदा हथ लक्खी, हो जाय न कोई कसूर प्यारे।। अन्तर्यामी हो घटां दी जाणदे ओ, दूर कीता आ के मेरा वहम सतगुरु। बैठी पति नूँ समझ के गैर दासा,दे के इतवार कीता धर्म कायम सतगुरु।।

भगती-भाव वाले दोवें मर्द-औरत, प्रारब्ध ते शुक्र मनान भाई। हरदम याद रखन सतगुरां ताईं हित चित नाल सेवा कमान भाई।। माया चाहन न दुनियां दे वांग दोवें, चाहवण जिस नाल होवे गुज़रान भाई। बहुत खुशियां विच हमेश रहंदे, राज़ी ओहनां ते सदा भगवान भाई।। रजनी बाद देखो पिता ओस दे नूँ, जाके डाकूआँ ने सब कुझ लुट लया। पैसे पैसे पिच्छे होंदा दुःखी दासा, कर्ज़दारां ने कर्ज़ सब घुट लया।।

कृष्ण सुदामा

लाम-लड़कपन विच सुदामा अते, कृष्ण जी सन दोवें यार भाई। इक दूजे तों जुदा न कदीं होंदे, बड़ा उन्हां दा दिलों प्यार भाई।। दोवें इके स्कूले पढ़न रल के, खेडन दोवें मिल के दिलदार भाई। उस्ताद जोड़ी बना के दोहां ताई, कदी कदी रहे भेजदा बाहर भाई।। उस्ताद आख्या इक दिन दोआँ ताईं, जंगलों लकड़ियां लै आओ जाके ते। जांदयां सुदामे दी मां ने दित्ते छोले, दोवें गुज़र करयो दास खा के ते।।

लग पै दोवें चुगन लकड़ां नूँ, घने जंगल दे विच जा भाई। अचनचेत बारिश शुरु होई आके, इक थां बैठ गये होएं घबरा भाई।। बुक्कल मार कपड़े दी यार दोवें, वखो वख बैठे डेरा ला भाई। सुदामा कढ छोले अपनी डब विचों, परदे नाल सी रहा चबा भाई।। आवाज़ चबान दी सुण के कृष्ण कहँदा, देचा मैंनूं भी जो तूँ खावना एं। आवाज़ आवे पई मेरे तीक तेरी, दन्दां नाल जो दासा चबावना एं।

लगा कहन सुदामा नाल ठंड दे, दन्दां नाल पै वजदे दन्द भाईं। बड़ी कोशिश करां नाल दन्दां दे दन्द, किवें वजनों हो जान बन्द भाई।। कृष्ण जी कहंदे झूठ बोलदा तूँ, छोले चब प्या लैंदा आनन्द भाई। बदले छोलयां मित्र नाल करें ठग्गी, ऐ गल न तेरी पसन्द भाई।। कंगलयां वाले ख्याल सुदामेयां ओऐ, ए ठीक नहीं सी चलनी चाल तैनूं। प्यारे मित्र दे नाल ए धोखा तेरा, दासा करेगा अन्ध कंगाल तैनूँ।।

मीम-मिल के रहे न यार दोवें, इक दूजे कोलों विछुड़े आन भाई। व्याह सुदामे दा मा-प्यो कर दित्ता, ओहदा लग प्या ओधर ध्यान भाई।। मा-बाप ओहदे, ओहदे वेहंदियाँ ही, गये परलोक नूँ हो रवान भाई।

जायदाद मिली सी बहुत ओहनूं, हौली हौली लग पई ओवी जान भाई।। दिनां विच सुदामा कंगाल होया, बोल्या कृष्ण दा वरतया नाल ओहदे। न कोई रह्या रोज़गार न रह्या पैसा, होये बुरे आके दासा हाल ओहदे।।

मिट्टी हो जाय सोने नूँ हथ लायां, ऐसा आन तकदीर दबाया जी। सोचे फायदा ते हो नुकसान जावे,वेख ए हालत ते बहुत घबड़ाया जी।। पेट भर नाहीं सके बच्यां दा, बच्यां भुक्ख तों शोर मचाया जी। न कोई सजनआकेओहदी मदद करदा,ऐसा वक्त कोई दुखां दाआया जी।। कित्थे शाह ते अज कंगाल होया, दाल रोटी न विच नसीब भाई। दुःखां उत्ते दुःख आवन पै दास उत्ते, गुस्से कीता ओस ऐसा हबीब भाई।।

महाराज बन गये कृष्णदेव होरीं, द्वारिका पुरी दे विच जाके ते। मौजूदा वकत दे बणे औतारओत्थे, हर कोई शान्त होंदा दर्शन पा के ते।। रूहानी सतसंग दी ओत्थे होवे वरखा, सुनदे प्रेमी दूरों दूरों आके ते। भवसागरों पार पै होन प्रेमी, हुकुम उन्हां दा दिलों बजा के ते।। भले-बुरे जो उन्हां दे दर आवन, पूरन इच्छा करके जान भाई। ऐसी महिमा कृष्ण दी वधी दासा, जेदा हो न सके ब्यान भाई।।

नून-नाराज़ सुदामे ते साहिब सच्चा,जिसलई चले न ओसदा रोज़गार कोई। कर कर कोशिशां ते गया हार डाढा, पूरी पैन न देवे दातार कोई।। बच्चे रोंदया वेख ओहदा दिल रोवे, सुनदा रब न ओहदी पुकार कोई। एहदूँ ज़हर खाके हुण मैं मर जावां, होर आवे न ओहनूँ विचार कोई।। बड़ा दुःखी सुदामां आन होया, भुख्यां रह रह वकत लँघान लगा। अंग साक सारे मित्र यार दासा, हर कोई ओस तों मुँह छुपान लगा।।

नेड़े घर दे रहंदी सी इक औरत, इक दिन शीला दी ताईं सुनाये बीबी। कम कर कर थक गया पति तेरा, पूरी ओसदी रब न पाये बीबी।। तेरे पति दा मित्र कृष्ण अड़िये, महापुरुष बण द्वारिका आये बीबी। कुल जगत दा बण के आया मालिक, भेज पति ओत्थे मेरी राय बीबी।। कोई न कोई मिल जायेगा कम ओत्थे, पढ़या लिखिया पंडित विद्वान तेरा। कहणा पति नूँ हाल सुनाये जाके, दास सुनेगा मित्र भगवान तेरा।।

नाल ख्याल गवांढन दी सुनी सारी, शीला आखदी एह गल ठीक है नी। गरीबी आन साडे नाल अत कीती, एहदों होणी की भैणे वधीक है जी।। जीवें साडे नाल प्या रब करदा, किसे नाल न होई अज तीक है नी। कित्थे शाह ते कित्थे कँगाली अन्दर,धुरों लिखी होई लैआई धरीक है नी।। शामीं आया सुदामा हथ खाली, भुक्खे वेख बच्चे घबड़ाया ए। शीला सारा दिन चुल्हे न अग्ग बाली, दास रिन्निया न कुछ पकाया ए।।

व-वक्त नहीं देंदा साथ शीला, ऐसी आन के ते किस्मत ने हार दित्ती। ताकत रही न अकल न कम देंदी, रब आन ऐसी मेरी बुध मार दित्ती।। वड्डे-छोटे पै करन मखौल मैंनूं, सुन सुन उन्हां दी होश विसार दित्ती। हर पास्यों हार ही हार दिस्से, कामयाबी न कित्थों दातार दित्ती।। रहया भागां विच रिज़क न खान जोगा, गमी दुःख भुख होई नसीब मैंनूं। झिड़कॉं ताने-मेहणे उलटा देण लोकीं, दास समझ के अत गरीब मैंनूं।।

विचारी शीला हथ जोड़ के अर्ज़ करदी, मेरी सुनो जे नाल ध्यान स्वामी। जितनी परीक्षा करनी सी कर लीती, साडे नाल ओस भगवान स्वामी।। हौंसला करो ते करो यकीन मेरा, हो चुका है साडा इम्तिहान स्वामी।

साडे जीवन दा हिस्सा खराब जेहड़ा,ईश्वर लगा है अग्गों मुकान स्वामी।। अपने किशन मित्र दे कोल जाओ, ओहनूं वर्तया हाल सुनाओ जाके। मेरी रोशन ज़मीर पई कहे दासा, मुरादां मंगियां नूं ओत्थों पाओ जाके।।

वेले ओसे सुदामा कहन लगा, मित्र किशन दे कोल ही जावंदा हां। जेहड़ा धोखा कीता सी विच बचपन, हथ जोड़ के जा बख्शावंदा हाँ।। ओह वकत दे गुरु ने एस वेले, भेंटा ओन्हां लई कुझ चाहवंदा हां। ओह दस्स शीलां जो कुझ लै जावां, खाली जावां ते बड़ा शरमावंदा हाँ।। तिरचोली शीला ने ओस नूँ कढ दित्ती, भोग एस दा ही लगवा लेना। गरीबां कोल न कोई एसतों चीज़वधिया,दासा एहदेनाल प्यारा रिझा लेना।।

हे-होके सुदामा तैयार घर तों, द्वारिका पुरी वल होया रवान भाई। पाटे कपड़े हालत खराब एनी, जेदा हो न सके ब्यान भाई।। पैरीं जुत्ती न सी मौसम सर्दियाँ दा, लगा पैरां विचों खून जान भाई। बिवाइयाँ पाटियाँ चप्पा चप्पा मैल जम्मी,साफ होण न लायां तिरान भाई।। आखिरकार सुदामा पहुँच गया, द्वारिका पुरी शहर भगवान दे जी। कहँदा मिल जावे ऐसा दास कोई,पहुंचावे मित्र कोल नाल एहसान दे जी।।

हत्थ जोड़ सुदामा अर्ज़ करदा, जदों वेख्या खड़ा दरबान भाई। पैगाम मेरा ए पार पहुंचा देवो, अन्दर बैठा जो किशन भगवान भाई।। कहणा आया है सुदामा मित्र तेरा, मिलण लई बैठा बाहर आन भाई। वेख हालत ओहदी दरबान सोचे, वाह वाह कृष्ण दा एह मेहमान भाई।। शहनशाह ओह कित्थे कँगाल है एह, महाराज दा कहँदा यार हाँ मैं। दासनदास कहँदा आया चल दूरों, आया मित्र दा करन दीदार हां मैं।।

हर दरबान नूँ होया सी हुकुम अन्दरों,चंगा-मन्दा कोईआवे सुनाओ ओहदी। गौर नाल ओहदी पूरी गल सुण के, झट अन्दर खबर पहुंचाओ ओहदी।। मते होवे गरीब कोई सुनो नाही, ज़रूरी खबर तुसीं देन आओ ओहदी।। एस गल दा रखना ख्याल सबने, मतें गल विच गल गवांओ ओहदी। एस लई दरबान नूं पया कहणा, सुदामा भगत कोई मिलना चाहवंदा ए। पुराना यार भगवान नूँ मिलन आया, दास बण के अर्ज़ सुनावंदा ए।।

ये-यकदम सुनी जद खबर भगवान, सिंहासनों उतर थल्ले बाहर आवंदे ने। पुराना मित्र मेरा मुद्दत बाद मिलया, झट जफ्फी ओहनूं आके पावंदे ने।। नाल प्रेम प्यार दे घुट्टी जांदे, कंगालता ओसदी सारी हटावंदे ने। अपने वांग ओहनूँ कर शाह दित्ता, दुःख दर्द सब ओहदे गवावंदे ने।। एहनी खुशी नहोई सी यार ओहदों,मालिक बन्या जद रूहानी दरबार दा मैं। ओस तों वध खुशी अज होई दासा, दर्शन कीता जदों पुराने यार दा मैं।।

यार दस मेरे लई मेरी भाभी, तैनूं देके की रवान कीता। कुझ न कुझ तां घलिया ज़रूर होसी, मैंने दिल दे नाल ध्यान कीता।। शर्म नाल लुकांदा पोटली नूँ, मामूली तिरचौली ने ओहनूं हैरान कीता। झट किशन जी पोटली खोह ओस तों, फक्के मारने शुरु आन कीता।। सुगात भाभी जी दा मज़ा आया एना, अमृत विच न एना स्वाद भाई। घल्ले प्रेम नाल जेहड़ी तिरचौली दासा,भरी जिसदे विचओहदी याद भाई।।

याद कर बचपन दी याद दोवें, बड़ियाँ खुशियां मनावंदे ने। मिल के पढ़ना खेडना खुश होना, लकड़ियां चुगन दी गल हलावंदे ने।। छोलयाँ चबदयां सुदामियाँ दन्द बज्जण, इशारे किशन जी कर सुनावंदे ने।
सुदामा किशनजी दे कोल रहिया कुछ दिन,आज्ञा लैआखिर घर जावंदेने।।

घर आयां न घर दा पता लगे, जिथे छपड़ी, बने मकान उत्थे। बड़ा सोचदा कोई न समझ लगे, दास देख प्या होवे हैरान उत्थे।।

यतन करे कोई कीवें समझ लगे, एहने विच ओहदा लड़का आया ए। झट आ लड़के चरणां ओहदयां विच, बड़े अदब नाल सीस झुकाया ए।। शाहजादयाँ वांग ओस लिबास डिट्ठा, लड़के ओसदे ने जेहड़ा पाया ए। कहँदा बच्चया खर्च पोशाक उत्ते, कित्थों लै के ते तुसां लाया ए।। लड़का आखदा छपरी हटा साडी, मकान बना गया कोई आलीशान प्यारे। बड़ा खर्च कीता साडे लई ओस ने, दास भेजया जेहड़ा भगवान प्यारे।।

यार किशन जीवें लया दे दित्ता, फिर भी महापुरुष बख्शनहार बच्चा। मेरे कोलों बचपन विच होई गलती, जिस लई दुःख पाया बेशुमार बच्चा।। धोखा किशन दे नाल सी मैं कीता, बण के ओहदा दिली मित्र यार बच्चा। ओहदे बदले पांदे रहे दुःख असी, आखिर गया ओहनां कोल हार बच्चा।। मेहरबानी करके भुल बख्श दित्ती, फेर कर दित्ता माला माल सानूँ। इक कौड़ी दे जेहड़े न रहे दासा, नदरी नदर कर दित्ता निहाल सानूं।।

महापुरुष धुर तों बण के आंवदे ने, बचपन विच वचन होंदे सत्त भाई। जीवें कह्या कृष्ण सुदामे ताईं, ओसे तरह होई ओहदी गत्त भाई।। यार नाल धोखा कर के ओस वेले, छोले लै सारे पेट घत्त भाई। यार समझिया न अपने यार ताईं, ऐसी मारी गई ओसदी मत्त भाई।। आखिर कृष्ण जी दी चरणी जा डिग्गा, जागे दस्या गुज़रा हाल प्यारे। विच पलक दे ओहदी कंगालता नूँ, दासा दित्ता झट निकाल प्यारे।।

बाबा शेख फरीद

आलिफ-अल्लाह ईश्वर निराकारओही, साकार रूप विच सतगुरुआया ए। जीवां भुलियाँ नूँ दे के प्रेम सच्चा, सच्चे सुच्चे पासे उत्ते लाया ए।। जन्म जन्मान्तरां दे दुःखी जीवां ताई, किरपा कर के आन बचाया ए। ऐसे सतगुरां दी लैके मदद मैंने, हथ विच कलम उठाया ए।। बार बार दण्डौत प्रणाम करके, इक कविता लगा बनान भाई। मदद करनी दास न भुल जावे, बुद्धिहीन हां सख्त अनजान भाई।।

आला दर्ज़े दे संस्कार लै के ते, बाबा फरीद जी पैदा जहान होये। शेख जात ते माता दा नाम मरियम, पिता शेख जमाल सुलतान होये।। गज़नी शाही दे सन खानदान विचों,गाँव खोतवाल जिला मुलतान होये। ओत्थों चल लाहौर दे विच ठहरे, डेरे पाक पट्टन फिर आन होये।। मुसलमान मज़हब दे सन मनन वाले,छोटी उम्रविच लगन भगवान दी सी। इस्लाम मत दा वाक्फ़ि दास होया,आयत ज़ुबानी सब याद कुरान दी सी।।

एह पर पढ़याँ कुरान-सुपारयां नूँ, मिल्या ओस ताईं सच्चा सुख नाहीं। कर्म धर्म कीते मन दे ज़ेर होके, मन ने आपना मोड़या रुख नाहीं।। जिस वास्ते कुरान हदीस पढ़दा, दिली दूर होई ओहदी भुख नाहीं। उल्टा-मान हंकार ने घेर लिया, दूर मानसिक होया कोई दुःख नाहीं।। पाबन्द शरह दे भरमां विच होया, महापुरुषाँ दी संगत न पाई उसने। दासअल्लाह दा दिलोंओह बन गया सी,बाझ मुर्शिद दे भक्तिकमाई उसने।।

बे-बहुत प्रेमी ओह अल्लाह दा सी, निसदिन ओहदी तपस्या करे भाई। जंगल विचों न अन्न नसीब होवे, फुल्ल पत्ते खा के ढिड्ढ भरे भाई।। तप करदियां बाबे फरीद ताईं, गुज़र गये जदों बारह वरे भाई।

दिल विच सोचदाअल्लाह हुण खुश होसी,घर मां वल कदम नूं धरे भाई।। रब्बी ताकत आ गई दिस्से विच मेरे, ज़रा ताकत दे ताईं आज़मा वेखां। चिड़ियां चुगदियां दे ताईं मार के ते, दास बण के फेर जिवा वेखाँ।।

बोले चिड़ियाँ दे ताईं फरीद बाबा, चोग चुगदियाँ सारियाँ मरो एत्थे। भजन बन्दगी करन न देयों तुस्सीं, चूँचूं आन दिवालियो करो ऐत्थे।। विच एकाग्रता दे तुस्सीं फरक पाओ, इक पलक न किसे तों डरो ऐत्थे। आवाज़ सुनदियां चिड़ियां डिग मोइयां,कहंदा कीताआपना सब्बे भरोएत्थे।। फिर आखदा मोयां जिवा देखां, ध्यान मोइयां चिड़ियां वल मारदा ए। उड जाओ चिड़ियो होके फेर जिन्दा,दास मुखों एह जदों उचारदा ए।।

बल उसदे नाल चिड़ियां हो ज़िन्दा, झट उडियाँ उत्तां आसमान नूँ जी। चल पया अग्गे शहर आपणे नूँ, सिर ते चुक्के खुदी-गुमान नूँ जी।। पूरी भगती हो गई मेरी जापदी ए, पहुँच गया हां लामकान नूँ जी। शहरों बाहर खुह ते रंगरत्तड़ी, वल फरीद करदा जदों ध्यान नूँ जी।। पाणी कड्ढ कड्ढ के ऐवें जाये लोहड़ी, फरीद ओसदे ताईं सुनावंदा ए। बीबी पानी दा घुट पयाल मैंनूं, ज़रा रोब नाल दास फरमावंदा ए।।

पे-पल उसे अग्गों कहे औरत, अजे फुरसत न पानी पिलावणे दी। थोड़ा जेहां रहंदा मेरा कम बाकी, ओस कम दी पई मुकावणे दी।। वीह कोह उत्ते घर भैण दा है, खबर आई है अग लग जावणे दी। पानी ओसदे घर ते पाई जावां, खिच लगी ए अग्ग बुझावने दी।। रोब पा न आखे फरीद ताईं, तेरी सारी समझ पई आवंदी ए। चिड़ियाँ नहीं जो मार जिवायें दासा, बड़े रोब दे नाल सुनावंदी ए।।

प्या वेख फरीद हैरान होवे, पानी पीवना ओस नूँ भुल गया। जेहड़े मान-हंकार सी ज़ोर पाया, भेद ओसदा जाहिर हो कुल गया।। मन-भगती नाल जेहड़ा जगाया दीवा, गल सुन ओहदी हो गुल गया। फेल होया मुकाबले ओसदे मैं, भरया भांडा मन भगती दा डुल गया।। ओस वेले बाबा फरीद ओत्थे, दिल विच सोचदा नाले पुकारदा ए। बारह साल कीती भगती गई ऐवें, दास दरस न कीता दिलदार दा ए।।

परवर दिगार अगे जोड़े हत्थ बाबा, दे दीदार मैंनूं दे दीदार प्यारे। रम्ज़ दस ऐसी जिस नाल मिलां तैनूं, अर्ज़ करां ऐहो बारम्बार प्यारे।। मनमति नाल थक्या ढूँढ तैंनूं, आखिर होई मेरी आके हार प्यारे। कीवें मिल सकां तेरे ताईं रब्बा, ऐसा दस्स कोई ज्ञान विचार प्यारे।। जिसदे नाल तैनूं प्यारे पा सकां, ओह दस कोई तदबीर छेती। दासन दास ते करो आन किरपा, बदल देओ मेरी तकदीर छेती।।

ते-तार फरीद नूँ धुरों आई, तूँ जो ऋद्धियाँ -सिद्धियां पाइयाँ ने। गुरु भगती विच पाँदियां विघन भारा, ज़ाया जांदियाँ सब कमाइयाँ ने।। ऋद्धियां-सिद्धियां दे जेहड़ा वस होया, हों जांदियां बहुत बुराइयाँ ने। पीर बाझ न कदी कल्याण होंदा, पूरे आरिफां गल्लां आज़माइयाँ ने।। जदों तीक न मुर्शिद नूँ मिलेंगा तूँ, ओहदों तीक न ज़ाहिर खुदाई होसी। पीर बाझ सजाईं ने जीव ताई, पीर बाझ न दासा रिहाई होसी।।

तदों फरीद ने दिलों ख्याल कीता, पीर-मुर्शिद पूरा कोई चाहिदा ए। जो इलहाम होया ओह ठीक होया,मैंनूं मुर्शिद कोई बनाना चाहिदा ए।। ढूँढना चाहिदा ए हुण कोई पीर मैंनूं, वक्त मिल गया होर कमाई दा ए।

वेले सिर मैंनूं पता आन लगा, जेहड़ा आ गया हुक्म खुदाई दा ए।। एस वास्ते पीर ज़रुर चाहिये, बाझ पीर न मेरा सुधार होना। इल्मो बाझ जो होवे फकीर दासा, शुद्ध ओहदा न कदी विचार होना।।

तड़फे जान बिनमुर्शिद फरीद दी जी,मुर्शिद कामिल मिले कित्थोंआन मैंनूं। जिसे नाल हो जाय मेरी सफल भक्ति,मिल जायअल्लाह रहमान मैनूं।। पीर बाझ नहीं मुश्किल हल होनी, पीर बाझ नहीं होना ज्ञान मैंनूं। ज्ञान बाझ न सच्चा ध्यान होंदा, पहुँचावना ध्यान है असल मकान मैंनूं।। ढूँढदेयां अजमेर विचों मिलया जा मुर्शिद,नाम ओसदा सूफी फकीर साईं। हत्थ जोड़ के दास फरीद कहँदा, तोड़ो हिर्स दी पैरों ज़ंज़ीर साईं।।

तुरत कीता मुरीद फरीद ताईं, देखे उच्चे जदों संस्कार ओहदे। पूरा दित्ता
सेवक गुरां दा जिस दम हो गया ओ, मुर्शिद नाल आ बद्धे प्यार ओहदे। गरम पानी कर रोज़ न्हवावणा तूँ,ज़िम्मे लाया ए कम सरकार ओहदे।। ऐसे तरह सेवा रोज़ करदयाँ नूँ, वक्त आ गया ओहदे इम्तिहान दा जी। इक दिन गुरां की खेड विखाई दासा, वक्त आया ओहदे रब पान दा जी।।

टे-टेक्क के करे गुरां दी सेवा, ऐसे तरह करदियाँ कुछ काल होया। इकदिन बारिश नेआनके ज़ोर पाया,गलियाँ च चिक्कड़ मन्दा हाल होया।। डेरे साईं दे तों अग्ग बुझ गई, फरीद ताईं एह बड़ा ख्याल होया। कीवें मुर्शिद लई करांगा गरम पानी, ढूँढे अग न हल सवाल होया।। आखिर ढूँढदियाँ अग नूँ दूर किधरे, दीवा जगदा नज़री आवंदा ए। घर वेसवा दा सी ओह दासा, हथ जोड़ जा वास्ते पावंदा ए।।

टकरां मार मार के मैं थक गया, मिली अग न होया लाचार भाई। अगों वेसवा आखदी अग महँगी, रुप होर दा होर लिया धार भाई। सुन फरीद कहँदा जी कुझ मंगो देवां, मेरे लई न मुश्किल एह कार माई।। हँस के वेसवा कहँदी अग मँहगी, आना अख दा जावेगा लग भाई। डेले अख दे बाझ न एस घर तों, दासा मिल सकनी तैनूं अग भाई।। वेले उसे बाबे फरीद ने जी, छुरी नाल कड्ढ आना फड़ाया ए।

पट्टी बन्ह के अक्ख दे उत्ते प्रेमी, अग लैके ते डेरे आया ए।। अग बाल के पानी नूँ गरम करके, पीर ताईं अश्नान करवाया ए। बद्धी पट्टी ताईं मुर्शिद जदों डिट्ठा, फरीद ताईं फिर ओन्हां फरमाया ए।। की होया पट्टी बद्धी अख उत्ते, फरीद आखदा गई ए आ प्यारे। जेकर आ गई ए ते फिर आ गई ए, पट्टी अख तों दास हटा प्यारे।।

से-सबूत यकीन नाल अक्ख आ गाई, पट्टी अक्ख तों जदों हटाई उसने। हिरण वांगरा
दूसरी अख नालों खूब सूरती विच,चमक दमक निराली विच पाई उसने। पीर खुश होया बहुत ही फरीद उत्ते, कुर्बानी जद ऐसी कर विखाई उसने।। नदरी नदर निहाल कर पीर दित्ता, होया रब दा ओहनूँ दीदार भाई। जोती संग ओह जोत समा के ते, दासा होया बेड़ा भवजल पार भाई।।

साबित दिलों हो जदों मुरीद लगदा, पीर दुःख करदा सब दूर ओहदे। पलां विच मुरीद दे बख्श देंदा, जेहड़े जन्मां दे होंदे कसूर ओहदे।। माया-छाया सब देंदा निकाल ओहदी, खज़ाने भक्ति दे करे भरपूर ओहदे। इक्को प्रेम मुर्शिद दा रहवे दिलअन्दर, होर मिट जांदे मान-गरूरओहदे।।

सुच्चा लाल बन जावंदा ओह सेवक, जेहड़ा आज्ञा गुरां दी पालदा ए। लोकपरलोक विच होवँदा जसओहदा,दासनदास बनजावंदा कमाल दा ए।।

सब्त मोहर मुरीद नूँ जदों लगदी, जोती जोत विच जा समावंदा ए। सतगुरां वाला जेहड़ा होवे प्रेमी, ओही ऐसा दरजा पावंदा ए। बाझ पीर मुरीद न पहुँच सके, जेहड़ा असल अस्थान निज धाम दा ए।। एस वास्ते गुरां दी लोड़ होंदी, आवागवन-चक्र विच न जाये बन्दा। बाझ सतगुरां दे कोई जीव दासा, सच्चा सुख कदी न पाये बन्दा।।

मन चंगा कठौती विच गंगा

जीम-जिस समय रामानन्द जी सन, सेवक उन्हां दा होया इक खास भाई। घर चमियार दे ओस दा जनम होया, नाम ओसदा सी रविदास भाई।। काशी जी दा ओह सी रहन वाला, सतगुरां ते पूरा विश्वास भाई। बराये नाम करदा कम दुनियां वाला, विच्चों दुनियां तों रहे उदास भाई।। सन्त है सी उच्च कोटि दा ओह, भारत विच होया बहुत मशहूर प्यारे। रविदासी-पन्थ चल्या उस तों, दासा फैल्या जो दूर दूर प्यारे ।।

जुत्तियां स्योण-गंढण दाओह कमकरदा,क्यों जो ज़ात दाओह चमार है सी। वड्ढे वडेरे ओहदे एहो कम करदे, जिस लई सिख्या एहो रोज़गार है सी।। निर्वाह वास्ते करदा सी कम एहो, रोज़ी लिखी होई एञ्ज दातार है सी। हथ कार ते दिल दिलदार पासे, शुद्ध ओस दा बहुत विचार है सी।। ओदे चमत्कारदियां कईकहानियां ने,इककहानी विचओदा चमत्कार दस्सां। जीवें ओसने कीती सी ज़ाहिर शक्ति,दासाओहदा कुझ कर विस्तार दस्सां।।

जान लगयां हरिद्वार उत्ते, इक सेठ रवि कोल आया ए। जुत्ती टुट गई ए ऐनूँ गंढ दे तूँ, सेठ आन के एह सुनाया ए।। मैं ने जावणा एँ हरिद्वार भाई, साथ आपणा बाहर ठहराया ए। ओसे वकत दित्ता रवि गँढ जोड़ा, पैरीं सेठ ने जिस दम पाया ए।। रविदास कहंदा उस सेठ ताईं, एह कम करना मेरा जा के ते। एह पाई मेरी गंगा माई ताई, दासा आवणा हत्थ फड़ा के ते।।

चीम-चित्त विच सेठ हैरान होया, इक पाई प्या भेजदा माई नूँ जी। एदी अकल टिकाणे न जापदी ए, होया होया कुझ एस शुदाई नूं जी।। सेठ लई ए हँसी-मज़ाक जापे, मामूली समझ रहया सी उस पाई नूं जी।

रिद्धियाँ-सिद्धियां एसदे विच भरियां,ओहकी जाणदा ताकत इलाही नूँ जी।। सार धन पाई मेरी समझनी तूं, गंगा विच न ऐवें वगा देवीं। हत्थ गंगा तों कड्ढेगी गंगा माई, दासा ओसदे हत्थ पकड़ा देवीं।।

चालाक बण के दिल विच सेठ कहँदा, गंगा पाई लई हत्थ वधाये भाई। आकड़ ऐनी करे रविदास पया, एहदी पाई गंगा बड़ा चाहे भाई।। गंगा माई नूँ लोड़ की पाई दी ए, जो पाई लई हत्थ फैलाए भाई। सेठ समझ की सगदा भेद असली, जेहड़े पाई विच गुण समाये भाई।। गल्लां एहो जियां दिल विच करदेयां जी, सेठ पहुँच गया हरिद्वार बेली। कुम्भ-अस्नान कीता पुन्न-दान कीता, दास मँग मंगी लोड़ अनुसार बेली।।

चेता रहया न-समझ मामूली पाई, पल्ले रही बद्धी न ख्याल आया। पाई रविदास दी गंगा नूँ देन खातिर, काशी जी तों लै के नाल आया।। कदी आखदा सुट दयां विच गंगा,केहड़ा सुच्चा कोई कीमती लाला आया। एस पाई दी भुक्खी न गंगा माई, दिल विच ऐसी चल के चाल आया।। कई रुपये लुटाये ने गंगा ताईं, हत्थ गंगा दा बाहर न आया ए। इक पाई लई हथ फैलासी गंगा, दासा पाई विच की समाया ए।।

हे-हक है मेरा अदा करना, आया होया हां मेरा की जावँदा ए। ओसे वेले गंगा किनारे उत्ते, सेठ पाई कारन फेरा पावंदा ए।। खोल पल्यों पाई रविदास वाली, गंगामाई नूँ एह सुनावंदा ए। तेरे भगत रविदास ने पाई घल्ली, तेरे प्रेम पिछे देणी चाहवंदा ए।। हथ कढ्ढेगी गंगा तों बाहर गंगा, पाई मेरी तुरत फड़ा देना। हत्थ बाहर निकले बाझों पाई दासा, गंगा विच न ऐवें वगा देना।।

हिकमत होई ऐसी सुण के एह गंगा, हथ आपणा झट फैलाया ए। साहुकार ने फड़ के पाई ताईं, हथ ओसदे उत्ते टिकाया ए।। पाई लैके ते हत्थ गायब होया, सेठ ताईं आवाज़ फिर आया ए। सेठा रुकना जाना ना अज्जे वापिस, बदले पाई दे तोहफा मँगवाया ए।। सेठ सुण आवाज़ ते ठहर गया, देखिये किस तरह दा तोहफा आवणा ए। जड़ाऊ कंगन सोने दा बाहर आया, एह दासा रवि दे ताईं पहुँचावंणा ए।।

हालां पेशगी कंगण जड़ाऊ दित्ता, एवजाना दित्ता न जांदा एस पाई दा ए। मेरी तरफों एह कंगन मन्ज़ूर करना, बदला एह दा न मैथों मुकाईदा ए।। लक्खां रुपयां दा एह जड़ाऊ कंगन, रवि नूँ पाई लई प्या पठाईदा ए। सेठ वेख-वेख प्या हैरान होवे, पाई विच की रंग इलाही दा ए।। रविदास ओधर बावला नज़र आवे, आकड़ नाल जिस पाई रवान कीती। एधर गंगा झल्ली होयी कहे दासा,पाई दी कीमत नहींअजे भुगतान कीती।।

ख-खैरियत नालआया सेठ वापिस,कंगन लैआया घर खुशियाँ मनावंदा ए। ऐसी कीमत दा मिल गया ए कंगन, जिसदा अन्त हिसाब न आवंदा ए।। ऐसा जड़ाऊ कंगन साडे कम औसी, रविदास दे घर न शोभा पावंदा ए। कम चमड़े दा ओह है करन वाला, तिजोड़ी सेठां दी विच सुहावंदा ए।। सेठानी मेरी ऐनूँ हत्थीं पाएगी ते, सारियाँ औरतां विच शोभा पाएगी जी। रविदास नूं देणा नहीं एह कंगन, दासा एह चीज़ न ओनहूं सुहायेगी जी।।

ख्याल पक्का कर लया खयानत वाला, कंगन सेठानी नूँ जी विखाया ए। सेठानी वेख कंगन झट पाया हत्थी, कंगन बड़ा सेठानी नूँ सुहाया ए।। रविदास दी गली वल सेठ कदी, फिर जा के फेरा न पाया ए।

जेकर मिलया रवि उस पुछणाएं, की दसांगा एहदू घबड़ाया ए।। पंज सत्त महीने जदों गुज़र गये, रह्या सेठ नूँ न ख्याल भाई। अचानक उस गली इकदिन भुल केते,दास जा रह्यासी खुशी दे नालभाई।।

खुशी विच दुकान ते बैठया होया, रविदास ध्यान जद मारया ए। सेठ जा रह्या सी अपने ध्यान अन्दर, रविदास जी वेख पुकारया ए।। आवाज़ सुण के सेठ नूँ औणा पया ओत्थे, नमस्कार कर रवि उचारया ए। आओ सेठ जी चिरां दे बाद आये, इन्हां चिर जा कित्थे गुज़ारया ए।। बड़े चिरां पिच्छों अज मिले सानूँ, हरिद्वार दे कुम्भ तों आ के ते। गंगा माई दे दर्शन दस्सो कीवें होये, दासा हरिद्वार दे कुम्भ ते जा के ते।।

दाल देख के रवि नूँ सेठ होरीं, पाप वेख के आपणा शर्मसार होये। सामने रवि दे होणा न सेठ चाहवे, मजबूरी आवण कारन लाचार होये।। रविदास कीती आवभगत उसदी, आसन दित्ता ते प्रेम-प्यार होये। सेठ बैठ गया रवि पुछदा ए, गंगा माई दे कैसे दीदार होये।। कदों आये वापिस कुम्भ कर के ते, की की नवां डिट्ठा ओत्थे जाके ते। इन्नी देर दे आये होये तुसीं दासा, मिले क्यों नाहीं सानूँ आ के ते।।

दित्ता अग्गों जवाब एह सेठ होरां, बड़ा कुम्भ होया शानदार प्यारे। गंगा माई दियाँ लहरां देख के ते, जावां वार बलिहार लखवार प्यारे।। बड़ा आनन्द आया जद अस्नान कीता, दिल होया बड़ा ठंडाठार प्यारे। जिन्नां चिर रहे खुशियाँ दे विच रहे, गंगा जी नाल जोड़ के तार प्यारे।। रविदास कह्या खूब आनन्द लया, साडी पाई दी बात सुना भाई। क्या जीवें कहया कीती भेंट दासा, या गंगा विच दित्ती वगा भाई।।

दिल नूं कायम कर के सेठ कहन लगा, पाई त्वाडी मैं गंगा पहुंचा दित्ती।
क्या फिर निकलया हथ सी गंगा विचों, गंगा माई दे हथ फड़ा दित्ती।। किस दा निकलना हथ सी गंगा विचों, मैं ऐंजे ही गंगा विच पा दित्ती। भोले भगत तुसीं बड़े जापदे, केहड़ी गल फिर नवीं सुना दित्ती।। इक पाई लई गंगा माई ने क्या, बाहर कढ के हत्थ फैलावना सी। लक्खां रुपयाँ लई हथ न बाहर आया, पाई दी ओहनूँ की चाहवना सी।।

डाल- डर पया जेहड़ी गल दा सी, ओही सेठ अगे खड़ी आन होई। रविदास पुच्छे ज्यों ज्यों सेठ ताईं, विच शर्म उसदी दुःखी जान होई।। मेरी पाई नहीं यार पहुंचाई तूने, तेरे बोलन तों मैंनूं पहचान होई। यार मेरा एह कम तू नाहीं कीता, झूठी तेरी पई दस्से ज़ुबान होई।। सेठ कहँदा महाराज ओह पाई तेरी, गंगा विच जा के ते पहुँचाई सी मैं। न कोई हत्थ डिट्ठा गंगा माई दा मैं, दास पाई जद खोल विखाई सी मैं।।

डेर-थोड़ी जेहीं जा ठहर सेठा, गंगा माई न मैंथों कोई दूर भाई। मन चंगा कठौती दे विच गंगा, पुछ लैंदा हां हुणे ज़रूर भाई।। एह सुण के सेठ ने होर जाता, दिमाग भगत दे पया फतूर भाई। नवां पागलपन जापया भगत जी दा, मेरा गंगा तों पुच्छे कसूर भाई।। रवि कहँदा गंगा कोई दूर नाही, वेख कठौती विच गंगा आई होई ए। कर यकीन गंगा पई वगदी ए, दासा जेहड़ी तूँ दूर बनाई होई ए।।

डरदे सेठ नूं भगत इशारा कीता, कठौती विच ध्यान ते मार भाई। वेख ओही गंगा हरिद्वार वाली ठाठां मारे पई देवे बहार भाई।। जदों सेठ ने भर के नज़र डिट्ठा, नज़ारा ओह जो सी हरिद्वार भाई।

जिस किसम दा ल्याया जड़ाऊकंगन,ओसे तरह दे विच कई हज़ार भाई।। सेठ ताईं रवि भगत कहन लगा, चुक लै कंगन ज्यों ज्यों लाया एं।
जोड़ी इक्को झई बणजाय दास तेरी,शाबाश कहन लोकीं क्यों घबड़ाया एं।

करिश्मां वेख एह सेठ आश्चर्य होया, चरणां विच डिगा सेठ आन प्यारे। मैंनूं बख्श दो होई भुल मैंथों, जड़ाऊ लई जो होया बेईमान प्यारे।। बख्शन हार सदा ही बख्शदे ने, जीव भुलदे आये जहान प्यारे। मैं तां गलत रस्ते सां भुल पया, अमानत त्वाडी नूँ लगा दबान प्यारे। रविदास कहँदे कोई गल नाहीं, लै जा कंगन नाल कंगन मिला के ते। शर्म नाल न हथ वधाए दासा, रवि दित्ता कंगन खुद उठा केते।।

भक्त नामदेव

ज-जन्म लैंदा जिस कुल दे विच, नामदेव जैसा भक्त कोई है जी। सत्त पीढ़ीयाँ अग्गों वी तार देंदा, सत्त पिछलियाँ तारे भक्त सोई है जी।। संस्कार पुर्बले होंवंदे ने लग जावंदी ऐसी ही ढोई है जी। ओह गाँव वी धन्य, मात-पिता, जिथे जन्म गुरु भक्त दा होई है जी।। पंढरपुर विच जन्म नामदेव जी दा, ज्ञानदेव जी दे चेले कहावंदे सन। एह पर दास सन विष्णु सम्प्रदाय दे, वामदेव दे नवासे सदावंदे सन।।

ज़रा ध्यान देके तुसीं सुनो कथा, वामदेव ईश्वर दा भक्त है सी। नित्य नहालवंदा ते वस्त्र पहनावंदा सी, मूर्ति पूजा दे विच आसक्त है सी।। तिलक सी लावंदा भगवान दी मूर्ति नूँ,चित्त चरणां दे विच अनुरक्त है सी। फिर भोग लगावंदा प्रेम दे नाल, वल्लों दुनियाँ दे चित्त विरक्त है सी।। वामदेव दी भक्ति कमाल है सी, दास ऐसे प्रेम विच बह गया। नामदेव ते असर उसदी भक्ति दा, बड़ा गहरा हृदय ते पै गया।।

जांदे वक्त नामदेव कहन लगा, करके आहोज़ारी अपने नाना जी नूँ। एह मूर्ति मैंनूं तुसीं दे जाओ, कह शौक दे नाल अपने नाना जी नूँ।। पूजा करांगा श्रद्धा दे नाल इसदी, हथ जोड़ के आखे अपने नाना जी नूँ। मेरी बेनती एह स्वीकार करो, कहँदा बार बार अपने नाना जी नूँ।। नाना जी जान गये प्रेम उसदा, बालक समझ के टाल मटोल कीता। गल्लां नाल ओस नूं परचान लगे, हठ दास ने बेमिसाल कीता।।

झ-झट प्रेरणा होई ऐसी, वामदेव नूँ कम्म कोई पै गया। उस जाना सी किसे गाँव दे विच, नामदेव नूँ जांदेयां कह गया।। तू मूर्ति श्री भगवान जी दी , मैंथों मंगदा मंगदा रह गया।

लै, सेवा करीं बड़े प्रेम दे नाल, इतना कह श्री मूर्ति दे गया।। दासनदास बड़ा प्रसन्न होया, बड़े चिरां तों उस दी मँग है सी। उसदी खुशी दा नहीं अन्दाज़ कोई, पूरी हो गई दिली उमंग है सी।

झपट्टा मार के बड़ी ही खुशी दे नाल,श्री मूर्ति नूँ छाती दे नाल ला लिया। प्रातःकाल जद नाना जी चले गये, दिन बीतया संध्या काल आ गया।। गऊ लै आया जाके जंगल विचों, बड़े प्रेम दे नाल दुध उसदा दोह लिया। गरम कर के मिश्री मिला दित्ती, ते कटोरा दुध दा भर लिया।। लै जा के सामने मूर्ति दे, कहँदा दुध प्रभु जी पीजिए। कुछ थोड़ा जिहा दासन दास नूँ वी, प्रशाद बचा के दीजिये।।

झूठा नहीं सी है सी सच्चा प्रेमओहदा, लेकिन जवाब न दित्ता श्री मूर्ति ने। दूध पीना ते रह गया इक पासे, सोचां विच पा दित्ता प्रभु मूर्ति ने।। फिर सोचया मिश्री शायद घट पाई,तां भोग न लीता हरि मूर्ति ने। होर मिश्री मिलाई फिर दुध दे विच, फिर वी दुध न पीता गुरु मूर्ति ने।। नामदेव अजे छोटे बच्चे ही सन, दुःखी हो के रोन चिल्लान लगे। टस तों मस न होई श्री मूर्ति वी, दास रोंदे रोंदे सौं जान लगे।।

ट-टुर पये प्रातःकाल नूं फिर, गर्म करन लगे दूध जा के ते। श्री भगवान नूँ भोग लगवान लगे, गर्म दुध विच मिश्री पा के ते।। भोग लगाया न अज वी मूर्ति ने, खाना छोड़ बैठे घबड़ा के ते। जेकर भगवान जी भोग लगावंदे नहीं,मैं वी की करना ए फिर खा के ते।। आप भोग लगा परसाद देसन, तां खावांगा एह विचारया ए। जबतकओह भुक्खे मैं वी रहवां भुक्खा,एहो दास ने दिल विच धारया ए।।

टस-मस न होए भगवान प्यारे, इसे तरह ही कई दिन बीत गये। दुःखी हो के सोचया पापी हां मैं, ओह पवित्र ते नाले पुनीत भये।। इसे वास्ते भोग स्वीकार नहीं, मैं हारया ते ओह जीत गये। पापी जीवे क्यों सोच कटार पकड़ी, दिल विच भगवान भयभीत भये।। जदों मारन लगा अपने गले उत्ते, झट प्रगट कृष्ण मुरार होके। इक हथ नाल दुध नूं पीन लगे, दूजे हथ नाल दास दा हथ रोके ।।

टुक सुनो तो कृष्ण भगवान मेरे, बड़ा खुश होके ते ओह कहन लगा। इन्तज़ार करदियां करदियाँ ही, कई दिनां तों भुक्खा मैं रहन लगा।। कुछ बचा के मैंनूं भी देना भगवन, विच हठ दे भुख मैं सहन लगा। वेख तन मेरा कमज़ोर होया, मैं ताँ टुरदियां टुरदियाँ ढहन लगा। झट हँस के कृष्ण मुरार जी ने, कटोरा दुध दा हथ विच दे दित्ता।। बड़े प्रेम नाल अमृत पी के ते, दासन दास ने सुख दा सांस लित्ता।।

ठ-ठौर पे पलंग सजा दित्ता, भगवान कृष्ण नूँ फिर बिठाया ए। हथ जोड़ के ते फिर पुच्छन लगा, मैं केहड़ा अपराध कमाया ए।। त्रै दिन तक वास्ते रिहा पांदा, तुसां भोग न दुध दा लाया ए। मुस्करा के कृष्ण अन्तर्धान हो गये,कोई जवाब न उन्हां तों बन आया ए।। हुण ते ज्यों कटोरा सामने आवँदा सी, प्रगट होकर झट ही लैंदे सन। दुध पी के थोड़ा कृष्ण मुरार होरीं, बाकी दास दे हथ विच दे देंदे सन।।

ठहरे वामदेव कई दिन गाँव दे विच,आखिर कार ओह इक दिन आंवदे ने। आके पुछन लगे नाम देव कोलों, बेटा भगवान जी भोग लगांवदे ने।। नामदेव कहानी सारी आप बीती, अपने नाना जी नूँ झट सुनावंदे ने । नाना आखदा दर्शन करवा मैंनूं, ओन्हूं किस तरह दर्शन करवावंदे ने।।

नामदेव कटोरा लै दुध भरया, श्री मूर्ति दे सामने लै गये। प्रगट होन विच भगवान ने देर कीती, दास धरना मार के बह गये।।

ठीक नहीं एह गल सतान वाली, नामदेव ने झट कटार पकड़ी। कहँदा पीयो नहीं तां गला उतार दियाँगा,तेरेचरणाँ च दिल दी तार जक्ड़ी।। तैनूँ पहले वी मैं समझाया सी, करन लग पया तूँ रोज़ रोज़ अड़ी। प्रगट होके कृष्ण दुध पीन लगे, देर लाई न फिर इक झट घड़ी।। फिर दित्ता परसाद कर-कमल दे नाल, वामदेव ने जदों परसाद पाया। नाल देख के कौतुक आनन्द भरया, दास खुशी दे विच फूला न समाया।।

डाल-ढाल बन के मालिक करन रच्छा, भक्तां जदों भगवान बुलाया ए। धाक बँध गई नामदेव दी जद, बादशाह अकबर ने दिल्ली तलबाया ए।। कहन लगा मैं सुनिया ए इस तरह, कि तू सच्चे रब नूँ पाया ए। दर्शन मैंनूं वी ज़रा करा दे तूँ, वामदेव नूँ जीवें कराया ए।। नामदेव बोले मेरे विच की शक्ति, अते मैं गँवार की जानदा हाँ। दास छीपी हाँ दिन भर कम्म करदा, इसे कम नूँ सब कुछ मानदा हाँ।।

डेरा साधुआँ ने जित्थे लाया होवे, घर उन्हां नूँ चा बुलावँदा हाँ। सन्धया समय कमाई जो मिल जावे, उसदा रसद पानी लै आवंदा हाँ।। नाल मिल के सन्तां साधुआं दे, श्री भगवान नूँ भोग लगावंदा हाँ। इस तों वध के होर न कुछ जाणा, बस एह जानदा ते नाले जनावंदा हाँ।। कहे बादशाह गल्ल न भन्न मेरी, मोई गाँ नूँ पहले जिवा प्यारे। दासनदास नूँ कैद विच कर कहँदा, नहीं ताँ फाँसी दी मिलेगी सजा प्यारे। डरे मूल न ओस वेले नामदेव जी, मस्त होके भजन बनान लगे। नच नच के प्रेम विभोर होके, प्रभु चरणां विच बेनती सुनान लगे।।

पहला पद सी भजन दा एस तरह, विनती सुनो जगदीश एह गान लगे। हालत देख के प्रेम दिवानियां दी, भगवान खुद ही चल के आन लगे।। ओहदी कृपा दे नाल गां मोई होई, जिन्दा हो उठ खड़ी ते चिल्लान लगी। दासनदास दी वाणी अपने प्रभुवर दे, गुणानुवाद ते नाले यश गान लगी।।

ढ-ढह प्या बादशाह पैरां उत्ते, मुआफी मंगन लई बेनती करन लगा। तंग कीता मैं सेवक भगवान दे नूँ, मते शाप देवे ओह डरन लगा।। हथ जोड़ केआखदा हुक्म करो,खज़ाना खोल धन चरणां विच धरन लगा। कहँदाआखो-तां करां जागीर हाज़िर,भुल बख्शो जीआन तेरी शरण लगा।। अग्गों बोल्या भक्त भगवान दा ए, की करारंगा लैके जागीर तेरी। बस करदे मैंनूं विदा एत्थों, दास कहँदा ए एहो तकरीर मेरी। ।

ढंग-सोहणे नाल विदा कीताअकबर ने,जड़ाऊसोने दा पलंग भेंट रखके ते। टुरे आदमी नाल पहुँचान वाले, ओसे पलंग नूँ सिर ते चुक के ते।। राह विच नदी इक वगदी सी, कहंदा मुड़ जाओ-पलंग विच सुट के ते। ओन्हां सुट दित्ता पलंग नदी दे विच, दौड़ आया बादशाह एह सुन के ते।। अजे नदी किनारे एह बैठा ही सी, घबड़ाये क्यों हो बादशाह जी-आओ। कई पलंग नदी विचों कढवा दित्ते, दास कहँदा अपना पलंग लै जाओ।।

ढट्ठा बादशाह फिर आ चरणां उत्ते, दिल विच बड़ा शरम सार होया। सच्चे बादशाह ते तुसीं आप हो जी,मुआफ करो मैं बड़ा खतावार होया।। भगत कहंदा मैं पहले ही आख्या सी, कोई पदारथ न एत्थे दरकार होया। जाओ अपना कम्म सँवारो जाके, मेरा वक्त वी ऐंवें बेकार खोया।। किसी साधु-महात्मा नूँ छेड़ना ना, एह नसीहत हमेशां ही याद रखना। इम्तिहाँ लैणा न कदी वी भुल के ते, सेवा करनी ते दास एतकाद रखना।।

क-करां सिफत सतगुरु पूरेयां दी,अपने सेवक दा रखदे जो ख्याल हरदम। किसे बन्धन दे विच न बँध जावे, रहे आज़ाद ते होवे खुशहाल हरदम।। मगन रहे सुमिरण ध्यान दे विच, सुरत जुड़ी रहे शब्द दे नाल हरदम। भक्त भक्ति तों कदी न थिड़क जावे,भक्ति धन विच रहे मालोमाल हरदम।। उन्हां बीड़ा उठाया अपने सेवकां दा, भवसागर तों पार उतारने दा। औखे वेले सहाई बन के दासां दा ओह, ज़िम्मेवार है कष्ट निवारने दा।।

कथा एस तरह उस भक्त दी ए, जिसदा नां प्रसिद्ध संसार अन्दर। नामदेव छींबा तुसां सुनेया होसी, उस दी कथा प्रचलित संसार अन्दर।। नित प्रति ओह घाट ते जाँवदा सी, कपड़े धोवँदा बेशुमार अन्दर। नाले मनके पिरोंवंदा नाम वाले, अट्ठे पहर ओह दिल दी तार अन्दर।। कपड़े धोके ओत्थे सुकावँदा सी, गट्ठ बन्न के फिर तैयार करदा। गट्ठ चुक के घर नूं टुर पैंदा, दास रोज़ दी एहो ही कार करदा ।।

कथन इक दिन दा नामदेव घाट उत्ते, दिल दे विच सी पया विचार करदा। कहंदे भक्त जो प्रभु दा हो जावे, फिर आप ओह भक्त दी सार करदा।। उसदे नाम उत्ते वारे जिंद जेहड़ा, भवसागरों ओसनूँ पार करदा। जेकर मेरा इक कम सँवार देवे, समझां फिर ओह बड़ा उपकार करदा।। घोड़ी देवे जे चंगी जेही इक मैंनूं, ओहदे घर घाटा किसे गल दा नहीं। रहे जान सौखी, करां कम्म सौखा, दास घोड़ी बिना कम चलदा नहीं।।

ख-खूब एह सोच विचार कीता, भगवान ने भक्त दे हित दे लई । नामदेव नूँ घोड़ी जे दे दित्ती, सुमिरण भुल जाएगा एह नित दे लई।। सेवा रात दिन घोड़ी दी बन जाएगी, इक नई ही बाधा एहदे चित्त दे लई। कदी घास लै आवे ते कदी पट्ठे, कदी चिन्ता करेगा लिद दे लई।।

कदी मालिश करेगा घोड़ी दी एह, घर दा धन्धा वी होर दुश्वार होसी। भजन-बन्दगी ते रह गये इक पासे, अपने आप तों दास लाचार होसी।।

खबर दुखां दी नहीं घोड़ी रक्खन दे जो,एहनां दुखां तों भक्त बेखबर है जी। घोड़ी मँग बैठा दिलों खुशी दे नाल, क्योंकि सुखां उत्ते एहदी नज़र है जी।। जदों घोड़ी नूँ कोई दुख-दर्द होसी, तदों रखना पवेगा सबर है जी। इस वास्ते दुख दिखाइये पहले, जेकर फिर वी कहेगा शुक्र है जी।। भगवान फिर सोचया घोड़ी फिर दे दियाँगे, नामदेव दी जेकर उमंग है जी। फिर सानूं कोई न उलाहना देसी, क्यों कि दास दी अपनी मँग है जी।।

खड़े पास भगवान ने अर्ज़ सुन लई, आया खान इक घोड़ी सवार ओथे। कारण आन भगवान दा होया ऐसा, घोड़ी सू पई आवंदियां सार ओथे।। सूई घोड़ी पठान ने जदों देखा, नामदेव नूँ कहे ललकार ओथे। लै ओए छींबिया साँभलै,चुक्क एहनूँ, मेरे नाल चल छड आ भार ओथे।। बछेरी चुक पठान दे नाल टुरिया, कहंदा खूबियाँ हैन मुरार दियाँ ए। मंगी चढ़न नूँ दित्ती चुका दासा, हर मुश्किलां हो गईयां यार दियां ए।।

ग-गर्ज़ सी घोड़ी दी चढ़न दे लई, वाह वाह प्रभु तूँ चंगी कित्ती। मन विच पया एहो चितारदा ए, मंगया सुख ते उलटा तंगी दित्ती।। गल्ल संमझेया नहीं भगवान मेरा, बेशक चीज़ ते मैंनूं मुँह मंगी दित्ती। अग्गे कम बहुतेरे जो मुकदे नहीं, उत्तों कार एह मैंनूं बेढंगी दित्ती।। चंगा कीता भगवान जो दस्स दित्ता, घोड़ी रखन दा एह दुःख होवंदा ए।
एहो सोचदा सोचदा टुरी जावे, दास दिलों प्या गम खावंदा ए।।

गर पास मेरे अपनी घोड़ी होंदी, ओह वी सू पैंदी अज इस तरह।

फिर मेरा वंगारी अज कौन बनदा, बछेरी चुक लै जावंदा इस तरह।। मैं बछेड़ी चुकदा ते भावें धोते कपड़े, टोर घोड़ी लै जांदा भावें इस तरह। हैरान ते नाले परेशान होंदा, दुःखाँ विच फँस जाणा सी इस तरह।। घोड़ी रख सकदा ओह आदमी है, जिसदा हुकम सब ते चलदा है। दासनदास नूँ हुण पता लग गया, घोड़ी रखना ते घर दुख दा है।।

गट्ठ घास दी वड्डी सारी चाहिदी है, पट्ठे रोज़ ही घोड़ी दे खान दे लई। कदी मालिशकरदा नाले थपकी देंदा,चिन्ता करदा फिर पानीपिलान दे लई। मैं तां घोड़ी दी सेवा विच लगा रहंदा, लोक कपड़े मँगदा पान दे लई। कौन धोंदा कपड़े नाले नाम जपदा, मैंनूँ फुर्सत न मिलदी स्नान दे लई।। मैं तां भुल के घोड़ी हां मँग बैठा, हे प्रभु मैंनूं दुःखां विच फसा नाहीं। सोचां सोचदा हौली हौली टुरदा सी, दास तन विच जीवें दम साह नाहीं।।

घ-घाट नदी दा पार कर के, पुछे दसों खां खान जी जाना कित्थे। तुहाडे रोब करके डरके चुकलई ए,कुवल्ले भारनूँ दस्सो पहुँचाना कित्थे।। हुण ते मोंढा वी गया जे थक मेरा, कितनी दूर मुकाम-लै जाना कित्थे। खादे-पींदे ते की हो कम करदे, तुहाडे रहन दा असल ठिकाना कित्थे।। की नाम ते केहड़ा है धाम तेरा, कोई अपना पता निशान दस्सो। किधरों आये किधर हुण जावणा जे, दासनदास ते हो मेहरबान दस्सो।।

घोड़ी रोक के ते तुरत पठान कहँदा, मेरे रहन दा जाने मुकाम कोई कोई। लूं लूँ ब्रह्मण्ड दे विच रचया, ज़ाहिर हाँ पर सके पछान कोई कोई।।
खाना खावां मैं हत्थों प्रेमियाँ दे, प्रेमी भक्त मेरा देवे आन कोई कोई। जेहड़ा बने मेरा मैं उस दा हां, इस रमज़ नूँ जाणे सियाना कोई कोई।। मेरे नगर नूं सारे ही जानदे ने, बड़ी सोहणी द्वारिका नगरी ए।

सारे सुख मैं दासां दे लई रखे, ओत्थे पई होई सारी सामग्री ए।।

घड़ी पल विच भक्त पहचान गया, मुगल रुप विच मेरे भगवान आये। झीने माया ते काल दे बन्धन कोलों, अपने भगत नँ आप बचान आये।। जेहड़ा सुख कल दुःख दा रूप होसी, उस दा असली रूप दिखान आये। दुःख विच वी चित्त अडोल रहवे, सहनशीलता मेरी अज़मान आये।। दासनदास ने झट एह सोच के ते, अपने मोढे तों लाह बछेड़ी दित्ती। सच्चे आतम हितैषी इष्टदेव जी नूँ, साष्टांग दण्डवत प्रणाम कीती।।

च-चरण छू के कृतकृत्य होया, हत्थ जोड़ के आतुर पुकार करदा। पल पल विच ऐ गुरुदेव मेरे, अपने भक्त दी तूं सँभार करदा।। जदों राह कुवल्ले ते पै जांदा, बाँह पकड़ तूं ओन्हूं पार करदा। बलदी अग्ग च बच्चा जीवें हत्थ पावे,माता वांग तूँ दूरों खबरदार करदा।। किसे जनम विच तेरे एहसान दा मैं, नहीं बदला कदी चुका सकां। कर्ज़दार हां मैं तेरी दयालुता दा, दासन दास न कर्ज़ मुका सकां।।

चिरकाल तों बँधी मर्यादा है एह, प्रभु भक्त दे सदा रछपाल होंदे। जदों कोई मुसीबत आवे ओस उत्ते, प्रभु दुःख दे सदा भाईवाल होंदे।। उसदे दुख दा हिस्सा वँडान दे लई, झटपट ओत्थे हाज़िर आन होंदे। प्यारे भक्त भगवान दी छां तले, बेफिकर हो चादर तान सौंदे।। न कोई गम न फिकर सताये ओहनूँ, हर चीज़ विच उसनूँ भगवान दिस्से। दुःख-सुख व्यापे न दास ताईं, हर हाल विच प्रभु मेहरबान दिस्से।।
चरम सीमा ते प्रेम जद पहूँच जांदा, नामदेव दियाँ गल्लां न्यारियां ने। अग्ग लग गई इक दिन घर इसदे, सड़न लग पइयां चीज़ां सारियाँ ने।। समझे अग्ग नूँ ज्योति स्वरुप प्रभुवर, प्रचंड रूप होइयां चिनगारियाँ ने।

जेहड़ी चीज़ अपनी घर तों बाहर वेखी, विच सुट के कहँदा तुम्हारियाँ ने।। प्रकट होके कृष्ण मुरार पुछदे, प्यारे भक्ता तूँ एह की कर रिहा सी। कहंदा ज्योंति स्वरुप दा दर्शन पाया,दासनदास सरबस भेंट कर रिहा सी।।

छ-छप्पर जल के राख होया, नाले हो गया राख सामान उसदा। बे फिकर निश्शंक निर्भय सी ओह, फिकर करन लगे भगवान उसदा।। खड्डे खोद के ते थूनियाँ गड्ढ के ते, रातों रात ही घर बनान उसदा। सब चीज़ करीने दे नाल रख के, कायम कर दित्ता फिर मान उसदा।। ऐसी सुन्दर छान बना दित्ती, अखीं डिट्ठी न कन्नी सुनी होवे। दासनदास है गल आश्चर्ज वाली,केहड़ी छान जो घडियाँ विच बनी होवे।।

छाजन बन के जदों तैयार हो गई, पूरब दिशा वलों सूरज निकल आया। सारे गाँव वाले लोक जाग उठे, बनया नामे दा नया महल पाया।। इस नवीं कहानी नूँ सुन के ते, दूरों पुछण लई लोक चल आया। नामदेव नूँ पुछण सारे गाँव वाले, घर बनान दा तैनूँ कीवें वल आया।। रातों -रात बना दित्ती छान तेरी, ऐसा कारीगर दस्स कित्थों मिलया ए। थम्बे गड्ढ के ते छप्पर छा दित्ता, दास बदले विच उसने की लिया ए।।

छल-कपट तो रहित सी भक्त दा दिल, साफ साफ ही उसने कह दित्ता। जिसने एह छान मेरी छाई है, मज़दूरी बदले उसने सरबस लीत्ता।। किसे गल दा होर नहीं पता मैनूँ, मैं हारया ते ओह है जीता।। अपनी मेहर दे नाल गुनाह बख्शे, नहीं वेखदा ओह जो कर्म कीता। भक्तां लई ओह कष्ट सहारदा ए, थां थां ते उन्हां दी आन रखदा। प्रत्यक्ष रुप विच दर्शन दीदार दे के, दासनदास दा आप ही मान रखदा।।

भाई पतंग

ज़ाल-ज़िक्र करां भाई पतंग जी दा, ज्यों कर गुरां ते ओहदा विश्वास भाई। गुरुअर्जुनदेव दा सीओह सेवक,शहर लाहौर दे विच सीओहदा वास भाई।। दुकान दारी दाओह सी कम करदा,रख के गुरां दी दिल विच आस भाई। ईमानदारी दे विच सी बहुत पक्का,अमानतां रखदे सनलोकउसदेपास भाई। धर्म किरत विचों दसवन्ध कढ के, देंदा रहंदा गुरु दरबार नूँ सी। साध सन्त दी सेवा दासन दास करदा, रोज़ ऐसी ओह कार नूँ सी।।

ज़रा जिनी न ओस विच बेईमानी, छोटे-वड्डे उस नूँ चंगा जाणदे सी। हिन्दु सिख मुस्लिमओहदी कदर करदे,दिली यार सन हर इन्सान दे जी।। हर इक दा बन्या इतबार उसते, ऐसे सच्चे सन पूरे जुबान दे जी। डरदे रहन हमेश गुरुदेव कोलों, मस्त रहन विच सतगुरु ध्यान दे जी।। इक वार पै गया कुदरती झंझट उसनूं, ओह खोल के करां ब्यान भाई। ऐवें ओस तों हो गई ओह गल्ती, वैसे दिलों नहीं सी बेइमान भाई।।

ज़ाती दरबारी जमाल खान सूबे दा इक,कोल आया पतंग दे इकवार भाई। दोसौ मोहरांविच थैली दे सोनेदियाँ ने,अमानत रखलै जाणांमैं बाहर भाई।। भीड़ दुकान ते बहुत सी ओस वेले, कीती भगत न सोच विचार भाई। लै के थैली विच भाण्डे दे धर दित्ती,ऐसी हो गई ओस तों विसार भाई।। न लिखी अमानत अमानत खाते, न थैली खज़ाने टिकाई उसने। अपने कम विच दास फिर लग गया ओ, थैली चेत्यों झट भुलाई उसने।।

रे-रब दा करना फिर होया ऐसा, रहया थैली दा न ख्याल भाई। लैके रखी सी या कि नहीं रखी, सामने आया न ऐसा सवाल भाई।। कुछ चिरां पिछोंअमानत लैन खातिर,इक दिन आ गया मियां जमाल भाई।

मेरीअमानत वाली दो सौ मुहरां देवो,ज़रूरत पै गईआया छेती नाल भाई।। सुणदयां सार भाई पतंग जी ने, अमानत खाता खज़ाने जा के फोल्या ए। अमानत खाते न कोई रकम जमा ,न खजान्यों मिली ते दिलों डोल्या ए।।

रही फिकर दे नाल न होश उसनूं, थां थां ते थैली नूँ टोलदा ए। ढूँढ ढूँढ के ते जदों थक गया, औरत आपणी दे ताईं बोलदा ए।। कित्ते तैनूँ नहीं थैली पकड़ा बैठा, तेरे बाझ बन्दा न कोई कोल दा ए। औरत आख्या मैंनूं न कोई पता, उलटा सुन ओहदा दिल डोलदा ए।। आपे लै अमानतां रखदे ओ, आपे फिर वापिस देवन हार तुसीं। कदी ख्याल कर के न वेख्या मैं, दासा करदे हो जेहड़ा व्यौपार तुसीं।।

रख्या फर्क पतंग न ढूँढने दा, आखिर कहया ओस भाई जमाल नूँ जी। चेता आवँदा नहीं थैली लैण वाला, दौड़ा थकया बड़ा ख्याल नूं जी।। जमा खाते विच जमा न रकम तेरी, मिली खज़ानों न- कीता भाल नूँ जी। गल्ती लगी तैनूं न तू दित्ती थैली, किसे होर थां करो सँभाल नूं जी।। सुनदे सार ही दुखी जमाल होया, भाई पतंग क्यों द्रोह कमान लगों। जोड़ी मुश्किलां नाल सी रकम दासा, देके धोखा हज़म कर जान लगों।।

ज़े-ज़रखाना सारा फोल डिट्ठा, तेरा माल न नज़रीं आया ए। खाता खोल डिट्ठा रकम जमां वाला, हथ जोड़ पतंग सुनाया ए।। किस्से होर थां ते तुस्सीं रख बैठे, झूठा शक तुसां मेरे ते पाया ए। जमाल ईमान दी कसम उठा कहँदा, तेरे बाझ न किसे फड़ाया ए।। मैं गरीब ते कर न ज़ुल्म एडा, दो सौ मोहर मेरी ऐवें मार नाहीं। तेरे बाझ न किसे नूँ थैली दित्ती, दासा तेरे बिन कित्ते इतबार नाहीं।।

ज़बरदस्त कीती खोज जमाल दुनियाँ, दुकान मकान सारा फोल डिट्ठा। अमानतखान्यों भी न मिली थैली,अमानत वाला खाता सारा फोल डिठा।। अमानत पया ज़ेवर इक इक करके, हर इक नूँ पकड़ टटोल डिट्ठा। थैली तेरी दा न ख्याल आवे, दिल दी तकड़ी नाल मैं तोल डिट्ठा।। सोलह आने लगी तैनूँ यार गल्ती, मेरे कोल अमानत न मूल तेरी। रक्खी होर जगह कर याद दासा, कोई हो गई है सख्त भूल तेरी।।

ज़मीन जमाल दे पैरां तों निकल गई, जदों पतंग ने एह सुनाया ए। इक रंग आवे इक रंग जावे, जमाल हथ जोड़ वास्ता पाया ए।। ईमानदार समझ के तेरे कोल रखा, एह क्या मेरे ते ज़ुल्म कमाया ए। वास्ता रब दा मन के दे रकम मेरी, मेरा हक क्यों यार दबाया ए।। बार बार भाई पतंग कहँदा, थैली दित्ती न कोई होई भुल तैनूँ। जीवें मर्ज़ी तेरी जाके कर दासा, मेरे वल्लों जमाल है खुल तैनूँ।।

सीन-सुन जवाब पतंग कोलों, जमाल सूबे दे कोल जावंदा ए। जीवें बीती जमाल दे नाल सारी, जा के सूबे नूँ खोल सुनावंदा ए।। सुण जमाल दी ओसे वक्त सूबा, भाई पतंग दे ताईं बुलावंदा ए। पतंग भगत जी एह जमाल कहँदा, दो सौ मुहर प्या मेरी दबावंदा ए।। पतंग भक्त कहँदा अपने वल्लों मैं ने, एहदी थैली दी कीती पड़ताल सारी। अमानत लिखी न कोई एहदीअमानत खाते, खज़ाने दी कीती भाल सारी।।

सच्चा दिलों जे तुसीं जमाल समझो, दो सौ मुहर कोलों देना चाहवंदा मैं। मैं आत्मा ओहदी नहीं दुखी करनी, कोलों दे के झगड़ा मुकावंदा मैं।। सूबे आख्या करना इन्साफ इस विच, दो सौ मुहर न तेरे ते पावंदा मैं। सच झूठ दा होसी न्यां जीवें, ओसे तरह ही कर दिखावंदा मैं।।

कड़ाह विच तेल पाके खूब गरम करके, विच तांबे दे पैसे पावंदा हां। तत्ते तेल विच पैसे पा दासा, वारो वारी त्वाथों कढावंदा हां। सोच समझ दस्सो तुसीं खड़े दोवें,कहो-ठीक है एह राये जी।। इक न इक ते दोहां विच है झूठा, इक नूँ मिलसी ज़रूर सजाये जी। दोवें सच्चे सन दोहां मन्ज़ूर कीता, ज़रूरी ऐसा होवणा चाहिये जी।। ओसे वेले सूबे ने हुक्म कीता, तेल सख्त तपाया जाये जी। तेल तप के जदों धुआं छडन लगा, दोहां ताईं पास बुलावंदा ए। अग सच्चे नूँ न जलाये दासा, पतंग ताईं सूबा फरमावंदा ए ।।

शीन-शक है तेरे ते जमाल सन्दा, दो सौ मुहर नूँ एहदी दबाई होई ए। विच अमानत दे होई खयानत जापे, एहने तेरे ते तुहमत लगाई होई ए।। इसे खातिर जमाल ने कीता दावा, विच अदालत जिसदी सुनवाई होई ए। पहलों तूँ ई कढ़ाई चों कढ पैसे, जेहड़ी तेल दी असाँ तपाई होई ए।। ओसे वक्त करके याद सतगुरां नूं, तेल तत्ते विच हत च पाया ए। तत्ते तेल विचों भाई पतंग दासा, झट कढ के पैसे लै आया ए।।

शिष्य सच्चे नूं लगी न आंच ज़रा, लगा तेल न ओहनूं मूल गरम भाई। ज़रा जिन्ना न तेल ने असर कीता, ऐसा सतगुरां दा होया करम भाई।। दिलों सतगुरां दे जो हो जांदे, दुख दर्द न रहे कोई भरम भाई। नहीं गुराँ ते जेहड़े विश्वास रखदे, किवें मिटन उन्हां दे खोटे करम भाई।। सूबेदार मन गया सच्चाई उसदी, कहिया जमाल नूं हुण तेरी वार भाई। विचों तेल दे कढ वखा पैसे, सच झूठ दासा होवे ज़ाहिर भाई।।

शाह जमाल कहिया सूबेदार ताई, मैं हाँ सच्चा न एस विच फर्क राई। तत्ते तेल दे विच हथ पान वल्लों, मैनूं मूल न लगदा खौफ काई।।

ऐना-कहके तुरत कढ लियाया पैसे, ज़रा जिन्नी न ओहनूं वी आँच आई।
सूबेदार एह वेख हैरान होया, कहंदा फैंसला करन है कठिन भाई।। तुसीं दोवें ई खरे ते सच्चे निकले, होया मामला बड़ा दुशवार भाई। ज़रा सोच विचार के दसांगा मैं, दोहां विचों है कौन सचियार भाई।।

साद--सुबह सवेरे इतेफाक दे नाल, इक दिन जिवें दुकान ते आइया ए। किसे कम्म दे लई भाई पतंग जी ने, इक भाँडे दे विच हथ पाइया ए।। हथ मारदेयां विचों मिलीओही थैली,जिहदी खातिर एह झगड़ा वधाइया ए। ओसे वेले ई थैली नूँ चुक के ओह, चलके घर जमाल दे आइया ए।। तेरी मिल गई भाई जमाल थैली, एह लै पूरियाँ मुहराँ सँभाल भाई। मैनूं याद न रही सी एहदी दासा, भुल चुक दा करें न ख्याल भाई।।

सिदक दिली ते खरी ईमानदारी, वेख भगत दी ओह हैरान होया। कहंदा भगत जी आदमी सच्चा ऐं तूं, एह यकीन हुण नाल ईमान होया।। काहनूं तेरे ते कीता सी मैं दावा, हुण ताँ डाहढा मैं यार पशेमान होया। ऐवें तैनूं वी कीता परेशान भाई, नाले आप वी मैं परेशान होया।। अपने अपने थाईं दोवें सच्चे है साँ, तां ई तपदे तेल न असर कीता। दासा उन्हां दा होवे न वाल विंगा, जिन्हां खोट न कदे रत्ती भर कीता।।

सुहबत जिन्हां नूं मिली सच्चे सतगुराँ दी,होंदा उन्हां दा कार विहार सच्चा।
सच्ची उन्हां दी रहनी ते सच करनी,बोल चाल ते सुखन गुफतार सच्चा।। जेहड़े पल्ला सच्चाई दा फड़ लैंदे, मदद उन्हां दी करे कर्तार सच्चा। जेहदी वरतन है सच दा दासनदासा,सच्ची खुशी दा ओही हकदार सच्चा।।
दिलों शक ते मैल सब दूर करके, मिले दोस्त दोवें नाल प्यार दासा। होंदी जीत सच्चाई दी सदा जग विच, एस कथा दा एही है सार सच्चा।।

सीस दिये जो गुरु मिलें

व-वक्त श्री कबीर जी दे इक भगत, इक दिन ऐसा ख्याल उठावंदा ए। जा के भगत कबीर नूँ गुरु धारां, गुरु बिन वक्त पया ऐवें जावँदा ए।। घर जाके ओहदे आवाज़ मारी, घर कबीर नाहीं-आवाज़ अगों आवंदा ए। कमाली निकल के घरों पुछदी कम दसो,धारणा गुरु सी-प्रेमी सुनावंदाए।। उसदी लड़की ने अगों जवाब दित्ता,आज्ञा उपदेश दी पिता फरमाई होई ए। गुरु ज्ञान देना-कोई आ जावे, दासा विधि सब उन्हां समझाई होई ए।।

विश्वास नाले चाहवें जेकर बनना सेवक,अन्दर लँघआ बैठ जा आनके ते। गुरु उपदेश तैनूँ मैं भी दे सकां, पूरा सेवक तैनूँ पहचान के ते।। गुरु करिये हमेशां जाण करके, पानी पीवीये प्रेमीयाँ छान के ते। तू वी सोच ले ऐत्थे बैठ करके, गुरु बनावंगा जे दिलों ठान के ते।। ओसे वक्त प्रेमी हथ जोड़ कहँदा, दे उपदेश ते सेवक बना बीबी। कोई न शक गुरुदेव ते दास दा है, हिरदै ज्ञान दी जोत जगा बीबी।।

वाक सुन कमाली दा बैठ गया, कमाली छुरी-कुल्हाड़ी उठावंदी ए। पत्थर कोल ले जाके दोएं चीज़ां, वारो वारी रगड़दी जावंदी ए।। प्रेमी कहंदा छेती टोर बीबी, देरी किस कारण पई लावंदी एं। तेरे कम दे विच मैं हां लगी होई, अगों प्रेमी नूँ बीबी सुनावंदी ए।। कोई देर नाहीं छेती छेती करके, आ रही हथियार लगा के ते। तेज हथियार करें किस लई दास कहँदा, ज़रा मैनूँ भी दसो समझा के ते।।

हे-हुने ही वड्ढांगी सिर तेरा, इस लई पया हथियार लगावना एँ। सिर लइयाँ बाझों न किसे तैनूँ, सेवक अपना दिली बनावना एँ।। इक पासे पावांगी नाम सतगुराँ दा, दूजे पासे सिर तेरा टिकावना ए।

तुल नाम दे होया जे सिर तेरा, ताईं नाम तैनूँ दित्ता जावना ए।। एह सुण प्रेमी ओत्थों नस पया, एह तां घर कोई ज़ालिम कसाई दा ए। मैं तां समझया सां दास ताईं ऐत्थों, रस्ता मिलेगा कोई रिहाई दा ए।।

हवा वाँग जद दौड़दा जा रह्या सी, अगों मिल गये सन्त कबीर प्यारे। पुछया कबीर जी एडा क्यों दौड़दा एं,केहड़ी करआया कोई तकसीरप्यारे।। अगों प्रेमी ने एह जवाब दित्ता, गया कबीर नूँ बनान सां पीर प्यारे। अगों कबीरजी घरमौजूद नहीं सन,लड़की पुछदीआये किसलई वीर प्यारे।। मैने आख्या पीर बनावना सी, कबीर जी ना मिले ने घर कोई। कमाली कह्या मैं वी नाम दे सकां, दासा बैठ जा फिकर न कर कोई।।

होके इक पासे मैं सां बैठ गया, कमाली छुरी कुहाड़ी लगावंदी ए। इक पत्थर ते बैठ के दोहां ताईं, वारो वारी रगड़दी जावंदी ए।। ऐसे गुस्से दे नाल हथियार लावे, जीवें किसे नूँ मार मुकावंदी ए। वेख के ओहनूं मैनूं प्या डर आवे, शायद मैंनूं ही मारना चाहवंदी ए।। मैंने आख्या बीबी जी करो छेती, होर कम किसे मैंनूं जावना ए। तेरे कम लगी हुई हां मैं दासा, होया ओसदा अगों फरमावणा ए।।

ये-यकदम कुहाड़ी तेरा सिर लासी, इक छाबे अन्दर सिर पावांगी मैं। दूजे पासे नाम नूँ रख के ते, फिर तराज़ू दे ताईं उठावांगी मैं।। जेकर नाम दे तुल होया सिर तेरा, सेवक तैनूं फेर बनावांगी मैं। जेकर नाम दे लायक न होयों प्रेमी, नाम देना तैनूँ फेर न चाहवांगी मैं। सिर दित्तियां बाझ नहीं नाम मिलदा, तन मन धन है पैंदा निसार करना। ज्यूँदियां मर के पाइये गुरु-ज्ञान दासा, भवसागरों जिस ने है पार करना।।

याद रब नूं कर के नस्या मैं, एस गल नूँ ज़रा विचारना जी। मैं तां बच के आ गया ओस कोलों, अवश्य उस हैसी मैनूँ मारना जी।। कबीर जी दे घर इस तरह अंधेर डिट्ठा,दसो उस कि किसे नूँ तारना जी। वांग कसाइयाँओहदे घर कसब होंदा,कोईन शुद्ध डिट्ठी उसदी धारना जी।। कबीर जी सुण के ते गल ओहदी, फरमान लगे एह ओस नूं फिर भाई। जेकर सिर बदले सी गुरु ज्ञान देंदी, दासा तेरे ते ओहदी सी मेहर भाई।।

यवले कदी न गुरां तों नाम पांदे, नाम पावंदे विरले कोई शेर बीबा। अमृत देवंदे ने ओस जीव ताईं, पञ्जभौतिक ले मिट्टी दा ढेर बीबा।। ओन्हां सतगुरां नूँ कित्थे पावना एं, मन पापी दे रहन जो ज़ेर बीबा। सिर दित्तियाँ जेकर नाम मिलदा, लै लइये फिर करिये न देर बीबा।। मनमत लै आई भजा तैनूँ, गुरुमत दे वल मन न जाण दित्ता। धोखे विच पाके तैनूँ मन पापी, दासा लैण न सच्चा ज्ञान दित्ता।।

ये-यार अफसोस तेरी ज़िन्दगी ते, सिर न गुरां नूँ देणा मन्ज़ूर कीता। सरपर शरीर तेरा इक दिन जावणा ए, हुकुम जिस दम धुरों हुज़ूर कीता।। पंजभौतिक शरीर न आपणा ए, ऐवें जिस दा तूने गरूर कीता। जिस मकसद दे लई शरीर मिलया, उस मकसद नूं दिल तों दूर कीता।। बड़ी भुल प्रेमी लग गई तैनूँ, वेख छुरी कुहाड़ी नूं नस्या तूं। सांग ओहसी फकत तेरी परख खातिर,दासा हुण जेहड़ा मैंनूँ दस्या तूँ।।

यकीन रख के गुरां दी मन लैंदों, सिर उसने न तेरा उतारना सी। सारी रचना रचाई सी तेरी खातिर, तेरा विगड़या कम सँवारना सी।। बे सोचे समझे ओत्थों नस आयों, प्रेमी ज़रा तां सोच विचारना सी।

नाशवान शरीर एह न रहनवाला, इस दे देन कारन काहनूं हारना सी।। एह तन सारा विष दी बेलरी ए, गुरु-नाम अमृत दी खान प्यारे। सिर दे के जे गुरु-ज्ञान मिलदा, दासा फेर भी सस्ता जान प्यारे।।

यश सुण गुरुदेव दा डिग्गा चरणी, मैं बलिहार जावां लख वार साईं। मैं हां जीव पापी भुलया बहुत भारा, मेरी भुल बख्शो बख्शनहार साईं।। नामदान देके लाओ सच मारग, भव सागरों कर दयो पार साईं। असल भेद नूँ ज़रा न समझया मैं, मारी गई सी बुद्धि विचार साईं।। उसे वक्त ओहनूँ नाम-दान देके, कबीर अपना शिष्य बनाया ए। निष्काम सेवा विच लाके दास ताईं, भव सागरों पार लगाया ए।।

चन्द्रहास

अलफ-आसरा केवल सतगुरां दा होर किसे दी मूल नहीं आस मैंनू। तेरी किरपा दे नाल प्यारे सतगुरु मिलया चरण कमल विच निवास मैंनू।। हर तरह दी मेरे ते मेहर कीती ऐसी सच्ची मिल गई विरास मैंनूं। दुख सुखाँ दे विच तूं बदल देंदा होण देवें न कदे उदास मैंनूं।। तेरी किरपा नूं मुख रख के, चन्द्रहास दी कविता बनान लगा। जीवें हर थाँ ते ओहदी रक्षा कीती, ओहदी सब खोल के सुनान लगा।।

बे-बहुत मुद्दत हुई विच केरल, प्रतापी राजे दा लड़का चन्द्रहास भाई। थोड़ेदिनां दाअजे सीओह लड़का,अचानकहमला कीता दुश्मन खास भाई।। राजे ताईं पहलां उन्हां मार दित्ता, कीता राज़ दा फेर सत्यानास भाई। जदों रानी ने देख्या राजा मर गया ए, होई जुदाई विच सख्त उदास भाई।। पति नाल सती हो गई ओह रानी, पति बाझ की पिछों गुज़रान मेरी। पति गया जिधर चली गई उधर, दासा दुःखी होसी पिछों जान मेरी।।

पे-पकड़ के चन्द्रहास ताईं, इक दाई लशकर विचों बाहर लाई। केरल राज विचों ओहनूं कढ के ते, कुन्तल राज दे विच बचा लाई।। पुत्रां वांग ही पालदी रही दिलों, उपकार लई ऐसी कर दी कार आई। ओहदी ज़िन्दगी लई हथ जोड़दी रहे, होर ओहनूं न कदी विचार आई।। कुछ मुद्दत पिछों जदों ओह लड़का, कुझ हो गया सी होशियार बेली। कूच कर गई किस्मत नाल दाई, दास हो गया जदों उडार बेली।।

ते-तगड़ा अक्ल विच आन होया, जगत विच चलदा सोहणी चाल नूं सी। माड़ा-मोटा रोज़गार करन लग पया,पैदा करन लगा रोटी-दाल नूं सी।। शुभ कर्मां वाला सी बहुत लड़का, हर दम सुमिरदा दीनदयाल नूँ सी।

जिस वास्ते दुनियां दे विच आया, समझ आई होई ओस बाल नूँ सी।। इक दिन लँघदियां होयां बाज़ार विचों,सामने मन्दिर ओहनूं नज़रीआवंदाए। भक्ति भाव वाला सी ओह दासा, एस वास्ते मन्दिर दे अन्दर जावंदा ए।।

टे-टाईम ओसे अन्दर की देखे, साधु मण्डली डेरा सी लाई बैठी। सतसंग उन्हां दा सुनन वास्ते जी, बाहरों संगत बड़ी सी आई बैठी।। साधु मण्डली बड़े प्रेम दे नाल, सतसंग दी झड़ी सी लाई बैठी। प्या किरपा दा उस थाँ मींह वस्से, संगत प्रेम दे विच सी समाई बैठी।। महन्त मँडली दा विराजमान जित्थे, चन्द्रहास जा सीस निवावंदा ए। नामदान बख्शो मेरे ताईं सतगुरु, दास बण के अर्ज़ सुनावंदा ए।।

से-साबती ओसदी देख पूरी, अपने आप दा दस्या ज्ञान सतगुरु। स्वांस-स्वांस विच सबद कमावना ए,हितचित दे नाल करीं ध्यानसतगुरु।। असल विच एहो तेरा धन अपना, तेरी करेगा आप कल्यान सतगुरु। होर झूठ सब जगत दी कार्रवाही, गुरु सबद सच्चा सच्चा जान सतगुरु।। फोटो दित्ता सतगुरां ने ओस ताईं, सदा हिरदे दे विच बिठा रक्खीं। आरती-पूजा नित नेम दे नाल करनी, सुरति इस दे विच अटका रक्खीं।।

जीम-जेहड़ा राजा कुन्तलपुर दा सी, इको लड़की न होर औलाद भाई। ओह राजा बड़ा धर्मात्मा सी, करदा ईश्वर ताईं सदा याद भाई।। राज विच न उसदा दिल फस्या, हर पासों रहावें आज़ाद भाई। धृष्टबुद्धि वज़ीर नूँ राज दित्ता, राज हो न जाये बरबाद भाई।। राज मेरा ते इन्तिज़ाम तेरा, ईमानदारी दे नाल चलावंदा जा। आमदन राज दी मैंनूं वी देवंदा रह, दासा आपणा वी वक्त लँघावंदा जा।।

चे-चालबाज़ बड़ा धृष्टबुद्धि, ओहदे दिल एह सदा ख्याल भाई। राजे मर जाणा थोड़े दिनां तीकण, राज लैणा फिर असां सँभाल भाई।। दो पुत्र अगों धृष्टबुद्धि दे सन,नाम विमल ते मदन गोपाल भाई। मदन गोपालओहदा समझदार लड़का,नेक ख्यालओहदे सोहणी चालभाई।। सेवा साधवां दी मदन रह करदा,वाह वाह ओस एह आदत बनाई हुई सी। दास निर्धनां नूँ हत्थों रहे देंदा,एह भी सिफत सब ओस विच पाई हुई सी।।

हे-हक दी कर कमाई मदन, इक दिन साधवां ताईं बुलाया सी। सारे आन के ऐत्थे प्रशाद पावन, प्रबन्ध मदन ने सब कराया सी।। साध मण्डली संग चन्द्रहास लड़का, भोजन करन दे वास्ते आया सी। पंगत विच बैठ गई सारी संगत,सेवादारां ने भोजन वर्ताया सी।। इक साधु दे कोल चन्द्रहास लड़का, प्या बैठ के खाना खावंदा ए। धृष्टबुद्धि खलो के विच संगत सारी, दास बन के एह सुनावंदा ए।।

खे-ख्वाहिश होवे चीज़ होर दी जे, ओह भी देन नूँ हां तैयार भाई। ओहदी गल सुण के साधु इक हस पया, कोई करके सोच विचार भाई।। धृष्टबुद्धि ने ओस तों वजह पुच्छी, हस्या क्यों होके समझदार भाई। ओसे साधु ने अगों जवाब दित्ता, मेरे कोल जो बैठा दुलार भाई।। इस राज दा होवणा एस मालिक, एस राजे दा नाले जवाईं होसी। इस ने राज दा मालिक अवश्य बनना,दासा इक दिन हुकुम खुदाई होसी।।

दाल-दस्या सन्तां दा सुण के ते, धृष्टबुद्धि संगत विचों निकल जावंदा ए। फिकर ओसनूं आन के लगा ऐसा, जिस दा अन्त हिसाब न आवंदा ए।। एह तां राज सी मेरा एह की बनन लगा,सुन के धृष्टबुद्धि गम खावंदा ए। सच्चा सन्तां दा किधरे न वाक हो जाये, एस गल्लों वज़ीर घबड़ावंदा ए।।

एस वेले है मेरा अख्त्यार सारा, चन्द्रहास नूं मार मुकावंदा हाँ। हुणे एहदे मारन दे लई दासा, कोल जल्लादां दे झट पट जावंदा हाँ।।

डाल-डरया न मूल भगवान कोलों, जलादां कोल गया बेईमान भाई। चन्द्रहास लड़के ताईं मारना एं, जिस लई मेरी होई दुखी जान भाई।। जो कुझ मंगोगे देआंगा आप सब नूँ, पूरी करांगा कीती ज़ुबान भाई। मण्डली विच बैठे चन्द्रहास ताईं, गया जल्लादां नूँ बज़ीर विखान भाई।। जल्लादां वेख के आख्या मार देयांगे, सुण के वज़ीर न फूला समावंदा ए। दास मारन वाले नालों ओह डाढा, बलदी अग तों जेहड़ा वचावंदा ए।।

ज़ाल-ज़रा जलादां न तरस कीता, कसाई वांगरा फड़ लै जावंदे ने। मुश्कां बन लियां चन्द्रहास दियाँ, खौफ रब दा मूल न खावंदे ने।। आखिर उस बच्चे नूँ जंगल दे विच, इक नदी किनारे पहुँचावंदे ने। लड़के आ मरन दे लई तैयार होजा, नंगी कर तलवार दिखावंदे ने।। लड़का आखदा उन्हाँ जल्लादां ताईं, वीरो किस लई मैनूँ मारदे ओ। की मिलेगा मारे बेदोष ताईं, दासा क्यों न सोच विचारदे ओ ।।

रे-राम साखी असीं न तेरे दुश्मन, धृष्टबुद्धि वज़ीर मरवाये तैनूँ। ओहदे भेजे होये असीं आये मारण, ओह जीवंदा मूल न चाहे तैनूँ।। ओहदा नमक तां असां हलाल करना,कोई न ताकत जो साथों बचाये तैनूँ। होके खुश तलवार दे आ थले, कुझ न बणेगा कीतियां हाय तैनूँ।। चन्द्रहास उन्हां अगे अर्ज़ करदा, वज़ीर किस कारण मैंनूँ मारदा ए। की कर बैठा मैं कसूर उसदा, दासा जिस लई ज़ुलम गुज़ारदा ए।। ज़े-ज़ुबानी सन्त दी ओस सुन्या, इस राज दा मालिक तूने होवना एं। राजे दी लड़की दे नाल व्याह होणा, धुर दा हुकुम न एह खलोवना एं।।

एस वास्ते तैनूं मरवाना चाहे, होर कोई न ओस नूं रोवना एं। साडे वस न गल कोई रही काका, सर पर असां तैनूं एत्थे कोहवना ए।। चन्द्रहास नम्रता नाल कहंदा, त्वाडे मारना है अखत्यार भाई। हत्थ पकड़ न सकदा मैं दासा, मेरी अर्ज़ सुनो इक वार भाई ।।

सीन-सारयां दे अग्गे बेनती ए, मैं मरण नूँ खड़ा तैयार इत्थे। ज़रा सतगुरां दी पूजा कर लवां, अश्नान कर के ते जांदी वार इत्थे।। छुट्टी दे दित्ती चन्द्रहास ताईं, कर लै गुरां नाल प्रेम प्यार इत्थे। गलों लाह झोला ,फोटो कड्ढ विचों, दर्शन करदा ते करे पुकार इत्थे।। कहँदा गुरां ताईं सहायता करो मेरी, इन्हां जल्लादां कोलों बचाओ सतगुरु। जीवें प्रह्लाद दी कीती रक्षा तूं, तीवें दास वल वी फेरा पाओ सतगुरु।।

शीन-शहीद करन तों न मुड़न ज़ालिम, हिरदे इन्हां विच बैठ समझा प्यारे। तेरे कोलों एह दातेया दात मँगी, अज इन्हां दे कोलों बचा प्यारे।। निर्दोष ताईं कानूं मारदे ने, ख्याल इन्हां दा दिल तों हटा प्यारे। तेरे बाझ मेरा कोई न होर दर्दी, जेहड़ा सुणे मेरे दिल दी आह प्यारे।। मददगार मेरा तू ही ऐस वेले, होर कोई न दिस्से बचान वाला। दुःख बने भक्तां दे कटदा तूँ, दासा वक्त आया मर जान वाला।।

स्वाद-सिदक नाल कीती पुकार जदों, सच्ची दरगाह विच जा परवान होई। ओसे वेले जल्लादां दे दिल अन्दर, ताकत रहम वाली खड़ी आन होई।। की मारना है एस बचड़े नूँ, साडे जेहीं बेचारे विच जान होई। ख्याल बदल दित्ता ओन्हां ज़ालिमां ने,ऐसी किरपा कोईआन भगवान होई।।
बेगुनाह मासूम दे मारने दा, पाप लगेगा आन के सारयां नूं। पापी बनिये क्यों बच्चे दी जान लैके, सोच आ गई दास हत्यारेयां नूँ।।

ज़्वाद-ज़रूरतजल्लादां नूँ खून दी सी,डिट्ठियाँ उंगलियां बच्चे दे पैर दियाँ। मनहूस उंगलियाँ होंदियाँ छः बच्चा, होन जिस दियाँ-होन न खैर दियां।। छेवीं उंगली जल्लादां ने वड्ढ के ते, कर लैयाँ तैयारियां शहर दियाँ। उँगल वड्ढियाँ हो गया खून ज़ारी, दर्दां होन बेचारे नूँ कहर दियाँ।। दिलों सोचजल्लादां लई वड्ढ उँगल,उंगली खून वाली चल विखावांगे जी। जेहड़ा लैणा इनाम है धृष्ट कोलों,उँगली ते लहू विखा के पावांगे जी।।

तोये- ताकत न रही ओहनूँ उठने दी, बैठा रहया सतगुरु ध्यान अन्दर। खबर आपणेआप दी न रही ओहनूँ,ओस भयानक जंगल सुनसानअन्दर।। चन्द्रपुर दा राजा कुलिन्दर जेहड़ा, शिकार खेडदा आया दयावान अन्दर। कुदरती पहुँच गया जित्थे चन्द्रहास बैठा,लगन लाईहुई सी गुरुध्यान अन्दर। खूबसूरत लड़का राजे जदों डिट्ठा,दिल ही दिल विच खुशियाँमनान लगा। लै जा के ऐनूँ बनावंना पुत्र अपना, दास मार आवाज़ बुलान लगा।।

ज़ोये-ज़ाहिर हो बच्चेया कौन हैं तूँ, कर के होश ते अखियाँ खोल बच्चा। तेरे लई आया दूरों चल के ते, सुरत कायम कर के ज़रा बोल बच्चा।। ऐस तरह क्यों अखियाँ मीट बैठों, देख मैं खड़ा तेरे कोल बच्चा। इकल्हाकास नूँ बैठाएं जंगल दे विच,जेहड़ा दुःख कोई सारा फोल बच्चा।। अखां खोल के जदों चन्द्रहास डिट्ठा, कोई राजा है करे प्रणाम नूँ जी। भक्ति करन दे लई आया मैं इत्थे, दास जपने निसदिन प्यारे नाम नूँ जी।।

ऐन- अक्ल करके चल नाल मेरे, राजा घोड़े दे उत्ते बिठावंदा ए। खुशियाँ विच दौड़ा के घोड़े ताईं, शहर आपणे ओहनूँ लै आवंदा ए।। खूबसूरत लड़का चन्द्रहास जेहड़ा, रानी आपणी ताईं विखावंदा ए। रानी वेख के खुश होई इन्नी, जिस दा अन्त हिसाब न आवंदा ए।।

राजे आखया रानी नूँ एह लड़का, असां धर्म दा पुत्र बनावंना ए। खानदानी लड़का जापे एह दासा, पूरी चिरां दी हुई दिल दी चाहवना ए।। गैन-गम फिकर सारे दूर कर के, राजे शहर ढँढोरा फिराया ए। राजे कुलिन्दर ने चन्द्रहास लड़का, अज धर्म दा पुत्र बनाया ए।। ऐस खुशी कारन रैय्यत आपणी नूँ, कर इकट्ठियाँ ऐत्थे बुलाया ए। जेकर किसे नूँ कोई एतराज़ होवे, ज़ाहिर करे न जाये छुपाया ए।। चन्द्रहास ताईं वेख सारियां ने, हर इक ने खुशी मनाई ओत्थे। चन्द्रहास दे दत्तक पुत्र बनन खातिर, दासा सब ने दित्ती वधाई ओत्थे।।

फे-फौरन खुशियाँ विच सब लगे, राजा करे गरीबां नूँ दान भाई। कई किसम दे खाने तैयार करके, पै सारेयां ताईं वर्तान भाई।। दीपमाला होई सारे शहर अन्दर, आतिश बाजियाँ लोक चलान भाई। मुदवा गल काहदी-खुशियाँ विच सब्बे, फूले हुए न जादें समान भाई।। लड़का ऐसा न कोई जहान अन्दर, जापे शकल तों राजकुमार सब नूं। चाल-ढाल सोहणी जापे दास वाली,लगे मिठी पईओसदी गुफतार सब नूँ।।

काफ-किस्मत मारे धृष्टबुद्धि ताईं, किसे जाके एह सुनाया ए। मिलया जंगल दे विचों है कोई लड़का, राजे कुलिन्दर जो पुत्र बनाया ए।। चन्द्रपुरी दी रौनक वधाई उसने, लड़का ऐसा कोई रब मिलाया ए। धृष्टबुद्धि वज़ीर ओहनूं वेखन दे लई, चन्द्रपुर दे विच ओह आया ए।। राजे उस दा कीता स्वागत बड़ा, राज बड़ा ओह इक चलावंदा सी। सेवा औंदियाँ उसदी ऐवें कीती, दासा जीवें वज़ीर दिलों चाहवंदा सी।।

काफ-करे ध्यान चन्द्रहास दे वल, बड़ी गौर दे नाल पछाणदा ए। चन्द्रहास ताईं हेठूँ उत्तों वेंदा, जीवें अग्गे ओहनूं कित्ते जाणदा ए।।

कदी ओस ताईं चन्द्रहास समझे, कदी दिल न उसदा माणदा ए। आखिर ओस लड़के दे नाल ओहनूँ वक्त मिल गया पुछण पुछाणदा ए।। कुन्तलपुर लड़के कदी गया सी तूँ, कहँदा सन्त मण्डली विच रह्या सां मैं। भोले भा लड़के सब कुछ दस दित्ता,दासा अगों जल्लादां वस प्या सां मैं।।

गाफ-गल सुण के चन्द्रहास कोलों, धृष्टबुद्धि ताईं फिकर आन लगा। जल्लादां कोलों एह कीवे बच आया, अपने थां हिसाब सब लगान लगा।। सन्त वचन उसे वक्त याद आये, सच हो जाणे-गम खान लगा। मैं तां बिल्कुल इसनूं छोड़ना नहीं, राज मेरे अन्दर खलल पान लगा।। ऐनीं सोच के ते धृष्टबुद्धि फौरन, राजे कुलिन्दर दे कोल जावंदा ए। एह लड़काआवारा न कोई खानदानी,समझ दास दी विच एहो आवंदा ए।।

लाम-लगाआखन कीवें एह बणाया पुत्र,बड़ा भारी कीता एह तूँ पाप राजा। कुन्तलपुरी राजे मैंनूं घलया ए, पहलों औन लगा सी ओह आप राजा।। पता कर जाके सच-झूठ दा तूँ, चढ़या फिकर दा ओसनूं ताप राजा। कुन्तलपुर लड़का पहले भेज दे तूँ,अपने आप न बन इस दा बाप राजा।। अक्खां नाल राजा खुद वेख लेगा, फेर करेगा न एतराज़ कोई। जीवें चाहेगा करेगा दास राजा, न होवेगा फेर नाराज़ कोई।।

मीम-मनों राजा कुलिन्दर आखे, जो कुझ कीता मैंने सो कुझ ठीक है जी। बनाया लड़का रैय्यत दी नाल मर्ज़ी, शुभदिन दी वेखी तारीख है जी।। कोई गलत कम न मैं कदी कीता, एस राज अन्दर अजतीक है जी। जेकर राजा न इस विच होया राज़ी, मेरे धर्म नूँ लगनी लीक है जी।। मेरे वलों तुसीं चन्द्रहास ताईं, कुन्तलपुर लै जाओ अपने नाल भाई। कुन्तलपुर राजे नूं विखा देना, दास बनाया पुत्र मैं एह बाल भाई।।

नून-नाल ख्याल सुन धृष्टबुद्धि,बड़ियां खुशियां ताईं मनावंदा ए। मेरा दाव पूरा लग जावना ए, पक्का ख्याल मैंनूं प्या आवंदा ए।। चन्द्रहास दा आया अखीर वेला, वेखिये कीवें हुण बच के जावंदा ए। अज दिल दी पूरी मुराद होसी, ख्याल आपणे ऐवें दौड़ावंदा ए।। एह पता न ओस वज़ीर ताई, मारन वाले नालों रक्खनहार डाढा। डीगां मारदा प्या फज़ूल ऐवें , दास समझदा ना करनहार डाढा।।

व-वक्त उसे धृष्टबुद्धि यारो, चन्द्रास नूँ कीता तैयार भाई। चन्द्रहास ताईं राजा कहन लगा, चले जावना हो होशियार भाई।। जवान लड़के न किसे तों डर खांदे, किसे थां न खांदे हार भाई। चन्द्रहास निडरता नाल कहँदा, मेरे लई न एह मुश्किल कार भाई।। पिता जी जित्थे भेजो जावांगा मैं, कदी आवे न खौफ हरास मैंनूं। हाज़िर नाज़िर सतगुरु मेरे नाल रहंदे, दासा ओहना दी हरदम आस मैंनूं।।

हे-होके खुश वज़ीर कहँदा, सुन लै बेटा एह गल चन्द्रहास मेरी। राजे कोल जाण तों पहलां-पहलां, चिट्ठी पहुँचा देवीं मदन पास मेरी।। चिट्ठी खोल के कित्ते न पढ़ीं बह के, एहदे विच लिखी गल खास मेरी। राजे कोल तैनूँ मदन लै जासी, एह वी पूरी हो जावेगी आस मेरी।। मेरा कुछ दिन ख्याल है ठहरने दा, थोड़े दिनां तीकन आ जावांगा मैं। कुझ कम ऐत्थे मेरे करन वाले, दासा ज्यादा देर न लावांगा मैं।।

ये-याद करके मदन आपणे नूँ, लिखिया जिस चिट्टी देण आवणा ए। विष दे देना झट पट उहनूँ, मेरे दिल एह चिरां दी भावना ए।। जेकर वक्त हत्थों एह निकल गया, फेर प्या पिछों पछतावना ए। मेरे दिल दी करनी मुराद पूरी, एह कम ज़रूरी बनावना ए ।।

धृष्टबुद्धि पिता खत लिखन वाला, करके कम एह देना जवाब मैंनूं। देर करनी न एस विच मदन प्यारे, दासा होना न पवे खराब मैंनूं।।

ये-यकदम हो तैयार चन्द्र, होया घोड़े ते झट असवार भाई। घोड़े ताईं दौड़ावँदा पहुँच गया, सूरज अजे सी अन्दर बाहर भाई।। शाही बाग दे विच आराम खातिर, मोड़ी घोड़े दी झट मुहार भाई। सुत्ता जाके जिसदम बाग अन्दर, रह गई तन दी मूल न सार भाई।। ओधरों राजे दी लड़की चम्पीक रानी,मालिन लड़की विषया वज़ीर दी सी। दास करदियाँ बाग विच सैरआइयां,मिटान वालीविच इक तकदीर दी सी।।

आलिफ- आन डिट्ठा राजकुमार सुत्ता, तिनाँ विचों न किसे जगाया ए। राजकन्या ते मालिन टुर गईयाँ, विषया कदम न ओत्थों उठाया ए।। पगड़ी पल्ले बद्धा होया इक कागज, विषया लड़की ताईं नज़रीं आया ए। चुप करके ओसने खोल पढ़या, मतलब आपने अन्दर ओस पाया ए।। लिखिया विष दे देवणी मदन आये नूँ, करनी एस अन्दर ज़रा देर नाहीं। ए वक्त हत्थों न निकल जाये, दासा वक्त मिलना ऐसा फेर नाहीं।।

बे-विष्या लै कलम दवात जल्दी, विष ताईं विषया कर दित्ता। ओह कागज लै के पगड़ी विच विषया, जीवें कढया सी तीवें धर दित्ता।। धृष्टबुद्धि दी बुध चा रब मारी, विषया लई आपे घल वर दित्ता। चन्द्रहास जदों मदनलाल ताईं, रुक्का जाके ते ओहदे घर दित्ता।। रुक्का पढ़ के ते मदन लाल उसदम, काज विषया दा झट रचाया ए। रातों रात ओस कर सामान इकट्ठा, दास पंडित नूँ झट बुलाया ए।। पे-पंडित विषया दे चन्द्र दे नाल, फेरे सवेर दे नाल कराये भाई। दाज-दौण दित्ता दिल खोल के ते, मेरी बहिन राज़ी सौरे जाये भाई।।

छडया ज़ेवरां दा न अन्त उसने, जेहड़े बहिन लई ओस मँगवांये भाई। किसे किसम दी कसर न मूल छड्डी, वरती भैण दी जीवें सी राये भाई।। बड़े चाव ते लाडां दे नाल मदन, भैण आपनी ताईं रवान कीता। धुरों लिखिया होया ओह न कदी टलदा, दासा जेहड़ा हो भगवान कीता।।

ते-तैयार होके वज़ीर धृष्टबुद्धि, कौशल पुर नेड़े जिस दम जावंदा ए। शहरों बाहर ही जदों वज़ीर अजे, अगों मिले जो एहो सुनावंदा ए।। त्वाडी पुत्री दी वाह वाह हुई शादी, हर कोई वधाईयां पहुँचावंदा ए। लड़का शकल दे विच कमाल सोहणा,वेखओहनूँ हर कोई प्या चाहवंदा ए। आखिर पहुँच गया घर आपणे ओह, जो कोई मिले ओह एहो सुनाये भाई। केहड़े कम दे विच तुसीं रहे दासा,शादी विषया दी ते क्यों न आये भाई।।

टे- टले न होवे जो धुरों लिख्या, हो जावंदा ओह आखिरकार भाई। चन्द्रहास ते विषया बैठ इक थां, कर रहे सन कुछ विचार भाई।। धृष्टबुद्धि वज़ीर उसे घर अन्दर, जा वड़या बे अख्त्यार भाई। कौतुक वेख ऐसा चुप रह गया, मुखों सकया न कुझ उचार भाई।। मारन वास्ते मदन नूँ लिखिया सी, उलटा वजिया आन रबाब है जी। दुश्मन समझ के मारना चाहा दासा, एह तां बन गया साडा नवाब है जी।।

से-साबती चन्द्र नाल नहीं रखनी, करनी एस दी मैं तबाही है जी। फेर वी मारना ऐनूँ ज़रूर मैंने, लड़की एहदे नाल भावें वियाही है जी।। मेरे वास्ते बण गया बोझ भारा, उलटा बण गया मेरा जँवाई है जी। अगों बच मैथों सकना नहीं, जेहड़ी मैं स्कीम बनाई है जी।। ओह तरीका मेरे कोल है आला, ऐनूँ जिस तरह मार मुकावना ए। ओत्थे मारांगा एस नूँ जा दासा, जित्थे किसे दा औण न जावना ए।।

जीम-जँवाई चन्द्र नूं वेख के ते, धृष्टबुद्धि न किसे नाल बोलया ए। जल बल गया ओहनूँ वेख के ते, दिली भेद न उसने खोलया ए।। चन्द्रहास दे वास्ते ओस पापी, ज़हर थां थां ते जाके घोलया ए। जिसनूँ रब रखे उसनूं कौन मारे, एह दानावां अज़मायश कर तोलिया ए।। ओसे वेले जल्लादां दे कोल गया, चन्द्रहास नूँ सर पर मारना एं। जो कुछ मंगोग देआँगा दास बण के, एहदे नाल न घट गुज़ारना एं।।

चीम-चलाकबण जल्लादां नूँ जा कहँदा,शाही मन्दिर भवानी दे जावणा जे। ओस वेले सामग्री जो धरे उत्थे, झट ओस नूँ मार मुकावना जे।। पंज सौ मौहरां पहले लै जाओ मैंथों, बाकी फिर जद सिर दिखावना जे। मारन लगयाँ ज़रा न सोचणा जे, जल्दी ओस नूँ मार गवाँवना जे।। एह सब पक्की-पका के धृष्टबुद्धि, बेफिकर होके घर नूँ जावंदा ए। चन्द्रहास नूँ रखनहार जेहड़ा, दासा धीरे धीरे ओह मुस्कावंदा ए।।

हे-हिकमत मारन दी सोच के ते, चन्द्रहास नूँ धृष्टबुद्धि सुनावंदा ए। साडी रीत मुढ तों चली आवंदी ए,जवाँई इकल्हा राती मन्दरीं जावंदा ए।। सामग्री कर के कट्ठी पहले शाम वेले, फिर मन्दिर जा रातीं चढ़ावंदा ए। चन्द्रहास अगों हथ जोड़ कहँदा, पिता जी डर ज़रा न मैंनूं आवंदा ए।। रातीं जाके ते भवानी मन्दिर अन्दर, सामग्री कर इकट्ठी चढ़ावांगा मैं। त्वाडा हुकुम सिर मत्थे ते उज़र नाहीं,दासा एस विच फर्क न पावांगा मैं।।

खे-ख्याल नाल सामग्री कर इकट्ठी,मन्दिर भवानी दे चन्द्र जद जान लगा। जांदियां ओस नूँ राह विच मदन मिलया, चन्द्र ताईं अग्गों ए सुनान लगा। तैनूं राजा प्या बड़ा याद करदा, बड़ी देर दा ओह तैनूँ चाहन लगा। सामग्री मन्दिर अन्दर मैं ही धर औसाँ, मदन चन्द्र ते ताईं फरमान लगा।।

मदनलाल सामग्री लै टुरिया, जा ओस मन्दिर विच पैर टिकाया ए। जल्लाद खड़े सन तैयार अन्दर दासा, झट मार तलवार सिर लाहिया ए।। दाल-देकर सामग्री मदन ताईं, चन्द्र तुरत राजे कोल जावंदा ए। हथ जोड़ के ते चन्द्रहास लड़का, जाके राजे नूँ सीस निवावंदा ए।। राजा खुशी दे नाल प्यार करके,चन्द्रहास नूं कोल बिठावंदा ए। बड़े भेजे पैगाम उडीकदा सां, खबरे चन्द्र क्यों न इत्थे आवंदा ए।। अच्छा जो होया सो ठीक होया, अग्गों सुन मेरा कुल हाल बच्चा। मैं बहुत वडेरा हो गया हां, सिर ते कूके प्या दासा काल बच्चा।।

डाल-डेर न कर राज-भाग मेरा, मेरे ज्यूंदियाँ ही सम्भाल बेटा। शादी कर देवां तेरी वक्त इसे, अपनी धी चम्पीक दे नाल बेटा।। अज तों राज दरबार दा तूँ ही मालिक, तूँ ही रखना कुल ख्याल बेटा। मैं सन्यास धारण करना चाहवंदा हां, सिर तों लाह के सब जंजाल बेटा।। ओसे वक्त राजे राज तिलक देके, शादी कर दित्ती लड़की नाल ओहदी। मालिक राज दा बण गयाओह लड़का, मदद कीती सतगुरु दयाल ओहदी।

रे-राजे दे कोल धृष्टबुद्धि, उसे वेले अचानक ही चला जावँदा ए। चन्द्रहास लड़का राजे कोल बैठा, धृष्टबुद्धि ताईं नज़रीं आवंदा ए।। वज़ीर वेंहदियां ही गश खान लगा, कहंदा रब की बना बनावँदा ए। फिकर मदन दा पै गया होर उल्टा, मदन मोया जापे गम खावंदा ए।। गया मन्दिर भवानी विच दौड़ के ते, मुर्दा मदन दा नज़रीं आया ए। मेरे नाल न किसे कुछ दास कीता, कीता आपणा आप मैं पाया ए।।

ज़े-ज़ारोज़ार रोंदा अपने मदन ताई, पुत्र आपना आप ही मारया मैं। तिन वारी मैं चन्द्र ते ज़ुल्म कीता, न कुछ सोचया न विचारया मैं।।

वाल विंगा न होया चन्द्रहास दा इक, ओहदे नाल न घट गुज़ारया मैं। जिसनूँ रब रखे उसनूं कौन मारे, इस गल नूँ सी विसारया मैं ।। मदन बाझ मेरा हुण जीवन मुश्किल,छुरा पेट विच मार के मर गया ओह। बेन्याईं न करदा साहिब सच्चा, कीते आपने नूँ दासा भर गया ओह।।

सीन-सोचे चन्द्र ओन्हां दोहां विचों, अजे तीक न परत कोई आया ए। सामग्री धर मदन आ जावणा सी, इन्नां वक्त क्यों ओसने लाया ए।। मन्दिर विच जाके पता कर आवाँ,ओहदा फिकर च बड़ा घबराया ए। उसे वेले चन्द्रहास उठ टुरिया, मन्दिर विच जद कदम टिकाया ए।। की वेखदा मदन ते धृष्टबुद्धि, होये मर के मिट्टी दा ढेर भाई। चन्द्र वेख के ते ढाईं मारदा ए, दासा एह की होया अन्धेर भाई।।

शीन-शोर पावे ते रोवे चन्द्र, एह की बन गया करन हारया जी। दुःख इन्हां दोहां दे मरन वाला, मेरे कोलों न जाये सहारया जी।। करो मेहर ज़िन्दा हो जान दोवें, बे-आई इन्हां ताईं मारया जी। रब सच्चेया आके कर मदद मेरी, तेरे दर ते आन पुकारया जी। होनहार कर्तार दे खेल न्यारे, दोवें मोये होये दित्ते जिवा भाई। धृष्टबुद्धि ते मदन लाल दासा, लिया चन्द्र नूँ गले लगा भाई ।।

स्वाद-सिदक जो गुरां ते रखदे ने, दात भगती दी गुरां कोलों पावंदे ने। दुःख-सुख आवन बेशक सच्चे प्रेमियां ते,बादल वांगणा ही उड जावंदे ने।। सिर ते गुरु समरथ होन जिसदे, ओह कदी नहीं हार खावंदे ने। तत्ती वा न उन्हां नूँ, मूल लगदी, सच्चा नाम जो हिरदे वसावंदे ने।। पल पल ओह प्रेमी दी सुध लैंदा, हर पल जो रब नूँ ध्यावंदा ए। जीवन सुधर जावे दासनदास उसदा, सुरती नाम दे विच जो लावंदा ए।।

ज़्वाद-ज़बत करना दिल अपने नूँ, कम अगरचे कुछ कठिनाई दा ए। ए पर सुख है इस विच बहुत भारी, एहो जेहा न कम भलाई दा ए।। होया जन्मां तों जीव गुलाम मन दा, बार बार विच धोखे भरमाई दा ए। इस धोखे तों मगर आज़ाद होणा, सचमुच ही कम सूरमाई दा ए।। इस खातिर ही सन्त उपदेश करदे, वैरी मन तों हो खबरदार प्यारे। दासन दास न मन नूँ मित्र जाणी, मूज़ी दुश्मन है एह बदकार प्यारे।।

नाम दी महिमा

ध-धन्य धन्य है नाम सतगुरां दा, जेहदी महिमा अनन्त अपार है जी। सकल खण्ड ब्रह्माण्ड दी रचना दा, होया जिसदे सहारे विस्तार है जी।। खड़े इस्थिर हो धरती-आकाश दोवे, एह नाम दा सारा चमत्कार है जी। चहुँ दिशा विच नाम दी सत्ता कायम, जिहदे आसरे सारा संसार है जी।। उसे नामदी प्राप्ति लई नारद मुनि,इकदिन जा सिधाया द्वारिका नगरी विच। दासनदासकी कौतुकभगवान रचया,ते की खेलदिखाया द्वारिकानगरीविच।।

धर्म-ध्वजा फहरान वाले कृष्णचन्द्र, द्वारिका नगरी विच विराज रहे सन। संग उन्हां दे सारियाँ रानियाँ सन, बड़ी सज धज दे नाल साज रहे सन।। द्वारिकानगरी सी कृष्ण दी राजधानी,शान-शौकत दे नाल कर राजरहे सन। प्रजा वेख उन्हां नूँ सुख पाँदी,खातिर प्रजा दे कर ओह काज रहे सन।। दासा नारद पहुँचे जा के विच महलां,जित्थे कृष्ण समेत सब रानियाँ सन। सबने उठउठ के नमस्कार कीता,कृष्ण सुना रहे सन्तां दीयां वाणियाँ सन।।

धीरज नाल लगियाँ पुछन रानियाँ सब, आदर नाल बिठा के नारद जी नूँ। सानूँ ऐसा कोई उपाय दस्सो, कहँदियाँ आख सुना के नारद जी नूँ।। साडा रहे हमेश संयोग बनया, वियोग होवे न कहँदियाँ नारद जी नूँ। हर जन्म विच कृष्ण ही पति होवे, वरदान देवो कहँदियां नारद जी नूँ।। नारद आखया चीज़ जो दान करिये, ओह चीज़ मिलदी अग्गों जा के ते। ऐवें कृष्ण नूँ तुसीं वी दान करो, दासन दास नूँ बाँह फड़ा के ते।।

न-नारद किहा जीवें रानियाँ नूँ, ओन्हां हुकुम सिर मत्थे धर लित्ता। जल भर के ओसे वेले अंजली विच, श्री कृष्ण नूँ संकल्प कर दित्ता।। हथ फड़ के तुरत श्री कृष्ण जी दा, नारद चले ते कदम अग्गे धर दित्ता।

तदों सारियाँ रानियाँ बोल उठियाँ, तुसीं नारद जी चंगा सानूँ वर दित्ता।। तुसीं लगे विछोड़न हुणे श्रीकृष्ण जीनूँ,जन्मजन्म विच कृष्ण पति मंगया ए। वचन अपने तों बेमुख होन लग्गे, दासा इक वी झट न लँघया ए।।

नम्र हो के नारद जी कहन लग्गे, इक गल्ल ते तुहानूँ अज़मावांगा मैं। जेकर कृष्ण बराबर मैंनूं धन देवो, ते कृष्ण जी नूँ छड्ड जावांगा मैं।। त्वाडे वल्लों जेकर कोई कमी होई, फिर कृष्ण नूँ नाल लै जावांगा मैं। मेरे कहे अनुसार तुसीं तौल देवो, अपना वचन पाल दिखावांगा मैं।। झट रानियाँ ने त्रक्कड़ी मँगवा लीती, नाले धन खज़ाने विचों मँगवाया ए। दासन दास भगवान श्री कृष्ण जी ने, केहा अनोखा कौतुक रचाया ए।।

नकद धन पदारथ ते गहनेयां नूं, इक पासे तराज़ू दे पाया ए। दूजे पासे त्रक्कड़ी दे छाबे दे विच,श्री कृष्ण भगवान नूँ बिठाया ए।। सारी द्वारिका पुरी दा धन सारा, जदों होर वी गया मँगवाया ए। फिर वी धन वाला छाबा रिहा उच्चा,कृष्ण भारा स्वरुप बनाया ए।। कौतुक करना सी कृष्ण भगवान जी नूँ, नहीं छाबा ज़मीन तों हिलया ए। दासा रानियाँ सब हैरान खड़ियाँ, नारद कृष्ण नूँ लै फिर चलया ए।

प-पकड़ के हत्थ जदों कृष्ण जी दा, मुनि नारद जी ने कदम उठाया ए। हलचल मच गई दिल विच रानियाँ दे, व्याकुल होके शोर मचाया ए।। चरणीं डिग के कहँदियाँ कृष्ण जी नूँ, प्रभो एह की खेल रचाया ए। क्यों तुसीं तमाशा देख रहे हो, साडा प्राण लबां ते आया ए।। किरपा करके कोई उपाय दस्सो, तुहाडा विछोड़ा ते सहया न जावंदा ए। दासा कहँदिया जग दी ऐश-इशरत, बिना तुहाडे न कुछ भी भावंदा ए।।

पेश जाँदी न डिट्ठी जदों रानियाँ दी, अग्गों कृष्ण भगवान फरमावंदे ने। वध मेरे तों भारा है नाम मेरा,जेहदी महिमा ऋषि मुनि वी गावंदे ने।। बिना नाम तों राम न बोलदा ए, नाम लै के नामी नूँ बुलावंदे ने। महिमा नाम दी बेअन्त अपार है जी, एह सतगुरु भेद बतावंदे ने।। तुसीं तोल करो मेरा नाम दे नाल, खुद देख लवो आज़मा के ते। दासा रानियाँ दी जान विच जान आई, जदों प्रभु ने किहा समझा के ते।।

पत्ता तुलसी दा लैके रानियाँ ने, उत्ते नाम लिख छाबे ते धरया ए। पासा झुक गया जेहड़ा नाम वाला, वेख रानियां दा तन मन ठरया ए।। छाबा उठ गया ऊपर कृष्ण वाला, वचन प्रभु दा पूरा उतरया ए। बदले कृष्ण दे लैके नाम नारद, बड़ी खुशी खुशी ओत्थों टुरया ए।। नारद कहँदा तमन्ना सी दिल दे विच, प्रभु जी दे नाम दे पावने दी। अन्तर्यामी प्रभु ने जान लीता, लोड़ पई न मँगने मँगावने दी ।।

मुसाफिर खाना

फ-फिरदे जो रमताराम साधु, सुत्ते जीवां नूँ सिरफ जगान खातिर। जेहड़े मोह दी नीद विच सो रहे ने,पर्दाअज्ञानता दा सिरफ हटान खातिर।। निर्णय देवंदे सच्ची मिसाल देके, सच-झूठ दी परख करान खातिर। असली जीवन होंदे सन्तां साधुआँ दे,सत्संग देंदे ने अमल कमान खातिर।। इसे तरह ही इक रमताराम जोगी, किसे शहर दे विच ज्यों वड़न लगा। इन्द्रदेव ने झड़ी लगाई दासा, ज़ोर - शोर दे नाल मीहं पड़न लगा।।

फिर मींह तो करन बचाव खातिर, जोगी ढूँढन लगा अस्थान भाई। जित्थे खड़ा होके इक झट दे लई, अपने वक्त दी करां गुज़रान भाई।। फिर वेखया पास इक महल सुन्दर, अन्दर चला गया बन मेहमान भाई। ओह महल तां इक साहुकार दा सी, वेख जोगी नूं होया हैरान भाई।। सुन्दर सेज पलंग उत्ते बिछी होई सी,कमरे विचआराम ओह कर रिहा सी। ओहदे कोल सी खड़ा इक नौकर दासा,जेहड़ा पंखाओस नूं झल रिहासी।।

फटकारदा दूरों ही नौकर आया, अते डांट के जोगी नूँ कहन लगा। तूँ अन्दर कीवें आ वड़या एं, अन्दर महल दे क्यों तूँ बैहन लगा।। केहा जोगी ने बाहरमींह वस रहया ए,मुसाफिरखाने दे विच चैनलैन लगा।। दो घड़ियाँ एत्थे गुज़रान करनी, मैं कोई पक्का ते एत्थे नहीं रहन लगा। थोड़ी देर मुसाफिरखाने दे विच, आराम करके हुणे टुर जावांगा मैं। दासाडाँटन दी दस्स भला गल केहड़ी,हुण दा गया न फिर मुड़आवांगामैं।।

ब-बोल्या रौब दे नाल ओ नौकर,ओए साधुआ ओए तूँ नादाना। एह ताँ महल सुन्दर साहुकार दा ए, जिस नूं समझया तूँ मुसाफिरखाना।। मुस्कराकेमहात्मा जी पुछन लगे,पहलां सेठतोंमहलविच क्सिदा सी ठिकाना।

नौकरउत्तरदित्ता पहलाँ सेठजी तों,रहंदा सेठदा पिता जो कर गये चलाना।। फिर पुछेया नौकर कोलों, उसदे पिता तों पहले दस्स रहंदा सी कौन। जदों सेठ वी एत्थों रवान होसी, दासा उसदे बाद फिर रहेगा कौन।।

बाबा सेठ दा रहँदा सी नौकर कहंदा, पहले सेठ दे पिता तों महात्मा जी। इसे तरह पहले सेठदा बाबा मरया,ते फिर होगया पिताजी दा खात्मा जी।। हुण सेठ जदों शरीर छोड़ जासी, उसदा वड्ढा पुत्र जो धर्मात्मा जी। राज भोगेगा राजमहल दे विच, सुख पायेगी उसदी आत्मा जी।। इसे तरह दी पीढ़ी चली आंवदी ए, इस महल दे विच साहुकार दी जी। दासा इसे तरह अग्गों चली जासी, एह रीत है सारे संसार दी जी।।

बुरा समझी न मेरी गल्ल नूं तूँ, कहंदा जोगी तूँ एक काम कर लै। जिसमहल विचसदा आन-जान रहँदा,उसदा होरकोई चंगा जेहा नामधरलै।। कोई आवंदा ते कोई पया जावंदा ए,विश्रामगृह विच तूँ वी विश्राम कर लै। ऐसेस्थान नूँ कहँदे मुसाफिरखाना,कोई मुसाफिरआवे ते ऐथे क्याम करलै।। तूं मैंनूं ए डांटिया किस गल्लों, मैं कोई बोल-कुबोल ते बोल्या नहीं। दासन दासा अजे तेरे सामने मैं इसदे असली भेद नूं खोल्या नहीं।।

भ-भलेया लोका एह समझ लै तू, सारी दुनियाँ मुसाफिर खाना ए। ज़रा वेख विचार दियां अक्खां दे नाल, किसे आना ते किसे जाना ए।। इस दे विच एतराज़ न किसे दा ए, सबने मन्नया रब दा भाना ए। ऐंवे तैनूँ नाराज़ होणा चाहिदा नहीं, न तूँ अनजाना न तूँ सयाना एं।। जदों मींह वस्सन तों बन्द होसी, ओसे वेले एत्थों चला जावांगा मैं। झट घड़ी दा हां मेहमान एत्थे, दास अग्गे नूँ कदम वधावांगा मैं।।

भोले-सेठ वी वचन सुने एह सन्त जी दे,उसदे दिल विच बड़ा वैराग होया। दुनियाँ वल्लों ते दिल उपराम होया, अते सन्तां दे चरणां विच राग होया।। घर बैठयां किरपा एह आन होई, प्रभु सन्त मिलाये उदय भाग होया। जन्मां-जन्मां दी मैल चढ़ी हिरदै उत्ते, सतसंग ने हिरदे दा दाग धोया।। सेठ कहंदा सन्त जी-क्षमा करो, साथों बहुत भारी कसूर होया। दास बदला एहसान दा न लाह सके,अज अन्धेरा अज्ञानता दा दूर होया।।

भक्ति सेठ दे हृदय निवास कीता, कहँदा दुनियां मुसाफिर खाना ए। सन्तां किरपा कीती अक्खां खुल गइयां, जग अपना नहीं बेगाना ए।। महल-माड़ियां विच जो जीव रहंदे, सब मुसाफिर ने-इक दिन जाना ए। आत्म ज्ञानी इस गल नूँ जानदे ने, जिन्हां आतम-रूप पछाना ए।। सामान वरतन दे संसार अन्दर, अन्त वेले न नाल कुछ जावना ए। सच्चा नाम सतगुरां दा दासन दासा, जिन्हां तोड़ दा साथ निभावना ए।।

तृष्णा

म-मनुष्य नूँ तृप्त न आवंदी ए, भावें धन दा मिल अम्बार जावे। जेकर दस तों दस पचास होवन, सौ होवे तां फिर हज़ार चाहवे।। लख-करोड़ फिरअरबां दी ख्वाहिश रखे,राज पाके न फिर वी करार आवे। पृथ्वी पति बन के तृष्णा मुकदी न,सरग-पाताल दा भावें मिल राज जावे।। तृष्णा डायन ने जित्या इन्सान दा दिल, जेहड़ी इन्सान उत्ते राज करदी ए। तृष्णा इन्सान नूँ हैवान बनाये दासा, तृष्णावन्त दी खोपड़ी न भरदी ए।।

मनुष्य तृष्णावन्त दी कथा सुनो, किवें सन्त ओहदे उत्ते कृपाल होये। केहड़ा गुण डिट्ठा उस भगत अन्दर, जिस कारण उस उत्ते कृपाल होये।। इक सेवक सेवा सन्तां दी करदा, सन्त सेवा नूं वेख निहाल होए। हिरदै सन्तां दा कुदरती कोमल होंदा,जग अन्दर न जिसदी मिसाल कोये।। इसे तरह सन्तां ने खुश हो के ते, चार बत्तियां उस नूं दे दित्तियाँ। कहंदे दासा जदों धन लोड़ होवे, ढंग नाल जलानियां एह बत्तियाँ।।

मगर बत्तियां जीवें जगानियां ने, तीवें समझ लै तैनूं समझावंदे हां। गुढ़ भेद जो बत्ती जगान दे विच, नाले बुझन विच सो बतलावंदे हां।। इक बत्ती जगा के चले जाना, पूरब दिशा वल आख सुनावंदे हां। जित्थे पहुँच के बत्ती एह बुझ जावे,धरती खोदना ओथों एह सिखावंदे हां।। धन मिलेगा बेशुमार तैनूँ, जिन्हूँ दासा सम्भाल तू सकना नहीं। नाल सिदक ते सबर दे वक्त कटीं, किसे होर दे मुँह वल तकना नहीं।।

य-याद रखीं तिन्न बत्तियाँ-तूं, इसे तरह तिन्न दिशा वल लै जावीं। पूरबपच्छिम ते उत्तर वल चला जावीं,लेकिन दक्खन दे वल पैर न पावीं।। तिन बत्तियां तैनूँ बहुतेरियाँ ने, चौथी बत्ती नूं भुल के वी न जगावीं।

न मुसीबत सहेड़ीं कोई अपने लई, न रोवीं ते न फिर पछतावीं।। चारे बत्तियाँ लै ओथों टुर पया, राह विच दलीलां कई करदा ए। घर पहुंच करे अपने मन दियां, दास बन के मूल न डरदा ए।।

यतन नाल जगा के इक बत्ती, पूरब दिशा वल इक दिन ठहर गया। बत्ती बुझ गई जित्थे जा के ते, उसे थां दे उत्ते ही ठहर गया।। लग पया उस धरती नूँ खोदन ओथे, विचों पैसियाँ दा मिल ढेर गया। ओन्हां पैसियाँ नूँ ओत्थे ही दब के ते, उत्ते ला निशानी अग्गे फेर गया।। किधरे भुल न जावां-एह सोच के ते,अपनी पक्की निशानी उत्ते लावंदा ए। दासन दास जगा के दूजी बत्ती, पच्छिम दिशा वल दूजे दिन जावंदा ए।।

योगिराज उस सन्त दी सेवा दा फल,माया सेवक दे चरणां विच रुलदी ए। जित्थे बुझी बत्ती-ओत्थों धरती खोदी, विचों रुपयां दी खान निकलदी ए।। नहीं सबर-सन्तोष इन्सान दे विच, माया मायावी इन्सान नूँ मिलदी ए। तृष्णा मायाधारी दी जदों वध जावे, फिर माया ही उस नूँ छलदी ए।। जदों वेखे रुपयाँ दे ढेर ओथे, झट उन्हां उत्ते मिट्टी पावंदा ए। फिर उत्थे ही उन्हां नूँ दब के ते, दासनदास निशानी लगावंदा ए।।

र-रात वेले बत्ती तीसरी नूँ, उत्तर दिशा वल्ल जगा के जावंदा ए। जिथे बुझी बत्ती धरती खोददा ए, ओथों ढेरां दे ढेर मोहरां पावंदा ए।। कहँदा मन विच देखांगा दिशा चौथी, एह सोच के मोहरां वी दबावंदा ए। चौथी तरफ हीरे मोती ज़रूर होसन, एह दिलों अन्दाज़ा लगावंदा ए।। अपने वास्ते सन्त ने रखे होसन, ताहीं रोकया मैनूं-लेकिन जावांगा मैं। दास दसांगा भेद न सन्त जी नूँ,हीरे-मोतियां दी थैली भर लै आवांगा मैं।।

राह पकड़ लीता दक्खन दिशा वाला, चौथी बत्ती जगा के जावंदा ए। बुझी बत्ती जित्थे धरती खोददा ए,विचों बारी दा इकपल्ला नज़रआवंदाए।। कुण्डा बन्द तेअन्दर सी इक पुरुष डकिया,कुँडी खोल जद झाती पावंदाए। ओह पुरुष छेती निकल बाहरआया,ऐनूँ डक्क के कुँडा बाहरों लावंदा ए।। बत्तियाँ वाल तृष्णालु पुरुष कहन लगा,बाहर कड्ढेगा कौन मैंनूं आ के ते।
कद तक रहना अन्धेरी गुफा दे विच, दासनदास नूँ दस समझा के ते।।

बत्तियाँ वाल तृष्णालु पुरुष कहन लगा,बाहर कड्ढेगा कौन मैंनूं आ के ते। कद तक रहना अन्धेरी गुफा दे विच, दासनदास नूँ दस समझा के ते।।

इस नूँ बाहर वाला कहंदा है---

रब मेल मिलाया जीवें आन मैंनूं, तीवें तैनूँ वी ढोई लग जासी। मैं वी तृष्णा दा मारया आया सां, पाई तृष्णा ने तेरे वी गल फाँसी।। डायन तृष्णा है सब नूँ खा जांदी, बचदा ओही जो सन्तां दी शरण जासी। तूँ कढया मैंनूं- तैनूं ओह कढसी, जेहड़ा तृष्णा लै तेरे तों वध आसी।। तृष्णावन्त दी दासा एह गति होंदी, दिलों भुख न उसदी जावंदी ए। सुख-सामग्री स्वर्गां दी मिले भावें, फिर वी तृप्त कदे न आवँदी ए।।

इक लै दूजी डार

ल-लड़कियां दो जुलाहे दीयाँ, इक्को शहर दे विच व्याहियां सन। रंग लगिया ओन्हा दे साहवरे घर, भागे भरियाँ जदों आइयां सन।। इक लड़की व्याही कुम्हियार दे घर, जिसदे दर वज्जियां शहनाइयाँ सन। लड़की दूजी दित्ती जमींदार दे घर, मिल रहियाँ जिन्हां नूं वधाईयां सन।। इसे तरह काफी समय बीत गया, माता उन्हांदी पति नूं कहन लगी। खबर लै आ अपनियां लड़कियां दी, आया पत्र संदेशा नहीं- कहन लगी।।

लगा टुरन ते कहंदी ए-माँ रानी, मेरी तरफों धीयाँ नूं प्यार देना। धीयां वास्ते विद भेजदी ए, नाले कहंदी ज़रा पुचकार देना।। घर ओन्हां दे हाल ते चाल की ए, जाके ओन्हां दी खबर सार लैना। नाले कहना सारे सम्बन्धियाँ विच, रल मिल सुमति दे नाल रहना।। ओह जुलाहा अपनियाँ लड़कियां दे, उस शहर दे वल्ल उठ चलया ए। वड्ढी लड़की जो घर जमींदार दे सी, दास सब तों पहले मिलया ए।।

लड़की पुछदी मां दा हाल की ए, नाले अपना हाल सुनाओ जी। पिता कहन लगा-भेजया मां तेरी, मेरी धीयाँ दा हाल लै आओ जी।। किवें वसदियाँ-रसदियाँ घर दे विच, कोई सुख सन्देशा पहुँचाओ जी। बाझ ओन्हां दे मैं उदास होई, कदी मेरे ताईं ओन्हां नूं मिलाओ जी।। हुन-हाल तूँ अपना दस बेटी, तेरे घर दा हाल अहवाल की ए। दासा मां रानी ने पुछया ए, झूठ आखां मेरी मजाल की ए ।।

व-वस्स पवांगी पिता जी मैं, जेकर अज-कल वरखा हो गई। ज़मीन विच है वोया बीज असां, कनक, छोले ते नाले जौ-जई।। वरखा होननाल फसल वी चंगी होसी,फिर किस्मत समझो साडी खुल पई।

जेकर इस समय वरखा न होई, जानों किस्मत असां दी सो गई।। गल-सड़ जायेगा बीज सारा, साडी निष्फल कमाई होसी। या पंखी पंखेरू दाना चुग जासन, दासा घर विच अन्न दी सफाई होसी।।

व्याही छोटी लड़की जो कुम्हियार दे घर,फिरओह जुलाहाओहदे पास गया। प्यार मां दा दे के हाल पुछया, नाले भैण दा हाल वी खास कहया।। बहुत चिर होया मिलियाँ मां कहंदी, इस वास्ते दिल उदास भया। नाले घर दा हाल-हवाल लैआओ,जिस घर विच ओन्हा दा निवास थिया।। लड़की कहंदी ए बहुत सारे कच्चे भांडे,घड़के पिता जीआवा तैयार कीता। दासा अग्ग वी आवे नूं ला दित्ती, एधरों बदलां ने घेरा ए पा लीता।।

वरखा होईजेकर मैंतां उजड़-जासां,क्योंकि वरखा नालआवा ते बुझ जासी। सारा कच्चा भांडा मींह दे पानी दे नाल,कुछ गल जासी कुछ टुट जासी।। जेकर वरखा न होई ते घर मेरा, कहना माँ-नूँ फिर ते वस्स पैसी। एहो दुआ मैं रब्ब तो मंगदियाँ, नज़रे मेहर होई तां घर रस पैसी।। फिर ते सारे ही वर्तन एह पक्क जासन,बड़ी चंगी तरह बड़ी सोहनी तरह। इन्हां नूँ वेच के ते सानूं लाभ होसी, दासा चंगी तरह बड़ी सोहनी तरह।।

श-शहर अपने वापिस जा वड़या, हाल पुच्छ के दोवां लड़कियां दा। घर पहुँचया ते स्त्री पुछन लगा, सुना हाल की दोवां लड़कियां दा।। जुलाहा कहन लगा की सुनावां मैं, हाल अपनियां दोवां लड़कियाँ दा। मैं ते सुनके बड़ा परेशान होया, तूं वी सुनलै हाल दोवां लड़कियां दा।। तेरियाँ दोवां लड़कियाँ दे विचों, इक वस्स पैसी, दूजी-उजड़ जासी। दोवां भैणा दी मँग है वक्खो-वक्खरी, दासा हँसेगी इक-दूजी सड़ जासी।।

शब्द सुनके इस तरह पति कोलों ओह दिल अन्दर बड़ी दुःखी होई। मेरी धीयां दी जेकर एह हालत होवे, मैं तां जिऊँदियां ही जग विच मोई।। ऐसी गल्ल केहड़ी धीयां दे उजड़न दी, कारण मैंनूं समझा के दस्सो कोई। दिल माता दा बड़ा बेचैन होया, सिसकियां भर भर के ओह खूब रोई।। जुलाहा कहंदा क्यों हालों बेहाल होई, क्यों इतना दिल तूँ हारया ए। इसदे विच न दोष कोई तेरा-मेरा, दासा किस्मत ने ओन्हा नूँ मारया ए।।

शर्त जेहड़ी ते घर दोवें वसदियाँ ने, ओह सुन तूँ ध्यान लगा के ते। वरखा होई ते वस्से जमींदार वाली, रोवे कुम्हियार वाली घर गवां के ते।। ओह मँगे वरखा-ओह रोके वरखा, एह हो नहीं सकदा आ के ते। दोवें रस न कायम रह सकन, इक रस मिलदा-दूजा गँवा के ते।। आत्म-रस चख्या जिन्हे इक वारी, विषय रस न उसनूँ भावंदा ए। लै आत्मा दा रस दास प्यारे, क्यों विषयां विच जन्म गवांवदा एं।।

बुरे से भी भलाई कर

ष-षटरिपु मन विच वसदे ने, इन्हां ते काबू पावना मुश्किल ए। काम-क्रोध मोह लोभ अहंकार अते, दिलों ईर्ष्या मिटावना मुश्किल ए।। भले नाल भलाई हर शख्स करदा, बुरे नाल भला कमावना मुश्किल ए। बुरा कर्म होंदा वेख अपने नाल, उस बुराई नूं सह जावना मुश्किल ए।। जेहड़ा कंडे बोवंदा ए तेरे लई, ओहदी राह विच जे तूँ लावेगा फुल। दासा कंडे ओहदे लई शूल होसन, फुलां बदले सदा तूं पावेगा फुल।।

षडयंत्र न रच कोई ओसदे लई, उसदे नाल तूं कर उपकार भाई। ओहदी कीती बुराई न दिल ते ला, अपनी कीती दा न कर हंकार भाई।। इक दिन इक राजा सैर नूं जा रिहा सी, उत्ते घोड़े दे हो कर सवार भाई। राहविच इकमुसाफिर बेर तोड़न लई,इकबेरी नूँ रिहा सी पत्थर मार भाई।। बजाय लग्गन दे पत्थर ओ बेरी ताईं, उस राजे दे सिर उत्ते आन लग्गा। पत्थर वज्जन करके राजे दे सिर विचों,दासा फव्वारे वांग खूनजान लगा।।

षटक रोब पाके ओस दे हथ बन्ने, कोल राजे दे ओहनूँ बे-खता लाये जी। किहा मंत्री ने राजाजी दस्सो तुसीं,दंड इस मुलज़िम नूं की दित्ताजाये जी।। इसने मारया ए सिर विच पत्थर तुहानूं,खताअपनी दी केहड़ी सज़ापाये जी। तुहाडे हुक्मअनुसार सजा पाके ते,कीते कर्म दा इसनूँ वी मज़ा आये जी।। एह गल सुन मुसाफिर ताईं पुच्छे राजा, मैंनूं दस्स तूँ पत्थर क्यों मारया ए। झूठ बोलीं न डरके ते सच आखीं, तेरा दस्स मैं दासा की बिगाड़या ए।।

स-सहमयामुसाफिर कहंदा दीनता नाल,तुहानूँ जानके पत्थर मैं मारया नहीं। मैनूं भुख ने सी बड़ा व्याकुल कीता, तुहाडा बुरा मैं दिलों चितारया नहीं।। पत्थर मारया बेरी नूं बेर खान दे लई, अजे इक वी बेर ते उतारया नहीं।

सोचया बेर खाके भुख दूर होसी,इसदे इलावा कुछ दिलविच धारया नहीं।। मेरी किस्मत भैड़ी तुहानूँ वेख्या न, नाहीं बेरी नूँ मेरा निशान लग्गा। वैर भाव नाल दास ने मारया नहीं,गलती नाल पत्थर तुहानूं आन लग्गा।।

सुन के मंत्री नूँ किहा महाराजा जी ने, एसनूँ बहुत सारा धन माल देवो। विदा करो बड़े आदर दे नाल इसनूँ, नाले भर के मिठाई दा थाल देवो।। कर्म वेख के परखिये भावना नूँ, अपने मन विच सदा देख भाल लेवो। वध कर्म तों श्रेष्ठ होंदी भावना ए, शुभ भावना दा फल एसनूँ नाल देवो।। हत्थ जोड़ के मंत्री फिर अर्ज़ करदा, मेरी सरकार तुसीं बड़े दयाल हो जी। पत्थर मारया ए बादशाह ताईं जिसने, उस दास ते हो गये निहाल हो जी।।

साडे ख्याल मुताबिक सरकार मेरी,एसनूँ फाँसी दी सज़ा होनी चाहिये जी। दुःख दित्ताएस साडे बादशाह नूँ,इनाम काहदा एदी कज़ा होनी चाहिये जी।। अपनेकीते दा फल इसनूँ मिलजावे,ज़िन्दगी इसदी बे-मज़ा होनीचाहिये जी। तुहाडे चरणां विच साडी बेनती ए,अगों तुहाडी वी रज़ा होनी चाहिये जी।। तुसीं चाहवंदे हो एनूँ इनाम देना, धनमाल ते बहुत सारी रकम होवे। दासनदास न दुःख तुहाडा सहसके,अगों जिसतरह आपजी दा हुक्म होवे।।

ह-हस के राजे किया मंत्री नूँ, पत्थर बेरी नूँ जे लग जांदा बीबा। ओह-पेड़ देंदा फल खान दे लई, कोलों उसदे बेर मिट्ठे पांदा बीबा।। ओहदी छाया दे थल्ले फेर बैठ केते,आराम करदा नाले फल खांदा बीबा। घर पहुँच के वी ओहदी याद करदा, तेरे-मेरे अग्गे गुण गांदा बीबा।। ओह पत्थरअचानक लग्गा जेकर मैंनूं,खान लई दियाँ इसनूँ कुछ वी नामैं। उस बेरी बराबर जे न बनां दासा, तां ते बेरी कोलों वी निकम्मा हां मैं।।

हुकम मेरा ए इस लई दिओ इसनूँ, धन माल ते मिठाई दा थाल भाई। एह देके फेर तुसीं सहित आदर, घर पहुँचान लई जाओ एहदे नाल भाई।। है मेरे खज़ाने विच भरया होया, गुरु-कृपा नाल बहुत धन माल भाई। सागर विचों जे चिड़ी चोंच भर लेवे, कदी पै नहीं जावंदा ए काल भाई।। करम करो ते भरम न कदी करो, भगवान देंदयां नूँ होर वी देवंदा ए। ओह दे के न कदी पछोतावंदा ए, दासा बदले विच कुछ न लेवंदा ए।।

हाज़िर मंत्री कीता फौरन धन दौलत, नाले मिठाई दा थाल लै आवंदा ए। राजा देंदा ए चुक मुसाफिर दे हथ,मुसाफिर राजे कोलों विदाई पावंदा ए।। ओ पा इऩाम दिलों दुआ देंदा, अपने घर दी तरफ चला जावंदा ए। यश फैलेया राजे दा जग दे विच, सारा लोक पया यश गावंदा ए।। बदले बुराई दे हमेशा भलाई करदे, नेकियाँ जग विच सदा कमान दासा। ऐसे सन्त विरले संसार अन्दर, परोपकार दी मूर्ति कहान दासा।।

भाई कन्हैया

क-कारनामे ओन्हां सेवकां दे,कायम अज वी ने इतिहास अन्दर। जिन्हां सेवा कीती दिल-जान दे नाल, गुरु नाम जपया हर स्वांस अन्दर।। न कोई वैरी ते न कोई बेगाना दिस्से, भिन्न-भेद न कोई जात-पात अन्दर। हर्ष-शोक न ओन्हां नूँ व्यापदा ए, रहंदे इक रस हर आफात अन्दर।। हर आत्मा रूप परमात्मा दा, रचना सृष्टि दी ब्रह्म दा रूप दिस्से। ऐसे दास विरले संसारअन्दर,जिन्हाँ दियाँअखाँ विचमालिक दा नूर वस्से।।

करम जन्हां कमाये समदृष्ट होके, ओन्हां सेवकां विचों इक मिसाल सुनो। कन्हैया भाई सेवापंथी जो कहाँवदा सी,ओहदे जीवन दा थोड़ा हाल सुनो।। गुरुगोबिन्दसिंह जी दाओह सेवकसी,ओहदीसेवकाई दाअनोखा हवाल सुनो। वैरी मित्र नूँ इको जिहा समझ केते,जेहड़ी करनी कीतीओह कमाल सुनो।। प्रसन्नता प्राप्त कीती किवें सतगुरां दी,ओन्हां सेवक नूँ किवें निहाल कीता। अमर पद दे के दास आपने नूँ, भक्ति रंग चढ़ा लालो लाल कीता।।

कितने सिखसेवक दशमेश पिता जीदे,वैरी दुश्मनां नाल जंग कर रहे सन। दोवें फौजां दे योद्धे बलवान भारी, कुछ जख्मी होंदे ते कुछ मर रहे सन।। सतगुरां दे इक सच्चे सिख सेवक,मशक मोढे ते चुक पानी भर रहे सन। जेहड़े फट्टड़ तेजख्मी बेहोश होंदे,उन्हांनूँ पानीपिलान दी सेवा कररहे सन। मुसलमान योद्धे ज़ख्मी होये जेहड़े,पानीओन्हां दे मुखविच वी पांवदे सन।। दासा प्रेम ते बड़े उत्साह दे नाल, जिवें सिख भरावां नूँ पिलावंदे सन।।

ख-खुशी खुशी ठँडा पानी पी के,ज़ख्मी दुश्मन जद होश विच आवंदे सन। दोनों तरफ दे योद्धे ऐसा वार करदे, इक दूजे नूँ मार मुकावंदे सन। एह वेख न कीती बरदाश्त सिहां, दिल विच पये बुरा मनावंदे सन।।

सिंहां गुरु जी अग्गे अरदास कीती, हाल सारा ओह गुरां नूँ सुनावंदे ने। दासनदास ना सतगुरां देर कीती, तुरत भाई कन्हैये नूँ बुलावंदे ने।। फिर सिंह बलवान योद्धेयां दे नाल, युद्ध करन दे लई उठ धांवदे सन।।

खबर सुनी ते झट कन्हैया भाई, हुकम मन्न के सतगुरां पास आये। भाई कन्हैया नूँ कहन दशमेश पिता, साडे कोल एह चल के दास आये।। बड़ी भारी शिकायत ए करदे हैन, एहो कम बडा लै के खास आये। जिवें आखदे ने तिवें कर बीबा, ताकि इन्हां दा कारज वी रास आये।। एह आखदे ने तुसीं जल पिलावंदे ओ, दुश्मन योद्धेयां नूँ मित्र समान भाई। इस गल्ल तो दास एह रोकदे ने, तुसीं रुकदे नहीं क्यों बन नादान भाई।।

खिमा मंगी ते नाल नमस्कार कीता, हथ जोड़ के मुँहों अलापदा ए। तुहाडा हुकम दाता मेरे सिर मत्थे, भेद भाव न कोई सुझापदा ए।। हे कृपा दे सागर महाराज मेरे, न कोई अपना पराया मैंनूं जापदा ए। कोई वैरी न कोई बेगाना दिस्से, सारा जग दिस्से रूप आपदा ए।। हर जीव विच रूप दातार तेरा, जिधर वेखां मैं तूँही तूं नज़र आवें। मैं बेबस हां दातेआ मेहर करीं, दुनियाँ दास उत्ते करे उज़र भावें।।

ग-गल्ल सुन भाई कन्हैया जी दी, दशमेश पिता जी बड़े प्रसन्न होये। जेहड़े सिख शिकायत ओहदी करदे सन,अग्गों वास्ते ओन्हां नूँ कन्न होये।। हित चित दे नाल जेहड़े सेवा करदे, सुध-बुद्ध ते नाले तन मन खोये। सेवक एहो जेहे जित्थे जन्म लैंदे, धन कुल ते मात-पिता धन्न होये।। आशीर्वाद देके गुरां सेवक ताईं, भक्ति धन ते नाल दात रब्बी दित्ती। ज़ख्मी योद्धेयां दी मरहम-पट्टी देलई,दासनदासनूँ मल्हम दी डब्बी दित्ती।।

गुरां आखिया भाई कन्हैया जी नूँ, बड़े प्रेम नाल पानी पिलाया करो। ऐथों रसद थोड़ी बहुत लै जाओ, जेहड़ी मौका-बेमौका खिलाया करो।। एस मल्हम नूँ ज़खमी योद्धेयाँ दे, ज़ख्म साफ कर उत्ते लगाया करो। दुःखां नूं दूर करके, परोपकारी बन कर्म कमाया करो।। नाले वर दित्ता भाई कन्हैया ताईं, तुहाडा भेख पवित्र सदा अमर होसी। जो सेवा-पंथी दे नाम करके, दासा दुनियाँ दे विच सब नूँ खबर होसी।।

गुरु सिक्खां नूँ गुरु जी कहन लगे, एह तां पूर्ण ही ब्रह्मज्ञानी ए। जेहड़ा एन्हां नूँ रोकदा एस कम्म तों, ओह करदा बहुत नादानी ए।। एह जो करदे ने सो ठीक करदे, न कोई जग विच एन्हां दा सानी ए। सारी सृष्टि नूँ असाँ दा रूप जानण, एन्हां असली रमज़ पछानी ए।। अमली जीवन ते प्रभु प्रसन्न होंदे, कथनी ओन्हां नूँ मूल न भावंदी ए। द्वैत-भाव जो दास त्यागदे ने, कुदरत ओन्हां नूँ फुल चढ़ावंदी ए।।

महर्षि बाल्मीकि

ज़्वाद-ज़ाय करदा अपनी ज़िन्दगी नूँ, बटमार सी जदों बाल्मीकि भाई। ऐसा ज़ालिम सी ओह खूँखार डाकू, जिहदे वांग न होया अज तीक भाई।। परन्तु है सी आला संस्कारां वाला, आत्मा रही सी गुरु नूँ उडीक भाई। सतगुरु मिले ते घट विच करे चानन,राह फड़ां फेर अपना मैं ठीक भाई।। बिछुड़ी रूह दा फिकर महापुरुष रखदे, ख्याल रखदे ओहनूँ बचावने दा। नारद ऋषि दा भक्त सी जन्म पिछले,दासा फिकर ओहनूँ रस्ते लावने दा।।

ज़रूरी एस कारण नारद ऋषि होरीं, जित्थे मारे डाके ओत्थे जावंदे ने। बाल्मीकि डिठा नारद आवंदे नूँ, झट पकड़ तलवार दिखावंदे ने।। जो कुछ कोल तेरे छेती कड दे तूँ, अग्गों नारद जी ओहनूँ फरमावंदे ने। जिन्हां लई करे मारधाड़ ऐनी, क्या ओह पाप विच हिस्सा वँडावंदे ने।। बाल्मीकि कहंदा कीते पापां दे विच, कुटुम्बी सारे मेरे भाईवाल ने जी। क्योंकिसमझदे होये जो पये खानदासा,मेरे कोलों सबे लुटदा माल ने जी।।

ज़ब्त कर गुस्सा घरों पुछ जा के, परिवार कोलों नाल प्यार भाई। पाप कर्म कर के तुहाडी करां सेवा, क्या एस विच हो हिस्सेदार भाई।। जेकर कहन असीं हिस्सेदार एस विच, फेर करदे जाना एहो कार भाई। हिस्सेदार न पाप विच होये जेकर, फेर ते कीते दा तेरे सिर भार भाई।। दास बाल्मीकि किहा जाके पुछदा हां, मैं गल तेरी ए मन के ते। मते दे धोखा किते नस जावें, जासां दरखत नाल तैनूँ बन्ह के ते।।

तोय--तरफ डाकू देख कहे नारद, जित्थे मर्ज़ी तेरी जा तूँ बन भाई। पेड़ नाल ओस ऋषि नूँ बन्ह दित्ता,दूर कीता ओस ने दिल दा जन भाई।। फेर चला गया डाकू घर अपने, गल नारद ऋषि वाली मन भाई।

जाके अपने पिता ताईं कहन लगा, मेरी गल सुनो धर के कन भाई।। त्वाहडे वास्ते पिता जी जा के ते, अमीर गरीब दे ताईं हां लुटदा मैं। कइयाँ ताईं जानों ही मार देवां, दासा कइयां दा गला हाँ घुटदा मैं।।

तरह तरह दे पाप जो करां हरदम, क्या एस विच हिस्सा वँडाओगे जी। एस पाप कारण जे मैं गया नरकीं, क्या मेरे नाल साथ निभाओगे जी।। पिता आखदा करे जो भरे ओही, असां खावना जिवें खवाओगे जी। नेकनीती करो या करो ठग्गी,कीता आपना आपे तुसीं पाओगे जी। दस कदी तैनूँ एह किहा असां, चोरी कर या डाके मार बच्चा। जीवें मर्ज़ी तेरी खट खवा दासा, तेरी करनी विच न हिस्सेदार बच्चा।।

तलब औरत ताईं करके कहे डाकू, तुहाडे लई जेहड़े डाके मारदा मैं। एस तरह नाल करके धन कट्ठा, पेट पालदा सब परिवार दा मैं।। एहदे विच क्या हिस्सेदार तुसीं, जेहड़े तुहाडे लई ज़ुलम गुज़ारदा मैं। भागी पाप दे बनोगे नाल मेरे, या ज़िम्मेवार एस कुल भार दा मैं।। तुसीं सोच के दिओ जवाब छेती, बदला कीते दा मैं ही पावना ए। या एस दे विच मददगार सभे, दासा अन्त समा जिसदिन आवना ए।।

ज़ोय-ज़ुलम दी करो कमाई भावें, भावें धर्म दी करो कमाई स्वामी। जिवें किवें कमाओ असां खावना ए, डियूटी खान दी तुसां लगाई स्वामी।। पाप कीते विच असीं न मूल साथी, दियाँ दुहाई स्वामी दुहाई स्वामी। पाप करेगा जो कोई पायेगा ओह, शरीक पापां विच होवे न कोई स्वामी।। सब दी सुन के ते बाल्मीकि डाकू, पछोताया ते सख्त बेज़ार होया। पापां कीतियाँ विच न कोई मेरी, दासनदासा अज ज़िम्मेवार होया।।

ज़ाहिर-होया आपे कीता पावना ए, इन्हां पिछे क्यों पाप कमाया ए। पापां कीतियाँ विच न कोई साथी, बाल्मीकि बड़ा पछोताया ए।। झूठे परिवार दे लई ऐवें पाप करके, ऐनी उमर नूँ ऐवें गंवाया ए। ओसे वेले ही बाल्मीकि डाकू, घर नूँ त्याग के ऋषि कोल आया ए।। जित्थे नारद नूं आया सी बन्ह के ते, शर्मसार हो के जा के खोलदा ए। दासनदास दी गलती नूँ बख्शो स्वामी,हथजोड़ केआजिज़ी नालबोलदा ए।।

ज़ाहिरा ज़हूर हुज़ूर दे विच कहंदा,ऐडा ज़ुलम मैं काहनूँ हुज़ूर कीता। बे वजह बद्धा पेड़ नाल तुहानूँ, एह मैं बड्ढे तों वड्डा कसूर कीता।। पशेमान डाढा एस कुकर्म उत्ते, केडा मैं एह गलत दस्तूर कीता। डाके मारे ते ज़ुल्म कमाये बहुते, एस विच क्यों नाम मशहूर कीता।। भुलनहारे दियां भुलां बख्श दियों, अपनी करनी ते सख्त अफसोस मैंनूं। दासनदास लई झलया दुःख तुसां, फेर वी लाया न एस दा दोष मैंनूं।।

ऐन- अर्ज़ करदा डाकू ऋषि अग्गे, होया सच जो तुसां फरमाया ए। जा के पुच्छया पहलां मैं बाप कोलों, तुहाडे लई जो पाप कमाया ए।। हिस्सेदार होसो कीते पाप अन्दर, लुट-मार के तुहानूं खवाया ए। अग्गों बाप ने एह जवाब दित्ता, जो करेगा ओस ही पाया ए।। तेरे कीते विच होसां शरीक नाहीं, कीता अपना आपे तूँ पावना ए। किरत धर्म दी कर या पाप दी कर, कमासें जिवें दासा असाँ खावना ए।।

औरत कोलों जा के जदों पुछया मैं, अग्गों ओहदा वी एहो जवाब स्वामी। बुरा-भला कर्म कमाओ जैसा, खुद पासो अज़ाब सवाब स्वामी।। सानूँ खट खवावना धर्म तुहाडा, आप समझ लौ हानि ते लाभ स्वामी। जैसा करे कोई तैसा पावंदा ए, आपो आपना है देना हिसाब स्वामी।।

हिस्सेदार विच कीते पाप आपने दे, क्यों साडे ताईं पये करो स्वामी। मैं करांगी पावांगी मैं दासा,तुसीं करोगे ते तुसीं भरो स्वामी।। आज़जी नाल हथ जोड़ अरदास करदा, मेरी भुलां बख्शो भूलनहार हां मैं। बड़े ज़ुलम कीते बे-दोषियाँ ते, चुकदा रहया सिर पापां दा भार हां मैं।। अवगुणां वल न स्वामी जी ध्यान देना, शरमसार बड़ा शरमसार हां मैं। करो दया ते नाम दा दान बख्शो, होना चाहवंदा भवसागरों पार हां मैं।। कृपा गुरां दी नाल कट जान संकट,होर कोई नहीं स्वामी बचान वाला। कुल मतलबी डिठा संसार दासा, इक गुरु ही साथ निभान वाला।।

गैन-गलतियाँ डाकू दियाँ बख्श नारद, फेर उसनूँ सेवक बनाया ए। सतनाम दा ओन्हूँ उपदेश देके, सतमार्ग उत्ते ओन्हूँ लाया ए।। समझ गया संसार है निरा धोखा, ओस पिछे क्यों जन्म गँवाया ए। सच्चे सतगुरां दी चरण-शरण फड़ के, नाल चित दे ध्यान लगाया ए।। भुल के कदी न याद परिवार कीता, सुरति गुरु शब्द विच लाई उसने। दासन दास बन के सतगुरु प्यारियां दा,पदवी उच्ची तों उच्ची पाई उसने।।

गम-फिकर दुनियावी सब दूर कीते, इको गम रखिया गमख्वार दा जी। आज्ञा सतगुरां दी विच रह के ते, रहंदे वक्त दे ताईं गुज़ारदा जी।। कर याद हरदम सच्चे सतगुरां दी, दम दम विच नाम उचारदा जी। ऐसा आन के शान्त स्वरुप होया, रूप बन गया सत कर्तार दा जी।। ऐसी भक्ति कीती तन मन लाके, पाया जिस नाल अरूज़ इकबाल भाई। रामचन्द्र जी दा कई सौ बरस पहलाँ, दासा दसया खोल ओस हाल भाई।।

गौर करिये असीं वी मिल सभे, मानुष तन नूँ सफल बना लइये। ऐर- गैर ख्याल सब दूर कर के, सतगुरां संग प्रीत लगा लइये।।

जन्म जन्म दी सुत्ती होई रूह ताईं, मिलके गुरां नूँ एहनूँ जगा लइये। दिल दा हुज़रा करके साफ सुथरा, विच प्रीतम प्यारा बिठा लइये।। केवल गुरां दे बिठान लई दिली हुज़रा, ऐर गैर लई एह नाँ थां होंदी। बिठाइये विच हुज़रे गुरुदेव ताईं, दासा शान्ति दी जिस विच छां होंदी।।

फे-फिकर रहवे केवल सतगुरां दा, होर फिकर करिये सब दूर भाई। हांजी, हाँजी दा हरदम, सबक पढ़िये, जो कुछ कहन सतगुरु हुज़ूर भाई।। मौज ओन्हां दी विच न दखल देइये, करिये ऐसा न कदी कसूर भाई। घर विच ही ओहदा घर मिल जासी, किरपा गुरां दी नाल ज़रूर भाई।। बाल्मीकि रिहा मन दी जिचर मनदा, उचर मन ने सख्त ख्वार कीता। जदों मन दी छोड़ गुरुमति धारी, दासा बेड़ा ओहदा सतगुरु पार कीता।।

फतह ओस दी होंदी ज़रूर इक दिन, जेहड़े मन उत्ते फतह पा जांदे। मन मति नूँ छोड़ गुरुमति पकड़न, ओह फेर बिगड़या कम बना जांदे।। जन्मां विच न आवंदे ओह कदी, जेहड़े जन्म गुरां लेखे ला जांदे। भोग जगत दे समझन ज़हर वांगूँ, गुरुमुखाँ विच जो नाम लिखा जांदे।। आवागवन दे चक्रों छुट के ते, चले जावंदे ओह निजधाम नूँ जी। मिलिया वक्त हत्थों न जाये दासा,जपलो दमदम विच सतगुरुनाम नूं जी।।

फकत करन आये याद सतगुरां नूं, मानुष जन्म एस लई सबने पाया ए। सतगुरु नाम बाझों बाकी झूठ समझो, जेहड़ी सच पई जापदी माया ए।। एस माया ने जग ते पा पर्दा, सब जीवां नूँ आन भरमाया ए। माया-छाया तों बचदा ओह प्रेमी, जिस गुरां संग प्रेम वधाया ए।। बाझ गुरां दे माया न कदी छडे, गुरां वाले नूँ माया न मारदी ए। रूप भक्ति दा जद बन जाये दासा, फिर जीव भवसागरों तारदी ए।।

अपनी पहचान

जीम-जीव भुलेखयाँ विच पैके, ब्रह्म तों जीव सडावंदे ने। महापुरुष आके भुले जीवां ताईं, जीव ईश दा भेद बतावंदे ने।। तू ताँ पारब्रह्म परमात्मा साईं, सतगुरु जीव दे ताईं फरमावंदे ने। कुल दी अंश होके जीव बण बैठों, असली राह ते जीव नूँ पावंदे ने।। शेर वाँगणा भुल गयों आप ताईं, कथा शेर दी खोल सुनान ओनूँ। नाल प्रेम प्यार दे दास ताईं, ज्ञान आपने आप दा ज्ञान ओनूं।।

जीवें शेर दा बच्चा असलियत भुल के,छोटे होंदियाँ भेडां विच रहन लगा। अपने आप समझ के वांग लेला, मैं मैं भेड़ां वांगूँ कहन लगा।। अपने आप नूँ भुल गया ओ बच्चा, दुख सुख भेड़ां वांगूँ सहन लगा। पूरा ख्याल होया भेडां वांग उसदा, नुक्ता ऐन ते ला हो गैन लगा।। शेरां वाला ख्याल न रहया उसनूँ, रूप हो गया भेड़ां ते लेलियाँ दा। दास बन गया भेडां दी पै संगत, जेहड़ा मालिक सी जंगल बेलियां दा।।

जदों कुझ अरसा ऐवें लँघ गया, शेर आ गया उत्थे शिकार करदा। जानवरां दे होश फिदा हो गये, प्या गरजदा ते मारों मार करदा।। भभक मारे ते ज़मीं आस्मां हले, जदों किसी उत्ते जाके वार करदा। सुण गईयां भेडां भज उत्थों, बच्चे ओसनूँ शेर गिरफ्तार करदा।। ज़बरदस्ती पकड़ के ओस ताईं, कहंदा मेरे वांगों असल शेर हैं तूं। ए ते तेरी खुराक ऐ मूरखा ओए, जिसदा दास बन हो गया ज़ेर हैं तूं।।

चे-चालाकी शेर दी समझ बच्चा, कहँदा भेड हाँ, कहंदे सब भेड मैनूं। शेर होंदा ते शेरां दे विच होंदा, ऐवें करना प्यां कोई चेड मैंनूं।। मैंनूं धोखा देणा कोई चाहवणा एं, सब्ज़ बाग विखा न एड मैंनूं।

मैंनूं छोड़दे, वेख पई जान जावे, चंगी लगदी नहीं तेरी खेड मैनूं।। एत्थे रहदियां रहदियां मेरे ताईं, साल हो गया है कोई डेढ़ मैनूं। ऐ मेरे ते इन्हां दी अंश हां मैं, दास ताईं कहंदे मेड इन भेड मैनूं।।

चूँ-चरां न कर फज़ूल ऐवें, गलती लग गई है कमाल तैनूँ। जेकर तेरे रिश्तेदार होंदे, लै जांदे पकड़ के नाल तैनूँ।। ए होर ते तू हैं होर कोई, वक्खो वक्ख नहीं दिसदी चाल तैनूं। हत्थ प्या छुड़ावें क्यों ज़ोर लावे, बड़ी जान दी पै गई काल तैनूँ।। मेरी सुन तां सही ध्यान दे के, समझा रह्या हां मैं समझ के बाल बच्चा। बड़ी गलती दे विच प्यों दासा, होश कर ते सुण कन नाल बच्चा।।

चिर दा विछड़ के भेडां दे विच रल्यों, झूठा पै गया मोह दा जाल प्यारे। ए झूठे रिश्तेदार हैन तेरे, झूठा पै गया वहम ख्याल प्यारे।। मेरे बगैर भुलेखे विच पाण वाले, जेहड़े लै बैठयों अपने नाल प्यारे। अंश तेरी मेरी इक्को साफ दिस्से, दिस्से तेरी मेरी इक्को चाल प्यारे।। तू शेर हैं शेर दा हैं बच्चा, पूरा रूप है वांगना शेर तेरा। चल पानी दे कोल विखांवां तैनूं, दास निकलेगा फर्क फेर तेरा।।

हे-हक दी शेर सुना के ते, पकड़ लै गया पानी दे कोल भाई। अपने कोल खलार के बच्चे ताईं, कहंदा पानी विचों वेख अडोल भाई।। जिस तरह मैंने मुँह खोलिया ए, ओसे तरह तूँ भी मुँह नूँ खोल भाई। दस फरक तैनूँ कोई जापदा, जेकर जापदा ए मुँह बोल भाई।। इक्को शकल ते रंग है ढंग इक्को, बोल इक्को ज्यां वांगूँ ढोल बच्चा। दौड़ जानगे सुण के भभक दासा, झूठे रहणगे न तेरे कोल बच्चा।।

हकीकत विच जद समझया शेर हाँ मैं,मारी भभक तां पै गया शोर उत्थे। गैरां नाल रल के सी गैर बनया, ओस वेले न रह्या कोई होर उत्थे।। भभक सुनदेयाँ ही नस गये सारे, हाथी, भेड़िया रह्या न होर उत्थे। संगत शेर दी नाल ओ शेर बनया, ज़ोर होंदयाँ जेहड़ा कमज़ोर उत्थे।। भुल ब्रह्म तों बण गया जीव ऐवें, जेहड़ा फँस गया मोड़-तोड़ अन्दर। सतगुरु बाझ न जीव नूं पता लगे, दासा प्या रहवे अन्ध घोर अन्दर।।

हालत संगत करके है बदल जाँदी, जैसी संगत ते वैसा ध्यान होंदा। कुसंगत कर के पवे भुलेखियाँ विच, दुखी जिस लई सदा इन्सान होंदा।। संगत सतगुरां दी विच रहे जेहड़ा, अपने आप दा ओनूँ ज्ञान होंदा। कुसंगत डोबदी ते संगत तार देंदी, महापुरुषां दा एहों फरमान होंदा।। जिचर सतगुरां दी न मिले संगत, उचर जीव दा न कल्याण होवे। भेडां रुपी माया विच रहे फँस्या, दासा ब्रह्म दा न ज्ञान होवे।।

ज्ञान दी रोशनी

ऐन-आशिक संसारी जो रूह होंदी ,तार गुरां दी ओहदे विच वजदी ए। कर दीदार सतगुरां दा लखाँ वारी, फिर भी रूह ओ कदी न रजदी ए।। सतगुरु प्रेम पिछे सदा रूह ऐसी, पतंग वाँग ओह शमां वल भजदी ए। पहले गुरु भक्ति कीति जिस रूह ने,गुरु चरणां दे विच आ ओ सजदी ए।। पिछले जन्मां दी कीती गुरु भक्ति जेहड़ी, गुरु शब्द नाल प्रेम नूँ जोड़दी ए। पैन देवे न विषय विकारां विच ,दासन दास बना के छोड़दी ए।।

इश्क प्रेम प्यार पिछले जन्म जिसदा,ओहदाआन फिर गुरांनाल प्यार होंदा। खुद बखुद आ गुरां दी करे पूजा, ऐसा ज़बरदस्त ओहदा संस्कार होंदा।। होर कोई न आवंदा जीव नेड़े, भक्ति करन लई न तैयार होंदा। उल्लू वांग अन्धेरे नूँ चंगा जाने, ज्ञान सूरज ओहनूँ न दरकार होंदा।। ख्यालां दे विच उल्लू वांग जेहड़े, पै होये मोह माया गुबार अन्दर। दासा देआं मिसाल ऐसे बन्दियाँ दी, उल्लू वांग जो रहन संसार अन्दर।।

इलम वाले इन्सान किसे उल्लू ताईं, सूरज चढ़न दी गल सुनाई यारा। सूरज चढ़दा आन के जिस वेले,होंदी आन के बहुत रोशनाई यारा।। उल्लू आखदा बिल्कुल झूठ बोले, मैनूँ कदी नाही नदरी आई यारा। तेरे उत्ते इतबार न इस गल दा, बिल्कुल झूठ न सच ए काई यारा।। कई बरसां ऐते उमर लँघ गई ए, सूरज कदी नाही नज़रीं आया ए। सूरज वाली तेरी गल सुन के दासा, बड़े वहम दे विच च पाया ए।।

गैन- गल्त एह जो कुछ बोलदा तूँ, सच्च मन्ने केहड़ा तेरी बात नूँ जी। चन्न चढ़ पैंदा कदी कदी राती, या तारे डिठे होंदे रात नूं जी।। साडे इल्म दे विच नहीं सूरज आया, फोल वेख्या सारी लुगात नूँ जी।

गल सूरज दी कदी किसे नहीं कीती, वडी ला बैठे जमात नूँ जी।। जेकर सूरज चढ़दा होंदा कदी ऐत्थे, किसे ताईं ताँ नदरीं आँवदा ओह। सारी रात छोटे वड्डे रहिये फिरदे, दासा किसे नूं चमक दिखावंदा ओह।।

गैर वाज़िब नहीं कोई गल कीती ,सच पुछ लौ किसे सयानियाँ नूँ। जेदां तीक सयाना न विच होवे, समझ आ न सके अयानियाँ नूँ।। उल्लू आखदा मासी नूँ लै आवाँ, जेहड़ी जाणदी कुल ज़मानयां नूं। फत्तो मासी चमगादड़ नूँ लै आया, है सी जाणदा ओहदे ठिकानयां नूं।। दस मासी कदी सूरज सुनया,डिट्ठा ऐनी उमर तूँ ऐथे गुज़ार दित्ती। दासा ऐवें ही सूरज दी गल करके, मत चंगी भली साडी मार दित्ती।।

गद्दारी कर रहया साडे नाल बन्दा,फत्तो चाम चिट्ठी अग्गों फरमाया ए। वड्डी उमर दी मैं भी हो गई हाँ, सूरज कदी नाहीं नज़र आया ए।। उल्लू चाम चिट्ठियाँ फिरदियाँ नज़ आवण कदी सूरज न मुँह दिखाया ए। झूठा बन्दा ए झूठियाँ करे गल्लां, रब कित्थों ए भेख च पाया ए।। झूठ मारया एस पहाड़ जेड़ा शुमार नहीं कोई ऐहदे झूठ दा जी। थोड़ा झूठ होंदा मन जांदी दासा फरक होंदा ,ज्यों ऊँगल अगूँठ दा जी।।

फे-फत्तो मासी ते नहीं एतबार जेकर, लै आवां होर कोई समझदार भाई। उल्लू ताईं ओस बन्दे जवाब दित्ता, बेसमझ फत्तो एह जो नार भाई।। उल्लू आखदा इक पुराना साडा हैगा,उल्लूवां दा सरदार भाई। ओहनूँ जाके सद लै आवणां हां, हर गल दा वाकिफकार भाई।। झटपट जाके ओहनूँ लै आया,गवाह ख्वाजे दा डडू बना के ते। बाबा एह बन्दा कहंदा सूरज चढ़दा,दासा सोहणियां चमकां ला केते।।

फरमाया बाबे ने अकलमन्द बनके,झूठा करदा गल निकम्मी है जी। सूरज सुणया न डिट्ठा कित्थे आके, जिस वक्त दी दुनियां जम्मी है जी।। बेवकूफ बनांदा ए सारेयां नूँ, अपने एहदे विच अकल दी कमी है जी। न कोई सूरज न कोई रोशनाई होंदी, करदा ऐवें प्या गल नूँ लम्मी है जी।। ऐसे तरह जीव अज्ञानी जेहड़े हो गये उल्लूआं वांगणां भाई सारे। माया ममता दा प्या गुबार दासा, कहंदे गुरु भगवान न कोई सारे।।

फे-फेल दिमाग कीते माया मोह सबदे,अज्ञानी जीवां नूँ ज्ञान दी सार नाहीं। दया कर समझावंदे सन्त सतगुरु, कीमती जन्म नूँ जुए विच हार नाहीं।। गुरु भक्ति वास्ते एह जन्म मिलया निन्दा कर सिर चावणा भार नाहीं। सन्तां सतगुरां ते दोष लगा के ते, हो सकणां भवसागरों पार नाहीं।। अजे वेला ई समझ जा हुण बन्दे ज्ञान ध्यान दी कोई गल करदे। बख्शनहार दातार हन सन्त सतगुरु, दासा शरण पै के मसला हल करदे।।

कंचन कामिनि कीर्ति

क-कपिल मुनि शिष्य नन्दन ताईं, नसीहत करन लग्गे समझा के ते। असीं जा रहे हां गंगा सागर दे तट, वचन रखीं दिल विच बिठा के ते।। जो कुछ है साथों मँग लै तूँ, चुप रह न तूँ शरमा के ते। नित चाहवंदा दर्शन भगवान दा मैं, अग्गों दास ने कह्या सुना के ते।।

ख-खड़े हो के कपिल देव जी ने, आखिया नन्दन नूँ नाम दा जप करीं। इस विंध्याचल पर्वत दी चोटी उत्ते, तूँ रह के सदा ही तप करीं।। त्रैगुणी माया दे कोलों रहवीं बचके ते,इसदी तिकड़म दे विच न खप मरीं। पोथी माया वाली जदों खुलन लगे, दासा पढ़ीं न उसनूँ ठप धरीं।।

ग-गुरु जी दे वचन सुन के ते, पुच्छन लगा त्रिगुण किस नूँ आखदे ने। इस त्रिगुण नूँ है बनाया किसने, त्यागन योग क्यों इसनूँ आखदे ने।। किहा कपिल जी ने सत्व, रज, ते तम्, सन्त त्रिगुण इसनूँ ही आखदे ने। जीवात्मा दा दासा एह नाश कर दे, त्रै राक्षस वी इसनूँ आखदे ने।।

घ-घेर के मारदा सत्त्वगुण, यश कीर्ति ए हथियार ऐंदा। रजोगुण मारे नाल धन दौलत, स्त्री द्वारा तमोगुण वी मार लैंदा।। कीर्ति कंचन कामिनि त्रिगुणी माया, जेहड़ा इसदी लपेट दरकार कैहँदा। दुर्गति होंदी इस लोक दे विच, यम यातना दास बार-बार सैहंदा।।

च-चलना बच के माया कोलों, एह बरबाद करदी जीवात्मा ए। त्रिगुणी माया जो कहलावंदी ए, इस माया नूँ रचया परमात्मा ए।। रचया एसनूँ जीव दी परख दे लई, एहदी कितनी कू सचेत आत्मा ए। जिसने त्रिगुण त्रिशूल दी नोक छुई, दासा समझो फेर उसदा खात्मा ए।।

छ-छड्ड के गुरु जी जान लग्गे, नन्दन कहंदा क्यों गुरुजी जावंदे हो। तुहाडे लई ते छड्डे मैं मात-पिता, फिर तुसीं क्यों पल्ला छुड़ावंदे हो।। गुरुदेव बोले-कम्म गुरु दा एह, बस, सेवक नूँ ज्ञान सिखा देना। गुणातीत बनन लई दास ताईं , सच झूठ दी परख करा देना।।

ज-जदों निश्चय नाल याद करसें, प्रगट होके रक्षा तेरी करांगा मैं। गुप्त रूप विच तेरेअँग-सँग रहसां, लेकिन ज़ाहिरी सूरत नहीं रहवांगा मैं।। सतगुरु परमात्मा विच भेद नाही,सदा साथ रहंदे एह कहवांगा मैं। नन्दन कह्या-जिवें मौज तुहाडी, दास बन के सब कुछ सहवांगा मैं।।

झ-झट ओथों कपिल देव चले गये, इक महीने दी अवधि ढल गई। नन्दन बाबा पहाड़ी ते घुम रहे सन, कर माया ऐसा छल वल गई।। खान सोनेदी वेखीअचानक ओन्हां,वेखदियां सार ही नज़र कुछ बदल गई। गुरु वचनां चों लग्गे गुंजाइश ढूँढ न, मति दास दी माया विच रल गई।।

ट-टलेगा वचन न सतगुरां दा, जे व्याख्या उन्हां दी निरोग करिये। धन ज़हर बन जावंदा तदों ही ए, जदों धन दा दुरुपयोग करिये।। इस नाल जे करम कमाइये चंगे, सोच समझ के ठीक उपयोग करिये। धन नहीं बुरा, बुरा वरतन दा ढंग, दासन दास न बुरा प्रयोग करिये।।

ठ-ठीक समय भक्त नन्दन जी ने, कई राज़ मज़दूर बुलाये उसने। लैके कन्नी,बसूली जदों हाज़िर होय, मन्दिर बनान दे भेद समझाये उसने।। सामने मन्दिर दे चाहिये इक कुआं, ओदे खोदन लई नक्शे बनाये उसने। डिट्ठा राज़मज़दूर ने लगदा माल हथ च,दास जयजय देनारे लगाये उसने।

ड-डुलाये लिया मन माया ने जद, भक्त कहंदा विशाल इक मन्दिर होसी। बड़ी सुन्दर ते विशाल प्रतिमा,भगवान कपिल ते शिवजी दी अन्दर होसी।।
मिट जायेगी नाराज़गी सतगुरां दी, जदों संगत भरी विच मन्दिर होसी। जय जयकार सुनके मन्दिर दे विच,दास ते गुरां दी मेहर दी नज़र होसी।।

ढ-ढिग मन्दिर दे इक धर्मशाला, कहंदा राज़ां नूं तुसां बनावनी ए। उसदे सामने फिर इक वड्ढी सारी, सुन्दर बावली वी खुदवानी ए।। बिना बावली मन्दिर दी शान नाहीं, एह गल्ल वी तुहानूं समझावनी ए। दर्शन गुरां दे लई कहे दास नन्दन, संगत उमड़ उमड़ के आवनी ए।।

त-तैयार करन लई धर्मशाला, राज़ मज़दूराँ ने झट हामी ते भर दित्ती। कहंदे ज़रूर बनावांगे बावली वी, बड़ी चंगी सुना तुसां खबर दित्ती।। जिवें आज्ञा तुसां फरमाई सानूँ,सब डायरी दे उत्ते नोट कर लित्ती। दास हुने ही नकशा बनावने आं, फेर समझो कि असां नींह धर दित्ती।।

थ-थक्कया नां नन्दन फेर कहंदा, इस थां दी कीमत-बेशुमार होवे। इक मील दे घेरे विच कम से कम, तिन मंज़िला किला तैयार होवे।। थां इट दी पत्थरां तों कम लैना, नहीं पत्थर दी कमी तुहानूं सार होवे। दास कम करो हित्त चित दे नाल, गुरु कपिल मुनि दी जयजयकार होवे।।

द-दिन भर कम न कुछ होया, नक्शे ज़मीन ते ढाये बनाये गये। कानामिस्त्री सी मुखिया मज़दूरां दा,उसदियाँ गल्लां च भगत फुसलाये गये।
जिस जगह ते सोने दी खान हैसी, ओह भेद वी न उस तो छिपाये गये। सोना कढना ते आखिर-कार एन्हां, दास नन्दन जी सब कुछ बताये गये।।

ध-धन दौलत रजोगुण ऐसा,जिसने परदा बुद्धि ते पा दित्ता। रात पई ते राज़-मज़दूरां नूँ, काने मिस्त्री ने हक विच कर लित्ता।। सारेयाँ पकड़ के बाबा नन्दन जी नूँ, रस्सी लैके पेड़ नाल बन्न दित्ता। चांदनी रात विच सोने दी खान लुट लई,भाना रब्ब दा दासने मन्न लित्ता।।

न-नतीजा तां सामने आवना सी, सतगुरां दे वचन नूँ फेरने दा। रिहा बद्धा न खोलेया किसी ने वी, चूंकि वेला सी रात दे घेरने दा।। प्रातःकाल होया चरवाहे लोग आये, क्योंकि वेला सी भेड़ां दे चारने दा। बद्धा वेख कोओन्हां ने खोल दित्ता,वक्त मिलया हुन दास नूँ विचारने दा।।

प-पाप लगदा उसनूं बहुत भारी, गुरु वचन नूँ जो पलटदा ए। बैठ ज़मीन उत्ते सोचे नन्दन बाबा, कंचन किवें फसांदा ते झटकदा ए।। अच्छा बुरा उपयोग रिहा इक पासे, कंचन वेखन नाल वी जीव भटकदा। दास रहिये बच के तिकड़म कोलों,नाम जपदा ते माया तों पिछे हटदा ए।।

फ-फर्क जो समझे गुरु वचनां विच, ओह रखे कल्याण दी आस नाहीं। धत तेरे कंचन की ऐसी तैसी, त्रिगुण तिकड़म ते करना विश्वास नाहीं।। रात भर रिहा पेड़ दे नाल बद्धा,रही मन्दिर दी होश हवास नाहीं। चरवाहे खोलदे न जे मैंनूं आके, भुखा मरना ते बचना सी दास नाहीं।।

ब-बहुत नहीं महीने तां तिन गुज़रे,इकदिन नन्दन बाबा कसरत कररहे सी। यक्ष जाति दी स्त्री परम सुन्दर, दिल विच पति दी हसरत भर रही सी।। शरीर गोरे चों कमल दी महकआवे,बड़ी ठुमकठुमक कदम धर रही सी।
औंदियाँ वेखके दास दी नियत बदली,दिल नन्दन दा मोहित कर रही सी।।

भ-भक्त पुछे उस तों कौन है तूँ, की नाम ते धाम है दूर कितना। अपनी सुन्दर जवानी-मस्तानी दा, तेरे दिल विच भरया गरूर कितना।। कुबेर लोक विच रहंदी नाम चातकी ए, कहंदी पिता ने भेजया ज़रूर मैंनूं। मन मर्जी दा पति लै खोज अपना, दासा खोजेगा अखियां दा नूर तैनूँ।।

म-मना कीता मेरे गुरु जी ने, नहीं व्याह ते कदी वी करांगा मैं। कंचन कामिनी कोलों सदा दूर रहना,बचन गुरां दा सिर ते धरांगा मैं।। जेकर करना सी व्याह रहंदा घरअपने,पढ़या लिख्या हुण मूर्ख न बनांगामैं। छूना स्त्री नूँ छूत है बहुत भारी, दास स्त्री-प्रेम तों डरांगा मैं।।

य-याद रखो वचन सतगुरां दे, शादी लई न करां मजबूर तुहानूँ। बेशकछुओ न करो न प्यार बेशक,फिर वी दिआंगी न कोई कसूर तुहानूँ।। भजन-पूजन करो अपने सतगुरां दा, फल-फुल लिया देवांगी ज़रूर तुहानूँ। दिलोंसमझेया स्वामी,कहंदी चातकी ए,वेखां दास न पलक वी दूर तुहानूँ।।

र-रस्ता नाप तूँ नन्दन कहंदा, तेरी गल्ल मैं सुनना चाहवंदा नहीं। न मैं स्वामी ते न इष्टदेव तेरा, अपने ब्रह्मचर्य विच फर्क पावंदा नहीं।। कहंदी चातकी कायरओआदमी ए,जिन्हूँ गृहस्थ विच ब्रह्मचर्य सुहावंदानहीं।
कुँवारा रह ब्रह्मचर्य दा पालन करदा, ओह दास बहादुर कहावंदा नहीं।।

ल-लक्ष्मी जी नाल भगवान विष्णु, रहंदे होए ब्रह्मचर्य सुहांवदे हन। इसे तरह शिव-शंकर जी नाल पत्नी,ते राधा-कृष्ण ब्रह्मचारी सदावंदे हन।। राम सीता जी नूँ सदा संग रख के, ब्रह्मचारी दा वेश बनावंदे सन। एह प्रत्यक्ष नमूने वेख दासनदासा, तुहाडे तरह जो पेश न आवंदे सन।।

व-वक्त उसे नन्दन सोचदा ए, औरत बुरी नहीं बुरा उपयोग इसदा। सम्बन्ध गृहस्थी वाला कदी रखांगा न, न करांगा कदी सहयोग इसदा।। इसनूं भक्त बना के सतगुरां दा, पूरा करा दियाँगा भक्ति योग इसदा। दासा घास ते अग्ग जिवें कट्ठे होंदे, ऐवें बन्न गया फेर संयोग इसदा।।

श-शास्त्र प्रमाण रोज़ रोज़ दे के, चातकी नन्दन दा दिल भरमान लगी। अपने स्वामी दे चरणां दी सेवा करना, धर्म स्त्री दा एह समझान लगी।। जिवें लक्ष्मी विष्णु दी चरण-सेवा, करदी रात दिन एह सुनान लगी। मैं ताँ मंगदी हां सेवा लई इक घंटा, दास उत्ते अधिकार जमान लगी।।

ष- षडयन्त्र रच के चातकी ने, तन-मन नन्दन दा हर लित्ता। पूरा बना गृहस्थी बन्धन पा दित्ते, सचमुच ही ओन्हूँ पति वर लित्ता।। चव्वी सालां दी तपस्या नष्ट कर के, ओहदा ब्रह्मचर्य व्रत भंग कर दित्ता। यक्षिणी दास नूँअकेला छड के,कुबेर लोक वल वापस कदम धर लित्ता।।

स-साधना नष्ट होई वेख नन्दन, रो रो के बहुत पछतान लगा। कहंदा माया मिली न राम मिलया, योग-भोग गँवा शरमान लगा।। विच समझी गुंजाइश गुरुवचनां दे, कंचन कामिनी दा तीर आन लगा। बाकी रह गया ज़हर हुण कीर्ति दा, दासनदास ओन्हूँ अज़मान लगा।।

ह-होके मौन बारह सालां दे विच, बाबा नन्दन जी ने घोर तप कीता। मौसम सर्दी दे खड़ेरहे जल दे विच,गर्मियां विच पंचअग्नि दा तप कीता।।
विच बरसात दे कीती परवाह नाहीं, नमोःशिवाय दा अखंड ही जप कीता।
सर्दी गर्मी ते भुख-प्यास आदि, दासन दास ने चारां नूँ ठप कीता।।

क्ष-क्षोभ रिहा न कोई दिल दे विच, नन्दन सिद्ध हो के सिद्धि पा गया। फेर संसार नूँ सुखी बनान खातिर, पहाड़ों उतर के मैदानां विच आ गया।।
जिसनूं जिस कम्म लई सिर दा वाल देवे, उसदा भला होंदा यश छा गया।
मारिया दुखां दा दास चल आवंदा जो, नन्दन सिद्ध कोलों वाल पा गया।।

त्र-त्रिगुण दी माया अजीब इक दिन, जमा होके कई मनुषाँ ने घेर लिया। कहंदे कष्ट देइये काहनूँ बाबाजी नूँ,वाल तोड़न दा कम्मअपने ज़ेर लिया।।
झपटा झपटी ही वाल उखाड़न लग्गे, नन्दन जी नूं मूर्छा ने घेर लिया। दास होशआई से एह कहन लगा, जग विच त्रिगुण माया दाअन्धेर पिया।।

ज्ञ-ज्ञान दी अक्ख जदों खुल गई, चढ़ चोटी ते कहंदे पुकार भाई। ए त्रिगुण त्यागन दे योग है जी, इस दी तिकड़म विच पैना बेकार भाई।। कदी भुल के वी गुरु वचनां दा, कर बैठे न कोई तिरस्कार भाई। गुरु साक्षात पारब्रह्म परमेश्वर ने, दास झुक झुक के करो नमस्कार भाई।।

जेहड़ा करे उलंघन गुरु आज्ञा दा, होसी मेरी तरह ओह ख्वार भाई। सत-असत विचारे गुरु वचनां नूँ, डुब मरेगा अध विचकार भाई।। मन्ने मौज श्री आज्ञा सिर मत्थे, सत-असत न करे विचार भाई। त्रिगुणी माया न उसदे निकट आवे, उस दास दे सतगुरु ज़िम्मेवार भाई।।